8. और दुन्यवी ज़िन्दगानी कुछ भी नहीं है सिवाए लअिब व लह्व के, और आख़िरत का घर मुत्तक़ियों के लिए बेहतर है, क्या तुम्हें अक़्ल नहीं है (जो ऐसी साफ़ वाज़ेह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती कि दुनिया के इस लह्व व लअिब को आख़िरत की उम्दा ज़िन्दगी से कुछ भी मुनासबत नहीं है।) *(सूरः अनआम रूकूअ 4)*

(۹) وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا (انعام ع۸)

9. ऐसे लोगों से बिलकुल किनारा कश (यक्सू और अलाहिदा) रहो, जिन्होंने अपने दीन को लह्व व लअिब बना रखा है और दुन्यवी ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है। *(अनआम रूकूअ 8)*

(۱۰) وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ج (انعام ع ۱۱)

10. और तुम हमारे पास (मरने के बाद) तंहा तंहा होकर आ गए, जिस तरह हमने तुमको दुनिया में अव्वल मर्तबा पैदा किया था (कि हर शख़्स अलग अलग पैदा होता था) और जो कुछ हमने तुमको (दुनिया में माल व मताअ, साज़ व सामान) अता किया था, उसको वहीं छोड़ आए। *(सूरः अनआम, रूकूअ 11)*

फ़ायदा – यानी जिस तरह आदमी मां के पेट से बग़ैर माल व मताअ पैदा होता है, उसी तरह क़ब्र की गोद में तने तन्हा जाता है। यह सब कुछ माल व मताअ यहां का यहां ही रह जाएगा, बजुज़ (सिवाए) उसके जो अल्लाह तआला के यहां अपनी ज़िन्दगी में जमा करा दिया हो कि वह सब जमा शुदा माल वहां पूरा का पूरा मिल जायेगा, बल्कि सरकारी ख़ज़ाने से उसमें इज़ाफ़ा भी मिलेगा।

(۱۱) وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا (اعراف ع۱٦)

11. और दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है। *(अअ्राफ़, रूकूअ 16)*

(۱۲) فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا (اعراف ع ۲۱)

12. पस (नेक बंदों के बाद) ऐसे लोग उनके जा नशीन हुए कि किताब को तो उनसे हासिल किया (लेकिन ऐसे हराम ख़ोर हैं कि किताब के अहकाम के बदले में) इस दुनिया-ए-दनी का माल व मताअ ले लेते हैं और कहते हैं कि हमारी ज़रूर मग़्फ़िरत हो जायेगी, (क्योंकि हम अल्लाह के लाडले हैं।)

(١٣)وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ o (اعراف ع ٢١)

13. और आख़िरत का घर बेहतर है मुत्तक़ी लोगों के वास्ते, क्या तुम बिल्कुल अक़्ल नहीं रखते (जो ऐसी खुली हुई साफ़ बात भी नहीं समझते।) *(आराफ़, रुकूअ 21)*

(١٤) وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ لا وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌo
(انفال ع ٣)

14. तुम इस बात को जान रखो कि तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है (ताकि हम इसका इम्तिहान करें कि कौन शख़्स उनकी मुहब्बत को तर्जीह देता है और कौन शख़्स अल्लाह तआला की मुहब्बत को तर्जीह देता है और इस बात को भी जान रखो कि जो शख़्स अल्लाह तआला की मुहब्बत को तर्जीह देता है, दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी के लिए कारआमद बनाता है उसके लिए) अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा अज्र है। *(अल अन्फ़ाल, रुकूअ 3)*

(١٥) تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ط (انفال ع ٩)

15. तुम तो दुनिया का माल व अस्बाब चाहते हो और अल्लाह तआला शानुहू (तुम से) आख़िरत को चाहते हैं यानी यह कि तुम आख़िरत की फ़िक्र में रहो, उसकी तैयारी में हर वक़्त मश्गूल रहो।

(सूर: अल अन्फ़ाल, रुकूअ 9)

(١٦) اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ج فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ o(توبه ع٦)

16. क्या तुम लोग आख़िरत की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये, दुनिया की ज़िन्दगी तो आख़िरत के

मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

(तौबा, रूकूअ 6)

(١٧) اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ (يونس ع ١)

17. जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है और दुनियावी ज़िंदगी पर राज़ी हो गये और उससे उनको इत्मीनान हासिल हो गया और जो लोग हमारी तंबीहों से ग़ाफ़िल हो गये हैं, ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से जहन्नम है।

(सूरः यूनुस, रूकूअ 1)

(١٨) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ لا مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ز ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ط حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ لا اَتٰهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ط كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ط وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ (يونس ع ٣)

18. ऐ लोगो, सुन लो, यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाल होने वाली है। दुन्यवी ज़िन्दगी में (चंद रोज़ उससे) नफ़ा उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुमको आना है, फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुमको जतला देंगे। पस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस पानी से ज़मीन के नबातात (ज़मीन से उगने वाली चीज़ें) जिनको आदमी और जानवर खाते हैं, ख़ूब गुंजान होकर निकले, यहां तक कि जब ज़मीन अपनी रौनक़ का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश हो गयी (यानी पैदावार, सब्ज़ा वग़ैरह ख़ूब शबाब पर हो गया) और उसके मालिकों ने समझ लिया कि हम इस पैदावार पर बिल्कुल क़ाबिज़ हो चुके हैं तो एकदम उस पैदावार पर हमारी तरफ़ से दिन में या रात में कोई हादसा पड़ा (पाला, टिड्डी वग़ैरह), पस हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि गोया वह कल यहां मौजूद ही न थी (यही हालत बि-अैनिही इस दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी रौनक़ और ज़ेब व ज़ीनत की है कि वह अपने पूरे शबाब और

कामिल ज़ेब व ज़ीनत के बावजूद दम के दम में ऐसी ज़ायल हो जाती है कि गोया थी ही नहीं) इसी तरह हम आयात को साफ़ साफ़ बयान करते हैं उन लोगों के (समझाने के) लिए जो सोचते हैं और जो सोचने का इरादा नहीं करता, वह क्या समझे, और (जब दुनिया की और उसकी ज़ेब व ज़ीनत की यह हालत है कि ना-पायदार और ख़तरे की चीज़ है। बस इसीलिए हक़ तआला शानुहू तुमको दारूलबक़ा (जो घर पायदार है और उसको कोई ख़तरा नहीं है) की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है राहे रास्त पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देता है।

(सूरः यूनुस, रूकूअ 3)

(١٩) قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ○

(یونس ع ٦)

19. (पहले से क़ुरआन पाक की ख़ूबियां बयान फ़रमाने के बाद इर्शाद है) आप कह दीजिए (कि जब क़ुरआन पाक ऐसी चीज़ है) पस लोगों को ख़ुदा के इनाम और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए कि (उसने इतनी बड़ी दौलत हमको अता फ़रमाई) वह इस (दुनिया से बदरजहा) बेहतर है जिसको ये लोग जमा कर रहे हैं (इसी लिए कि दुनिया का नफ़ा बहुत थोड़ा और बहुत जल्द ज़ायल हो जाने वाला है।) और क़ुरआन पाक का नफ़ा बहुत ज़्यादा और हमेशा रहने वाला है। *(यूनुस, रूकूअ 6)*

(٢٠) مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ○ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ صلے وَحَبِطَ مَاصَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○(ھود ع ٢)

20. जो शख़्स (अपने नेक आमाल से) दुनियावी, ज़िन्दगी और उसकी रौनक़ चाहता है (जैसे माल व मताअ व शोहरत, नेक नामी वग़ैरह) हम उन लोगों के आमाल (का बदला) उनको दुनिया ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं और उनके लिए दुनिया में कुछ कमी नहीं होती, यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में बजुज़ (अलावा) दोज़ख़ के और कुछ नहीं है, और उन्होंने जो कुछ किया था, वह आख़िरत में सब का सब बेकार साबित होगा और (हक़ीक़त में) ये जो कुछ कर रहे हैं सब बातिल

(बेकार) है। (हूद, रूकूअ 2)

(٢١) اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ط وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ط وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ٥ (رعد ع ٣)

21. अल्लाह तआला जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है तंगी कर देता है (रहमत और ग़ज़ब का यह मदार नहीं है। ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी पर ख़ुश होते हैं और उसके ऐश व इशरत, राहत व आराम पर इतराते हैं) हालांकि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनियावी ज़िन्दगी एक मताअे क़लील है (कुछ भी नहीं है, चंद रोज़ा ज़िन्दगी के दिन काटने हैं, जिस तरह भी गुज़र जायें।) (सूर: रअ़द रूकूअ 3)

(٢٢) لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ (حجر ع ٦)

22. आप अपनी आंख उठाकर भी न देखें उस (ज़ेब व ज़ीनत और माल व मताअ़, राहत व आराम) को जो हमने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को (अह्ले किताब हों या मुश्रिकीन) दे रखा है, बरतने के लिए (कि चंद रोज़ के फ़वाइद इससे उठा लें और फिर यह सब कुछ फ़ना हो जायेगा।) (हिज्र, रूकूअ 6)

(٢٣) مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ط (نحل ع ١٣)

23. जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है वह (एक दिन) ख़त्म हो जाएगा (ख़्वाह वह जाता रहे या तुम मर जाओ, दोनों हाल में ख़त्म होगा) और जो अल्लाह तआला के पास है वह हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ है।

(٢٤) ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ (نحل ع ١٤)

24. यह (जो अज़ाब ऊपर की आयात में ज़िक्र किया गया) इस वजह से है कि उन लोगों ने दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में महबूब रखा। (नह्ल, रूकूअ 14)

(٢٥) مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ٥ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۚ وَ مَاكَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝ (بنی اسرآئیل ع ۲)

25. जो शख़्स दुनिया का इरादा करता है (और अपनी कोशिश और आमाल का समरा सिर्फ़ दुनिया ही में चाहता है) हम उसको दुनिया में जितना चाहते हैं और जिसको चाहते हैं देते हैं (न यह ज़रूरी है कि हर शख़्स को दे दें, जिसको हमारा दिल चाहता है देते हैं और जिसको देते हैं उसको भी यह ज़रूरी नहीं कि जितना मांगे वह सब दे दें, जितना हमारा दिल चाहता है देते हैं) फिर आख़िरत में उसके लिए जहन्नम तजवीज़ कर देते हैं कि वह उसमें बदहाल रांदा होकर जलता रहेगा, और जो शख़्स आख़िरत का इरादा करे और उसके लिए जैसी कोशिश करनी चाहिए करे, बशर्ते कि वह मोमिन हो। ऐसे लोगों की कोशिश अल्लाह के यहां मक़्बूल है। हर फ़रीक़ की (दुनियादार हो या दीनदार) आपके रब की अता में से हम मदद करते हैं और आपके रब की (यह दुनियावी अता) किसी से भी बंद नहीं की गयी। आप ख़ुद ही देख लें कि इस दुनियावी अता में हमने एक को दूसरे पर (ख़्वाह वह मुसलमान हो या काफ़िर) कैसी फ़ौक़ियत दे रखी है। (आप इससे ख़ुद ही अंदाज़ा कर लेंगे कि अता किसी और की तरफ़ से है, कि एक शख़्स को कोशिश से भी बहुत कम मिलता है और दूसरा बग़ैर कोशिश के भी बहुत कुछ हासिल कर लेता है, और आख़िरत (जो मख़्सूस है ईमान के साथ इस दुनिया से) दर्जों के एतिबार से बहुत बड़ी है और फ़ज़ीलत के एतिबार से भी बढ़ी हुई है। *(सूर: बनी इस्राईल, रूकूअ 2)*

(۲۶) وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝ (کہف ع ٦)

26. आप उन लोगों से दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कीजिए, वह ऐसी है जैसा कि हमने आसमान से पानी बरसाया हो, फिर

उसकी वजह से ज़मीन के नबातात (पैदावार) ख़ूब गुंजान हो गए हों, फ़िर (ख़ूब सरसब्ज़ व शादाब होकर एक दम किसी हादसे में ख़ुश्क होकर) रेज़ा रेज़ा हो जाए कि उसको हवा उड़ाये उड़ाये फिरती हो बिल्कुल यही हालत दुनियावी, ज़िन्दगी उसकी ऐश व इशरत और माल व मताअ की है कि आज सब कुछ है और एकदम कोई मुसीबत आ जाए तो कुछ भी न रहा, और अब तो ज़माना इसको अपनी आंखों से ख़ूब ही देख रहा है) और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (जब चाहे जिसको चाहे अमीर बना दे, जिसको चाहे लखपती से फ़क़ीर बना दे, जिसको चाह साहबे औलाद कर दे और जिसको चाहे बड़ी औलाद और कुंबा वाला होने पर दम के दम में अकेला कर दे, तो यह समझ लो कि) माल और औलाद दुन्यावी ज़िन्दगी की सिर्फ़ एक रौनक़ हैं, और जो नेक आमाल हमेशा बाक़ी रहने वाले हैं, वे सवाब और बदले के एतिबार से भी (बदरजहा) बेहतर हैं और उम्मीद के एतिबार से भी बेहतर हैं (कि उनकी ही उम्मीदें लगानी चाहियें और उन उम्मीदों के पूरा होने की कोशिश करना चाहिए।) *(सूर: कहफ़, रूकूअ 6)*

(۲۷) يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ٥ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ
اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ٥ (طٰهٰ ع ٥)

27. (ऊपर की आयात में क़ियामत के आने का और सूर फूँके जाने का ज़िक्र है, उस दिन ये मुजरिम लोग) चुपके चुपके आपस में बातें करते होंगे (और एक दूसरे से कहते होंगे कि तुम लोग (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे होगे, जिस बात को वे कहेंगे हम उस को ख़ूब जानते हैं, जबकि उनमें ज़्यादा साइबुर्राय (सही राय वाला) कहेगा कि नहीं तुम एक ही दिन रहे हो (उसको ज़्यादा साइबुर्राय उनमें का. इसलिए कहा कि उसका क़ौल एक दिन का बमुक़ाबला दस दिन के ज़्यादा क़रीब है, वैसे तो आख़िरत के दिनों के एतिबार से दुनिया की सारी ज़िन्दगी एक दिन क्या उसका दसवां हिस्सा भी नहीं है।, यह है हक़ीक़त दुनिया के सारे क़ियाम की आख़िरत के मुक़ाबले में। *(सूर: ताहा, रूकूअ 5)*

(۲۸) وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ
لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ٥ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ

عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا ط نَحْنُ نَرْزُقُكَ ط وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ٥ (طٰهٰ ع ٨)

28. और हरगिज़ आंख उठाकर भी आप उन चीज़ों की तरफ़ न देखें जिनसे हमने इन (दुनियादारों) के मुख़्तलिफ़ गिरोहों को उनकी आज़माइश के लिए मुतमत्तअ कर रखा है कि वह सब कुछ महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ है (और आज़माईश इसकी है कि कौन उस माल मताअ में बंदगी का हक़ अदा करता है और कौन नहीं करता) और आपके रब का अतिय्य: (जो आख़िरत में मिलेगा, वह उससे बदरजहा बेहतर और पायदार है और अपने मुताल्लिक़ीन को नमाज़ का हुक्म करते रहें और ख़ुद भी उसके ऊपर जमे रहें। हम आपसे रोज़ी कमवाना नहीं चाहते, रोज़ी तो आपको हम देंगे और बेहतर अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है।

(सूर: ताहा, रूकूअ 8)

(٢٩) اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ٥ (الانبياء ع ١)

29. लोगों के लिए उनके हिसाब (किताब) का दिन आ पहुँचा और वे ग़फ़लत में ऐराज़ किए हुए पड़े हैं।

(٣٠) حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ لَعَلِّىْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا
فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ط اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ط (مؤمنون ع٦)

30. हत्ताकि जब उनमें से किसी के सर पर मौत आ जाती है (और आख़िरत के अह्वाल खुलने लगते हैं) तो कहता है, ऐ मेरे रब! मुझे (मौत से बचा कर) दुनिया में फिर भेज दीजिए (ताकि जिस दुनिया को और उसके माल व मताअ) को छोड़ कर आया हूँ उसमें (वापस जाकर) नेक काम करूँ। (हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा, (जिसका वक़्त आ चुका है वह टलता नहीं) यह (शख़्स जो कुछ कह रहा है वह फ़ुज़ूल) एक बात है जिसको वह कह रहा है।

(सूर: मूअमिनून, रूकूअ 6)

(٣١) قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ٥ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ
فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ٥ قَالَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ اَفَحَسِبْتُمْ
اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ٥ (مؤمنون ع٦)

31. क़ियामत के दिन हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से उन लोगों की हसरत व अफ़सोस बढ़ाने के लिए इर्शाद होग, (अच्छा यह बताओ) कि तुम दुनिया में कितने बरस रहे थे, वे (वहां के ज़माने के तूल के लिहाज़ से) कहेंगे कि हम तो (दुनिया में) एक दिन या इससे भी कम रहे होंगे। (और सच तो यह है कि हमें ख़्वाब की तरह से यह भी अंदाज़ा नहीं कि कितना वक़्त गुज़रा है,) पस गिनने वालों से (यानी फ़रिश्तों से जो हर चीज़ का हिसाब लिखते थे) पूछे लें (कि हम कितना थोड़ा ठहरे थे) इर्शाद होगा कि जब तुम इतना कम ठहरे थे, तो क्या ही अच्छा होता कि तुम (यह बात) जान लेते (कि यह दुनिया महज़ चंद रोज़ा है, बहुत ही थोड़े दिन यहां क़ियाम है, अच्छा यह तो बताओ) क्या तुम यह समझते थे कि हमने तुमको यों ही बेकार पैदा किया, (कोई ग़रज़ तुम्हारे पैदा करने से नहीं थी, हालांकि हमने क़ुरआन पाक में साफ़ साफ़ बता दिया था कि जिन्न व इन्सान की पैदाइश हमने महज़ इबादत के लिए की है, क्या तुम्हारा यह ख़्याल था कि) तुम हमारे पास नहीं लौटाये जाओगे?

(सूरः मूअमिनून, रूकूअ 6)

(۳۲) وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ ۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ ج فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ ۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ○ (قصص ع ٦)

32. (ये लोग जो अपनी ख़ुश ऐशी पर नाज़ां हैं, इनकी हिमाक़त है, इनको ख़बर नहीं कि) हम बहुत सी ऐसी बस्तियां हलाक कर चुके हैं जो अपने सामाने ऐश पर नाज़ां थे। पस (तुम ख़ुद ही देख लो कि) ये उनके घर (ख़ाली पड़े हुए हैं, जो) उनके बाद आबाद ही नहीं हुए, मगर थोड़ी देर को। *(सूरः क़सस, रूकूअ 6)*

(۳۳) وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ج وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ○ع (قصص ع ٦)

33. पस जो कुछ तुमको (दुनिया में ऐश व इशरत और राहत व आराम का सामान दिया गया है वह महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है और (इसी चंद रोज़ा ज़िन्दगी) की ज़ेब व ज़ीनत है (जो बहुत जल्द ज़ायल हो जाने वाली है) और अल्लाह (जल्ल शानुहू) के यहां जो

अज्र व सवाब है वह बदरजहा इससे बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, क्या तुम इतनी बात नहीं समझते? *(क़सस रूकूअ 6)*

(٣٤) اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝ (قصص ع٧)

34. क्या वह शख़्स जिससे हमने एक पंसदीदा वायदा आख़िरत का कर रखा है फिर वह शख़्स उस मौजूद चीज़ को पाने वाला भी है,ऐसे शख़्स के बराबर हो सकता है, जिसको हमने दुन्यवी ज़िन्दगी का कुछ मताअ (मामूली फ़ायदा) दे रखा है, फिर क़ियामत के दिन यह शख़्स(अपने जुर्मों की पादाश में) गिरफ़्तार कर लिया जाएगा।

(सूर: क़सस, रूकूअ 7)

(٣٥) قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ لا اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝ (قصص ع ٨)

35. जो लोग तालिबे दुनिया थे वे (तो क़ारून की ज़ेब व ज़ीनत को देखकर) कहने लगे कि क्या ही अच्छा होता कि हमको भी ऐसा ही साज़ व सामान मिलता जैसा कि क़ारून को मिला है। वह तो बड़ा साहबे नसीब है। (क़ारून का मुफ़स्सल क़िस्सा इबरतनाक, ज़कात अदा न करने के बयान में पांचवीं फ़स्ल की आयात के सिलसिले में नं॰ 3 पर गुज़र चुका है। दौलत और सरवत की कसरत का अगर उसको अल्लाह तआला की रिज़ा का ज़रिया न बनाया जाये तो यही हश्र है।)

(सूर: क़सस, रूकूअ 8)

(٣٦) وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ط وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ (عنكبوت ع٧)

36. और यह दुन्यवी ज़िन्दगी बजुज़ लह्व व लअिब के कुछ भी नहीं है, और असल ज़िन्दगी (जो हक़ीक़त में ज़िन्दगी कहलाने के लायक़ है) वह आख़िरत ही की ज़िन्दगी है, काश ये लोग इस बात को (अच्छी तरह) जान लेते (तो फिर आख़िरत के लिए कैसी कोशिश

करते)। (अन्कबूत, रूकूअ 7)

(۳۷) يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ (روم ع ۱)

37. ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी की सिर्फ़ ज़ाहिरी हालत को जानते हैं। (इसी की कोशिश करते हैं, इसी पर जान देते हैं) और ये लोग आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं, (न वहां के सवाब की तमन्ना, न वहां के अज़ाब का ख़ौफ़) (रूम, रूकूअ 1)

(۳۸) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۚ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ (لقمٰن ع ٤)

38. ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपनी औलाद की तरफ़ से कोई मुतालबा पूरा कर सकता है न कोई औलाद अपने बाप की तरफ़ से ही कोई चीज़ अदा कर सकती है। बेशक अल्लाह का वायदा (जो आख़िरत के मुताल्लिक़ है) सच्चा है, पस तुमको दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाले कि तुम उसमें लग कर आख़िरत के दिन को भूल जाओ और न तुमको धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह तआला से धोखे में डाल दे कि तुम उसके बहकाए में आकर अल्लाह तआला के अज़ाब से बेफ़िक्र हो जाओ (और यह समझने) लगो कि हमें अज़ाब न होगा। (लुक़मान-4)

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि "तुमको शैतान अल्लाह तआला के साथ धोखे में न डाले का मतलब यह है कि तुम गुनाह करते रहो और अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की आरज़ू करते रहो (दुर्रे मंसूर) यानी हक़ तआला शानुहू से मग़्फ़िरत तलब करने का मुंह जब है जब पुख़्ता तौर पर गुनाहों से तौबा करो, गुनाह न करने का पक्का इरादा करो, फिर अल्लाह तआला से गुज़िश्ता गुनाहों की मग़्फ़िरत चाहो और यह हिमाक़त है कि दिन भर गुनाहों से मुंह काला करते रहो, ज़बान से कहते रहो कि या अल्लाह, तू माफ़ कर, जैसा कि इसी फ़स्ल के नं॰ 18 पर मुफ़स्सल आ रहा है और इस मज़्मून की आयत दूसरी भी आ रही है।

(٣٩) يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًاوَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ٥(احزاب ع٤)

39. ऐ नबी, (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! तुम अपनी बीवियों से (भी दो टोक साफ़ साफ़ बात) कह दो कि अगर तुमको दुन्यवी ज़िन्दगी और उसकी ज़ेब व ज़ीनत चाहिए तो आओ, मैं तुमको कुछ दुन्यवी माल व मताअ (महर नफ़्क़ा वग़ैरह) दे दूँ और तुमको ख़ूबी और ख़ुशदिली के साथ तलाक़ देकर रूख़्सत कर दूँ और अगर तुम अल्लाह तआला की रिज़ा (को और उसके रसूल) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में तंगी और फ़क्र व फ़ाक़े के साथ रहने (को और आख़िरत) के आला दर्जों (को चाहती हो तो) यह दिलनशीन कर लो कि (तुममें से नेकी करने वालियों के लिए अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा अज्र व सवाब तैयार कर रखा है।), जो जितनी ज़्यादा नेकी करेगी उतना ही ज़्यादा अज्र व सवाब पावेगी। *(अह्ज़ाब, रूकूअ 4)*

(٤٠) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (فاطر ع١)

40. ऐ लोगो! अच्छी तरह समझ लो, ख़ूब दिल में जमा लो कि बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है, ऐसा न हो कि यह दुन्यवी ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाल दे और ऐसा न हो कि धोखेबाज़ (शैतान) तुमको अल्लाह तआला से धोखे में डाल दे कि उसके धोखे में आकर तुम अल्लाह जल्ल शानुहू से बेफ़िक्र हो जाओ। *(फ़ातिर, रूकूअ 1)*

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० इसकी तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि दुनिया का धोखे में डालना यह है कि उसमें मश्ग़ूल होकर आख़िरत की तैयारी से ग़ाफ़िल हो जाओ और शैतान का धोखा यह है कि गुनाह करते रहो और अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की तमन्ना करते रहो। *(दुर्रे मंसूर)*

(٤١) يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ٥(مؤمن ع٥)

41. फ़िरऔन के ख़ानदान के उस मोमिन शख़्स ने जिसने अपने

ईमान को मख़्फ़ी कर रखा था, अपनी बिरादरी को नसीहत करते हुए कहा ए क़ौम, यह दुन्यवी ज़िन्दगी महज़ चन्द रोज़ा है, और असल ठहरने की जगह तो आख़िरत ही है। *(सूर: मोमिन, रूकूअ 5)*

(٤٢) مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ٥ (شورىٰ ع ٣)

42. जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो (यानी जैसा खेती के लिए बीज बोया जाता है, फिर उसको पानी वग़ैरह दिया जाता है ताकि फल पैदा हो, इसी तरह वह आख़िरत की खेती करना चाहता है, उसके लिए बीज डालकर उसकी परवरिश करता है ईमान से और आमाले सालिहा से) हम उसके लिए उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे और जो दुनिया की खेती का तालिब हो (कि सारी कोशिश इसी ज़िन्दगी पर ख़र्च कर दे) तो हम उसको दुनिया में से कुछ दे देंगे और ऐसे शख़्स का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं है। *(सूर: शूरा, रूकूअ 3)*

(٤٣) فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ٥ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ٥ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ص وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ٥ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ٥ (شورىٰ ع ٤)

43. पस जो कुछ तुमको (इस दुनिया में) दिया गया, वह महज़ चंद रोज़ा ज़िन्दगी के बरतने के लिए है (बहुत जल्द फ़ना हो जाने वाला है और आख़िरत में) जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बदरजहा बेहतर और पायदार है, वह –

1. उन लोगों के लिए है जो ईमान लाये और अपने रब पर ही तवक्कुल करते हैं और कबीरा गुनाहों से और बे हयाई की बातों से एहतिराज़ करते हैं और जब उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं और

2. (ये वे लोग हैं) जिन्होंने अपने रब का कहना माना और नमाज़ को क़ाइम किया और उनका (हर मुहतम्म बिश्शान) काम आपस के मश्विरे से होता

है और

3. (वे लोग हैं कि) मैंने जो कुछ उनको दिया है, उसमें से (ख़ूब) ख़र्च करते हैं और

4. जो ऐसे (मुन्सिफ़ मिज़ाज हैं) कि अगर उन पर ज़ुल्म हो (और उनको बदला लेने की ज़रूरत पड़े) तो बराबर का बदला लेते हैं (यह नहीं कि एक के बदले में दो और किसी का बदला किसी से ले लें।

उलमा ने लिखा है कि इन आयात में बाज़ अहम उमूर और ख़ुसूसी औसाफ़ के साथ इशारा करते हुए चारों ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की तरफ़ तर्तीबे ख़िलाफ़त से नम्बर वार इशारा है। *(सूरः शूरा, रूकूअ 4)*

(٤٤) وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ٥ (زخرف ع ٣)

44. और आपके रब की रहमत उससे बदरजहा बेहतर है जिस (दुनिया) को ये लोग जमा करते हैं। उसके बाद दुन्यवी ज़ेब व ज़ीनत की चंद अश्या (चीज़ें) ज़िक्र करने के बाद इर्शाद है–

وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ط وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ٥ زخرف ع ٣

'व इन कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताउल् हयातिद दुन्या वल् आख़िर-तु इन्-द रब्बि-क लिल् मुत्तक़ीन॰ *(ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 3)*

(ऊपर से सोने चांदी की छतों और दरवाज़ों वग़ैरह के ज़िक्र के बाद इर्शाद है) और यह सब का सब सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी की चंद रोज़ा कामरानी है, (दो चार दिन की बहार है) और आपके रब के यहां आख़िरत तो मुत्तक़ी लोगों के लिए है। *(सूरः ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 3)*

(٤٥) وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ٥ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ٥ (الذاريٰت ع ٣)

45. और मैं ने जिन्न और इन्सान को सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत किया करें, मैं उनसे रिज़्क़ रसानी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाया करें, हक़ तआला शानुहू तो ख़ुद ही सबको रिज़्क़ पहुंचाने वाला क़वी, निहायत क़ुव्वत वाला है।

(सूरः अज़्ज़ारियात, रूकूअ 3)

(٤٦) اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ
فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ○ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ
فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○ (حديد ع٣)

46. तुम ख़ूब जान लो कि दुन्यवी ज़िन्दगी (हरगिज़ हरगिज़ इस क़ाबिल नहीं कि आदमी उसी में लग जाये, यह (तो महज़ लह्व व लअिब और ज़ाहिरी ज़ेब व ज़ीनत और बाहम एक दूसरे पर फ़ख़्र करना है और अमवाल व औलाद में एक दूसरे पर बढ़ोतरी है, इसकी मिसाल ऐसी है जैसा कि मींह बरसा कि उसकी वजह से पैदावार (ऐसी बढ़ी कि वह) काश्तकारों को अच्छी मालूम होने लगी, फिर वह खेती ख़ुश्क हो जाती है कि तू उसको ज़र्द देखता है, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है (यही हालत दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और बहार की है, कि आज ज़ोरों पर है, फिर इज़्मिहलाल है, फिर ज़वाल है) और आख़िरत की यह हालत है कि उसमें सख़्त अज़ाब है (जिससे बचने की इंतिहाई कोशिश होना चाहिए) और ख़ुदा तआला की तरफ़ मग़्फ़िरत और रज़ामंदी है (जिसके हासिल करने की कोशिश उसकी शान के मुनासिब होना चाहिए और यह बात ज़ेहन नशीन कर लेना चाहिए कि) दुनिया की ज़िन्दगी धोखे का सामान है (जब दुनिया की यह हालत है और आख़िरत की यह कैफ़ियत है, तो सआदत की बात यह है कि) तुम अपने परवरदिगार की मग़्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो (और उसकी शान के मुनासिब कोशिश करो और निहायत एहतिमाम से दौड़ो) ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी वुसअत आसमान व ज़मीन की वुसअत के बराबर है, जो ऐसे लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूल सल्ल॰ पर ईमान रखते हैं और यह सब कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़ज़्ल व एहसान है, वह जिसको चाहता है अपने फ़ज़्ल से नवाज़ देता है और अल्लाह तआला शानुहू बहुत ज़्यादा फ़ज़्ल वाले हैं। (मगर कोई उसके फ़ज़्ल से हिस्सा लेना भी चाहे)।

(सूरः हदीद, रूकूअ 3)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि बच्चा, जब उसको कुछ भी समझ शुरू होती है तो वह लह्व व लअिब की तरफ़ मशग़ूल होता है और उसके अंदर उसका ऐसा जज़्बा पैदा होता है कि जिसके मुक़ाबले में उस को कोई चीज़ अच्छी नहीं मालूम होती, फिर उसके बाद जब वह ज़रा बड़ा होता है तो उसमें ज़ेब व ज़ीनत, अच्छे कपड़ों का पहनना, घोड़े वग़ैरह की सवारी का शौक़ पैदा होता है, जिसके सामने लह्व व लअिब की लज़्ज़त भी लग्व हो जाती है, उसके बाद उसमें जवानी की लज़्ज़तों का ज़ोर होता है, शहवत पूरी करने के मुक़ाबले में उसकी निगाह में कोई चीज़ नहीं रहती, न माल व मातअ की वक़अत रहती है, न इज़्ज़त व आबरू की, उसके बाद फिर उसमें बड़ाई और तफ़ाख़ुर और रियासत का जज़्बा पैदा होता है जो पहले जज़्बों पर ग़ालिब आ जाता है, ये सब दुन्यावी लज़्ज़ात हैं उसके बाद फिर अल्लाह तआला की मअ्रिफ़त का जज़्बा पैदा होता है जिसके मुक़ाबले में हर चीज़ लग्व बन जाती है, यही असल जज़्बा है जो सबसे ज़्यादा क़वी है, पस इब्तिदाई ज़माने में खेल कूद की रग़्बत होती है और बुलूग़ के शुरू में शहवत का ज़ोर होता है, बीस साल की उम्र के बाद से रियासत का जज़्बा शुरू होता है और चालीस साल की उम्र के क़रीब से उलूम और मअ्रिफ़त का जज़्बा शुरू होता है, जैसा कि बचपन में बच्चा खेल के मुक़ाबले में औरतों के इख़्तिलात और रियासत को लग्व समझता है उसी तरह यह दुनियादार उन लोगों पर हँसते हैं जो अल्लाह की मअ्रिफ़त में मश्ग़ूल होते हैं और यह अल्लाह वाले समझते हैं कि ये बच्चे हैं, बुलूग़ के लुत्फ़ को जानते ही नहीं। *(एह्या)*

इस आयते शरीफ़ा में दुन्यवी लज़्ज़ात के सब अनवाअ् को ज़िक्र फ़रमा कर इस पर तंबीह फ़रमायी है कि ये सारी ही लज़्ज़तें धोखा हैं और काम आने वाली सिर्फ़ आख़िरत और आख़िरत की ज़िन्दगी है, दुनिया की सारी लज़्ज़तें उस खेती की तरह हैं जो लहलहा कर ख़ुश्क हो जाए, फिर उसको हवा उड़ाकर फ़ना कर दे।

(٤٧) إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ○ (دهر ع ٢)

47. ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे आने वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं (यानी क़ियामत के दिन की न तो कोई फ़िक्र है, न उसकी कोई तैयारी है, दुनिया की मुहब्बत ने ऐसा अंधा कर रखा है कि ज़रा भी तो उस इंतिहाई मुसीबत के दिन की परवाह नहीं

है।) (दह्र, रूकूअ 2)

(٤٨)فَإِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰىۖ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعٰىۙ
وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرٰى فَأَمَّا مَن طَغٰىۙ وَآثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَاۙ فَإِنَّ الْجَحِيمَ
هِيَ الْمَأْوٰىؕ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ فَإِنَّ الْجَنَّةَ
هِيَ الْمَأْوٰىؕ (والنازعات ع ٢)

48. पस जिस दिन वह बहुत बड़ा हंगामा (मुसीबत का दिन यानी क़ियामत का दिन) आ जाएगा जिस दिन आदमी याद करेगा कि (दुनिया में) किस काम के लिए कोशिश की थी और दोज़ख़ उस दिन आंखों के सामने होगी (उस दिन का क़ानून यह है कि) जिस शख़्स ने (दुनिया में) सरकशी की होगी और दुन्यवी ज़िन्दगी को (आख़िरत पर) तर्जीह दी होगी, उसका ठिकाना तो जहन्नम में होगा और जो शख़्स (दुनिया में) अपने रब के सामने खड़ा होने से डरता रहा होगा, और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिशात से रोका होगा, पस जन्नत उसका ठिकाना होगा। *(सूरः वन्नाज़िआत, रूकूअ 2)*

(٤٩)قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكّٰىۙ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰىؕ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَاؗۖ
وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰىؕ إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولٰىۙ صُحُفِ إِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى (اعلى)

49. बेशक बामुराद हो गया वह शख़्स जो (बुराइयों से) पाक हुआ और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा (मगर तुम लोग क़ुरआन पाक की नसीहतों पर अमल नहीं करते) बल्कि तुम तो दुन्यवी ज़िन्दगी को (आख़िरत की ज़िन्दगी पर) तर्जीह देते हो हालांकि आख़िरत (दुनिया से कहीं ज़्यादा) बेहतर है और हमेशा रहने वाली है, यही मज़्मून अगले सहीफ़ों में है, यानी इब्राहीम और मूसा (अला नबिय्यिना व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के सहीफ़ों में) *(सूरः आला)*

फ़ायदाः- इन सहीफ़ों के मज़ामीन बहुत से आसार और रिवायात में ज़िक्र किये गये हैं। एक हदीस में है, हज़रत अबूज़र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से दर्याफ़्त किया कि कुल किताबें कितनी नाज़िल हुईं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सौ सहीफ़े और चार किताबें, उनमें से हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर पचास सहीफ़े नाज़िल हुए और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर तीस और हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम पर दस और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात से पहले दस सहीफ़े नाज़िल हुए और चार किताबें, तौरात (हज़रत मूसा अलैहि० पर) और इंजील (हज़रत ईसा अलैहि० पर) ज़बूर (हज़रत दाऊद अलैहि० पर) और क़ुरआन मजीद (सैय्यिदुर्रूसुल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) नाज़िल हुईं, मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल० हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों में क्या था, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, सब अमसाल (तंबीहात) थीं, (एक मज़्मून उसका यह है) ओ ग़लबा करके हुकूमत लेने वाले बादशाह, और मग़रूर ! मैं ने तुझे इसलिए नहीं उठाया था कि तू दुनिया को तेह ब तेह जमा करता रहे, मैं ने तुझे इसलिये उभारा था कि तू मज़्लूम की आवाज़ को मुझ तक न आने दे (उसकी दादरसी वहीं कर दे), इस लिए कि मैं उसकी पुकार को रद्द नहीं करूँगा, चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो।

अक़्ल वाले के लिए ज़रूरी है अगर उसकी अक़्ल मग़लूब नहीं हो गई कि अपने औक़ात को तीन हिस्सों पर तक़्सीम कर दे:-

1. एक हिस्से में अल्लाह तआला से राज़ व नियाज़ (उसकी इबादत) करे।

2. एक हिस्सा अपने ऊपर मुहासबे में ख़र्च करे कि मैं ने क्या किया (कितने औक़ात नेकियां कमाने में ख़र्च किए, कितने बुराईयां और गुनाह कमाने में, और उन औक़ात में क्या क्या नेक काम किए और क्या क्या बुरे काम किए, नेकियां किस दर्जे की कमाईं और गुनाह किस दर्जे के किए और कितने औक़ात महज़ बेकार ज़ाया कर दिए) और,

3. एक हिस्सा अपनी जायज़ ज़रूरियात (खाने कमाने) में ख़र्च करे ताकि यह हिस्सा औक़ात का पहले दो हिस्सों के लिए मददगार बने और दिल-जमई का और पहले दोनों कामों के लिए वक़्त के फ़ारिग़ करने का सबब बने, और आक़िल के लिए ज़रूरी है कि अपने औक़ात का मुहाफ़िज़ हो, अपने मशाग़िल में मुतवज्जह रहे, अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे। जो शख़्स अपनी बात की निगहबानी करेगा, बेकार बातों में गुफ़्तगू कम करेगा, और आक़िल के ज़िम्मे ज़रूरी है कि तीन बातों का तालिब रहे:-

1. एक अपनी गुज़र औक़ात यानी मआशी इस्लाह का।

2. दूसरी आख़िरत का तोशा।

3. तीसरी जायज़ राहतें (खाना-पीना, सोना वग़ैरह) इन तीनों के अलावा जिस चीज़ में भी वक़्त ज़ाया किया जाये महज़ बेकार और लग्व है। जब आदमी कोई बात या काम शुरू करे तो यह सोच ले कि इन तीन में से कौन से में दाख़िल है।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हज़रत मूसा अलैहि॰ के सहीफ़ों में क्या था, इर्शाद फ़रमाया कि सब की सब इब्रत की बातें थीं (मिन्जुमला उनके यह भी था) मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जिस को मौत का यक़ीन हो, फिर भी वह किसी बात पर किसी तरह ख़ुश होता है (कि मौत हर वक़्त सर पर सवार है, न मालूम किस वक़्त आ जाये) मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको मौत का यक़ीन है फिर उसको किसी पर हंसी आ जाए, मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो दुनिया को और उसके इंक़िलाबात को देखे (कि आज एक शख़्स लखपती है, कल को फ़क़ीर और टुकड़े टुकड़े का मुहताज है। आज एक शख़्स जेलख़ाने में है और कल को हाकिम बन रहा है) फिर उसकी किसी बात पर इत्मीनान करे और (ताज्जुब है) उस शख़्स पर जो तक़दीर पर यक़ीन रखता हो फिर वह किसी बात पर रंज करे और (ताज्जुब है) उस शख़्स पर जिसको (क़ियामत के दिन) हिसाब का यक़ीन है फिर वह अमल न करे (कि उस दिन हर क़िस्म का जानी माली मुतालबा नेक आमाल ही से पूरा किया जाएगा और अपने पास नेक अमल न होंगे तो दूसरे के गुनाह हिसाब पूरा करने को लेने पड़ेंगे) मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, आप पर भी हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम के सहीफ़ों में से कुछ नाज़िल हुआ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, हां यही आयत "क़द अफ़्-ल-ह मन् त ज़क्का"। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू ने सूरः नज्म में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तारीफ़ में फ़रमाया "व इब्राहीमल्ल ज़ी वफ़्फ़ा" और वह इब्राहीम जिन्होंने पूरा पूरा अदा कर दिया, यानी इस्लाम के सारे सिहामों को पूरा कर दिया, इस्लाम के कुल तीस सिहाम हैं, जिनमें से दस तो सूरः बराअत में ज़िक्र किए गये। इन आयात में "इन्नल्ला हश्तरा मिनल मुअ्मिनी-न' और दस सूरः अह्ज़ाब में इन आयात में (इन्नल् मुस्लि मी-न वल् मुस्लिमात् (रूकूअ 5) और छः क़द अफ़्ल-हल मुअ्मिनू-न) की शुरू की आयात में और चार "स-अ-ल साइलुन्" में "वल्ल ज़ी-न युसद्दिक़ू-न

बियौमिद्दी न" (मआरिज, रूकूअ 1) यह सब तीस हुए, जो इनमें से किसी एक चीज़ के साथ भी अल्लाह तआला के यहां जाएगा वह इस्लाम के एक सिहाम के साथ जाएगा। (दुर्रे मंसूर)

(٥٠) بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ○ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ○ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ○ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ○ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ○ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ○ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ○ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ○ (تکاثر)

50. (दुन्यवी सामान पर) तफ़ाख़ुर ने तुमको (आख़िरत से) ग़ाफ़िल कर रखा है हत्ताकि तुम (मर कर) क़ब्रस्तान में पहुँच जाते हो। हरगिज़ (ये चीज़ें क़ाबिले फ़ख़्र और तवज्जोह) नहीं हैं। तुमको बहुत जल्द (क़ब्र में जाते ही) मालूम हो जाएगा (कि दुनिया क्या थी और आख़िरत क्या है) फिर तुमको दूसरी मर्तबा मुतनब्बह किया जाता है कि हरगिज़ (यह चीज़ें क़ाबिले फ़ख़्र व इल्तिफ़ात) नहीं, तुमको बहुत जल्द (क़ब्रों से निकलते ही हश्र में) मालूम हो जाएगा और तुमको तीसरी दफ़ा मुतनब्बह किया जाता है कि हरगिज़ (ये चीज़ें क़ाबिले फ़ख़्र व इल्तिफ़ात) नहीं। अगर तुम यक़ीनी तौर पर (क़ुरआन व हदीस से इस बात को) जान लेते (कि ये चीज़ें क़ाबिले तफ़ाख़ुर नहीं हैं जैसा कि तुमको मरने के बाद इसका यक़ीन हुआ तो कभी भी इनमें मशग़ूल न होते) वल्लाह! तुम जहन्नम को ज़रूर देखोगे (वह कोई फ़र्ज़ी चीज़ नहीं है, कि दोबारा, तुमसे ताकीद से) फिर (कहा जाता है कि) वल्लाह! तुम उसको ऐसा देखोगे जो ख़ुद यक़ीन है (यानी उसका देखना बिल्कुल यक़ीनी और क़तई है), फिर उस दिन तुमसे सारी नेमतों की पूछ होगी (कि अल्लाह की नेमतों का क्या हक़ अदा किया।)

फ़ायदाः- इन नेमतों के सवाल के मुताल्लिक़ बहुत सी तफ़ासील बहुत सी अहादीस में आई हैं और जितनी तफ़ासील आई हैं, वे सब ही मिसाल के तौर पर हैं। हक़ तआला शानुहू की नेमतों का, जो हर वक़्त हर आन, हर आदमी पर बारिश की तरह से बरसती रहती हैं, कौन एहाता या शुमार कर सकता है। हक़

तआला शानुहू का पाक इर्शाद बिल्कुल हक़ है:-

وَإِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ط (ابراهیم ع ٥)

"व इन् तउद्दू निअ्म-तल्लाहि ला तुह्सूहा॰"

(इब्राहीम, रूकूअ 5, सूरः नह्ल रूकूअ 2)

'अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनने लगो तो शुमार भी नहीं कर सकते।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने यह सूरः तिलावत फ़रमायी और जब यह पढ़ा –

ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ٥

'सुम्म लतुस्अलुन्–न यौ मइ–ज़िन् अनिन् नअ़ी–मि॰'

'फिर उस दिन नेमतों से सवाल किए जाओगे' तो इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे रब के सामने तुमसे ठंडे पानी का सवाल किया जाएगा, मकानों के साए का सवाल किया जाएगा (कि हमने धूप और बारिश से बचने के लिए साया अता किया था) पेट भराई खाने से सवाल किया जाएगा। आज़ा के सही सालिम होने से सवाल किया जाएगा। (कि हमने हाथ पांव, आंख नाक कान वग़ैरह सही सालिम अता किये थे, उनका क्या हक़ अदा किया) मीठी नींद से सवाल किया जायेगा, हत्ताकि अगर तुमने किसी औरत से मंगनी चाही और किसी और शख़्स ने भी उस औरत से मंगनी चाही और अल्लाह ने तुमसे उसका निकाह करा दिया तो उससे भी सवाल होगा, कि यह हक़ तआला शानुहू का तुम पर एहसान था कि बेटी वालों के दिल में हक़ तआला शानुहू ने यह बात डाली कि वे तुमसे उसका निकाह करें, दूसरे से न करें। और उन चीज़ों को जो इस हदीस शरीफ़ में ज़िक्र की गयीं, ग़ौर करने से आदमी अंदाज़ा कर सकता है कि उस पर हर वक़्त अल्लाह तआला शानुहू के किस क़दर एहसानात हैं, और इन चीज़ों में ग़रीब अमीर सब ही शरीक हैं। कौन शख़्स ग़रीब से ग़रीब, फ़क़ीर से फ़क़ीर ऐसा है जिस पर हर वक़्त अल्लाह तआला शानुहू के बेइन्तिहा इनामात न बरसते हों। एक सेहत और आज़ा की तन्दुरूस्ती ही ऐसी चीज़ है और इससे बढ़कर हर वक़्त सांस का आते रहना ही एक ऐसी नेमत है जो हर वक़्त हर ज़िंदा को मयस्सर है।

एक और हदीस में है कि जब यह सूरः नाज़िल हुई तो बाज़ सहाबा

रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ कौन सी नेमतों में हम हैं, जौ की रोटी, वह भी आधी भूख मिलती है, पेट भर कर नहीं मिलती तो अल्लाह तआला ने "वही" भेजी कि आप उनसे फ़रमायें, क्या तुम जूता नहीं पहनते, ठंडा पानी नहीं पीते? यह भी तो अल्लाह तआला की नेमतों में से हैं।

एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन सबसे पहले जिन नेमतों का सवाल होगा, वह बदन की सेहत और ठंडा पानी है।

एक हदीस में है कि जिन नेमतों का सवाल होगा, वह रोटी का टुकड़ा है जिसको खाए और वह पानी है जिससे प्यास बुझाए और वह कपड़े का टुकड़ा है जिससे बदन छुपाए।

एक और हदीस में है कि एक मर्तबा सख़्त धूप में दोपहर के वक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गये, हज़रत उमर रज़ि॰ को ख़बर हुई वह भी अपने घर से तशरीफ़ लाए और हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ से पूछा कि इस वक़्त कैसे आना हुआ? उन्होंने फ़रमाया कि भूख की शिद्दत ने मजबूर किया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। इसी बेचैनी ने मुझे भी मजबूर किया। ये दोनों इसी हाल में थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दौलतकदे से तशरीफ़ लाये और उनसे दर्याफ़्त किया कि तुम इस वक़्त कहां आये? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ भूख की शिद्दत ने मजबूर किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इसी मजबूरी से मैं भी आया हूँ। ये तीनों हज़रात उठकर हज़रत अबूअय्यूब अंसारी रज़ि॰ के मकान पर तशरीफ़ ले गए, वह खुद तो मौजूद नहीं थे, उनकी अहलिया (बीवी) ने बहुत ख़ुशी का इज़्हार किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त किया कि अबूअय्यूब कहाँ हैं? बीवी ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰, अभी आते हैं। इतने में अबूअय्यूब रज़ि॰ आ गये और जल्दी से खजूर का एक ख़ोशा तोड़ कर लाए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, सारा ख़ोशा क्यों तोड़ लिया। इसमें से पकी पकी क्यों न छांट लीं। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत ! (सल्ल॰) इस ख़्याल से तोड़ लिया कि पकी और अधकचरी और ख़ुश्क व तर हर क़िस्म की सामने हो जायें, जिसकी रग़बत हो। इन हज़रात ने हर क़िस्म की खजूरें उस खोशे में से नोश फ़रमायीं। इतनी देर में हज़रत अबूअय्यूब रज़ि॰ ने एक बकरी का बच्चा ज़िब्ह करके जल्दी से कुछ हिस्सा आग पर भूना, कुछ हांडी में पकाया और इन हज़रात के सामने

लाकर रखा। हुज़ूर सल्ल॰ ने ज़रा सा गोश्त एक रोटी में लपेट कर अबूअय्यूब रज़ि॰ को दिया कि यह फ़ातिमा को दे आओ। उसने भी कई दिन से ऐसी कोई चीज़ नहीं खाईं। वह जल्दी से दे आए। इन हज़रात ने गोश्त रोटी खाया, उसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया (अल्लाह की इतनी नेमतें खाईं) गोश्त और रोटी और कच्ची खजूरें, पक्की खजूरें यही फ़रमाते हुए हुज़ूर सल्ल॰ की आंखों में आँसू भर आये और इर्शाद फ़रमाया कि यही वे नेमतें हैं जिनसे क़ियामत में सवाल होगा। सहाबा रज़ि॰ को यह सुनकर बड़ा शाक़ हुआ (कि ऐसी सख़्त भूख की हालत में ये चीज़ें भी बाज़पुर्स के क़ाबिल हैं।) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बेशक हैं, और इसकी तलाफ़ी यह है कि जब शुरू करो तो बिस्मिल्लाह के साथ शुरू करो और जब ख़त्म करो तो, यह दुआ पढ़ो :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ اَشْبَعَنَا وَاَنْعَمَ عَلَیْنَا وَاَفْضَلَ

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हु-व अश्ब-अना व अन्अ-म अलैना व अफ़्ज़-ल॰"

"तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हैं कि उसी ने हमको (महज़ अपने फ़ज़्ल से) पेट भर कर अता किया और हम पर इनाम फ़रमाया और बहुत ज़्यादा अता किया।"

इस मज़्मून की बहुत सी रिवायात कुतुबे अहादीस में मौजूद हैं। उनका ज़िक्र इस वक़्त मक़्सूद नहीं है, इस जगह तो सिर्फ़ यह दिखाना मक़्सूद था कि दुनिया की नापायदारी को, उसके नाक़ाबिले इल्तिफ़ात होने को आख़िरत के मुक़ाबले में उसके बिल्कुल हेच होने को उसमें इश्तिग़ाल के बाइस ख़सारा होने और अन्जामकार अज़ाब तक पहुँच जाने को किस कसरत से हक़ तआला शानुहू ने कलामुल्लाह शरीफ़ में फ़रमाया, और बार बार इस पर तंबीह फ़रमायी, जिसमें से नमूने के तौर पर सिर्फ़ पचास आयतों का ज़िक्र इस जगह किया गया। इनके अलावा और भी बकसरत (बहुत सी) आयात में इस मज़्मून पर तंबीह फ़रमायी है। किस क़दर सख़्त हैरत और ग़ैरत की बात है कि जितनी ज़्यादा हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इस पर तंबीह है उतनी ही ज़्यादा हमारी तरफ़ से इसमें ग़फ़लत बरती जा रही है। इसके बाद उस पाक बारगाह में हाज़िरी का क्या मुंह रह जाता है।

(فَاِلَى اللّٰهِ الْمُشْتَكٰى وَهُوَ الْمُسْتَعَانُ)

(फ़-इ लल्लाहिल् मुश्तका व हुवल् मुस्त-आन्)

(۲)وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ط وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ٥ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ لا قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ٥ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ قف وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ٥ (بقره ع ۱۹)

1. और हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़दर ख़ौफ़ से (जो मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से या हवादिस से पेश आए) और (किसी क़दर) फ़क्र व फ़ाक़े से और (किसी क़दर) माल और जान और फलों की कमी से (पस तुम लोग इस क़िस्म की जो चीज़ें पेश आवें उन पर सब्र करना) और आप उन सब्र करने वालों को बशारत सुना दीजिए, (जिनकी यह आदत है) कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो वे इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला शानुहू की ख़ास ख़ास रहमतें हैं और रहमते आम्म: भी है और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं।

फ़ायदा:- मुसीबत के वक़्त "इन्ना लिल्लाहि" का ज़बान से पढ़ना भी मुफ़ीद और अज्र का सबब है और दिल से इसके मायने समझ कर पढ़ना और भी ज़्यादा मोअस्सिर और बाअिसे अज्र और बाअिसे तमानियत है।

इसका तर्जुमा यह है कि हम सब के सब (मय अपनी जानों के और मालों के) अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं (और मालिक को अपनी मिल्क में हर तरह तसर्रुफ़ का हक़ है। वह जिस तरह चाहे तसर्रुफ़ करे) और हम सब अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं, यानी मरने के बाद सबको वहीं जाना है, यहां के नुक़्सानात और तकालीफ़ का बदला और सवाब बहुत ज़्यादा वहां मिलेगा, जैसा कि दुनिया में किसी शख़्स का कुछ नुक़्सान हो जाए और उसको कामिल यक़ीन हो कि इस नुक़्सान के बदले में इससे बहुत ज़्यादा बहुत जल्द मिल जायेगा तो उसको अपने नुक़्सान का ज़रा सा भी रंज नहीं होता। इसी तरह अगर अल्लाह तआला शानुहू के यहां ज़्यादा से ज़्यादा बदला मिलने का यक़ीन हो जाए तो फिर ज़रा भी कुल्फ़त न रहे, लेकिन हम लोगों में चूंकि ईमान और यक़ीन की कमी है इस वजह से ज़रा सी मशक़्क़त, ज़रा सी तकलीफ़, ज़रा सा नुक़्सान भी हमारे लिए बड़ी मुसीबत बन जाता है। हक़

तआला शानुहू ने अपने पाक कलाम में इसकी तरफ़ भी मुज्मलन और मुफ़स्सलन बहुत सी जगह तंबीह फ़रमाई है कि यह दुनिया सख्त इब्तिला और इम्तिहान की जगह है और कई कई मज़्मूनों में इम्तिहान होता है, कभी माल की इफ़रात (ज़्यादती) से कि उसको किस तरह कमाया और किस तरह ख़र्च किया जा रहा है, और कभी फ़ुक़्र व फ़ाक़े से कि इसका किस तरह इस्तिक़बाल किया जा रहा है। जज़अ फ़ज़अ से या सब्र व सलात से। इसीलिए बार बार सब्र व सलात और अल्लाह की तरफ़ रूजूअ की तर्ग़ीबें दी जाती हैं और इस पर तंबीह की जाती है कि तुम आज कल इम्तिहान में हो, ऐसा न हो कि इस इम्तिहान में फ़ैल हो जाओ। नमूने के तौर पर चंद आयात की तरफ़ इशारा करता हूँ -

(۱) وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (بقره ع ٥)

1. और मदद हासिल करो सब्र के साथ और नमाज़ के साथ।

(बक़र:, रूकूअ 5)

हज़रत क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि ये दोनों चीज़ें अल्लाह की तरफ़ से मदद हैं, इनसे मदद लो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ के साथ सवारी पर सवार था, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया लड़के, मैं चंद बाते बताता हूँ, तुझे हक़ तआला शानुहू उनसे नफ़ा देंगे, मैं ने अर्ज़ किया, ज़रूर बतायें। इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की हिफ़ाज़त कर (यानी उसके हुक़ूक़ अदा कर) अल्लाह तआला शानुहू तेरी हिफ़ाज़त फ़रमायेंगे। अल्लाह तआला (के हुक़ूक़) की हिफ़ाज़त कर, तू उसको (हर वक़्त अपनी मदद के लिए) सामने पाएगा, सरवत की हालत में अल्लाह तआला शानुहू को पहचान ले (यानी याद कर ले) वह तुझे मुसीबत के औक़ात में पहचानेगा (मदद करेगा) और यह अच्छी तरह जान ले कि जो कुछ भी मुसीबत तुझे पहुँची है, वह हरगिज़ तुझसे चूकने वाली न थी और जो नहीं पहुँची, वह कभी भी पहुँचने वाली न थी, अगर सारी मख़्लूक़ सब की सब मिलकर इसकी कोशिश करें कि वे तुझे कुछ दें और अल्लाह तआला शानुहू उसका इरादा न करें तो वे सब के सब हरगिज़ इस पर क़ादिर नहीं हो सकते कि तुझे कुछ दे दें। और अगर वे सब के सब मिलकर तुझसे किसी मुसीबत को हटाना चाहें और अल्लाह तआला शानुहू न चाहे तो वे कभी भी उस मुसीबत को नहीं हटा सकते। तक़दीर का क़लम हर उस चीज़ को लिख चुका है जो क़ियामत तक होने वाली है। जब तू कुछ मांगे तो सिर्फ़ अल्लाह ही से मांग, और जब मदद चाहे तो सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद चाह,

और जब भरोसा करे तो सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा कर, ईमान व यक़ीन में शुक्र के साथ अल्लाह तआला के लिए अमल कर और यह ख़ूब जान ले कि नागवार चीज़ों पर सब्र बहुत बेहतर चीज़ है, और अल्लाह की मदद सब्र के साथ है और मुसीबत के साथ राहत है और तंगदस्ती के साथ फ़राख़ दस्ती है, यानी जब कोई मुसीबत पहुँचे तो समझ लो कि अब कोई राहत भी मिलने वाली है और जब तंगी हो तो समझ लो कि अब फ़राख़ी भी होने वाली है।

एक हदीस में है कि जो शख़्स भूखा या मुहताज हो और अपनी हाजत को लोगों से छुपाये तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है कि उसको एक साल की रोज़ी हलाल तरीक़े से अता फ़रमायेंगे।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ को जब भी कोई अहम चीज़ पेश आती तो नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते । हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि पहले अंबिया (अलैहि॰) को जब भी कोई मुश्किल पेश आती तो वे नमाज़ में मश्गुल होते।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ एक मर्तबा सफ़र में जा रहे थे, रास्ते में अपने बेटे के इंतिक़ाल की ख़बर सुनी, सवारी से उतरे और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हमें यही हुक्म दिया है। फिर यह आयत 'वस्तअ़ीनू बिस्सब्रि व स्सलाति' पढ़ी। हज़रत उबादा रज़ि॰ के जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब हुआ तो फ़रमाया कि मैं तुममें से हर शख़्स को इससे रोकता हूँ कि कोई मुझे रोए, और जब मेरी जान निकल जाए तो हर शख़्स बहुत अच्छी तरह वुज़ू करे और मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, फिर मेरे लिए और अपने लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत करे और फिर जल्दी ही मुझे दफ़्न कर देना।

(दुर्रे मंसूर)

(۲) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (بقره ع ۱۹)

2. ऐ ईमान वालो (मुसीबतों में) सब्र और नमाज़ के साथ मदद हासिल करो।

(बक़र:, रूकूअ 19)

(۳) وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ (بقره ع ۲۳)

3. और सब्र करने वाले तंगदस्ती में और बीमारी में और ख़ौफ़ व क़िताल के वक़्त।

(बक़र:, रूकूअ 22)

यह आयते शरीफ़ा पहली फ़स्ल के नं॰ 1 पर पूरी गुज़र चुकी।

(٤) وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ٥ (بقره ع ٢٣)

4. और अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

(बक़र:, रूकूअ 23)

इस मज़्मून की आयत क़ुरआन पाक में बहुत जगह नाज़िल हुई। बार बार अल्लाह तआला शानुहू यह मुज़्दा (ख़ुश ख़बरी) और तसल्ली फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

(٥) اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ (ال عمران ع ٢)

5. यह आयते शरीफ़ा इसी फ़स्ल के नं॰ 1 पर पूरी गुज़र चुकी।

(٦) وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا (ال عمران ع ١٣)

6. अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो तो उन (काफ़िरों) का कोई मक्र तुमको ज़रा सा भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता।

(आले इमरान, रूकूअ 13)

(٧) اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ (ال عمران ع ١٤)

7. क्या तुम यह गुमान करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अल्लाह तआला शानुहू ने अभी तक नहीं जाना (यानी अभी तक इम्तिहान नहीं लिया) उन लोगों को, जिन्होंने तुम में से जिहाद किया और नहीं जाना (और जांचा) सब्र करने वालों को (और यह बात याद रखना चाहिए कि दीन के लिए हर कोशिश जिहाद में दाख़िल है।)

(आले इमरान, रूकूअ 14)

(٨) وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (ال عمران ع ١٩)

8. अगर तुम सब्र करो और परहेज़गार बने रहो तो (बेहतर है,) क्योंकि सब्र और तक़्वा ताकीदी अहकाम में से हैं।

(आले इमरान, रूकूअ 19)

(٩) وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰى اَتٰهُمْ نَصْرُنَا (انعام ع ٤)

9. बहुत से रसूल जो आपसे पहले हुए हैं उनकी भी (बे ईमानों की तरफ़ से) तकज़ीब की गयी (और उनको सख़्त तक्लीफ़ें पहुँचाई गयीं) पस उन्होंने उस पर सब्र ही किया जो उनकी तकज़ीब की गयी और उनको तक्लीफ़ें पहुँचाई गयीं, यहां तक कि हमारी मदद उनको पहुँची (इसी तरह आप भी उनकी तकलीफ़ों पर सब्र करते रहें।)

(अनआम, रूकूअ 4)

(۱۰) قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ج اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ط وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ o قَالُوْآ اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَاجِئْتَنَا ط قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ o (اعراف ع ۱۵)

10. हज़रत मूसा अलैहि॰ ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहते रहो और सब्र करते रहो, ज़मीन अल्लाह तआला की है, जिसको चाहता है अपने बंदों में से उसका वारिस (और हाकिम) बना देता है, (चुनांचे इस वक़्त फ़िरऔन को दे रखी है) और आख़िर कामियाबी उन्हीं को होती है जो अल्लाह तआला से डरने वाले होते हैं। (अगर तुम सब्र और तक़्वा इख़्तियार करोगे तो अंजामकार तुम्हारी हो जायेगी हज़रत मूसा अलैहि॰ की) क़ौम ने कहा कि हम तो हमेशा मुसीबत ही में रहे, आपके तशरीफ़ लाने से पहले भी (हम पर मुसीबतें डाली जाती थीं और हमारी औलाद को क़त्ल किया जाता था) और आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी (तरह तरह की मुसीबतें हम पर डाली जा रही हैं) हज़रत मूसा अलैहि॰ ने कहा, बहुत जल्द हक़ तआला शानुहू तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देंगे और बजाय उनके तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देंगे, फिर तुम्हें देखेंगे कि तुम कैसा अमल करते हो (शुक्र और इताअत करते हो या नाक़दरी और मासियत करते हो, फिर जैसा तुम्हारा अमल होगा, वैसा तुम्हारे साथ बर्ताव होगा)

(आराफ़, रूकूअ 15)

(۱۱) اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ (توبہ ع ۱۴)

11. बिला शुब्ह अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जानों को और उनके मालों को इस बात के एवज़ (बदले) ख़रीद लिया कि उनको जन्नत मिलेगी। *(तौबा, रूकूअ 14)*

फ़ायदाः- जब मुसलमानों का जान व माल सब अल्लाह तआला के हाथ फ़रोख़्त हो चुका है तो हक़ तआला शानुहू ऐसी चीज़ों में जो उसी की पैदा की हुई हैं और फिर मज़ीद यह कि उनको ख़रीद भी लिया जो चाहे तसर्रूफ़ करे बल्कि मुसलमानों के बेच देने का मुक़्तज़ा तो यह है कि अब ये ख़ुद मुश्तरी (ख़रीदने वाले) तक उसको ख़रीदा हुआ माल पहुँचाने की कोशिश करें और ख़ुद इस पर पेशक़दमी करते चे जाये कि वह ख़ुद अपनी ख़रीदी हुई चीज़ ले, तो उसमें भी रंज व क़लक़ करें।

(١٢) وَاتَّبِعْ مَا يُوحٰى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ج وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ○ (يونس ع ١١)

12. आप उसका इत्तिबाअ करते रहें जो कुछ आपके पास वही भेजी जाती है और (उनकी ईज़ा पर) सब्र कीजिए यहां तक कि अल्लाह तआला शानुहू (ख़ुद ही उनका) फ़ैसला कर देंगे (चाहे दुनिया में हलाकत से करें या आख़िरत में अज़ाब से) और वे सब फ़ैसला करने वालों में बेहतरीन फ़ैसला करने वाले हैं। *(सूरः यूनुस, रूकूअ 11)*

(١٣) وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ج إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ○ وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّي ط إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۙ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ط أُولٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ○ (هود ع ٢)

13. और अगर हम आदमी को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा कर (राहत व दौलत वग़ैरह देकर) उससे छीन लेते हैं तो वह बहुत ना उम्मीद हो जाता है और नाशुक्री करने लगता है, और अगर उसको किसी तक्लीफ़ के बाद जो उस पर वाक़ेअ हुई हो, किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो (बेफ़िक्र होकर) कहने लगता है कि मेरी बुराईयों का दौर ख़त्म हो गया, (फिर वह) इतराने लगता है, शैख़ी मारने लगता है (हालांकि न पहली चीज़ मायूसी और नाशुक्री की थी, न दूसरी हालत अकड़ने व इतराने की) अलबत्ता जो लोग साबिर हैं और नेक अमल करने वाले हैं

(वे न किसी मुसीबत में अल्लाह की रहमत से मायूस होते हैं, न राहत व सरवत में शैख़ी मारते हैं,) यही लोग हैं, जिनके लिए बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र है। (सूरः हूद, रूकूअ 2)

(١٤) إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ○(يوسف ع ١٠)

14. बेशक जो शख़्स अल्लाह से डरता है और (मुसीबतों पर) सब्र करता है तो अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता। (सूरः युसूफ़, रूकूअ 10)

(١٥) إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ○ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ○ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللّٰهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ○ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ○ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰئِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ○ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ○ (رعد ع٣)

15. इसके सिवा दूसरी बात ही नहीं कि नसीहत तो समझदार ही क़ुबूल करते हैं, ये ऐसे लोग हैं जो कि अल्लाह से जो कुछ उन्होंने अह्द किया, उसको पूरा करते हैं और उस (अहद) को तोड़ते नहीं और यह ऐसे लोग हैं कि जिनके ताल्लुक़ात को (रिश्तेदारी वग़ैरह के) क़ायम रखने का अल्लाह ने हुक्म किया है, उनको बाक़ी रखते हैं। (उनको तोड़ते नहीं) और अपने रब से डरते रहते हैं और (क़ियामत के दिन के) हिसाब की सख़्ती से डरते हैं, और यही लोग हैं जो अपने रब की ख़ुशनूदी की ख़ातिर (मुसीबतों पर) सब्र करते हैं और नमाज़ को क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उससे मख़फ़ी तौर पर भी और ऐलानिया भी ख़र्च करते हैं, और बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं (यानी कोई उनके साथ बद सुलूकी करे तो ये फिर भी उसके साथ हुस्ने सुलूक करते हैं) यही लोग हैं जिनके लिए पिछला घर है यानी हमेशा रहने वाली जन्नतें, जिसमें ये लोग दाख़िल होंगे और (उनके साथ) उनके मां बाप और बीवियों और औलाद में जो (जन्नत में दाख़िल होने के)

लायक़ होंगे (यानी मोमिन होंगे, अगरचे वे आमाल और दर्जों के एतिबार से उनके बराबर न हों, दाख़िल होंगे) और फ़रिश्ते उन लोगों के पास जन्नत के हर दरवाज़े से हाज़िर होकर सलाम करेंगे (या सलामती की बशारत देंगे कि तुम हर आफ़त से अब महफ़ूज़ रहोगे) यह सब कुछ इसी वजह से है कि तुमने सब्र किया था (और दीन पर मज़बूत क़ायम रहे थे) पस क्या ही अच्छा है पिछला घर। *(रअ्द, रूकूअ 3)*

फ़ायदा:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जन्नत में सबसे अदना दर्जे का आदमी जो होगा, उसको एक महल साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मोती का मिलेगा, जिसमें सत्तर हज़ार कमरे होंगे और हर कमरे में सत्तर हज़ार दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सलाम करने के लिए आयेंगे।

(١٦) وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۵ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ٥(ابراهيم ع ١)

16. और हमने मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी निशानियां देकर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ निकाल कर लाओ और उनको अल्लाह तआला के मामलात याद दिलाओ (कि जिन पर इनाम हुआ तो कैसा कैसा हुआ और अज़ाब हुआ तो कैसा सख़्त हुआ,) बेशक इन मामलात में इबरतें हैं हर सब्र करने वाले के लिए और हर शुक्र करने वाले के लिए (कि अल्लाह की नेमतों पर शुक्र करे और मुसीबतों पर सब्र करे कि सब्र व शुक्र दोनों उसके यहां मतलूब और मर्ग़ूब हैं।) *(इब्राहीम, रूकूअ 1)*

(١٧) وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِى اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۵ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ٥(نحل ع ٦)

17. और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया (यानी हिजरत करके दूसरी जगह चले गये) बाद इसके कि उन पर (कुफ़्फ़ार की तरफ़ से) ज़ुल्म किया गया था, हम उनको दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब (इस दुनिया के ठिकाने से भी) बहुत बढ़ा हुआ है, काश इन लोगों को (उसकी ख़ूबियों की और बड़ाई की) ख़बर होती। ये वे लोग हैं जिन्होंने (अपनी मुसीबतों पर) सब्र

किया और ये लोग अपने अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं। (घर छोड़ते वक़्त यह नहीं सोचते कि दारूल इस्लाम में जाकर खाने पीने की क्या सूरत होगी।) *(नह्ल, रूकूअ 6)*

(١٨) وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۚ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ٥ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ٥ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ٥ (نحل ع ١٦)

18. और अगर तुम (अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों से) बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया। (और इस वजह से कि दूसरे ने ज़ुल्म की इब्तिदा की है तुम बदले में उससे कहीं ज़्यादा बदला ले लो, इसका हक़ हरगिज़ नहीं है। यह तो जब है जब तुम बदला लेना ही चाहो) और अगर तुम सब्र कर जाओ तो यह बात तो साबिर लोगों के लिए बहुत अच्छी चीज़ है (इसके बाद ख़ास तौर से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़िताब है कि आपकी शान बदला लेने से बुलंद है, इसलिए) आप तो सब्र करें और नहीं है आपका सब्र करना मगर अल्लाह तआला ही की तौफ़ीक़ से, और उन लोगों (की मुख़ालफ़त) पर रंज न कीजिए और जो कुछ भी (मुख़ालिफ़ीन आपकी मुख़ालफ़त में) तदबीरें करते हैं उससे तंगदिल न होजिए (कि ये आपका कुछ भी नहीं कर सकते, इसलिए कि आप साहबे तक़्वा और साहबे एहसान हैं) और अल्लाह तआला उनके साथ होता है जो मुत्तक़ी हों और एहसान करने वाले हों। *(नह्ल, रूकूअ 16)*

(١٩) اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ٥ (كهف ع ١)

19. हमने ज़मीन के ऊपर की सब चीज़ों को ज़मीन के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उसके ज़रिए से लोगों का इम्तिहान लें कि कौन शख़्स ज़्यादा अच्छे अमल करता है। *(कह्फ़, रूकूअ 1)*

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमाई, मैं ने इसका मतलब दर्याफ़्त किया तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि ताकि हक़ तआला शानुहू इसका इम्तिहान

लें कि कौन ज़्यादा अक्लमंद है (जो अक़्ल की बात को इख़्तियार करे) और कौन हक़ तआला शानुहू की नाजायज़ करदा चीज़ों से ज़्यादा एहतियात करता है और कौन अल्लाह तआला की इताअत में जल्दी करता है। हज़रत हसन रज़ि॰ कहते हैं कि इम्तिहान इसका है कि दुनिया को छोड़ने में ज़्यादा सख़्त कौन है? और सुफ़ियान सौरी रह॰ फ़रमाते हैं कि इम्तिहान इसका है कि दुनिया में ज़्यादा ज़ाहिद कौन है? *(दुर्रे मंसूर)*

यानी दुनिया की नेमतों और लज़्ज़तों से सब्र करने वाला कौन सबसे ज़्यादा है।

(٢٠) فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى (طٰهٰ ع٨)

20. पस आप उनकी बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह किया कीजिए (जिसमें अल्लाह तआला की हम्द व सना और नमाज़ सब दाख़िल हैं।) आफ़ताब निकलने से पहले (जिसमें सुबह की नमाज़ भी आ गयी) और आफ़ताब ग़ुरूब होने से पहले (जिसमें ज़ुहर, अस्र की नमाज़ भी आ गयी) और रात के हिस्से में भी तस्बीह किया कीजिये (जिसमें मग़रिब, इशा की नमाज़ भी आ गई) दिन के अव्वल हिस्से में और आख़िर हिस्से में (तस्बीह के लिए मुकर्रर (दोबारा) कहा जाता है, जिसमें सुबह और अस्र की नमाज़ की ज़्यादा ताकीद आ गयी। चुनांचे बहुत सी अहादीस में इनकी ख़ास ताकीद आयी है और सुबह शाम की तस्बीहें भी आ गयीं) ताकि (आपको इन सब चीज़ों पर जो आख़िरत का बहुत ज़्यादा सवाब मिले, उससे) आप ख़ुश हो जायें। *(ताहा, रूकूअ 8)*

(٢١) وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ (حج ع٥)

21. और आप (अल्लाह के हुक्म के सामने) गर्दन झुका देने वालों को ख़ुशख़बरी (अल्लाह की रिज़ा और जन्नत की) सुना दीजिए, जो ऐसे लोग हैं कि जब उनके सामने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया

जाए तो उन के दिल (उसकी अज़्मत और ख़ौफ़ से) डर जाते हैं, और जो उन पर मुसीबत पड़ती है उस पर सब्र करते हैं और जो नमाज़ की पाबंदी करते हैं और उस चीज़ से जो हमने उनको दी है ख़र्च करते हैं।

(सूरः हज, रूकूअ 5)

यह आयत पहली फ़स्ल के नं॰ 16 पर मुफ़स्सल गुज़र चुकी है।

(٢٢) الٓمّٓ ۚ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوٓا أَن يَقُولُوٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۝ أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ أَن يَّسْبِقُوْنَا ۚ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ (عنکبوت ع١)

22. क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि वे महज़ इतना कहने पर छूट जाएंगे, कि हम तो मुसलमान हैं और उनको (मुख़्तलिफ़ अनवाअ् की मसाइब से) आज़माया न जाएगा? (ऐसा नहीं हो सकता, यह दुनिया इम्तिहान का घर है) और हम तो उन लोगों का इम्तिहान ले चुके हैं जो इनसे पहले गुज़रे (उनमें भी) बाज़ अपने दावों में सच्चे निकले और बाज़ झूठे। इसी तरह अब भी अल्लाह तआला (इम्तिहानी क़ायदे से) जान कर रहेगा। उन लोगों को जिन्होंने (अपने ईमान और मुहब्बत के दावों में) सच कहा और उन लोगों को जिन्होंने झूठ बोला (चुनांचे ऐसे ही इम्तिहानात में जो सच्चे मुसलमान हैं वे इन हवादिस से और ज़्यादा अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् हो जाते हैं, और जो नालायक़ हैं वे और ज़्यादा गुमराही में मुब्तिला हो जाते हैं, हत्ताकि बाज़ मुर्तद होकर इस्लाम ही छोड़ बैठते हैं या मसाइब के डर से बुराईयों की हिमायत शुरू कर देते हैं) हां, तो ये लोग जो बुराईयां कर रहे हैं क्या यह समझ रहे हैं कि हमसे कहीं निकल जायेंगे, उनकी यह तजवीज़ निहायत बेहूदा है।

(अन्कबूत, रूकूअ 1)

(٢٣) نِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ وَكَأَيِّن مِّن دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ (عنکبوت ع٦)

23. नेक काम करने वालों का क्या ही अच्छा अज्र है, वे लोग जिन्होंने (मुसीबतों पर) सब्र किया और वे (हर तंगी में रोज़ी की तरफ़ से हो या और किसी बात से) अपने रब पर भरोसा रखते हैं (और अगर

तुम्हें यह ख़्याल हो कि आख़िर मआश का ज़रिया क्या होगा तो आख़िर यह सोचो कि) बहुत से जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी उठाकर नहीं रखते अल्लाह तआला ही उनको रोज़ी देता है और वही तुमको भी रोज़ी देता है वह (हर मांगने वाले की बात को) सुनने वाला है और (हर शख़्स के हाल को) जानने वाला है (उसी से मांगो, वह तुम्हारी हालत से बख़ूबी वाक़िफ़ है, जितना मुनासिब समझेगा, अता करेगा।)

(अन्‌कबूत, रूकूअ 6)

(٢٤) اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ٥ (زمر ع ٢)

24. इसके सिवा दूसरी बात नहीं कि सब्र करने वालों को उनका बदला बे हिसाब, (बेशुमार) मिलता है। *(ज़ुमर, रूकूअ 2)*

(٢٥) وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ ٥ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْحَظٍّ عَظِيْمٍ ٥ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥ (حٰمٓ سجده ع ٥)

25. और भलाई और बुराई कभी बराबर नहीं होती (बल्कि हर एक के नतीजे और असरात जुदा जुदा हैं, जब यह बात है तो) आप (और इसी तरह आपका इत्तिबाअ् करने वाले भी) बुराई को नेकी के साथ हटाया कीजिए, फिर एकदम वह शख़्स, जिसमें और आप में अदावत है ऐसा हो जायेगा जैसा कि दिली दोस्त होता है। (यानी बुराई का बदला बुराई से करना अदावत को कम नहीं किया करता बल्कि बढ़ाया करता है, और बुराई का बदला एहसान से करना, अगर दूसरा बिल्कुल ही कमीना न हो तो उसको अदावत छोड़ने पर मजबूर कर देता है, हत्ताकि वह एहसान मंद होकर दोस्त बन जाता है, लेकिन चूंकि बुराई और ईज़ा रसानी का बदला एहसान से करना बहुत दुश्वार है इसलिए इर्शाद है कि) और यह आदत उन्हीं को दी जाती है जो साबिर हों (कि मसाइब का तहम्मुल उनकी आदत हो गयी हो) और यह आदत उसी को दी जाती है जो बड़ा साहिबे नसीब हो, और अगर ऐसे वक़्त आपको शैतान की तरफ़ से कुछ वसवसा आने लगे (मसलन यही कि उसके

साथ भलाई करने से अपनी तौहीन होगी या उसका हौसला बढ़ जायेगा वग़ैरह वग़ैरह) तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कीजिए।

(हामीम सज्द:, रूकूअ 5)

(٢٦) لَايَسْئَمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِوَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوْسٌ قَنُوْطٌ ۝ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ ۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ (حٰمٓ سجده ع ٦)

26. आदमी का दिल तरक़्क़ी की ख़्वाहिश से कभी नहीं भरता और अगर उसको कुछ तक्लीफ़ पहुँच जाये तो बिल्कुल मायूस, ना उम्मीद बन जाता है (हालांकि अल्लाह की ज़ात से ना उम्मीद कभी भी नहीं होना चाहिए) और अगर उस तक्लीफ़ के बाद जो उसको पहुँची, हम अपनी रहमत का मज़ा चखायें तो कहता है कि यह तो (आईनी तौर पर) मेरा हक़ है ही (हालांकि न अल्लाह तआला की ज़ात से ना उम्मीद होना चाहिए, न अपना कोई इस्तिहक़ाक़ है।) *(हामीम सज्द:, रूकूअ 6)*

(٢٧) وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ (شورٰى ع ٤)

27. और बुराई का बदला उसी क़िस्म की बुराई है (यानी जिस क़िस्म की बुराई किसी ने की, उसी क़िस्म की बुराई से बदला लिया जा सकता है, बशर्ते कि वह फ़ेअल जायज़ हो, मसलन सख़्त कलामी का बदला सख़्त कलामी, मार का बदला मार है, यह नहीं कि सख़्त कलामी का बदला मार से लिया जाए) फिर जो शख़्स (बदला ही न ले बल्कि) माफ़ कर दे और इस्लाह करे (यानी उसके साथ अच्छाई का बर्ताव करे) तो उसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। वाक़ई अल्लाह तआला ज़ालिमों को महबूब नहीं रखते, और जो अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बराबर का बदला ले ले, पस ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं होता। इल्ज़ाम सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और दुनिया में सरकशी करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है और जो

(दूसरों के ज़ुल्म पर) सब्र करे और (उसको) माफ़ कर दे, यह अलबत्ता बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (यानी मज़ालिम पर सब्र करना और माफ़ करना बड़ी उलुल अज़्मी (हिम्मत) की बात है।)

(शूरा, रूकूअ 4)

(۲۸) تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ ٥ نِالَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ط (ملك ع ١)

28. वह (पाक ज़ात) बड़ी आलीशान है जिसके क़ब्ज़े में तमाम मुल्क है (सारी दुनिया की सल्तनतें उसी के कब्ज़े में हैं) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। वह (पाक) ज़ात है जिसने मौत और ज़िन्दगी को इसलिए पैदा किया ताकि तुम्हारा इम्तिहान करे कि कौन शख़्स अमल में ज़्यादा अच्छा है। हज़रत क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस घर को ज़िन्दगी और मौत का घर बनाया है और आख़िरत के घर को बदला और बक़ा का घर बनाया हैं। इस घर की सारी तकालीफ़ का मुन्तहा मौत है, और वह बहरहाल आने वाली चीज़ है, और उस घर की तक्लीफ़ की कोई इन्तिहा ही नहीं कि वहां मौत भी नहीं है।

(सूर: मुल्क, रूकूअ 1)

(۲۹) هَلْ اَتٰی عَلَی الْاِنْسَانِ حِیْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ یَكُنْ شَیْئًا مَّذْكُوْرًا ٥ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ق نَّبْتَلِیْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِیْعًا بَصِیْرًا ٥ اِنَّا هَدَیْنٰهُ السَّبِیْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ٥ (دهر ع ١)

29. बेशक इंसान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त आ चुका है कि वह कुछ भी क़ाबिले ज़िक्र न था (कि उससे पहले मनी था और उससे पहले वह भी न था) हमने उसको नुत्फ़-ए-मख़्लूत से (यानी मां बाप की मनी के मिलने से) पैदा किया, कि हम उसको जांचें, फिर हमने उसको सुनता, देखता, बनाया (यानी आंख कान दिए कि हक़ बात ख़ुद देखे या दूसरों से सुने, फिर) हमने उसको (भलाई का) रास्ता बता दिया (फिर वे आदमी दो तरह के हो गए) या तो शुक्र गुज़ार (और मोमिन बन गया) या नाशुक्री करने वाला (काफ़िर) बन गया। *(दहर, रूकूअ 1)*

फ़ायदा:- जब यह दारूल इम्तिहान है, ऐसी हालत में किसी हालत पर भी नाशुक्री करते हुए यह सोचना ज़रूरी है कि अल्लाह के कितने इनामात ऐसे

हैं जिन पर शुक्र इस तक्लीफ और मुसीबत से ज़्यादा ज़रूरी है।

(۳۰) فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝ (الفجر ع۱)

30. पस आदमी का जब हक़ तआला शानुहू इम्तिहान लेता है, पस (इम्तिहान के तौर पर कभी) उस पर इनाम व इकराम फ़रमाता है(माल का, जाह का और इस क़िस्म की चीज़ों का, ताकि इन चीज़ों में अल्लाह तआला की शुक्र गुज़ारी का इम्तिहान हो और यह जांचा जाए कि अल्लाह की इन नेमतों में क्या कार गुज़ारी की, यह माल और जाह उसके रास्ते में ख़र्च हुए या नाराज़ी में) तो वह कहता है कि मेरे रब ने मेरा इक्राम किया (यानी अपने मुकर्रम और मुअज़्ज़ज़ होने का घमंड शुरू हो जाता है हालांकि यह घमंड की चीज़ नहीं है, और अगरचे अल्लाह का शुक्र उसकी नेमतों पर बहुत ज़रूरी है मगर उसके साथ ही इन नेमतों के इम्तिहानी पहलू का ख़ौफ़ भी ज़रूरी है, और जब हक़ तआला शानुहू को आदमी का दूसरी तरह इम्तिहान करना मक़्सूद होता है) और उसको जांचता है। इस तरह पर कि उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है (जिससे उसके सब्र और रिज़ा का इम्तिहान मक़्सूद होता) तो कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया। (यानी मेरे इस्तिहक़ाक़के इक्राम के बावजूद मुझे नज़रों से गिरा रखा है, हालांकि न माल व दौलत इक्राम की दलील है न फ़क़र व फ़ाक़ा इहानत की दलील है), हरगिज़ नहीं, (यह बात बिल्कुल नहीं है कि रोज़ी की तंगी इहानत की बात हो) बल्कि (मूजिबे इहानत ये चीज़ें हैं कि) तुम लोग यतीम का इक्राम नहीं करते और दूसरों को भी मिस्कीन को खाना खिलाने की तर्ग़ीब नहीं देते, और मीरास का माल सारा खा जाते हो (और दूसरों का हक़ भी हज़्म कर जाते हो, बिलखुसूस यतीमों और ज़ओफ़ों का जो तुमसे लड़ भी न सकते

हों) और तुम माल से बहुत ही मुहब्बत रखते हो (जो जड़ है सारी बुराईयों की, सारे मज़ालिम की, सारे उयूब की, इसलिए कि दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की जड़ है, तुम लोग इन चीज़ों को हल्का समझते हो) हरगिज़ नहीं (ये मामूली चीज़ें नहीं हैं बल्कि) जिस वक़्त ज़मीन को तोड़कर रेज़ा रेज़ा कर दिया जाएगा और आपका रब और फ़रिश्ते जूक़ जूक़ (मैदाने हश्र में) आयेंगे और उस दिन जहन्नम को (सामने) लाया जाएगा, उस दिन आदमी को समझ आयेगी और उस वक़्त समझ आने का वक़्त कहां (रहेगा, उस दिन का समझ में आना कारआमद नहीं) उस दिन आदमी कहेगा कि काश! मैं आज की ज़िन्दगी के वास्ते कुछ ज़ख़ीरा आगे भेज देता। *(सूर: फ़ज्र, रूकूअ 1)*

(٣١) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ وَالْعَصْرِ ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ○ ع

31. क़सम है ज़माने की (कि जिसके तग़य्युरात मूजिबे इब्रत हैं, कहीं रंज, कहीं ख़ुशी, कहीं सरवत, कहीं ग़ुर्बत, कहीं सेहत, कहीं बीमारी) कि इंसान (अपनी अज़ीज़ उम्र को ज़ाया करके) बड़े ख़सारे में है, मगर वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए और एक दूसरे को हक़ (बात कहने की और हक़ पर क़ायम रहने की) वसीयत (और ताकीद) करते रहे, और एक दूसरे को सब्र की वसीयत करते रहे (जिसमें ताआत पर एहतिमाम भी दाख़िल है, और शहवतों और ना जायज़ उमूर से नफ़्स को रोकना भी दाख़िल है और मसाइब और ज़माने के हवादिस पर सब्र करना भी दाख़िल है।) *(सूर: अस्र)*

ये इकत्तीस आयात इशारे के तौर पर ज़िक्र की गयी हैं। हर आयतें शरीफ़ा पर अगर फ़ायदा और तंबीह लिखी जाये तो बहुत तवील हो जाए, मुश्तरका तरीक़े से ये मज़्मून सब ही में मुश्तरक है कि यह दुनिया इम्तिहान की जगह है। जिसकी न दौलत, इज़्ज़त बाअिसे ग़ुरूर व इफ़्तिख़ार, न फ़ाक़ा व फ़क्र बाअिसे इहानत और हिक़ारत है। माल का वजूद भी मूजिबे शुक्र होने के साथ इम्तिहान का एक मज़्मून है जैसा कि फ़क्र व फ़ाक़ा भी मूजिबे सब्र होने के अलावा रिज़ा का इम्तिहान है और माल का वजूद इम्तिहान के एतिबार से ज़्यादा सख़्त है, इसलिए कि इस इम्तिहान में आदमी बहुत कम पास होते हैं, फ़ैल

ज़्यादा होते हैं। इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मुझे तुम्हारे ऊपर फ़क्र व फ़ाक़े का इतना ख़ौफ़ नहीं है जितना इस बात का ख़ौफ़ है कि दुनिया की फ़ुतूहात और उसकी नेमतें तुम पर फैल जाएं और तुम उसमें ऐसा दिल लगाकर बैठो जैसा कि पहले लोग उसके साथ दिल लगा बैठे। पस यह आफ़त तुम्हें भी हलाक कर दे जैसा कि उनको हलाक कर चुकी है। इस लिए इसके फ़ित्ने से बहुत ज़्यादा बचना चाहिए और नादारी और मसाइब को भी इम्तिहान की हैसियत से बर्दाश्त करना चाहिए।

(٣)اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۙالَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ؕاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕلَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۚ

3. इसके सिवा दूसरी बात ही नहीं कि ईमान वाले तो ऐसे लोग होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआला का ज़िक्र आता है (तो उसकी अज़्मत व ख़ौफ़ से) उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआला की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जायें तो वे आयतें उनके ईमान को मज़बूत कर दें, और वे सिर्फ़ अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं, और नमाज़ को क़ायम करते हैं। और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं, पस ईमान वाले हक़ीक़तन यही लोग हैं, उनके लिए बड़े बड़े दर्जे अल्लाह तआला के पास हैं और (उनके लिए उनके गुनाहों से) माफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी है। *(सूर: अन्फ़ाल, रुकूअ 1)*

फ़ायदाः- यह आयते शरीफ़ा पहली फ़स्ल के नं॰ 13 पर भी गुज़र चुकी है, यहां इसलिए दोबारा लिखी है कि हक़ीक़ी मोमिन की शान सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू पर तवक्कुल करना, उसी पर ऐतिमाद करना, उसी पर भरोसा करना, उसके ग़ैर की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना, इस आयते शरीफ़ा में वारिद है, और इस पर दर्जात बुलंद होना, गुनाहों का माफ़ होना और इज़्ज़त की रोज़ी का वायदा मज़कूर है। इनमें से हर चीज़ ऐसी है कि वह तंहा भी तवक्कुल पर इंतिहाई कोशिश का मूजिब होती है, चे जाये कि तीन ऐसे ऊँचे वायदे उस पर अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से हों, उस के बाद जितनी भी इस सिफ़त के हासिल करने की कोशिश की जाए, कम है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पर तवक्कुल का

मतलब यह है कि उसके ग़ैर से कोई उम्मीद न रखी जाए। हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पर तवक्कुल ईमान का मजमूआ है।

(दुर्रे मंसूर)

अगर क़ुरआन पाक में सिर्फ़ एक ही आयत अल्लाह पर ऐतिमाद और भरोसे के मुताल्लिक़ नाज़िल होती तब भी बहुत काफ़ी थी, लेकिन क़ुरआन पाक में इस कसरत से अल्लाह पर ऐतिमाद और सिर्फ़ उसी पाक ज़ात पर ऐतिमाद करना और मसाइब और हाजात में सिर्फ़ उसी को पुकारना और उसी से मदद चाहना, उसी पर नज़र रखना वारिद हुआ है कि बहुत कम दूसरे मज़ामीन इतनी कसरत से वारिद हुए होंगे। बार बार इसी का हुक्म है और नेक और पसंदीदा लोगों के अहवाल में इसी का ज़िक्र है, इसी की तर्ग़ीब है और होना भी चाहिए कि हक़ीक़त में तवक्कुल तौहीद का समरा है, जो शख़्स तौहीद में जितना ज़्यादा पुख़्ता होगा उतना ही उसका तवक्कुल बढ़ा हुआ होगा। और चूंकि तौहीद ही इस्लाम की बुनियाद है, ईमान की जड़ है, बग़ैर तौहीद के कोई चीज़ भी मोतबर नहीं सारे मज़हब और सारी शरीअत का मदार तौहीद ही पर है, इसलिए जितना भी इसका एहतिमाम वारिद हो, ज़ाहिर है और फिर अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुरआन पाक में इतना ऊँचा परवाना-ए-रिज़ा तवक्कुल पर इर्शाद फ़रमाया है कि मर मिटने के क़ाबिल है। अल्लाह का पाक इर्शाद है कि अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों को महबूब रखता है। सिफ़ते महबूबियत के बराबर कोई सिफ़त दुनिया में हो सकती है? कोई शख़्स मालिकुल मुल्क शहंशाहे आलम का महबूब बन जाए, इससे बढ़कर कौन सा इज़्ज़त व इफ़्तिख़ार का मक़ाम दुनिया या आख़िरत में हो सकता है। फिर उसकी ज़िम्मेदारी का भी अल्लाह पाक का वायदा है कि जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल कर ले तो वह उसको काफ़ी है। भला फिर ऐसे शख़्स को किसी ज़रूरत के लिए किसी और की क्या हाजत बाक़ी रहेगी? इसी लिए हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि अगर तुम लोग अल्लाह पर ऐसा तवक्कुल कर लो जैसा कि उसका हक़ है तो तुमको ऐसी तरह रोज़ी अता करे जैसा कि परिन्दों को अता करता है। एक और हदीस में है कि जो शख़्स अल्लाह तआला की तरफ़ बिल्कुल्लिया मुन्क़ता हो जाए तो हक़ तआला शानुहू उसकी हर मशक़्क़त की किफ़ायत फ़रमाता है और ऐसी तरह उस को रोज़ी अता करता है जिसका उसको गुमान भी न हो। *(एह्या)*

अहादीस के सिलसिले में पहली हदीस के ज़ैल में भी मुतअद्दद

रिवायात इस मज़्मून के मुनासिब आ रही हैं। इस जगह भी हस्बे मामूल चंद आयात की तरफ़ इशारा करना मक़्सूद है जिनसे अल्लाह पर तवक्कुल और उसी की तरफ़ हाजात में रूजूअ् का इर्शाद वारिद है और सिर्फ़ नमूने के तौर पर चंद आयात ज़िक्र की जाती हैं कि इख़्तिसार के ख़्याल से हर जगह इज्माल और इशारात ही पर इक्तिफ़ा किया गया। अगर हम लोगों को दीन का कुछ ख़्याल हो, आख़िरत का एहतिमाम हो, दुनिया के बेकार मश्ग़लों से हमको थोड़ा बहुत वक़्त ख़ाली मिल जाए तो ये आयात और अहादीस बहुत इहतिमाम से बहुत ग़ौर व फ़िक्र से सोचने की चीज़ें हैं।

(١) وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ٥ (ال عمران ع ٣)

1. मोमिनों को सिर्फ़ अल्लाह तआला ही पर तवक्कुल करना चाहिए, यानी किसी दूसरे पर भरोसा ज़रा भी न करना चाहिए (आले इमरान, रूकूअ् 13) यह मज़्मून इन ही अल्फ़ाज़ के साथ क़ुरआन पाक में कई जगह वारिद हुआ है, बार बार नाज़िल हुआ है। (आले इमरान, रूकूअ 17), (माइदा, रूकूअ 2), (तौबा, रूकूअ 7), (इब्राहीम, रूकूअ 2), (मुजादला, रूकूअ 2), (तग़ाबुन, रूकूअ 1), इन सब आयात में यही इर्शाद है।

(٢) قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ٥ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ٥ (ال عمران ع ٨)

2. (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल (जिसमें रोज़ी भी दाख़िल है) तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में है, वह उसको जिसे चाहें अता कर दें, और अल्लाह तआला बड़ी वुस्अत वाले हैं, उनके यहां फ़ज़्ल की कमी नहीं, ख़ूब जानने वाले हैं। (कि किसको किस वक़्त कितना देना चाहिए), ख़ास कर देते हैं। अपनी रहमत (और फ़ज़्ल) के साथ जिसको चाहें और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं। *(सूर: आले इमरान, रूकूअ 8)*

(٣) اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ٥ (ال عمران ع ١٧)

3. हक़ तआला शानुहू तवक्कुल करने वालों को महबूब रखते हैं। *(आले इमरान, रूकूअ 17)*

फ़ायदा:- और जिसको अल्लाह तआला महबूब बना ले उसके उरूज (बुलन्दी) का क्या कहना।

(٤) اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ٭ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ٭ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٥ (اٰلِ عمران ١٨)

4. हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में एक ख़ास वाक़िए की तरफ़ इशारा है जिसमें इर्शाद है कि ये ऐसे लोग हैं कि जब इनसे लोगों ने कहा कि उन लोगों ने (यानी दुश्मनों ने) तुम्हारे (मुक़ाबले के) लिए बड़ा सामान जमा कर रखा है सो तुमको उनसे अंदेशा करना चाहिए, तो इस ख़बर ने उनके ईमान को और ज़्यादा मज़बूत कर दिया और कहने लगे कि हमें हक़ तआला शानुहू काफ़ी है (हर मुसीबत में वही किफ़ायत फ़रमाने वाला है) और वही बेहतरीन कारसाज़ है। पस ये लोग ख़ुदा की नेमत और फ़ज़्ल के साथ (उस मौक़े से ऐसी तरह) वापस हुए कि उनको कोई मज़र्रत न पहुँची और वे रिज़ा-ए-हक़ के ताबेअ रहे और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (मुसलमानों ! ऐसे हवादिस में एक बात समझ लो कि इस क़िस्म के वाक़िआत में) शैतान अपने दोस्तों से डराया करता है। तुम उनसे न डरा करो और सिर्फ़ मुझी से डरा करो अगर तुम मोमिन हो।

(आले इमरान, रूकूअ 18)

मतलब यह है कि जिस वक़्त दुश्मनों के मुक़ाबले और हमले की ख़बरें सुनो तो उससे ख़ौफ़ज़दा और मुतवह्हिश होने की बात नहीं है, अल्लाह पर ऐतिमादे कामिल और पूरा भरोसा रखते हुए अपनी इमकानी तैयारी करो। और ख़ौफ़ सिर्फ़ इस बात का रखो कि हमसे कोई बात मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सादिर न हो कि असल हलाकत यही है जो दुनिया की भी हलाकत है और आख़िरत की हलाकत तो है ही। उसके अलावा किसी से ख़ौफ़ की बात नहीं है, इसलिए कि दूसरे आदमी इससे ज़्यादा तो कुछ नहीं कर सकते कि वे मार देंगे सो मौत बहरहाल आने वाली चीज़ है और अपने वक़्त से पहले आ नहीं सकती।

(٥) وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۟ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ٥ (نساء ع ٧)

5. अल्लाह तआला शानुहू तुम्हारी मदद (इआनत) के लिए भी काफ़ी है और तुम्हारी हि..यत के लिए भी काफ़ी है।

(निसा, रूकूअ 7)

(٦) وَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ وَكَفٰى بِاللهِ وَكِيْلًا ﴿نساء ع ١١﴾

6. आप अल्लाह ही पर तवक्कुल कीजिए, वह कारसाज़ होने के लिए काफ़ी है। *(निसा, रूकूअ 11)*

(٧) وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٥ (مآئده ع ٤)

7. सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो।

(माइदा, रूकूअ 4)

(٨) قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ (انعام ع ٢)

8. आप कह दीजिए क्या अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊँ, वह अल्लाह जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है, वह सबको रोज़ी देता है उसको कोई (बवजह एहतियाज न होने के) रोज़ी नहीं देता। *(अनआम, रूकूअ 2)*

(٩) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ٥ (انعام ع ٢)

9. अगर अल्लाह तआला तुझे कोई मज़र्रत पहुंचायें तो उसका दूर करने वाला उनके सिवा कोई नहीं और अगर वह कोई नफ़ा पहुंचायें तो (कोई रोकने वाला नहीं) वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

(अनआम, रूकूअ 2)

(١٠) وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ٥ (انفال ع ٧)

10. और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है (तो वह अक्सर ग़ालिब रहता है, इसलिए कि) अल्लाह तआला बिला शुब्ह ज़बर्दस्त है (वह अपने ऊपर ऐतिमाद रखने वाले को ग़ालिब करता है और अगर कभी ऐसा न हो तो उसमें कोई हिक्मत होती है (क्योंकि) वह हकीम है। *(अन्फ़ाल, रूकूअ 7)*

(۱۱) وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ (انفال ع٨)

11. आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए बेशक, वह सुनने वाला है, जानने वाला है (लोगों की पुकार को भी सुनता है और उनके अह्वाल से भी बख़ूबी वाक़िफ़ है।) *(अन्फ़ाल, रूकूअ 8)*

(۱۲) وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ (يونس ع٢)

12. जब इंसान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी, फिर जब हम (उसकी आह व ज़ारी से) वह तक्लीफ़ हटा देते हैं तो फिर वह (हमसे ऐसा बे ताल्लुक़) हो जाता है गोया हमको किसी तक्लीफ़ के लिए पुकारा ही न था (यह बड़ी हिमाक़त है।) *(युनूस, रूकूअ 2)*

(۱۳) قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ (يونس ع ٤)

13. आप उनसे पूछें वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता है या वह कौन है जो तुम्हारे कानों और आंखों का मालिक है और वह कौन है जो ज़िन्दा को मुर्दे से और मुर्दे को ज़िंदा से पैदा करता है। और वह कौन है जो सारे कामों की तदबीरें करता है, पस वे लामुहाला यही कहेंगे कि ये सब काम अल्लाह तआला ही करता है। फिर आप उनसे कहिए कि तुम फिर उससे क्यों डरते नहीं (दूसरे से क्यों डरते हो) *(यूनुस, रूकूअ 4)*

(۱٤) وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ۝ فَقَالُوا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ (يونس ع٩)

14. (और मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से) फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम, अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उस पर तवक्कुल करो, अगर तुम मुसलमान हो, पस उन लोगों ने (जवाब में) कहा कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया। *(युनूस, रूकूअ 9)*

(١٠) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۚ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○ (يونس ع ١١)

15. अगर तुमको अल्लाह तआला कोई तक्लीफ़ पहुँचाये तो अलावा उसके कोई उसका दूर करने वाला नहीं, और अगर वह कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, वह अपना फ़ज़्ल जिसको चाहे पहुँचा दे, वह बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। *(यूनुस, रूकूअ 11)*

(١٦) وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (هود ع ١)

16. और कोई जानदार ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो (पस उसी से रोज़ी तलब करना चाहिए) *(हूद, रूकूअ 1)*

(١٧) قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ○ (رعد ع ٤)

17. आप कह दीजिए कि वही मेरा रब है (मेरा मुरब्बी है) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है, मैं ने उसी पर भरोसा कर लिया है, और उसी की तरफ़ मुझे लौट कर जाना है।

(रअद, रूकूअ 4)

(١٨) اَلَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○ (نحل ع ٦)

18. यही लोग (जिनकी ऊपर तारीफ़ हो रही है) ऐसे हैं जो (मसाइब में) सब्र करते हैं और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं(यह नहीं सोचते कि हिजरत के बाद खाने का क्या इंतिज़ाम होगा)।

(नह्ल, रूकूअ 6)

(١٩) اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○ (نحل ع ١٣)

19. उसका (यानी शैतान का) क़ाबू ऐसे लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर (दिल) से भरोसा रखते हैं।

(नह्ल, रूकूअ 13)

(٢٠) وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ○ (بني اسرائيل ع ١)

20. और हमने मूसा (अलै॰) को किताब (तौरात) दी और उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया और उसमें और अहकाम के साथ यह भी हुक्म (दिया) (कि तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न बनाओ।) *(बनी इस्राईल, रूकूअ 1)*

(٢١) وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ إِلَّا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُوْرًا ٥ (بنی اسرائیل ع ٧)

21. और जब तुमको दरिया में (तूफ़ान वग़ैरह की) मज़र्रत पहुँचती है, उस वक़्त अल्लाह तआला के सिवा और जितनों को पुकारा करते थे (उनकी इबादत करते थे, उनसे मदद चाहते थे) सब खोए जाते हैं (दिल में भी उनका ख़्याल नहीं आता, उस वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को पुकारा जाता है) और जब अल्लाह तआला तुमको ख़ुशकी पर पहुँचा देता है तो उस से रूगरदानी करने लगते हो। वाक़ई इंसान बड़ा नाशुक्रा है। *(बनी इस्राईल, रूकूअ 7)*

(٢٢) مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۫ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ٥ (کهف ع ٤)

22. न तो उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई मदद करने वाला है और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है कि पार्लियामेंट से राय ले। *(कहफ़, रूकूअ 4)*

(٢٣) يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ٥ (حج ع ٢)

23. अल्लाह तआला के अलावा ऐसी चीज़ को पुकारता है (उस की इबादत करता है) जो न नुक़्सान दे सकती है, न नफ़ा, यह इंतिहाई गुमराही है। *(हज्ज, रूकूअ 2)*

(٢٤) وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ (فرقان ع ٥)

24. उस (पाक ज़ात) पर जो ज़िंदा है और कभी उस पर मौत तारी न होगी, तवक्कुल कीजिए। *(फ़ुरक़ान, रूकूअ 5)*

(٢٥) وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ٥ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ٥ (شعراء ع ٥)

25. वही मुझे खिलाता पिलाता है और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही शिफ़ा देता है।
(शुअरा, रूकूअ 5)

(٢٦) وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ (شعرآء ع ١١)

26. और आप उस (पाक ज़ात) पर तवक्कुल कीजिए जो क़ादिर है, रहीम है।
(शुअरा, रूकूअ 11)

(٢٧) فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ (عنکبوت ع ٢)

27. पस तुम लोग रिज़्क़ ख़ुदा से मांगो (कि वही रिज़्क़ का मालिक है) उसकी इबादत करो, उसका शुक्र अदा करो, उसी की तरफ़ (क़ियामत में) लौट कर जाना है।
(अन्कबूत, रूकूअ 2)

(٢٨) وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

28. कितने जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी उठाकर नहीं रखते, अल्लाह तआला ही उनको रोज़ी पहुँचाता है और तुमको भी (और वही भरोसे के क़ाबिल है क्योंकि) वह सुनने वाला, जानने वाला है।

(अन्कबूत, रूकूअ 6)

(٢٩) وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ (احزاب ع ١)

29. और आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए वही कारसाज़ी के लिये काफ़ी है।

(٣٠) قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ (احزاب ع ٢)

30. आप उनसे यह फ़रमा दीजिए कि वह कौन है जो अल्लाह तआला से तुमको बचा सके। अगर अल्लाह तआला तुमको कोई बुराई (किसी क़िस्म की मज़र्रत नुक़्सान) पहुँचाना चाहे (तो कौन रोक सकता है) या वह कौन है जो ख़ुदा की रहमत को तुमसे रोक सके। अगर वह तुम पर किसी क़िस्म का फ़ज़्ल करना चाहे, (तो सारी दुनिया मिल कर नहीं रोक सकती, इसको ख़ूब समझ लें कि) वे ख़ुदा के सिवा न तो कोई अपना हिमायती पायेंगे, न मददगार।
(अहज़ाब, रूकूअ 2)

(۳۱) اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ (زخرف ع ٤)

31. क्या अल्लाह तआला अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं ?

(ज़ुमर, रूकूअ 4)

(۳۲) قُلْ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ اِنْ اَرَادَنِیَ اللّٰہُ بِضُرٍّ ھَلْ ھُنَّ کٰشِفٰتُ ضُرِّہٖٓ اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَۃٍ ھَلْ ھُنَّ مُمْسِکٰتُ رَحْمَتِہٖ ؕ قُلْ حَسْبِیَ اللّٰہُ عَلَیْہِ یَتَوَکَّلُ الْمُتَوَکِّلُوْنَ ○(زمر ع ٤)

32. आप उनसे फ़रमायें कि अच्छा तो यह बताओ कि ख़ुदा के सिवा तुम जिन लोगों को पुकारते हो (उनकी बंदगी करते हो) अगर अल्लाह तआला मुझे कोई तक्लीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर अल्लाह तआला मुझ पर कोई रहमत (इनायत) करना चाहे तो क्या ये उसको रोक सकते हैं। आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है और उसी पर तवक्कुल करने वाले तवक्कुल करते हैं। *(ज़ुमर, रूकूअ 4)*

(۳۳) ذٰلِکُمُ اللّٰہُ رَبِّیْ عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَاِلَیْہِ اُنِیْبُ ○ (شوریٰ ع ۲)

33. यही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर तवक्कुल रखता हूँ, और उसी की तरफ़ रूजूअ् करता हूँ। *(शूरा, रूकूअ 2)*

(۳٤) اَللّٰہُ لَطِیْفٌ بِعِبَادِہٖ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ ج وَھُوَ الْقَوِیُّ الْعَزِیْزُ ○(شوریٰ ع ۲)

34. अल्लाह तआला अपने बंदों पर मेहरबान है, जिस शख़्स को जितनी ज़्यादा चाहता है रोज़ी देता है, वह क़ुव्वत वाला और ज़बर्दस्त है।

(शूरा, रूकूअ 2)

(۳۵) وَمَا لَکُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰہِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ○(شوریٰ ع ٤)

35. और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है न मददगार है। *(शूरा, रूकूअ 8)*

(۳٦) وَمَا عِنْدَ اللّٰہِ خَیْرٌ وَّاَبْقٰی لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰی رَبِّھِمْ یَتَوَکَّلُوْنَ ○ (شوریٰ ٤)

36. और जो चीज़ अल्लाह तआला के पास है वह बदरजहा, बेहतर और बाक़ी रहने वाली है, वह उन लोगों के लिए है जो ईमान ले

आए और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं। *(शूरा, रूकूअ 4)*

(٣٧) وَفِى السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ (ذاريات ع ١)

37. और तुम्हारा रिज़्क़ और जिन चीज़ों को तुमसे वायदा किया गया है वह सब आसमान में है (यानी वहां लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है या वहां से बारिश वग़ैरह के ज़रिए से नाज़िल होता है।)

(ज़ारियात, रूकूअ, 1)

(٣٨) رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ o (ممتحنه ع ١)

38. (हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम की दुआ है) ऐ हमारे रब! तेरे ही ऊपर हमने तवक्कुल किया और तेरी ही तरफ़ (हर ज़रूरत में) हमने रूजूअ् किया और तेरी ही तरफ़ (कि़यामत में) लौट कर जाना है। *(मुमतहिना, रूकूअ 1)*

(٣٩) هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ o (منافقون ع ١)

39. ये मुनाफ़िक़ यों कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हैं, उन पर ख़र्च न करो, यहां तक कि (जब ये भूखे मरने लगेंगे तो) आप ही हुज़ूर सल्ल० के पास से मुन्तशिर हो जायेंगे (हालांकि ये अहमक़ यह नहीं जानते कि) सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हैं सब ख़ज़ाने आसमानों के और ज़मीन के, लेकिन मुनाफ़िक़ लोग समझते नहीं हैं (अहमक़ हैं, यों समझते हैं कि रोज़ी उन लोगों के अताया पर मौक़ूफ़ है।) *(मुनाफ़िक़ून, रूकूअ 1)*

(٤٠) وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ط قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا o

(طلاق ع ١)

40. और जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला उसके लिए नजात (और सहूलत का) रास्ता निकाल देता है और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुंचाता है जहां से उसको गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह तआला

उसके लिए काफ़ी है। बेशक अल्लाह तआला (जिस काम का इरादा करता है) अपने काम को पूरा करके रहता है (अलबत्ता यह ज़रूर है कि) अल्लाह तआला ने हर शै का एक अंदाज़ (और वक़्त) मुक़र्रर कर रखा है। *(तलाक़, रूकूअ 1)*

अहादीस के सिलसिले में पहली हदीस के ज़ैल में इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ एक क़िस्सा भी पेश आ रहा है।

(٤١) رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآاِلٰهَ اِلَّاهُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ٥ (مزمل ع ١)

41. वह मश्रिक़ और मग़्रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है, उसी को अपना काम सुपुर्द करने के लिए क़रार दिए रहो (यानी जब कि मश्रिक़ मग़्रिब का मालिक वही है तो उस पर एतिमाद और भरोसा होना चाहिए।) *(मुज़्ज़म्मिल, रूकूअ 1)*

ये इक्तालीस आयतें नमूने के तौर पर ज़िक्र की गयीं वर्ना क़ुरआन पाक का तो हर मज़्मून तौहीद ही की तालीम है और तौहीद ही का समरा तवक्कुल है, जिसको जितना ज़्यादा तौहीद में रूसूख़ और कमाल होगा, उतना ही तवक्कुल, अल्लाह पर एतिमाद उसके मासिवा से बेनियाज़ी होगी। चुनांचे मशहूर है कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को जब आग में डाला जा रहा था तो हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आकर दर्ख़्वास्त की कि मेरे क़ाबिल कोई ख़िदमत हो तो हुक्म फ़रमायें। आपने फ़रमाया कि नहीं, तुमसे मेरी कोई हाजत वाबस्ता नहीं। *(एहया-उल-उलूम)*

एक मस्जिद में एक फ़क़ीर ऐतिकाफ़ की नीयत से जाकर बैठ गए। पास कोई सामान खाने पीने का कुछ न था। मस्जिद के इमाम साहब ने उनको नसीहत की कि यों बिना किसी सामान से मस्जिद में बैठने से यह अच्छा था कि कहीं मज़दूरी करते (पेट का पालना फ़र्ज़ है), फ़कीर ने उन की बात का कुछ जवाब न दिया, उन्होंने दूसरी दफ़ा, फिर यही कहा फ़क़ीर चुप हो गए, उसने तीसरी दफ़ा फिर कहा, फ़कीर ख़ामोश रहे, उसने चौथी दफ़ा फिर कहा तो उन्होंने जवाब दिया कि यह मस्जिद के क़रीब जो यहूदी की दुकान है, उसने मेरी दो रोटी रोज़ाना की मुक़र्रर कर ली है। इमाम साहब ने फ़रमाया कि अगर उसने खाना मुक़र्रर कर दिया तो बहुत अच्छा है फिर ऐतिकाफ़ ज़रूर करें। फ़क़ीर ने कहा, काश! आप इमाम न होते तो बहुत अच्छा था, तुम अपनी इस नाक़िस

तौहीद के साथ अल्लाह और उसके बंदों के दर्मियान वास्ता बन कर खड़े होते हो। एक काफ़िर यहूदी के वायदे को तुमने अल्लाह तआला के रोज़ी के वायदे पर बढ़ा दिया (अफ़सोस है तुम पर और तुम्हारे हाल पर) *(रौज़)*

वाक़ई सच कहा, हमारी यही हालत है कि बंदे के वायदे पर तो हमें इत्मीनान है, अल्लाह के वायदे पर नहीं है। इन आयात पर जो ज़िक्र की गयीं इंतिहाई ग़ौर होना चाहिए और ज़्यादा से ज़्यादा इसकी कोशिश होनी चाहिए कि सिर्फ़ हक़ तआला शानुहू व तक़द्दुस पर ही हमारी निगाह हो, उसी पर एतिमाद हो, उसी की पाक ज़ात से अपना सवाल हो, उसी से भीख मांगी जाए, उसके अलावा किसी के सामने हाथ न फैले, बल्कि दिल में भी किसी दूसरे का ख़्याल न आए बल्कि वही पाक ज़ात और सिर्फ़ वही पाक ज़ात अपना सहारा हो। वही नफ़ा और नुक़्सान का मालिक दिल से समझा जाए, ज़बान से कहते रहना तो हमारी आम आदत है लेकिन असल कारआमद यह चीज़ है कि हमारे दिल में यह बात अच्छी तरह जम जाए कि बग़ैर उसके इरादे के कोई हाकिम, कोई दौलतमंद न किसी क़िस्म की मज़र्रत (नुक़्सान) पहुँचा सकता है न किसी क़िस्म का नफ़ा पहुँचा सकता है और थोड़ा सा भी ग़ौर किया जाए तो बहुत ही खुली हुई बात है कि तमाम दुनिया के क़ुलूब (दिल) सिर्फ़ उसी के क़ब्ज़े में हैं, हम लाख किसी शख़्स की मन्नत समाजत करें मगर जब उसका अपना दिल दूसरे के क़ब्ज़े में है तो जब तक दिलों के मालिक का इरादा न हो, हमारी मन्नत समाजत से उसके दिल पर क्या असर हो सकता है, और जब दिलों का मालिक किसी काम को करना चाहे तो वह बात खुद ब ख़ुद दूसरों के दिलों में पड़ेगी, हम लाख बेनियाज़ी बरतें उसका दिल उसको खुद · ॒र करेगा, बार बार उसके दिल में ख़्याल आएगा, बग़ैर तहरीक के ख़्याल आयेगा, इसलिए अगर अपनी हाजत मांगने का महल है तो सिर्फ़ वही पाक ज़ात है अगर आजिज़ी औ: मन्नत समाजत करने की जगह है तो उसी का दरबार है, सारी दुनिया के दिल उसके इरादे के ताबेअ् हैं, सारी दुनिया के ख़ज़ाने उसकी मिल्क हैं।

या अल्लाह महज़ अपने फ़ज़्ल से बिला इस्तिहक़ाक़ बल्कि इस्तिहक़ाक़ के ख़िलाफ़ इस नापाक को भी इस जौहर का कोई शम्मा अता फ़रमा दे कि तेरी अता के वास्ते इस्तिहक़ाक़ भी शर्त नहीं -

'ख़ुदा की दैन का मूसा से पूछिये अहवाल,
कि आग लेने को जाएं पयम्बरी मिल जाये।

इसके बाद चन्द अहादीस इन ही मज़ामीन के मुताल्लिक़ मुख़्तसरन पेश करता हूँ जिनके मुताल्लिक़ ऊपर की तीन आयात मुस्तक़िल तौर पर ज़िक्र की गयीं:-

(١) عن عبد الله بن مسعودؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من نزلت به فاقة فانزلها بالناس لم تسد فاقته ومن نزلت به فاقة فانزلها بالله فيوشك الله له برزق عاجل اواجل رواه الترمذى وهكذا فى الدرالمنثور برواية ابى داؤد والترمذى والحاكم وقد صححه ولفظ ابى داؤد بموت عاجل اوغنى عاجل وفى المشكوٰة بموت عاجل او غنى اجل۔

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स को फ़ाक़े की नौबत आ जाए और वह उस को लोगों के सामने पेश करे उस का फ़ाक़ा बंद न होगा और जो शख़्स अपने फ़ाक़े को अल्लाह तआला पर पेश करे (और उससे दर्ख़्वास्त करे) तो हक़ तआला शानुहू जल्द उसको रोज़ी अता फ़रमाते हैं, फ़ौरन हो जाए या कुछ ताख़ीर से मिल जाये।

फ़ायदा:- जो शख़्स लोगों से सवाल करता फिरे उसका फ़ाक़ा बंद न होगा का मतलब यह है कि इहतियाज पूरी न होगी। आज अगर एक ज़रूरत के वास्ते भीख मांगी है और वह सूरत के ऐतिबार से पूरी हो गयी तो कल उससे अहम कोई ज़रूरत पेश आ जाएगी और इहतियाज बदस्तूर बाक़ी रहेगी, और अगर अल्लाह जल्ल शानुहू की पाक बारगाह में हाथ फैलाए तो यह ज़रूरत तो पूरी होगी ही, दूसरी ज़रूरत पेश न आएगी और अगर आई तो उसका इंतिज़ाम मालिक साथ ही कर देगा।

पहली फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 8 के ज़ैल में हज़रत कब्शा रज़ि॰ की हदीस गुज़र चुकी है, जिसमें हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़सम खाकर चंद बातें इर्शाद फ़रमायीं। उनमें से एक यह भी है कि जो शख़्स लोगों से मांगने का दरवाज़ा खोलेगा। हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोलते हैं, उसी जगह एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का क़सम खाकर यही मज़्मून हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ की रिवायत से भी गुज़र चुका। यही वजह है कि दर ब दर भीख मांगने वाले हमेशा फ़क़ीर और तंगदस्त ही रहते हैं।

एक और हदीस में यह मज़्मून इस तरह वारिद हुआ है कि जो शख़्स अपने फ़ाक़े और एहतियाज को अल्लाह तआला शानुहू के सामने पेश करता है, हक़ तआला शानुहू बहुत जल्द उसके फ़क्र को दूर फ़रमाते हैं, जल्दी की मौत से या जल्दी की ग़िना से।

जल्दी की मौत के दो मतलब हैं, एक यह कि उसका वक़्त अगर ख़ुद क़रीब आ गया तो उसको फ़ाक़ों की तक्लीफ़ में मुसीबत उठाने से पहले ही हक़ तआला शानुहू मौत अता फ़रमा देंगे।

दूसरा मतलब यह है कि किसी की मौत उसके ग़िना का सबब बन जाए, मसलन किसी की मीरास का बड़ा हिस्सा मिल जाए या कोई शख़्स मरते वक़्त इसकी वसीयत कर जाए कि मेरे माल में से इतना फ़लां शख़्स को दे देना।

मुतअद्दद वाक़िआत इस क़िस्म के देखने और सुनने में आए कि मक्का में बाज़ मरने वालों ने यह वसीयत की कि हिन्दुस्तान के फ़लां शहर में इस नाम का एक शख़्स है, उसको मेरा माल फ़रोख़्त करके रूपया भेज दिया जाए।

कुर्द एक क़बीले का नाम है, उसमें एक शख़्स मशहूर डाकू था। वह अपना क़िस्सा बयान करता है कि मैं अपने साथियों की एक जमाअत के साथ डाके के लिए जा रहा था, रास्ते में हम एक जगह बैठे थे। वहां हमने देखा कि खजूर के तीन दरख़्त हैं, दो पर तो ख़ूब फल आ रहा है और एक बिल्कुल ख़ुश्क है और एक चिड़िया बार बार आती है और फलदार दरख़्तों पर से तरोताज़ा खजूर अपनी चोंच में लेकर उस ख़ुश्क दरख़्त पर जाती है। हमें यह देखकर ताज्जुब हुआ, मैं ने दस मर्तबा उस चिड़िया को ले जाते देखा तो मुझे यह ख़्याल हुआ कि उस पर चढ़कर देखूं कि यह चिड़िया उस खजूर को क्या करती है? मैं ने उस दरख़्त की चोटी पर जाकर देखा कि वहां एक अंधा सांप मुँह खोले पड़ा है और यह चिड़िया वह तरोताज़ा खजूर उसके मुंह में डाल देती है। मुझे यह देखकर इस क़दर इब्रत हुई कि मैं रोने लगा। मैं ने कहा, मेरे मौला! यह सांप जिसके मारने का हुक्म तेरे नबी सल्ल० ने दिया, तूने जब यह अधां हो गया तो इसको रोज़ी पहुँचाने के लिये चिड़िया को मुक़र्रर कर दिया और मैं तेरा बंदा, तेरी तौहीद का इक़रार करने वाला, तूने मुझे लोगों के लूटने पर लगा दिया? इस कहने पर मेरे दिल में यह डाला गया कि मेरा दरवाज़ा तौबा के लिए खुला हुआ है। मैं ने उसी वक़्त अपनी तलवार तोड़ डाली जो लोगों को लूटने में काम देती थी और अपने सर पर ख़ाक डालता हुआ 'इक़ालतन इक़ालतन' (दरगुज़र, दरगुज़र)

चिल्लाने लगा। मुझे ग़ैब से आवाज़ आयी कि हमने दरगुज़र कर दिया, दरगुज़र कर दिया। मैं अपने साथियों के पास आया। वे कहने लगे, तुझे क्या हो गया? मैं ने कहा मैं महजूर था, अब मैं ने सुलह कर ली, यह कह कर मैं ने सारा क़िस्सा उनको सुनाया, वे कहने लगे कि हम भी सुलह करते हैं। यह कह कर सबने अपनी अपनी तलवारें तोड़ दीं और सब लूट का सामान छोड़कर हम एहराम बांध कर मक्का के इरादे से चल दिए, तीन दिन चल कर एक गांव में पहुँचे तो एक अंधी बुढ़िया मिली, उसने हमसे मेरा नाम लेकर पूछा कि तुम में से इस नाम का कोई कुर्दी है, लोगों ने कहा, है। उसने कुछ कपड़े निकाले और यह कहा कि तीन दिन हुए मेरा लड़का मर गया उसने यह कपड़े छोड़े हैं, मैं तीन दिन से रोज़ाना हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देख रही हूँ, हुज़ूर सल्ल॰ फ़रमाते हैं कि उसके कपड़े फ़लां कुर्दी को दे दो। वह कुर्दी कहते हैं कि वह कपड़े मैं ने ले लिये और हम सबने उनको पहना। *(रौज़)*

इस क़िस्से में दोनों चीज़ें क़ाबिले इब्रत हैं अंधे सांप की अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से रोज़ी का सामान और हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से कपड़ों का अतिय्या।

जब अल्लाह तआला किसी की मदद करना चाहे तो उसके लिए असबाब पैदा करना क्या मुश्किल है। सारे असबाब ग़िना और फ़क्र के वही पैदा करता है और सच्चीं तौबा की बरकत से हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से कपड़ों का ऐज़ाज़ ख़ुद एक क़ाबिले फ़ख्र चीज़ है और जल्दी की मौत से ग़िना के हासिल होने की एक मिसाल है और बहुत से वाक़िआत मरते वक़्त वसीयतों के तो अक्सर सुनने में आए कि मेरे सामान में से इतना फ़लां शख़्स को दे दें।

एक हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स भूखा हो या हाजतमंद हो और वह लोगों से अपनी हाजत को पोशीदा रखे तो अल्लाह तआला शानुहू पर (बवजह उसके लुत्फ़ व करम के) यह हक़ है कि उसको एक साल की रोज़ी हलाल माल से अता फ़रमाये। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में है कि जो शख़्स भूखा हो या मुहताज हो और लोगों से उसको छुपाये और अल्लाह तआला शानुहू से मांगे तो अल्लाह तआला शानुहू एक साल के लिए हलाल रोज़ी का दरवाज़ा उस पर खोल देते हैं। *(कंज़)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स अल्लाह तआला से ग़िना तलब करता है तो अल्लाह तआला उसको ग़िना अता फ़रमाते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआला से इफ़्फ़त (पाक बाज़ी) मांगता है, अल्लाह तआला उसको इफ़्फ़त अता फ़रमाते हैं और ऊपर का हाथ (यानी अता करने वाला) बेहतर है। नीचे के हाथ से (यानी मांगने वाले हाथ से) और कोई शख़्स ऐसा नहीं जो सवाल का दरवाज़ा खोले मगर हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजूहहू ने एक शख़्स की आवाज़ सुनी, जो अरफ़ात के मैदान में लोगों से सवाल कर रहा था, उन्होंने दूर्रे से उसकी ख़बर ली, कि ऐसे दिन में और ऐसी जगह अल्लाह के ग़ैर से सवाल करता है? एक और हदीस में है कि जो शख़्स सवाल का दरवाज़ा खोलता है, अल्लाह तआला शानुहू उस पर दुनिया और आख़िरत में फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। और जो शख़्स अल्लाह की रिज़ा के वास्ते अता का दरवाज़ा खोलता है, हक़ तआला शानुहू उस पर दुनिया और आख़िरत की ख़ैर का दरवाज़ा खोल देते हैं। एक और हदीस में है कि जो शख़्स सवाल का दरवाज़ा खोलता है, हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। कोई शख़्स रस्सी लेकर लकड़ियां इकट्ठी करके अपनी कमर पर लाकर फ़रोख़्त कर दे और उससे अपना गुज़र चला ले, यह इससे बेहतर है कि भीख मांगे, चाहे वह भीख मिले या न मिले।

एक और हदीस में है जो शख़्स अता का दरवाज़ा खोलता है, सदक़े से हो या सिला-रहमी से, हक़ तआला शानुहू उस पर कसरत फ़रमाते हैं (यानी उसके माल में इज़ाफ़ा होता है।) और जो शख़्स माल की ज़्यादती की नीयत से सवाल का दरवाज़ा खोलता है इसकी वजह से उस पर कमी बढ़ती जाती है यानी हाजतें बढ़ती जायेंगी और आमदनी के नाकाफ़ी होने में इज़ाफ़ा होता रहेगा।

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स कुल्लियतन अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए, हक़ तआला शानुहू उसकी हर ज़रूरत का तकफ़्फ़ुल फ़रमाते हैं और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ अता फ़रमाते हैं जिसका उसको गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स पूरे तौर पर दुनिया की तरफ़ लग जाता है, हक़ तआला शानुहू उसको दुनिया के हवाले कर देते हैं (कि तू जान और तेरा काम, यानी मेहनत कर और कमा ले, जितनी मशक़्क़त उठायेगा उसके मुनासिब हम देते रहेंगे।)

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला के तक़्वा की वसीयत करता हूँ तंहाई में भी और एलानिया भी, और जब भी कोई बुरा काम सरज़द हो जाए तो (तलाफ़ी के तौर पर कोई) अच्छा काम भी करो और किसी से सवाल न करो, किसी की अमानत न रखो, दो आदमियों के दर्मियान क़ाज़ी न बनो (कि यह बहुत अहम काम है हर शख़्स के बस का नहीं)।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो थोड़े पर राज़ी हो जाए और क़नाअत कर ले और अल्लाह पर तवक्कुल करे, वह कमाने की मेहनत से बे फ़िक्र हो जाता है। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स यह चाहे कि सबसे ज़्यादा क़वी हो, वह अल्लाह पर तवक्कुल करे और जो चाहे कि ये सबसे ज़्यादा ग़नी हो उसको यह चाहिए कि जो चीज़ अल्लाह के पास है उस पर उससे ज़्यादा एतिमाद रखे, जितना अपने पास की चीज़ पर होता है और जो यह चाहे कि सबसे ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ हो जाए, वह तक़्वा इख़्तियार करे (और यह तजुर्बे की बात है कि आदमी के तक़्वे का जितना असर लोगों पर पड़ता है उतना किसी चीज़ का नहीं पड़ता। जिस शख़्स में जितना ज़्यादा तक़्वा बढ़ा हुआ होगा, उतना ही लोगों के दिलों में उसका एज़ाज़ व इकराम ज़्यादा होगा।)

हज़रत वहब रह॰ हक़ तआला शानुहू का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब बंदा मुझ पर भरोसा कर लेता है तो अगर आसमान ज़मीन सब के सब मिलकर भी उसके साथ मक्र करें तो मैं उसके लिए रास्ता निकाल दूँगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर वही भेजी कि मुझ पर तवक्कुल करो, मैं तुम्हारी ज़रूरियात का कफ़ील बनूँगा। मेरे ग़ैर को अपना वली न बनाओ ताकि मैं तुम्हें न छोड़ दूँ।

बहुत सी अहादीस में यह वाक़िआ ज़िक्र किया गया कि हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि॰ के साहबज़ादे को काफ़िरों ने क़ैद कर लिया और चमड़े के तस्मों से ख़ूब मज़बूत उनको जकड़ दिया। उन पर निहायत सख़्ती की जाती थी और भूखा भी रखा जाता था। उन्होंने अपने वालिद के पास किसी तरह अपने अहवाल की इत्तिलाअ् भेजी कि हुज़ूर सल्ल॰ से दुआ के लिए अर्ज़ करें। हुज़ूर सल्ल॰ को जब इत्तिलाअ् पहुँची तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उनके पास यह कहला भेजो कि अल्लाह तआला से डरते रहें (तक़्वा इख़्तियार करें) और उसी

पर तवक्कुल करें और सुबह व शाम यह आयते शरीफ़ा पढ़ा करें।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ○
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ○ (توبہ ع ۱۶)

"लक़द् जा अकुम् रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन अलैकुम् बिलमुअ्मिनी-न रऊफ़ुर्रहीम. फ़-इन् तवल्लौ फ़कुल हस्बियल्ला-हु ला इला-ह इल्ला हु-व अलैहि तवक्कलतु व हु-व रब्बुल् अर्शिल अज़ीम"। *(तौबा, रूकूअ 16)*

उनके पास जब इत्तिलाअ् पहुँची तो उन्होंने इस आयते शरीफ़ा को पढ़ना शुरू किया, ख़ुद ब ख़ुद एक दिन वे तस्मे टूट गये। यह उनकी क़ैद से छूट कर भाग आए और कुछ जानवर वग़ैरह भी उनके अपने साथ पकड़ लाये।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को बादशाह के ज़ुल्म का ख़ौफ़ हो या किसी दरिन्दे का या दरिया में डूब जाने का डर हो और इस आयते शरीफ़ा को तिलावत करे तो इंशा अल्लाह कोई मज़र्रत उसको न पहुँचेगी।

एक और हदीस में है कि इस क़िस्से में "ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्ला-हि" भी कसरत से पढ़ने का हुक्म है। इन्ही साहबज़ादे के क़िस्से में यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई -

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا○ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط (طلاق ع ۱)

"व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्अल्ल-हू मख़्र-जन व यर्ज़ु क़्-हु मिन् है-सु ला यह्त सिब॰" *(सूरः तलाक़, रूकूअ 1)*

"जो अल्लाह से डरता है हक़ तआला शानुहू उसके लिए रास्ता खोल देते हैं और ऐसी जगह से उसको रोज़ी पहुँचाते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता और जो शख़्स अल्लाह तआला पर भरोसा करता है अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी है।" उन सहाबी रज़ि॰ को इसका क्या गुमान हो सकता था कि यही काफ़िर जो इस क़दर (सख़्त) ज़ुल्म पर उतरे हुए हैं उन्हीं के माल से उनकी रोज़ी मुक़द्दर है।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं और मेरा एक साथी एक पहाड़ में रहते थे हर वक़्त इबादत ही मशग़ला था। मेरे एक साथी का गुज़र तो घास वग़ैरह पर था

और, मेरे लिए हक़ तआला शानुहू ने यह इंतिज़ाम फ़रमा रखा था कि एक हिरनी रोज़ाना आया करती थी और मेरे क़रीब आकर टांगे चीर कर खड़ी हो जाती। मैं उसका दूध पी लिया करता, वह चली जाती। बहुत ज़माना इसी तरह गुज़र गया वह हिरनी रोज़ आ जाया करती और मैं उसका दूध पीता था। मेरे साथी के क़ियाम की जगह उस पहाड़ में मुझसे दूर थी। एक दिन वह मेरे पास आया और कहने लगा कि एक क़ाफ़िला यहां क़रीब आकर ठहरा है, चलो क़ाफ़िला वालों के पास चलें, वहां शायद कुछ दूध और इसके अलावा कुछ खाने की चीज़ें मयस्सर आ जायें। मैं ने अव्वल तो बहुत इंकार किया लेकिन जब उसने बहुत इसरार किया तो मैं भी उसके साथ हो लिया। हम दोनों क़ाफ़िले में पहुंचे, उन लोगों ने हमें खाना खिलाया, हम खाने से फ़ारिग़ होकर अपनी अपनी जगह वापस आ गये। इसके बाद मैं हमेशा उस हिरनी के वक़्त पर उसका इंतिज़ार किया करता मगर उसका आना बंद हो गया। कई दिन इंतिज़ार के बाद मैं समझ गया कि उस गुनाह की नहूसत से वह रोज़ी जिसकी वजह से मैं बेफ़िक्र था, बंद हो गयी।

साहिबे रौज़ रह० कहते हैं कि बज़ाहिर तीन चीज़ें इसमें गुनाह की थीं।

एक जिस तवक्कुल को इख़्तियार कर रखा था, उसको छोड़ा।

दूसरे तमअ् की, और उस रोज़ी पर क़नाअत न की जिसकी वजह से बेफ़िक्री थी।

तीसरे ऐसा खाना खाया जो तय्यिब न था जिसकी वजह से तय्यिब रिज़्क़ से महरूमी हो गयी।

बड़ी इब्रत का क़िस्सा है। हम लोग बसा औक़ात अपनी हिर्स व तमअ् से हक़ तआला शानुहू के इनआमात से महरूम हो जाते हैं। सूरत के एतिबार से सवाल करने पर उस वक़्त कुछ मिल जाता है मगर उसकी नहूसत से अल्लाह तआला शानुहू के उस इनआम से महरूमी हो जाती है जो बे-तलब और बे-मन्नत मिलता है।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० की दुआ है -

اَللّٰهُمَّ كَمَا صُنْتَ وَجْهِىْ عَنْ سُجُوْدِ غَيْرِكَ فَصُنْ وَجْهِىْ عَنْ مَسْئَلَةِ غَيْرِكَ

"अल्लाहुम्-म कमा सुन्-त वज्ही अन् सुजूदि ग़ैरि-क फ़सुन् वज्ही अंमस्अ-ल-ति ग़ैरि-क०"

'ऐ अल्लाह, जैसा कि तूने मेरे सर को अपने ग़ैर के सामने सज्दा करने से महफ़ूज़ रखा, इसी तरह मेरी ज़बान को अपने ग़ैर से सवाल करने से भी महफ़ूज़ फ़रमा। अल्लाहुम्म आमीन।

(۲) عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من سأل الناس تکثرا فانما یسأل جمرا فلیستقل او لیستکثر رواہ مسلم کذا فی المشکوۃ

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स इस लिए सवाल करता है कि अपने माल में ज़्यादती करे, वह जहन्नम के अंगारे मांग रहा है, जिसका दिल चाहे थोड़ा मांग ले, या ज़्यादा मांग ले।

फ़ायदाः- पहली हदीस शरीफ़ में सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से ग़ैबी इआनत और इमदाद बंद होने की वईद थी, इसलिए कि उस हदीस में ज़रूरत के मौक़ों पर सवाल का ज़िक्र था और इस जगह बिला ज़रूरत महज़ अपनी जमा बढ़ाने के लिए भीख मांगना मज़्कूर है इसलिए इसमें ज़्यादा सख़्त वईद है कि वह जहन्नम की आग इकट्ठी कर रहा है। अब आदमी को इख़्तियार है कि जितने अंगारे दिल चाहे इकट्ठे कर ले।

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि फ़लां फ़लां दो शख़्स आपकी तारीफ़ कर रहे थे कि आपने उनको दो दीनार दिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, लेकिन फ़लां शख़्स मैं ने उसको दस से लेकर सौ तक अशरफ़िया दीं मगर उसने ऐसा नहीं किया। फिर फ़रमाया कि बाज़ आदमी सवाल करते हैं और मैं उनके सवाल की वजह से जो देता हूँ, वे बग़ल में दबाकर ले जाते हैं, लेकिन वे अपनी बग़ल में आग दबाकर ले जाते हैं, हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰! फिर आप देते क्यों हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं क्या करूँ? वे बग़ैर मांगे रहते नहीं और अल्लाह तआला मेरे लिए बुख़्ल को गवारा नहीं फ़रमाते।

एक और हदीस के अल्फ़ाज़ हैं, हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰! जब आपको मालूम है कि वह आग है तो आप क्यों मरहमत फ़रमाते हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं क्या करूँ? वे बग़ैर सवाल के रहते नहीं और अल्लाह तआला मेरे लिए बुख़्ल गवारा नहीं फ़रमाते।

हज़रत क़बीसा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक बोझ (तावान वग़ैरह का)

अपने ज़िम्मे रख लिया, यानी किसी चीज़ की ज़मानत कर ली, इस सिलसिले में मैं हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में मदद चाहने के लिए हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया ठहर जाओ। कहीं से सदक़े का माल आ जाएगा तो मैं मदद करूँगा। फ़िर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि क़बीसा। सवाल सिर्फ़ तीन आदमियों के लिए जायज़ है।

1. एक वह शख़्स जिसने कोई बोझ ज़िमान वग़ैरह का अपने ज़िम्मे रख लिया हो उसको जायज़ है कि इतनी मिक़्दार का सवाल कर ले और फिर रूक जाये, उससे ज़्यादा के सवाल का हक़ नहीं।

2. दूसरे वह शख़्स जिसको कोई हादसा पहुँच जाए जिससे सारा माल हलाक हो जाए (मसलन आग लग जाए या कोई और ऐसी आफ़त अचानक पहुँच जाए जिससे सब कुछ लुट लुटा जाए) तो उसको जायज़ है कि इतनी मिक़्दार का सवाल कर ले जिससे ज़िन्दगी का सहारा हो सके।

3. तीसरे वह शख़्स जिसको फ़ाक़े गुज़रने लगें हत्ताकि तीन आदमी उसकी क़ौम के कहने लगें कि इसको फ़ाक़ा होने लगा, तो उसको भी इतनी मिक़्दार सवाल कर लेना जायज़ है जिससे ज़िन्दगी का सहारा हो जाए। इन तीन के अलावा जो शख़्स सवाल करता है वह हराम माल खाता है।

एक और हदीस में है कि सवाल करना दो शख़्सों के लिए जायज़ नहीं, एक ग़नी के लिए दूसरे क़वी तन्दुरूस्त के लिए (जो कमाने पर क़ादिर हो), अलबत्ता जिस शख़्स को ख़ाक में मिला देने वाला फ़क़्र या परेशान कर देने वाला क़र्ज़ लाहिक़ हो गया हो, उसको सवाल करना जायज़ है और जो शख़्स माल को बढ़ाने की ग़रज़ से सवाल कर रहा है, उसके मुंह पर क़ियामत के दिन ज़ख़्म होंगे और वह जहन्नम की आग खा रहा है, जिसका दिल चाहे ज़्यादा सवाल कर ले, जिसका दिल चाहे कम सवाल कर ले।

एक और हदीस में है कि सवाल क़ियामत के दिन मुंह पर ज़ख़्म बन जायेंगे, जिनसे उसका चेहरा ज़ख़्मी हो जाएगा, जिसका दिल चाहे अपने चेहरे की रौनक़ को बाक़ी रखे जिसका दिल चाहे छोड़ दे। अलबत्ता अगर बादशाह से (यानी बैतुलमाल से बशर्ते की उसमें से लेने का हक़ हो) मांगे या मजबूरी के दर्जे में मांगे तो मुज़ायक़ा नहीं है।

एक और हदीस में है कि आदमी सवाल करता रहता है हत्ताकि

क़ियामत के दिन उसके चेहरे पर ज़रा सा भी गोश्त न रहेगा।

हज़रत मस्ऊद बिन अम्र रज़ि॰ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक जनाज़ा नमाज़ पढ़ने के लिए लाया गया, हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या तरका छोड़ा? लोगों ने अर्ज़ किया कि दो तीन अशर्फ़ियां छोड़ी हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जहन्नम के दो तीन दाग़ हैं

रावी कहते हैं कि मैं ने हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ के मौला अब्दुल्लाह बिन क़ासिम रज़ि॰ से इसके मुताल्लिक़ सवाल किया। उन्होंने कहा कि यह माल बढ़ाने की नीयत से सवाल करता था।

कुतुबे अहादीस में मुतअद्दद वाक़िआत इस क़िस्म के वारिद हुए हैं, जिन्में हुज़ूर सल्ल॰ ने मामूली रक़मों के छोड़ने पर जहन्नम के दाग़ और इस क़िस्म की वईदें इर्शाद फ़रमायी हैं। उलमा ने उनके मुताल्लिक़ लिखा है कि यह इस सूरत में है जब आदमी के पास पहले से कुछ मौजूद हो और वह झूठ बोलकर अपने आपको बिल्कुल फ़क़ीर और मुहताज ज़ाहिर करके सवाल करे और बावजूद फ़क़ीर न होने के फ़ुक़रा की जमाअत में अपने आप को शामिल करे।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि सवाल करने के बारे में मुमानअत की बहुत सी रिवायात वारिद हुई और बड़ी सख़्त सख़्त वईदें हदीस में आई हैं लेकिन साथ ही बाज़ अहादीस से इजाज़त मालूम होती है। इसका वाज़ेह बयान यह है कि फ़ी नफ़्सिही (अपने आप में) तो सवाल करना हराम है। लेकिन मजबूरी के दर्जे में या ऐसी हाजत में जो मजबूरी के क़रीब हो, जायज़ है। अगर ये दोनों बातें न हों तो हराम है और हुरमत की वजह यह है कि सवाल करना तीन बातों से ख़ाली नहीं होता और वे तीनों हराम हैं –

1. अव्वल तो इसमें अल्लाह तआला शानुहू की शिकायत का इज़्हार है गोया, उसकी तरफ़ से इन्आम में कमी है जैसा कि कोई ग़ुलाम अगर किसी से सवाल करे तो इसका मतलब यह होता है कि गोया सैय्यद (मालिक) की तरफ़ से उस पर तंगी है और उसका मुक़्तज़ा यह है कि बिला सख़्त मजबूरी के हलाल न हो, जैसा कि मुर्दार का खाना सख़्त मजबूरी में हलाल है।

2. दूसरे इसमें मांगने वाले का अपने नफ़्स को ग़ैर अल्लाह के सामने ज़लील करना है और मोमिन की शान यह है कि अपने नफ़्स को अल्लाह

तआला के सिवा किसी के सामने ज़लील न करे, अलबत्ता उस पाक मौला के सामने ज़लील करना अपनी इज़्ज़त है, इसलिए कि महबूब के सामने ज़िल्लत व इंकिसार लज़्ज़त है और आक़ा के सामने इज़्ज़त का इज़हार सआदत है।

3. तीसरे इसमें उस शख़्स की ईज़ा अक्सर होती ही है जिससे सवाल किया जाए, बहुत सी बार देने वाले का दिल ख़ुशी से आमादा नहीं होता, महज़ शर्म वग़ैरह की वजह से ख़र्च करता है। पस अगर उसने शर्म की वजह से या रिया की वजह से दिया है तो वह लेने वाले पर भी हराम है और अगर वह इंकार भी कर दे तब भी बसा औक़ात उसको इस बात से रंज होगा कि वह सूरतन बख़ील बना, इसलिए हर हाल में ईज़ा का इहतिमाल है जिसका सबब यह साइल बना, और ईज़ा देना बिला मजबूरी के हराम है और जब यह बात ज़ेहन नशीन हो गयी तो यह भी वाज़ेह हो गया कि हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से सवाल करने पर इस क़दर सख़्त वईदें क्यों वारिद हुईं। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो हमसे सवाल करेगा उस को हम देंगे (हम क्यों इंकार करें, अपने सवाल के जवाज़ का वह ख़ुद ज़िम्मेदार है) और जो मुस्तग़नी होता है (यानी सवाल नहीं करता या अल्लाह तआला से ग़िना का तालिब होता है अल्लाह तआला उसको ग़नी कर देते हैं।) और जो हमसे सवाल न करे, वह हमें ज़्यादा महबूब है, उस शख़्स के मुक़ाबले में, जो सवाल करे।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि लोगों से मुस्तग़्नी रहो और सवाल जितना भी कम हो उतना ही अच्छा है हज़रत उमर रज़ि॰ ने एक साइल को देखा कि मग़रिब के बाद सवाल कर रहा है। आपने किसी से फ़रमा दिया कि इसको खाना खिला दो, उन्होंने फ़ौरन तामील की और खाना खिला दिया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फिर उसकी आवाज़ सवाल की सुनी तो उन साहब से मुतालबा किया, मैं ने तुमसे इसको खाना खिलाने को कहा था। उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं ने खिला दिया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उस साइल की तरफ़ देखा तो उसकी बग़ल में एक झोली पड़ी हुई थी, जिसमें बहुत सी रोटियां थीं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि तू साइल नहीं बल्कि ताजिर है, यानी फ़क़ीर नहीं बल्कि तिजारत के लिए सवाल करता है ताकि इन रोटियों को जमा करके फ़रोख़्त करे। उसके बाद उसकी झोली छीनकर सदक़े के ऊटों के सामने उलट दी। और उसके दुर्रे मार कर कहा कि फिर कभी ऐसा न कीजियो।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ कहते हैं कि अगर सवाल हराम न होता तो हज़रत

उमर रज़ि॰ न तो उसको मारते और न उसकी रोटियां छीनते, बाज़ लोगों को इस पर एतिराज़ है। वे कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि॰ का मारना तो तंबीह और तादीब हो सकती है लेकिन उसके माल का छीनना ज़ुल्म है, शरीअत ने किसी का माल छीन लेने की सज़ा नहीं बताई, लेकिन यह एतिराज़ हक़ीक़त की ना वाक़िफ़ियत से पैदा हुआ। भला हज़रत उमर रज़ि॰ की फ़ुक़ाहत तक दूसरों की रसाई कहां हो सकती है? क्या हज़रत उमर रज़ि॰ के मुताल्लिक़ यह गुमान हो सकता है कि उनको यह मसअला मालूम न था कि दूसरे का माल लेना जायज़ नहीं? या यह गुमान हो सकता है कि बावजूद मसअला मालूम होने के उनको फ़ेअ़्ले हराम यानी सवाल पर ग़ुस्सा आ गया और नअूज़ु बिल्लाह ग़ुस्से में ऐसा कर गए या सवाल से आइंदा रोकने की मसलहत की वजह से ऐसा तरीक़ इख़्तियार किया जो ना जायज़ था, अगर ऐसा था तो यह फ़ेअ़्ल ख़ुद ना जायज़ था बल्कि बात यह थी कि जब उसने बेज़रूरत सवाल किया और देने वालों ने उसको फ़क़ीर और मुहताज समझ कर दिया तो यह धोखे से हासिल करने की वजह से उसकी मिल्क में न आया था और असल मालिकों का पता चलना अब दुशवार था तो यह बमंज़िला लुक़्ता के था जिसके मालिक का पता नहीं है, इसलिए इसका मसरफ़ (बैतुलमाल के) मसालेह आम्मा हैं, इसलिए सदक़े के ऊंटों को खिला दिया। उस फ़क़ीर का सवाल करना वैसा ही है जैसा कि कोई गुनाहगार शख़्स अपने को सूफ़ी ज़ाहिर करके सदक़ा ले ले, अगर देने वाले को उसका हाल मालूम हो जाए तो कभी भी न दे। ऐसे शख़्स को लेना जायज़ नहीं, उसको ज़रूरी है कि मालिक को वापस करे।

जब यह बात मुहक़्क़क़ हो गयी कि सवाल सिर्फ़ ज़रूरत में जायज़ है तो यह समझ लेना चाहिए कि ज़रूरत के चार दर्जे हैं -

1. अव्वल दरजा इज़्तिरार का है।

2. दूसरा सख़्त हाजत का, लेकिन इज़्तिराब की हद से कम।

3. तीसरा मामूली हाजत का।

4. चौथा हाजत न होने का, यह पहला दर्जा मसलन कोई शख़्स ऐसा है कि उसको भूख की वजह से या मर्ज़ की वजह से हलाकत का और मर जाने का अंदेशा है या ऐसा नंगा है कि उसके पास कोई कपड़ा बदन छुपाने को नहीं

है, तो ऐसे शख़्स को सवाल करना जायज़ है।[1] बशर्ते कि जवाज़ की बाक़ी शर्तें पाई जाती हों, और वे ये हैं –

(अ) जो चीज़ मांगे, वह चीज़ जायज़ हो।

(ब) जिससे मांगे वह तीबे ख़ातिर से राज़ी हो।

(ज) मांगने वाला कमाने से आजिज़ हो। अगर वह कमाने पर क़ादिर है तो वह लग्व (बेकार) आदमी है जो बजाय कमाने के सवाल करता है।

अलबत्ता अगर कोई तालिबे इल्म हो जो अपने औक़ात को तलबे इल्म में मशग़ूल रखता हो तो उसको मुज़ायक़ा नहीं कि सवाल कर ले, और चौथा दरजा उसके बिलमुक़ाबिल कोई शख़्स ऐसी चीज़ का सवाल करे जो चीज़ उसके पास मौजूद है, मसलन कपड़े का सवाल करे और बक़द्रे ज़रूरत कपड़ा उसके पास मौजूद है तो उस शख़्स को सवाल हराम है। यह दो दरजे तो मुक़ाबिल हुए इनके दर्मियान दो दरजे रहे, एक सख़्त हाजत का, मसलन कोई शख़्स बीमार है और दवा के लिए दाम नहीं है, लेकिन मर्ज़ ऐसा नहीं है जो हलाकत के दर्जे का हो, या जैसे किसी के पास कपड़ा तो है मगर सर्दी का पूरा बचाव उससे नहीं होता। यह दरजा भी ऐसा है कि इसमें सवाल के जायज़ होने की गुंजाइश है। लेकिन उसका तर्क औला (छोड़ना बेहतर) है। ऐसा शख़्स अगर सवाल करे तो उसको ना जायज़ या मकरूह तो न कहेंगे लेकिन ख़िलाफ़े औला कहेंगे, बशर्ते कि अपने सवाल की नौअियत ज़ाहिर कर दे। मसलन यों कहे कि मेरे पास कपड़ा तो है मगर सर्दी के लिए काफ़ी नहीं है। ज़रूरत के दर्जे से ज़्यादा का इज़्हार न करे।

दूसरा दरजा कम हाजत का है। मसलन उसके पास रोटी के दाम तो हैं, सालन के लिए दाम नहीं या फटे पुराने कपड़े हैं और दो एक कुर्ता ऐसा बनाना चाहता है जो उन पर बाहर जाने के वक़्त पहन लिया करे। ताकि लोगों पर बोसीदा कपड़े ज़ाहिर न हों तो ऐसे शख़्स के लिए सवाल जायज़ तो है मगर कराहत के साथ, बशर्ते कि जिस दर्जे की ज़रूरत है उसको ज़ाहिर कर दे और इन तीन चीज़ों में से कोई बात न पाई जाए जो पहले गुज़र चुकीं, यानी एक यह

---

1. बल्कि बाज़ हालात में वाजिब और मुज़्तर के लिए बग़ैर इजाज़त के लेना भी बाज़ वक़्तों में जयज़ है।

कि हक़ तआला शानुहू की शिकायत न हो यानी इसी तरह सवाल करे जिससे शिकायत न टपकती हो। दूसरे अपनी ज़िल्लत न हो, तीसरे जिससे मांगे उसको अज़िय्यत न हो अगर यह कहा जाये कि इन तीनों चीज़ों से ख़ाली होने की क्या सूरत है?

तो मैं बताता हूँ कि शिकवे से ख़ाली होने की सूरत यह है कि अल्लाह तआला का शुक्र भी साथ हो और अपनी ज़रूरत न होने का इज़्हार भी हो। फ़क़ीरों की तरह सवाल न करे मसलन यों कहे कि ज़रूरत का दरजा तो है नहीं, ज़रूरत की मिक़्दार अल्लाह का शुक्र है मेरे पास मौजूद है, लेकिन यह नफ़्स एक अच्छे कपड़े की ख़्वाहिश करता है और ज़िल्लत से बचने की सूरत यह है कि अपने बाप भाई या किसी ऐसे दोस्त से सवाल करे जिसके मुताल्लिक़ यह गुमान हो कि इस सवाल से उसकी निगाह में ज़िल्लत न होगी या ऐसे करीम से सवाल करे जिसके यहां सदक़ात का ज़ोर हो कि उसके सवाल करने से उसको मसर्रत हो और ईज़ा (तक्लीफ़) से बचने की सूरत यह है कि मसलन ख़ुसूसी सवाल किसी से न करे बल्कि उमूमी सवाल करे या ऐसे अंदाज़ से करे कि अगर वह शख़्स जिससे सवाल किया है टालना चाहे तो टाल सके।

और यह समझ लेना चाहिए कि जो चीज़ देने वाले ने शर्म की वजह से या ज़ोर देने से मजबूर होकर दिल न चाहते हुए दी है उसका लेना इज्माअन हराम है। यह ऐसा ही है जैसा किसी का माल मार कर ज़बर्दस्ती छीन लिया हो। इसलिए कि किसी शख़्स के ज़ाहिर बदन को मारना और दिल को मलामत और शर्म के कोड़े से मारना बराबर है। अलबत्ता मुज़्तर के लिए यह हक़ है कि बग़ैर तीबे ख़ातिर के भी ले ले लेकिन मामला अहकमुल हाकिमीन से है और हालात सब उसके सामने अयां (ज़ाहिर) हैं वह हर शख़्स की हालत को ख़ूब जानता है, नीज़ ऐसे दोस्तों से सवाल में भी मुज़ायक़ा नहीं जिनके मुताल्लिक़ यह अदांज़ा हो कि वे सवाल से ख़ुश होंगे। *(एह्या)*

अल्लामा ज़ुबैदी रह॰ फ़रमाते हैं कि इन वओदात में सवाल से मुराद अपनी ज़ात के लिए सवाल है। जो सवाल किसी दूसरे के लिए हो वह इसमें दाख़िल नहीं बल्कि वह उसकी इआनत है नीज़ वह सवाल में दाख़िल नहीं जो अपने लिए हो, लेकिन अपने अइज़्ज़ा और दोस्तों से हो इसलिए कि वे इससे ख़ुश होते है। *(इत्तिहाफ़)*

लेकिन यह शर्त है कि यह ऐसी जगह होगा जहां अअिज़्ज़ा उस से ख़ुश होते हों, और जहां ऐसा न हो वहां तो अह्ले क़राबत को अज़िय्यत देना और भी ज़्यादा सख़्त है अलबत्ता जो अइज़्ज़ा करीम होते हैं। वे इस सवाल से ख़ुश होते हैं। मुझे ख़ुद इसका ज़ाती तजुर्बा है और बहुत कसरत से वाक़िआत इसके शाहिद हैं। मेरी वालिदा की एक हक़ीक़ी ख़ाला हैं जो अब तक भी हयात हैं[1] मेरे बचपन से उनका दस्तूर मुझे कांधला के हर सफ़र में दो पैसे देने का था, जब मैं साहबे औलाद हो गया और उन्होंने मेरे बच्चों को भी दो दो पैसे देना शुरू कर दिए तो मैं ने बहुत इस्रार से अपने दो पैसे के बजाय चार पैसे करे और यह कह कर कराए कि तुम मुझे और मेरी औलाद को एक दर्जे में रखती हो? मुझे हमेशा याद रहेगा कि मेरे इन चार पैसों का मुतालबा उनके लिए इस क़दर मसर्रत का सबब होता है कि मुझे भी उनकी ख़ुशी से लुत्फ़ आ जाता है। हत्ताकि बाज़ औक़ात अगर उनके पास उस वक़्त कुछ न हुआ तो मैं ने ख़ुद उनकी कुछ नज़्र किया ताकि उसमें से वह मेरे पैसे मुझे मरहमत फ़रमा दें, इसलिए कि उन को उनमें से देने से भी उतनी ही ख़ुशी होती थी और इसकी तरफ़ इल्तिफ़ात भी नहीं होता कि यह मैं उसी के पैसों में से दे रही हूँ।

इसी तरह मेरे वालिद साहब रह० के एक हक़ीक़ी मामूं मौलाना शम्सुल हसन साहब रहमतुल्लाहि अलैहि थे, हमेशा से उनका मामूल मुझे हर सफ़र में एक रूपया मरहमत फ़रमाने का था। जब मेरे औलाद हो गयी तो उन्होंने बजाय मेरे उनकी तरफ़ उसको मुन्तक़िल कर दिया। मैं ने ज़बर्दस्ती अपने रूपये का इजरा कराया, मैं ने उनसे कहा कि बच्चों को आप दें या न दें, मैं उनका ज़िम्मेदार नहीं हूँ। मेरा रूपया बंद नहीं होगा। मुझे हमेशा याद रहेगा और जब भी याद आ जाता है, मैं हमेशा उनके लिए दुआ करता हूँ कि हक़ तआला शानुहू उनकी मग़्फ़िरत फ़रमा कर अपनी आलीशान के मुवाफ़िक़ अज्रे जज़ील अता फ़रमायें कि उनको मेरे इस मुतालबे से किस क़दर मसर्रत होती थी, अक्सर क़ह-क़हा से हंसा करते थे और बार बार मेरे इस लफ़्ज़ को दोहराते, "हां जी, मेरा रूपया बंद नहीं होगा, मैं कहता कि हरगिज़ बंद नहीं होगा।"

और भी मुझे अपने अइज़्ज़ा और अहबाब से इस नौअ् के वाक़िआत का

1. किताब छपने के वक़्त इन्तिक़ाल हो गया। अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करें।, नाज़िरीन से दुआ-ए-मग़्फ़िरत की दरख़्वास्त है।

साबिक़ा पड़ा है। ये मैं ने इस लिए लिखा है कि आज कल ताल्लुक़ात बिलख़ुसूस आपसदारी के आमतौर से ऐसे ख़राब हो जाते हैं कि यह बात अब ज़ेहनों में आना भी दुशवार हो जाएगी कि अज़ीज़ों का सवाल मसर्रत का सबब भी हो सकता है।

दूसरी चीज़ अल्लामा ज़ुबैदी रह० ने यह लिखी कि अगर दूसरे के वास्ते कोई शख़्स सवाल करे तो वह इसमें दाख़िल नहीं है। यह ज़ाहिर है और पहली फ़स्ल में जितनी रिवायात किसी दूसरे के लिए इआनत और मदद की गुज़री हैं वे इसके लिए दलील हैं। इसी तरह तालिबे इल्म की मशग़ूली सवाल की ज़िल्लत से अहम है।

मुल्ला अली क़ारी रह० ने नक़ल किया है कि अगर कोई शख़्स कमाने पर क़ादिर है और इल्मी इश्तिग़ाल की वजह से उसको नहीं करता तो उसको ज़कात का लेना भी जायज़ है और सदक़ाते ततव्वोअ् का लेना भी, और अगर बावजूद क़ुदरत के कमाना नवाफ़िल और इबादात में मशग़ूली की वजह से छोड़ा है तो उसको माले ज़कात का सवाल जायज़ नहीं है, सदक़ाते ततव्वोअ से सवाल में मुज़ायक़ा नहीं गो कराहतन हो और अगर कोई जमाअत इस्लाहे नफ़्स और तज़्किया-ए-बातिन के लिए मुजतमा है तो बेहतर यह है कि कोई शख़्स उन सबके लिए रोटी कपड़ा जमा कर लिया करे। *(मिक़ात)*

इल्मी इश्तिग़ाल[1] चाहे उलूमे ज़ाहिरा हों या उलूमे बातिना, यक़ीनन बहुत ज़्यादा अहम हैं और ऐसे लोगों के लिए यक़ीनन किसी दूसरी चीज़ में मशग़ूल होना हरगिज़ न चाहिए और महज़ नादानों, अहमक़ों के तान व तश्नीअ के ख़ौफ़ से इस अहम मशग़ले के साथ कमाई वग़ैरह की तरफ़ लगना जाहिलों के तान के ख़ौफ़ से अपनी क़ीमती माया को ज़ाया करना है। नादानों के तान, तश्नीअ से न अह्ले इल्म कभी बचे, न अंबिया-ए-किराम अलैहि० बचे।

आजकल यह वबा बहुत आम होती जा रही है कि अहले इल्म को अपना गुज़र चलाने के लिए किसी सन्अत व हिरफ़त का सीखना ज़रूरी है, और अहले इल्म भी दुनियादारों के तान व तश्नीअ से बद दिल होकर उसकी अहमियत को महसूस कर रहे हैं और मदारिसे अरबिया व दीनिया में यह सिलसिले भी जारी हो रहे हैं, लेकिन यह इल्म को बहुत ज़्यादा नुक़्सान देने

1. इल्म हासिल करने में लगा रहना।

वाली चीज़ है। इसमें असलाफ़ के नमूने सामने रखे जाते हैं, जिन्होंने अपने मआश के लिए तिजारत व हिरफ़त वग़ैरह के मशाग़िल इख़्तियार करते हुए दीन की और इल्म की ख़िदमत की, और यक़ीनन अगर अल्लाह जल्ल शानुहू तौफ़ीक़ अता फ़रमाए तो यह बेहतरीन तरीक़ा है। मगर हम लोगों के क़ुलूब और हमारे क़ुवा और हमारे अहवाल न तो इसके मुतहम्मिल हैं कि हम लोग दो काम बयक वक़्त कर सकें और न हमारी तमअ-ए-नफ़्स और हुब्बे दुनिया इसकी गुंजाइश देती है कि माल की बढ़ोतरी के असबाब पैदा होने के बावजूद अल्लाह के काम के वास्ते, दीन की ख़ातिर, इल्म की ख़ातिर, हम अपने औक़ात को दुनिया के कमाने के मशाग़िल से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ारिग़ कर सकें। नतीजा यह होता है कि इब्तिदा में दोनों काम शुरू किए और आख़िर में इल्मी मशग़ले पर दुनिया की कमाई और तलब ग़ालिब आ गई जिसके बारहा तजुर्बे हो चुके हैं।

इमाम गज़ाली रह० ने तलबे इल्म के जो दस आदाब लिखे हैं उनमें लिखते हैं कि चौथा अदब यह है कि दुनिया में मशग़ूली को बहुत ही कम कर दे और अपने अह्ल और वतन से दूर चला जाए, इसलिए कि ताल्लुक़ात की कसरत मशग़ूली का सबब होती है और मक़सद से हटाने वाली होती है और अल्लाह तआला किसी शख़्स के लिए दो दिल नहीं बनाते (कि एक दिल इल्म में मशग़ूल रहे और दूसरा दुनिया कमाने में, यह क़ुरआन पाक की आयत की तरफ़ इशारा है।)

"मा ज-अ-लल्लाहु लि रजुलिम् मिन् क़ल्बै-नि फ़ी जौफ़िह्०"

(अहज़ाब, रूकूअ 1)

और जितना ज़्यादा अपने फ़िक्र और ग़ौर को मुतफ़र्रिक़ चीज़ों में मशग़ूल करोगे, उलूम के हक़ायक़ से दूर रहोगे। इसी वजह से कहा गया है कि इल्म तुझे अपना थोड़ा सा हिस्सा जब देगा, जब तू अपने आपको पूरा का पूरा इल्म की नज़्र कर देगा और जो ग़ौर व फ़िक्र मुतफ़र्रिक़ उमूर की तरफ़ मुन्तशिर रहता है उसकी मिसाल उस नाली की सी है जिसकी डोल टूट गयी हो कि उसमें से पानी इधर उधर निकलेगा और बहुत कम खेत में पहुँचेगा। *(एह्या)*

लेकिन उसके साथ यह भी ज़रूरी है कि वाक़ई इल्म हासिल करना मक़्सूद हो, महज़ रोटी खाने और सदक़ात का माल जो आदमियों का मैल है, जमा करना मक़्सूद न हो। इमाम ग़ज़ाली रह० वे वईदात जो बुरे आलिमों के बारे

में वारिद हुई हैं ज़िक्र फ़रमाने के बाद लिखते हैं कि इनसे मालूम हुआ कि दुनियादार आलिम हालत के एतिबार से बहुत ज़्यादा ख़सीस है और अज़ाब के एतिबार से बहुत ज़्यादा अज़ाब का मुस्तहिक़ है बनिस्बत जाहिल के, और कामयाब सिर्फ़ वही उलमा हैं जो आख़िरत के आलिम हैं और आख़िरत के आलिम के लिए चंद अलामात (निशानियां) हैं जिनमें से पहली यह है कि अपने इल्म से दुनिया कमाना मक़्सूद न हो। आलिम का सबसे अदना दरजा यह है कि दुनिया की हिक़ारत, दुनिया का कमीनापन, दुनिया की गंदगी, उसका फ़ानी होना, उसको मुस्तहज़र हो, वह आख़िरत की बड़ाई उसकी पायदारी, उसकी उम्दगी, उसकी नेअमतों की पाकीज़गी उसकी रफ़अते शान को पाने वाला हो। और इस बात को ख़ूब समझता हो कि दुनिया और आख़िरत दो सौकनें हैं, जब वह एक को राज़ी करेगा, दूसरी नाराज़ होगी (जैसा कि हदीस में यही मज़्मून आया है) और यह समझे कि दुनिया और आख़िरत बमंज़िला तराज़ू के दो पलड़े के हैं, जौन सा एक झुक जायेगा दूसरा ऊपर चढ़ जायेगा। जो शख़्स दुनिया की हिक़ारत को न समझता हो वह फ़ासिदुल अक़्ल है, उलमा में से कैसे हो सकता है?

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि उलमा का अज़ाब दिल की मौत है और दिल की मौत आख़िरत के अमल से दुनिया की तलब है (यानी दीन का काम इस ग़रज़ से करना कि उससे दुनिया का माल व सरवत या इज़्ज़त व जाहत कमाई जाए) यह्या बिन मुआज़ रह० फ़रमाते हैं कि इल्म व हिक्मत की रौनक़ जाती रहती है जब उनसे दुनिया कमाई जाए। हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० फ़रमाते हैं कि जब आलिम को उमरा के दरवाज़े पर देखो तो वह चोर है। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब किसी आलिम को दुनिया से मुहब्बत रखने वाला समझो तो उसको अपने दीन के बारे में मुत्तहिम समझना, इसलिए कि हर शख़्स उसी में घुसा करता है जिससे उसको मुहब्बत हो। *(एहया मुख़्तसरन)*

लिहाज़ा यह तो ज़रूरी है कि उलमा को अपने नफ़्स को हर वक़्त मुत्तहिम समझते हुए उसकी सख़्ती से निगरानी करते रहना चाहिए, हर वक़्त इस फ़िक्र में ज़रूर रहना चाहिए कि कहीं दुनिया की मुहब्बत जो हर ख़ता की जड़ है, ग़ैर महसूस तरीक़े से जड़ न पकड़ ले, और दुनिया से बेरग़बती बल्कि नफ़रत रासिख़ हो जाने के बाद न सवाल में मुज़ायक़ा है, न सदक़ात व ज़कात के लेने में, बल्कि सदक़ात वालों का अहम वज़ीफ़ा है, कि अहले इल्म को मुक़द्दम करें जैसा कि पहले सदक़ा अदा करने के आदाब में गुज़र चुका। हक़ तआला शानुहू

इस नापाक दुनिया के कुत्ते को भी इस मुहलिक मर्ज़ से निजात अता फ़रमाये कि दुनिया तलबी ऐसा मुहलिक मर्ज़ है जो आहिस्ता आहिस्ता तरक़्क़ी करता रहता है और वह सिर्फ़ माल ही के हासिल करने में मुंज़मर नहीं है बल्कि जाह के हासिल करने में माल से भी ज़्यादा सुरअत (तेज़ी) के साथ बढ़ता है। और दीनी माहौल में यह मर्ज़ हुब्बे दुनिया से भी ज़्यादा तरक़्क़ी करता है।

(۳) عن حکیم بن حزام قال سألت رسول الله صلی الله علیه وسلم فاعطانی ثم سألته فاعطانی ثم قال یاحکیم ان هذا المال خضر حلو فمن اخذه بسخاوة نفس بورك له فیه ومن اخذه باشراف نفس لم یبارك له فیه وكان كالذی یاكل ولا یشبع والید العلیا خیر من الید السفلی قال حکیم فقلت یا رسول الله والذی بعثك بالحق لاارزأ احدا بعدك شیئا حتی افارق الدنیا متفق علیه كذا فی المشكوٰة.

3. हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्ल० से सवाल किया, हुज़ूर सल्ल० ने अता फ़रमाया, मैं ने फिर मांगा, हुज़ूर सल्ल० ने फिर अिनायत फ़रमाया, इसके बाद इर्शाद फ़रमाया कि ऐ हकीम! यह सर सब्ज़ माल मीठी चीज़ है यानी ख़ुशनुमा है देखने में, लज़ीज़ है दिलों में पस, जो शख़्स इसको नफ़्स की सख़ावत (यानी इस्तिग़्ना) से लेता है उसके लिए तो इसमें बरकत दी जाती है और जो इसको इशराफ़े नफ़्स (यानी हिर्स और तमअ् जैसा कि आइन्दा हदीस के ज़ैल में आएगा) के साथ लेता है, उसके लिए इसमें बरकत नहीं होती, वह ऐसा है जैसा कोई (भूख का मरीज़ कि) खाता रहे और पेट न भरे, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है (यानी न मांगने वाला हाथ मांगने वाले से अच्छा है) हकीम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अब आप के बाद मरने तक कभी किसी को तक्लीफ़ नहीं दूँगा।

फ़ायदा:- यानी अब सारी उम्र कभी किसी से सवाल नहीं करूँगा। कुछ रिवायात में इस हदीस के बाद में यह मज़्मून भी है कि इसके बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत हकीम रज़ि० को बुलाते ताकि उनका जो हक़ बैतुलमाल के फ़ैई में है वह उनको मरहमत फ़रमायें, वह लेने से इंकार कर देते। फिर हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में भी यही मामूल रहा कि वह हकीम रज़ि० को उनका हिस्सा देने को बुलाते, वह लेने से इंकार

कर देते। हज़रत उमर रज़ि॰ ने लोगों को इस पर गवाह बनाया कि वह हकीम रज़ि॰ का हिस्सा देने को बुलाते हैं, वह क़ुबूल नहीं करते। लेकिन हज़रत हकीम रज़ि॰ ने अपने इंतिक़ाल तक किसी से न लिया। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बहरैन से माल आया। अव्वल हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत अब्बास रज़ि॰ को बुलाया और लप भर कर अता फ़रमाया, उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰! इसका लेना मेरे लिए अच्छा है या बुरा? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बुरा है। उन्होंने वापस कर दिया और क़सम खाई कि मैं किसी की भी अता क़बूल नहीं करूंगा। फिर हकीम रज़ि॰ ने दर्ख़्वास्त की या रसूलल्लाह! मेरे लिये दुआ कीजिए कि हक़ तआला शानुहू मेरे यहां बरकत अता फ़रमाये। हुज़ूर सल्ल॰ ने दुआ की कि हक़ तआला शानुहू इनके हाथ की कमाई में बरकत अता फ़रमाये। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत मुआविया रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मांगने में इसरार न किया करो, ख़ुदा की क़सम! जो शख़्स मुझसे कोई चीज़ मांगे और महज़ उसके मांगने की वजह से अपनी तबीअत के ख़िलाफ़ मैं कोई चीज़ उसको दूं तो उसमें बरकत न होगी। एक और हदीस में है कि जिस शख़्स को मैं तीबे नफ़्स से कोई चीज़ दूँ उसमें तो बरकत होगी और जिस शख़्स को उसकी तमअ और सवाल की वजह से बग़ैर तीबे ख़ातिर के कोई चीज़ दूंगा वह ऐसा होगा जैसा कि आदमी खाता रहे और पेट न भरे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि सवाल में इसरार न किया करो। जो शख़्स इसरार के साथ हमसे कोई चीज़ लेगा, उसमें बरकत न होगी। *(तर्ग़ीब)*

क़ुरआन पाक में भी इस पर तंबीह फ़रमाई गयी चुनांचे इर्शाद है –

"ला यस्‌-अलू नन्ना-स इल्हाफ़ा" *(बक़र: रूकूअ 37)*

"कि लोगों से इसरार से नहीं मांगते"।

हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करती हैं कि यह माल सर सब्ज़ और मीठी चीज़ है, पस जिस शख़्स को हम उसमें से कोई चीज़ अपनी तीबे नफ़्स से दें ऐसी हालत में कि लेने वाले की तरफ़ से रोज़ी लेने की अच्छी हालत हो (यानी इस्तिहक़ाक़ के एतिबार से बेहतरीन मुस्तहिक़ हो, सवाल के एतिबार से जायज़ तलब हो मुबालग़ा

न हो) और उसकी तरफ़ से तमअ् न हो, तो उस माल में उसके लिए बरकत दी जाती है और जिस शख़्स को हम कोई चीज़ ऐसी तरह दें कि तीबे ख़ातिर न हो और उसकी तरफ़ से लेने वाले की अच्छी हालत न हो और उसकी तमअ् शामिल हो तो उसमें बरकत नहीं होती। *(तर्ग़ीब)*

बरकत ऐसी अहम और क़ाबिले क़द्र चीज़ है कि उसमें थोड़ी सी चीज़ में बहुत सी ज़रूरत पूरी हो जाती है। पहले इस क़िस्म के वाक़िआत गुज़र चुके हैं कि एक प्याला दूध बहुत से असहाबे सुफ़्फ़ा को काफ़ी हो गया, यह आख़िर बरकत ही तो थी। और इस जमाने में भी बसा औक़ात इस का मुशाहदा होता रहता है गो वैसा न हो जैसा कि हुज़ूर सल्ल॰ के लिए बरकत का नमूना ज़ाहिर होता था और वैसा हो भी नहीं सकता। लेकिन इस ज़माने और हालात के एतिबार से बहुत मर्तबा इसका तजुर्बा होता है कि हक़ तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल से किसी चीज़ में ऐसी बरकत फ़रमा देते हैं कि देखने वाले ताज्जुब में रह जाते हैं और इसके बिल्मुक़ाबिल बे बरकती ऐसी मनहूस चीज़ है कि जितना भी कमाए जाओ, कभी काफ़ी नहीं होता, जिसकी मिसाल हुज़ूर सल्ल॰ के पाक कलाम में क़रीब ही गुज़री है कि खाए जाओ पेट न भरे। इस बे बरकती में अपना ही तजुर्बा ख़ुद अपने ही ऊपर और अपनी हिमाक़त का इज़्हार करता हूँ। मुझे बचपन में बैतबाज़ी का बहुत शौक़ था और चूंकि वालिद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू की तरफ़ से बावजूद उनके तशद्दुद और सख़्तियों के इस फ़ेअ्ल पर नकीर न थी, इसलिए यह मर्ज़ तरक़्क़ी पज़ीर था और बिला मुबालग़ा हर ज़बान के हज़ारों शेर याद थे, जो अब नहीं रहे। मेरा अहम तरीन खेल यह था कि अपने मख़्सूस अइज़्ज़ा (क़रीबी लोग) जब कहीं एक जगह इत्तिफ़ाक़िया जमा हो जाते तो यह मशग़ला शुरू हो जाता।

मुझे अपने इब्तिदाई मुदर्रिसी के ज़माने में एक रात के लिए कैराना जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ, जहां मेरे फूफीज़ाद भाई वकालत करते थे, वह भी इस मशग़ले के शौक़ीन या मरीज़ थे। मेरी वजह से और भी बाज़ अइज़्ज़ा जमा हो गये और हस्बे मामूल इशा की नमाज़ के बाद यह बेकार मशग़ला शुरू हो गया। सर्दी का ज़माना था, उन्होंने तीन सेर दूध इस ख़्याल से मंगा कर रखा था कि रात को दो तीन मर्तबा चाय का दौर तो आख़िर चलेगा ही। मगर इस ख़्याल से कि अभी थोड़ा सा वक़्त गुज़र जाये तो पकाई जायेगी, चाय पकाने की नौबत भी न आई। मेरे अंदाज़ों के मुवाफ़िक़ आध पौन घंटा गुज़रा होगा कि मुझे पेशाब की

ज़रूरत हुई और बाहर आया तो आसमान पर मश्रिक़ की जानिब ऐसी तेज सफ़ेदी नज़र आयी कि हैरत हो गयी, कुछ समझ में न आया कि यह सफ़ेदी क्या चीज़ है? उसके देखने के वास्ते मैं ने दूसरे अइज़्ज़ा को आवाज़ दी। सब उसको देखकर हैरान थे कि यह सफ़ेदी किस चीज़ की है। मुख़्तलिफ़ क़यासात घढ़े जा रहे थे कि चारों तरफ़ से अज़ानों की आवाज़ें आनी शुरू हो गयीं, जिससे मालूम हुआ कि यह सुबह सादिक़ है। वह दिन भी अजीब हैरत में गुज़रा कि रात कहां निकल गयी और उसके बाद से अब तक भी जब ख़्याल आ जाता है, एक सन्नाटा सा गुज़र जाता है कि उस रात में इस क़दर बे बरकती क्यों हुई और अब तो जब कभी उस रात का ख़्याल आ जाता है तो हैरत के अलावा एक इब्रत और अफ़सोस भी होता है कि मरने के बाद सारी उम्र ही उस रात जैसी होगी। उसी दिन मेरे मौसूफ़ भाई ने अपने वालिद, मेरे फूफा मौलाना रज़ीयुल हसन साहब रहमतुल्लाहि अलैहि को, जो बुज़ुर्ग हस्ती क़ुत्बे आलम हज़रत गंगोही नव्वरल्लाहु मरक़दहू के हदीस में शागिर्द थे, ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे हैं कि मियां ज़करिया भी कैसे बुज़ुर्ग हैं, इस तरह रात को ज़ाया कर देते हैं। कुछ उन्हीं की तवज्जोह का असर होगा कि उसके बाद से फिर कभी इस मशग़ले की नौबत न आई। लेकिन उम्र भर की हैरत के लिए यह कैराना की रात मुझे ताज्जुब में डालने के लिए काफ़ी है। और इस वाक़िए से दो चीज़ें ऐसी ज़ेहन नशीन हो गयीं कि उनमें ज़रा भी इस्तिब्आद नहीं रहा। एक तो बुज़ुर्गों के वे वाक़िआत और हालात जिनके मुताल्लिक़ तवारीख़ में इस क़िस्म की चीज़ें ज़िक्र की जाती हैं। कि सारी रात नमाज़ में गुज़ार दी। इशा के वुज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ ली, रात रात भर मुनाजात में गुज़ार दी कि इस क़िस्म के जितने वाक़िआत हैं वे सब क़रीने क़यास हैं। लज़्ज़त और इन्हिमाक यक़ीनन ऐसी चीज़ है कि उसके हासिल होने के बाद न रात का तूल रह सकता है, न नींद का हमला। हक़ तआला शानुहू ने अपने लुत्फ़ से इन हज़रात को इन इबादात में लज़्ज़त का मर्तबा अता फ़रमाया, यह उसको वसूल करते हैं। जिनको इनमें लज़्ज़त नहीं है उनको जितना भी दुश्वार और पहाड़ मालूम हो, ज़ाहिर है।

और दूसरी चीज़ जो अपने तजुर्बे से ज़ेहन में आई, वह एक हदीसे पाक का मज़्मून है कि क़ियामत का सख़्त तरीन दिन जो पचास हज़ार बरस के बराबर है, बाज़ लोगों पर ऐसा गुज़र जाएगा जैसा कि एक नमाज़ या एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक का वक़्त होता है। यक़ीनन यह हज़रात जिनके पास मआसी न होने से

ख़ौफ़ का गुज़र न हो, अपने नेक अमाल की वजह से ला ख़ौफ़ुन अलैहिम (अलआयत) के मिस्दाक़ हैं कि न उनको उस दिन कोई ख़ौफ़ होगा, न वे ग़मगीन होंगे, वे अर्श के साया तले अपने कारनामों की लज़्ज़तों में मशग़ूल और मुनहमिक होंगे, उन पर यह तवील वक़्त जितना भी मुख़्तसर से मुख़्तसर गुज़र जाए, मेरे लिए तो अपना तजुर्बा इसकी ताईद करता है।

(٤) عن خالد بن علی الجهنی قال سمعتُ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول من بلغه عن اخیہ معروف من غیر مسئلۃ ولا اشراف نفس فلیقبلہ ولا یردہ فانما ھو رزق ساقہ اللہ عزوجل الیہ رواہ احمد باسناد صحیح وابن حبان فی صحیحہ والحاکم کذا فی الترغیب.

4. हज़रत ख़ालिद बिन अली रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स को बग़ैर सवाल के और बग़ैर इशराफ़े नफ़्स यानी (तमअ़ और हिर्स) के अपने भाई की तरफ़ से कोई चीज़ पहुँचे उसको क़ुबूल करना चाहिए, उसको रद्द न करना चाहिए, यह अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से रोज़ी है, जो उसको भेजी गयी है।

फ़ायदाः- मुतअद्दद अहादीस में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि बिला तलब और बिला तमअ़ के अगर कोई हदया मिले तो उसको क़ुबूल करना चाहिए, इसलिए कि उसके वापस करने में अल्लाह की नेमत का कुफ़रान है और ठुकराना है, यही वजह है कि अक्सर अकाबिर बावजूद तबीअत न चाहने के भी क़ुबूल करते हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे अता के तौर पर कुछ मरहमत फ़रमाते, मैं अर्ज़ कर देता कि हुज़ूर सल्ल॰ किसी ऐसे शख़्स को मरहमत फ़रमा दें जो मुझ से ज़्यादा हाजत मंद हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि नहीं, ले लो, जब कोई माल ऐसी तरह आवे कि न तो उस का सवाल किया जाए न उसमें इशराफ़े नफ़्स हो तो उसको ले लिया करो। फिर अगर दिल चाहे उसको अपने काम में लाओ और दिल न चाहे तो सदक़ा कर दिया करो और जो माल ख़ुद न आए उसकी तरफ़ ध्यान भी न लगाओ।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ के साहबज़ादे हज़रत सालिम रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि इस हदीस की वजह से हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ की यह आदत थी कि कभी

किसी से सवाल न करते थे और कहीं से कुछ आता तो उसको रद्द न फ़रमाते।

इसी क़िस्म का क़िस्सा हज़रत उमर रज़ि॰ को भी पेश आया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको कुछ मरहमत फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ि॰ ने उसको वापस कर दिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि वापस क्यों कर दिया? हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि आप ही ने तो यह इर्शाद फ़रमाया था कि हमारे लिये यही बेहतर है कि किसी से कोई चीज़ न लिया करें। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उससे मांग कर न लेना मुराद है। जब बग़ैर मांगे कोई चीज़ मिले तो वह अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से रोज़ी है जिसको अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया है, हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि फिर हुज़ूर (सल्ल॰) उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अब से कभी किसी से कोई चीज़ मांगूगा नहीं और बिला तलब मिलेगी तो उसको क़ुबूल करूँगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि॰ ने हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में कुछ दाम और कुछ कपड़ा किसी क़ासिद के हाथ भेजा, हज़रत आइशा रज़ि॰ ने यह कह कर वापस कर दिया कि मेरी आदत तो किसी से लेने की नहीं है। जब वह क़ासिद वापस जाने लगा, घर से निकला ही था हज़रत आइशा रज़ि॰ ने उसको वापस बुला लिया और उस हदये को रख लिया और यह फ़रमाया कि मुझे एक बात याद आ गई, हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझसे यह फ़रमाया था कि आइशा, बे मांगे कोई चीज़ मिले तो उसको ले लेना, वह अल्लाह की तरफ़ से रोज़ी है, जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गयी है। ग़ालिबन यह इब्तिदाई क़िस्सा होगा, इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि॰ हदाया क़ुबूल करने लगीं। मुतअद्दद रिवायात में सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से बड़ी बड़ी रक़में हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में पेश होना और हज़रत आईशा रज़ि॰ का उनको लेकर हाथ के हाथ तक़्सीम कर देना वारिद हुआ है।

वासिल बिन ख़त्ताब रज़ि॰ कहते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि क्या आप (सल्ल॰) ने यह इर्शाद फ़रमाया था कि किसी से कुछ मांगना नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हां मांगने के मुताल्लिक़ मैं ने कहा है, लेकिन बग़ैर मांगे अगर अल्लाह तआला कोई चीज़ मरहमत फ़रमा दें तो उसको ले लेना, वह अल्लाह तआला की तरफ़ से रोज़ी है जो अल्लाह तआला ने तुमको दी है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला शानुहू बे मांगे कोई चीज़ दिलवाये तो उसको क़ुबूल करना चाहिए, वह अल्लाह तआला की तरफ़ से उसको रोज़ी भेजी गयी है।

आबिद बिन उमर रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्ल॰ से यही नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स को कोई रोज़ी बग़ैर मांगे और बग़ैर इशराफ़े नफ़्स के पेश की गयी हो उससे अपने ख़र्च में वुस्अत पैदा करना चाहिए और अगर ख़ुद उस को उसकी हाजत न हो तो फिर किसी ऐसे शख़्स को दे देना चाहिए जो अपने से ज़्यादा ज़रूरत मंद हो। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ के साहबज़ादे अब्दुल्लाह रह॰ कहते हैं कि मैं ने अपने वालिद से दर्याफ़्त किया कि इशराफ़े नफ़्स क्या चीज़ है? उन्होंने फ़रमाया कि तू अपने दिल में यह ख़्याल करे कि यह शख़्स मुझे कुछ देगा? फ़लां शख़्स मुझे कुछ भेजेगा। *(तर्ग़ीब)*

इशराफ़ के असल मायने झांकने के हैं। इशराफ़े नफ़्स यह है कि नफ़्स उसको झांक रहा हो, उसकी ताक में लगा हुआ हो जैसा कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ ने फ़रमाया है कि दिल में यह ख़्याल हो कि यह मुझे कुछ अता करेगा। इसी वजह से अक्सर उलमा इसको हिर्स व तमअ् से ताबीर करते हैं कि इसमें भी नफ़्स की ख़्वाहिश होती है कि मुझे मिल जाये।

अल्लामा ऐनी रह॰ फ़रमाते हैं कि इशराफ़े नफ़्स के मायने बाज़ ने शिद्दते हिर्स के फ़रमाये हैं और बाज़ उलमा ने कहा है कि इशराफ़े नफ़्स यह है कि देने वाला गरानी के साथ अता करे।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ उस चीज़ के क़ुबूल करने के आदाब में जो बेतलब कहीं से आये, लिखते हैं कि इसमें तीन चीज़ें क़ाबिले ग़ौर व फ़िक्र होती हैं। एक तो माल, दूसरे देने वाले की ग़रज़, तीसरे लेने वाले की ग़रज़, यानी अव्वल तो माल देखना है कि वह कैसा है? अगर हराम माल है या मुश्तबह है तो उससे एहतिराज़ ज़रूरी है, इसके बाद दूसरी चीज़ देने वाले की ग़रज़ का देखना है कि वह किस नीयत से देता है यानी हदये की नीयत से दे रहा है जिससे दूसरे का दिल ख़ुश करना और उसकी मुहब्बत का बढ़ाना मक़सूद हो या सदक़े की नीयत से दे रहा है या अपनी शोहरत और नमूद की ग़रज़ से दे रहा है (या किसी और फ़ासिद ग़रज़ से दे रहा है जिस का बयान दूसरी हदीस में आ रहा है) पस अगर

महज़ हदया है तो उस का क़ुबूल करना सुन्नत है (बहुत सी अहादीस में हदये के देने की और क़ुबूल करने की तर्ग़ीबात आई हैं बशर्ते कि उसमें लेने वाले पर मन्नत, एहसान और बोझ न हो) अगर मन्नत हो तो रद्द करने में मुज़ायक़ा नहीं। और अगर हदये की मिक़्दार ज़्यादा होने पर मन्नत हो तो उसमें से कुछ मिक़्दार ले लेने और कुछ मिक़्दार वापस कर देने में मुज़ायक़ा नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक शख़्स ने घी और पनीर और एक मेंढा पेश किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने घी और पनीर क़ुबूल फ़रमा लिया मेंढ़ा वापस कर दिया और हुज़ूर सल्ल॰ की यह आदते शरीफ़ा भी थी कि बाज़ का हदया क़ुबूल फ़रमा लेते और बाज़ का रद्द फ़रमा देते। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया मेरा यह इरादा है कि किसी शख़्स का हदया क़ुबूल न करूँ बजुज़ उन लोगों के जो क़ुरैशी हों या अंसारी या सक़फ़ी या दौसी (और इस इर्शाद का मब्ना (बुनियाद) यह था कि एक आराबी ने हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक ऊँटनी पेश की। हुज़ूर सल्ल॰ की आदते शरीफ़ा चूँकि हदये का बदला मरहमत फ़रमाने की थी इसलिए उसके बदले में हुज़ूर सल्ल॰ ने छः ऊंट उसको दिए जो उसने कम समझे कि वह उनसे भी ज़्यादा का उम्मीदवार था और इस पर उसने नागवारी का इज़्हार किया। जब हुज़ूर सल्ल॰ को इस वाक़िए का इल्म हुआ तो हुज़ूर सल्ल॰ ने वअ्ज़ में इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमा कर अपने इस इरादे का इज़्हार फ़रमाया और जिन लोगों को मुस्तस्ना किया, उनके इख़्लास पर हुज़ूर सल्ल॰ को इतिमाद था।) *(बज़्ल)*

और हज़रात ताबिअीन का भी यह मामूल कसरत से नक़्ल किया गया कि बाज़ हदया क़ुबूल फ़रमा लेते, बाज़ को रद्द फ़रमा देते। फतह बिन शख़रफ़ मूसली रह॰ की ख़िदमत में किसी ने एक थैली पचास दिरम की पेश की, उन्होंने फ़रमाया, मुझे हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद पहुँचा है कि जिस शख़्स के पास बिला तलब कोई रिज़्क़ आए और वह उसको वापस कर दे तो अल्लाह की रोज़ी को वापस करता है। इसके बाद वह थैली उन्होंने ले ली और उसमें से एक दिरम क़ुबूल करके बाक़ी को वापस कर दिया। हसन बसरी रह॰ भी इस हदीस को रिवायत करते हैं लेकिन उनके पास एक शख़्स दराहिम की थैली और एक गठरी ख़ुरासान के बारीक कपड़ों की लाया। उन्होंने उसको वापस फ़रमा दिया और यह फ़रमाया कि जो शख़्स इस मर्तबे पर बैठे जहां मैं बैठा हूँ (यानी वअ्ज़ व नसीहत, रूश्द व हिदायत के मर्तबे पर) फिर लोगों से इस क़िस्म की चीज़ें क़ुबूल करे, वह अल्लाह तआला शानुहू से ऐसे हाल में मिलेगा कि उसका कोई हिस्सा न

होगा। (यानी आख़िरत में कुछ न मिलेगा, इसलिए कि इसमें शायबा दीनी काम में बदला लेने का है।)

हज़रत उबादा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं असहाबे सुफ़्फ़ा को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाया करता था। उनमें से एक शख़्स ने मुझे एक कमान हदये में दी। मैं ने यह सोचा कि यह कुछ ऐसा माल भी नहीं है और अल्लाह के रास्ते, जिहाद में इससे काम लूँगा फिर भी मुझे ख़्याल आया कि हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त कर लूँ। मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें यह पसंद हो कि आग का एक तौक़ तुम्हारे गले में डाल दिया जाये तो ले लो।

(अबू दाऊद)

हसन बसरी रह॰ के इस अमल (और हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद) से मालूम हुआ कि क़ुबूले हदया के मामले में आलिम और वाअिज़ का मामला ज़्यादा सख़्त है। इसके बावजूद हसन बसरी रह॰ (अपने मख़सूस) असहाब से हदया क़ुबूल करते थे (जहां मुआवज़ा का शुब्हा न होता था) और इब्राहीम तैमी रह॰ अपने असहाब से एक एक, दो दो दिरम ले लेते थे और बाज़ लोग सैंकड़ों पेश करते थे, उस को क़ुबूल न करते थे, और बाज़ हज़रात का यह मामूल था कि जब उनको कोई हदया देता तो वे फ़रमाते कि अभी अपने ही पास रहने दो और मुझे ग़ौर करके यह बताओ कि अगर इसके क़ुबूल करने से मेरी वक़्अत (मुहब्बत) तुम्हारे दिल में उससे ज़्यादा बढ़ जाए जितनी क़ुबूल करने से पहले है, तब तो मुझे ख़बर देना, मैं ले लूँगा वरना नहीं। इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि इसकी अलामत यह है कि रद्द करने से देने वाले की दिल शिकनी हो और क़ुबूल करने से उसको मसर्रत हो और उस का क़ुबूल कर लेना वह अपने ऊपर एहसान समझता हो।

बिश्र रह॰ कहते हैं कि मैं ने हज़रत सिर्री सक़ती रह॰ के सिवा कभी किसी से सवाल नहीं किया, उनसे अलबत्ता इसलिए सवाल करता हूँ कि मुझे उनके ज़ुह्द का हाल मालूम है, मुझे यह बात मुहक़्क़क़ है कि उन की मिल्क से किसी चीज़ का निकल जाना उनकी मसर्रत का सबब होता है और उनके पास रहना गरानी का सबब होता है इसलिए मैं उनसे लेकर उनकी ख़ुशी में मदद करता हूँ। एक शख़्स ख़ुरासान के रहने वाले हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ के पास बहुत सा माल हदये में लाए। हज़रत ने फ़रमाया कि बहुत अच्छा, मैं इसको फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दूँगा। उसने अर्ज़ किया मैं इसलिए नहीं पेश करता, मेरा

दिल चाहता है कि इसको आप ख़ुद अपने खाने में ख़र्च करें। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसके ख़त्म होने तक कहाँ ज़िंदा रहूँगा (बहुत बड़ी मिक्दार है, इसके ख़त्म होने के वास्ते ज़माना चाहिए) उसने अर्ज़ किया मैं यह नहीं चाहता कि आप इसको सिरका और सब्ज़ी में ख़र्च करें (कि बरसों में ख़त्म हो)। मेरा दिल चाहता है कि इस से आप हलवा वग़ैरह अच्छी चीज़ें नोश फ़रमावें। हज़रत ने क़ुबूल फ़रमा लिया। ख़ुरासानी ने अर्ज़ किया कि बग़दाद में कोई शख़्स भी ऐसा नहीं जिसका एहसान मुझ पर आपसे ज़्यादा हो (इस वजह से कि आप ने मेरी दर्ख़्वास्त पर मेरा हदया क़ुबूल फ़रमा लिया।) हज़रत ने फ़रमाया कि तेरे जैसे शख़्स का हदया ज़रूर क़ुबूल करना चाहिए (यह सारी बहस हदये की थी।)

दूसरी क़िस्म सदक़ात और ज़कात है। पस अगर वह ज़कात है तो लेने वाले को चाहिए कि वह यह देखे कि ज़कात का मुस्तहिक़ है या नहीं। अगर मुस्तहिक़ है तो ले ले (ज़कात की फ़स्ल के ख़त्म पर इस की कुछ तफ़्सील गुज़र चुकी है) और अगर बग़ैर ज़कात का सदक़ा है तो लेने वाले को यह ग़ौर करना चाहिए कि वह क्यों दे रहा है। अगर वह उसकी दीनदारी की वजह से दे रहा है तो अपने हाल पर नज़र करना चाहिए कि वह दर पर्दा किसी ऐसे गुनाह का मुरतकिब तो नहीं है। कि अगर देने वाले को उस गुनाह का इल्म हो जाये तो कभी भी न दे और उस की तबीअत को इस से नफ़रत हो जाए, अगर ऐसा है तो उसका लेना ना जायज़ है। यह ऐसा ही है जैसा कि किसी शख़्स को आलिम समझ कर कोई शख़्स दे और वह महज़ जाहिल हो या सैय्यद समझ कर कोई शख़्स दे और वह सैयद न हो तो उनको इसका लेना बिल्कुल जायज़ नहीं। बे तरद्दुद हराम है और अगर देने वाले की ग़रज़ फ़ख़्र व रिया और शोहरत है तो उसको हरगिज़ क़ुबूल न करना चाहिए। इसलिए कि यह मासियत है और लेने वाला गुनाह में मददगार होगा। (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों का खाना खाने की मुमानअत फ़रमाई है जो तफ़ाख़ुर के लिए खिलाते हों) *(तर्ग़ीब)*

हज़रत सुफ़यान सोरी रह॰ बाज़ हदाया को यह कह कर वापस कर देते थे कि अगर मुझे यह यक़ीन हो जाए कि देने वाला फ़ख़्र के तौर पर इस को ज़िक्र नहीं करेगा तो मैं ले लूँ। बाज़ बुज़ुर्गों पर जब उनके हदाया वापस करने पर एतिराज़ किया गया तो उन्होंने फ़रमाया कि देने वालों पर तरस खाकर वापस कर देता हूँ कि वे इसका लोगों से तज़्किरा करते हैं, जिस से उनका सवाब जाता रहता

है तो बग़ैर सवाब के उनका माल क्यों ज़ाया हो।

तीसरी चीज़ लेने वाले की ग़रज़ है। अगर वह मुहताज है और माल उन आफ़ात से महफ़ूज़ है जो पहले दो नम्बरों में गुज़रीं तो उसका लेना अफ़ज़ल है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि लेने वाला अगर मुहताज है तो वह सदक़ा के लेने में सवाब के एतिबार से देने वाले से कम नहीं है और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू कोई माल बग़ैर मांगे और बग़ैर इशराफ़े नफ़्स के दे तो वह अल्लाह तआला का रिज़्क़ है जो उसने अता फ़रमाया।

इस मज़्मून की मुअतद्दद रिवायात अभी गुज़र चुकी हैं। उलमा का इर्शाद है कि जो शख़्स बग़ैर मांगे मिलने पर न ले, उसको मांगने पर भी नहीं मिलता।

हज़रत सिर्री सक़ती रह० हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पास हदया भेजा करते थे। एक मर्तबा उन्होंने वापस कर दिया तो हज़रत सिर्री सक़ती रह० ने फ़रमाया कि अहमद वापस करने का वबाल, लेने के वबाल से सख़्त है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया, एक मर्तबा फिर इस बात को फ़रमा दें (ताकि मैं इस पर ग़ौर करूँ) हज़रत सिर्री रह० ने फिर यही बात फ़रमाई कि वापस करने का वबाल, लेने के वबाल से ज़्यादा सख़्त है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने कहा कि मैं ने इसलिए वापस किया कि मेरे पास एक महीने के गुज़र के क़ाबिल मौजूद है। आप इसको अपने पास रहने दीजिए, एक महीना के बाद मुझे मरहमत फ़रमा दें।

बाज़ उलमा का इर्शाद है कि जो शख़्स एहतियाज के बावजूद वापस कर दे वह किसी सज़ा में मुब्तिला होता है। तमअ् पैदा हो जाए या मुश्तबह माल लेना पड़ जाये या कोई और आफ़त ऐसी ही आ जाए और अगर उसको एहतियाज नहीं है तो फिर यह देखे कि वह इन्फ़िरादी ज़िन्दगी गुज़ारता है या इज्तिमाई। यानी अगर वह यकसू रहता है दूसरे लोगों से उसके ताल्लुक़ात नहीं हैं तो ऐसे आदमी को ज़रूरत से ज़्यादा लेकर अपने पास रोकना नहीं चाहिए कि यह महज़ इत्तिबाअ-ए-ख़्वाहिश है और उसको फ़ित्ने में मुब्तला कर देने का सबब है। अगर किसी वजह से ले ले तो उसको दूसरों पर तक़्सीम कर दे। और इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने हज़रत सिर्री रह. की अता इस वजह से क़ुबूल नहीं की कि उनको ख़ुद तो हाजत न थी और यह गवारा न हुआ कि उसको लेकर उसकी तक़्सीम और ख़र्च करने में अपने औक़ात को मशग़ूल करें इसलिए कि

इसमें बहुत सी आफ़ात और बहुत सी दिक्क़तें थीं और एहतियात का तक़ाज़ा यही है कि आफ़ात के महल से दूर रहे इसलिए कि शैतान के मक्र से किसी वक़्त में इत्मीनान नहीं।

एक शख़्स मक्का के रहने वाले कहते हैं कि मेरे पास कुछ दराहिम थे जिनको मैंने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए रखा था। मैं ने एक फ़क़ीर की आवाज़ सुनी जो तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर बहुत आहिस्ता से (काबे का पर्दा पकड़ कर) कह रहे थे, ऐ अल्लाह, तुझे मालूम है कि मैं भूखा हूँ, ऐ अल्लाह तुझे मालूम है कि मैं नंगा हूँ, ऐ वह ज़ात पाक जो दूसरों को देखती है उसको कोई नहीं देखता। मैं ने जो उन फ़क़ीर साहब की तरफ़ निगाह की तो उनके बदन पर दो पुरानी चादरें थीं, जिनसे उन का बदन ढका भी न जाता था, मैं ने अपने दिल में ख़्याल किया कि मेरे दिरहमों का मसरफ़ इनसे बेहतर नहीं मिलेगा। मैं ने वे सब उनके सामने पेश कर दिये। उन्होंने उसमें से सिर्फ़ पांच दिरहम लेकर बाक़ी मुझे वापस कर दिए और यह कहा कि चार दिरहम दो लुंगियों की क़ीमत है और एक दिरहम तीन दिन खाने में ख़र्च हो जायेगा। (एक दिरहम तक़रीबन साढ़े तीन आने का होता है) मैं ने दूसरी रात को उनको देखा कि दो नई लुंगियां उनके बदन पर थीं। मेरे दिल में उनकी तरफ़ से कुछ ख़तरा गुज़रा, उन्होंने मुझे देखा और मेरा हाथ पकड़ कर अपने साथ तवाफ़ कराया तो तवाफ़ के सातों चक्करों के हर फेरे में मेरे पांव के नीचे मादनियात भरे पड़े थे कि पांव के नीचे वे हरकत करते थे जिसमें सोना चांदी, यांक़ूत, मोती और जवाहिरात थे। मुझे वे नज़र आ रहे थे और लोगों को नज़र नहीं आते थे। इसके बाद उन साहब ने कहा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने यह सब कुछ मुझे अता फ़रमा रखा है, लेकिन मैं इसमें से लेना नहीं चाहता, लोगों के हाथ से लेकर ख़र्च करता हूँ, इसलिए कि इस में उन लोगों का नफ़ा होता है जिन से लूं और उन पर अल्लाह की रहमत होती है।

ग़रज़ इन वाक़िआत से यह है कि ज़रूरत से ज़ायद का लेना फ़ित्ने का सबब है जो अल्लाह की तरफ़ से इम्तिहान है कि उस को किस काम में ख़र्च किया और बक़द्रे हाजत का लेना अल्लाह तआला की रहमत है। पस आदमी को रहमत और इम्तिहान में फ़र्क़ करना चाहिए। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है।

"इन्ना जअल्ना मा अलल् अर्ज़ि ज़ीन-तल्लहा॰"

(कह्फ़, रूकूअ 1)

"हमने जो कुछ ज़मीन के ऊपर है उसको ज़मीन के लिए ज़ीनत बना रखा है ताकि उन लोगों का इम्तिहान करें और देखें कि उनमें कौन शख़्स ज़्यादा अच्छे अमल करता है (और कौन नहीं करता यानी कौन शख़्स इस ज़ेब व ज़ीनत में फंसकर अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल हो जाता है। और कौन इससे ऐराज़ करके ख़ुदा (की याद) में मशग़ूल रहता है।) और हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी के लिए तीन चीज़ के अलावा कोई हक़ नहीं, एक इतनी मिक़्दार खाना जिससे कमर सीधी रहे, एक इतना कपड़ा जिससे बदन ढ़का रहे और एक घर जिस में आदमी समा सके। इससे ज़्यादा जो कुछ है वह हिसाब है। पस इन तीन चीज़ों में से सिर्फ़ ज़रूरत की मिक़्दार तो बाअिसे अज्र है इससे ज़्यादा में अगर अल्लाह तआला की नाफ़रमानी भी न करे तब भी हिसाब तो है ही और अगर नाफ़रमानी भी की तो अज़ाब भी है, पस ज़रूरत से ज़ायद अगर कुछ हो भी तो वह मुहताजों पर सर्फ़ कर दे। यह सब तो इन्फ़िरादी ज़िन्दगी का हाल था, अगर कोई शख़्स ऐसा है कि उसकी इज्तिमाई ज़िन्दगी है, उसकी तबीअत में जूद व सख़ा का माद्दा है। फ़ुक़रा और सुलहा की जमाअत उससे वाबस्ता है उनकी ज़रूरियात भी पूरी करने की ज़रूरत होती है तो ऐसे शख़्स को अपनी हाजत से ज़ायद लेने में मुज़ायक़ा नहीं लेकिन लेने के बाद बहुत जल्द उसको ख़र्च कर देना चाहिये, अहले ज़रूरत पर बांट देना चाहिए, एक रात भी उसको अपने पास रखना फ़ित्ने की बात है। ऐसा न हो कि दिल में उसका ख़्याल पैदा होने लगे, ख़र्च करने से तबीअत रूकने लगे बल्कि ऐसे शख़्स को अल्लाह पर एतिमाद करके, क़र्ज़ लेकर ख़र्च करने में भी कुछ मुज़ायक़ा नहीं। हक़ तआला शानुहू उसका क़र्ज़ अदा फ़रमायेंगे। *(एह्या)*

(٥) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اقرض احدكم قرضًا فاهدى اليه او حمله على الدابة فلا يركبه ولا يقبلها الاان يكون جرى بينه وبينه قبل ذلك رواه ابن ماجة والبيهقى فى الشعب كذا فى المشكوٰة .

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब तुम में से कोई शख़्स किसी को क़र्ज़ दे फिर वह क़र्ज़दार उसको कोई हदया दे या अपनी सवारी पर सवार कराये, तो न हद्या क़ुबूल करे न उसकी सवारी पर सवार हो, अलबत्ता अगर उस क़र्ज़ के मामले से पहले इस क़िस्म का बर्ताव दोनों में था तो मुज़ायक़ा नहीं।

फ़ायदा – यानी अगर इस से पहले से आपस में इस क़िस्म के ताल्लुक़ात हदया वग़ैरह के या उसकी चीज़ मुस्तआर लेने के थे तब तो क़र्ज़ की हालत में भी उस के क़ुबूल करने में मुज़ायक़ा नहीं और अगर पहले से ऐसे ताल्लुक़ात न थे, बल्कि अब क़र्ज़दार होने की वजह से कर रहा है तो वह सूद है। एक और हदीस में है, हज़रत अबूबर्दा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० ने फ़रमाया कि तुम ऐसी जगह के रहने वाले हो जहां सूद का बहुत रिवाज है, पस अगर तुम्हारा किसी शख़्स के ज़िम्मे कोई हक़ हो फिर वह तुम्हारे यहां भुस की गठरी या घास की गठरी डाल दे तो उसको मत लेना, वह सूद है। *(मिश्कात)*

पस हदया क़ुबूल करने में यह देखना भी ज़रूरी है कि देने वाले की कोई फ़ासिद ग़रज़ तो नहीं है जैसा कि क़र्ज़ ही की सूरत में अलावा सूद होने के अगर यह भी ग़रज़ है कि क़र्ज़ख़्वाह तक़ाज़ा न करे तो यह सूद के साथ रिश्वत भी है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सी अहादीस में रिश्वत देने वाले पर, रिश्वत लेने वाले पर, दोनों पर लानत आई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रिश्वत लेने वाले पर, और रिश्वत देने वाले पर लानत की है। एक और हदीस में है कि रिश्वत लेने वाला और रिश्वत देने वाला दोनों जहन्नमी हैं। एक और हदीस में है कि जिस क़ौम में सूद का रिवाज होगा उन पर क़हत मुसल्लत होगा और जिस क़ौम में रिश्वत का ज़ुहूर होगा वे मरऊब और ख़ौफ़ज़दा होंगे, मुतअद्दद अहादीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने रिश्वत लेने वाले को, रिश्वत देने वाले को और उस शख़्स को जो रिश्वत के मामले में दर्मियानी वास्ता बने, लानत फ़रमायी है। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक साहब को सदक़ात वसूल करने के लिए भेजा। वह जब अपने काम से फ़ारिग़ होकर वापस आए तो हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में उन्होंने अर्ज़ किया कि यह माल तो सदक़े में मिला है और यह मुझे लोगों ने हदये के तौर पर दिया है, हुज़ूर सल्ल० ने वअ़ज़ में इस पर तंबीह फ़रमायी कि बाज़ लोगों को सदक़े का माल वसूल करने के लिए भेजा जाता है वे आकर यह कहते हैं कि यह सदक़े का माल है और यह मुझे हदये में मिला है, अपने बाबा के घर या अपनी मैया के घर बैठकर देखते कि हदया दिया जाता है या नहीं। *(मिश्कात)*

जैसा कि पहली अहादीस में क़र्ज़ की सूरत में हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर बिला मामला क़र्ज़ के यह सूरत हदये की पहले से हो तो मुज़ायक़ा नहीं, उसी की तरफ़ इस अिताब में भी इशारा है कि बग़ैर हाकिम होने की सूरत में अपने घर बैठे, जिस शख़्स को हदया मिलता हो वह तो हदया है। लेकिन जो हदया महज़ हाकिम होने की वजह से दिया जाता हो तो वह हदया नहीं है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स किसी की सिफ़ारिश करे और उस सिफ़ारिश की वजह से उसको हदये में कोई चीज़ मिले और वह उसको क़ुबूल कर ले तो वह सूद के दरवाज़ों में से बहुत बड़े दरवाज़े में दाख़िल हो गया। *(मिश्कात)*

हज़रत मुआज़ रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन का हाकिम बना कर भेजा तो मेरे पीछे एक आदमी भेजा जो मुझे रास्ते से वापस बुलाकर लाया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हें मालूम है कि मैं ने क्यों बुलाया है, कोई चीज़ मेरी बग़ैर इजाज़त न लेना कि यह ख़ियानत होगी।

وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (آل عمران ع۱۷).

"व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल् क़ियाम-ति॰"

(आले इमरान, रूकूअ 17)

"और जो शख़्स ख़ियानत करेगा वह उसको क़ियामत में (अपने ऊपर लादकर अदालत में) लायेगा। *(मिश्कात)*

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत रिफ़ाआ रज़ि॰ ने एक ग़ुलाम हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हदये के तौर पर पेश किया, वह हुज़ूर सल्ल॰ के साथ ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर में गए, वह एक मौक़ा पर हुज़ूर सल्ल॰ के ऊँट पर सामान बांध रहे थे कि एक तीर कहीं से आकर उनके लगा जिससे वह शहीद हो गये। लोगों ने कहा कि उनको शहादत मुबारक! (कि हुज़ूर सल्ल॰ का ग़ुलाम और फिर इज़ाफ़ा शहादत का, मुबारकबादी की बात है ही), हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया नहीं, इसने एक चादर की ख़ियानत कर ली थी, जो इस वक़्त आग बनकर उससे लिपट रही है। हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुनैन की लड़ाई में एक साहब का इन्तिक़ाल हो गया, जब जनाज़ा तैयार हुआ तो हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में नमाज़ पढ़ाने की दरख़्वास्त की गई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमा दिया कि तुम ही इसकी नमाज़ पढ़ लो। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु

अन्हुम के (रंज की वजह से) चेहरे उतर गये। हुज़ूर सल्ल॰ ने (जब उनको अफ़्सुरदा देखा तो) फ़रमाया कि इसने ख़ियानत कर रखी है। हज़रत ज़ैद रज़ि॰ कहते हैं कि हमने उस मरहूम के सामान की तलाशी ली तो उसमें यहूद के मोतियों में से कुछ छोटे छोटे मोटे मोती (जिनको पोथ कहते हैं) मिले जो दो दिरहम (यानी तक़रीबन सात आने) के भी न होंगे। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू ख़ुद तैय्यिब हैं इसलिए तैय्यिब ही माल क़ुबूल फ़रमाते हैं और हक़ तआला शानुहू ने मुसलमानों को उसी चीज़ का हुक्म फ़रमाया जिसका रसूलों को हुक्म फ़रमया, चुनांचे इर्शाद है :

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا (مؤمنون ع ٤)

"या अय्युहर्रूसुलु कुलू मिनत् तय्यिबा-ति वअ्मलू सालिहा॰"

(सूर: मुमिनून, रूकूअ 4)

"ऐ रसूलो! खाओ अच्छी चीज़ें (यानी हलाल माल)" और नेक अमल करो। और मोमिनों को फ़रमाया:-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَارَزَقْنٰكُم (بقره ع ٢١)

"या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबा-ति मा रज़क़्नाकुम"

(बक़र : रूकूअ, 294)

"ऐ मोमिनों, खाओ तैयब चीज़ें उनमें से जो हमने तुमको दी हैं फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने ज़िक्र फ़रमाया एक आदमी का कि लम्बे सफ़र में जा रहा है (जो दुआ क़ुबूल होने का ख़ास महल है) परेशान हाल, गुबार से भरा हुआ (जिससे उसकी मस्कनत भी मालूम होती है) फिर दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैलाकर ऐ अल्लाह, (करके दुआएं) करता है लेकिन उसका खाना हराम (माल से) है, पीना हराम है, लिबास हराम है और हराम माल ही से परवरिश हुई है, भला उसकी दुआ कहां क़ुबूल हो सकती है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अन्क़रीब एक ज़माना आने वाला है जिसमें आदमी को यह भी परवा न होगी कि हलाल माल से मिला या हराम माल से। *(मिश्कात)*

इनके अलावा बहुत से मुख़्तलिफ़ मज़ामीन की रिवायात कुतुबे अहादीस

में बकसरत वारिद हुई हैं। जिनमें बहुत ज़्यादा तंबीह इस पर की गयी है कि आदमी को आमदनी के ज़राए पर कड़ी निगाह करना चाहिए, ऐसा न हो कि पैसे के लालच में ना जायज़ आमदनी से चश्मपोशी कर ले। इस सिलसिले में अहले इल्म की ज़िम्मेदारी आम लोगों से बढ़ी हुई है कि वे जायज़ ना जायज़ को ख़ुद समझते हैं, ख़ास कर अहले मदारिस और दूसरे ऐसे हज़रात जिनका ताल्लुक़ चन्दे के माल से है उनको ज़्यादा मुहतात रहने की ज़रूरत है।

हमारे हज़रत बक़िय्यतुस्सलफ़ फ़ख़रूल् अमासिल हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी कुद्दस सिर्रहू इर्शाद फ़रमाया करते थे कि मैं इन मदारिस के रूपये से जितना डरता हूँ लोगों के ममलूक रूपये से उतना नहीं डरता, अगर किसी के ज़ाती माल में कुछ बे एहतियाती हो जाए उससे आख़िर में माफ़ करा ले तो वह माफ़ हो जाता है। लेकिन मदारिस का रूपया दुनिया भर का चंदा है और मुन्तज़िमीने मदारिस अमीन हैं।

अगर उसमें कोई ख़ियानत हो या नाहक़ तसर्रूफ़ हो तो वह मुन्तज़िमीन के माफ़ करने से माफ़ तो होता नहीं अलबत्ता वे ख़ुद माफ़ करके इस जुर्म में शरीक हो जाते हैं। अल्लाह तआला ही अपने लुत्फ़ व करम से हुक़ूक़ुल इबाद के मामले से महफ़ूज़ रखे कि यह बड़ी सख़्त चीज़ है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अल्लाह तआला शानुहू के यहां क़ियामत के दिन तीन कचहरियां हैं एक कचहरी में तो माफ़ी का ज़िक्र ही नहीं, यह तो शिर्क व तौहीद की कचहरी है। अल्लाह तआला ने ख़ुद इर्शाद फ़रमायाः-

"इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरू अंय्युश्र-क बिही॰"

(सूरः निसा, रूकूअ 18)

हक़ तआला शानुहू शिर्क को तो माफ़ नहीं फ़रमायेंगे इसके अलावा जिसको चाहेंगे माफ़ कर देंगे। दूसरी कचहरी में (बग़ैर मुहासबा के) अल्लाह तआला न छोड़ेगा यहां तक कि उस का बदला न ले ले, और यह लोगों के एक दूसरे पर ज़ुल्म की है (चाहे जानी हो जैसा कि बुरा भला कहना, आबरू रेज़ी करना, ऐब लगाना वग़ैरह वग़ैरह या माली हो कि किसी का माल नाहक़ तरीक़े से ले लिया हो और तीसरी कचहरी अल्लाह तआला के अपने हुक़ूक़ की है,

उसमें चाहे अज़ाब दे दे चाहे माफ़ कर दे। (*मिश्कात*)

इन अहादीस के ज़िक्र करने से यही मक़्सद है कि आदमी को अपनी आमदनी के ज़राये पर बहुत गहरी निगाह रखना चाहिए कि आमदनी अगर हराम हो तो न उसकी दुआ क़ुबूल होती है जैसा कि अभी गुज़रा है, न उसके सदक़ात क़ुबूल हों जैसा कि ज़कात के बयान में मुतअद्दद रिवायात इसकी गुज़र चुकी हैं। बल्कि बाज़ रिवायात में यह मज़्मून भी गुज़र चुका है कि जो गोश्त हराम माल से पैदा हुआ हो, जहन्नम की आग उस के लिए ज़्यादा मौज़ूं (मुनासिब) है और आइंदा हदीस के ज़ैल में भी इस क़िस्म के मज़ामीन आ रहे हैं। अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल से हम लोगों को इस से महफ़ूज़ रखे। आमीन!

(٦) عن ابن مسعودؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لاتزول قدما ابن ادم یوم القیٰمۃ حتی یسأل خمس عن عمرہ فیما افناہ وعن شبابہ فیما ابلاہ وعن مالہ من این اکتسبہ وفیما انفقہ وما ذا عمل فیما علم رواہ الترمذی وقال حدیث غریب کذا فی المشکوٰۃ ص ۲۳۵ و قدروی ھذاالحدیث عن معاذ بن جبل وابی برزۃ الاسلمی فی الترغیب ص ٤٣

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन आदमी के दोनों क़दम उस वक़्त तक (मुहासबा की जगह से) नहीं हट सकते, जब तक पांच चीज़ों का मुतालिबा न हो जाए। (और उनका माक़ूल जवाब न मिले,) (1) अपनी उम्र किस काम में ख़र्च की, (2) अपनी जवानी किस चीज़ में ख़र्च की, (3) माल कहां से कमाया और, (4) कहां ख़र्च किया, (5) अपने इल्म में क्या अमल किया।

फ़ायदाः- यह हदीस पाक कई सहाबा रज़ि॰ से नक़ल की गयी है। इसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तसर तरीक़े से क़ियामत के मुहासबों की फ़ेहरिस्त शुमार कर दी और उनमें से हर चीज़ के मुताल्लिक़ दूसरी अहादीस में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से इन पर तंबीह फ़रमाई गयी है। सबसे अव्वल मुतालिबा और जवाब तलब चीज़ यह है कि अपनी उम्र जिसका, हर सांस इन्तिहाई क़ीमती सरमाया है, किस चीज़ में ख़र्च की, हम लोग क्यों पैदा किए गये, हमारी ज़िन्दगी किसी मसलहत के लिए है, किसी काम के लिए है या

एक बेकार चीज़ पैदा की गयी है। हक़ तआला शानुहू ने ख़ुद इस पर तंबीह फ़रमायी है।[1] *(दुर्रे मंसूर)*

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ط (مؤمنون ع ٦)

"अ-फ़-हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्नाकुम अ-ब-संव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्ज-ऊन॰" *(मुअ्मिमून, रूकूअ 6)*

"हां तो क्या तुमने यह गुमान कर रखा था कि हमने तुमको यों ही बेकार (फ़ुज़ूल) पैदा किया है और तुम (ने यह गुमान कर रखा था कि तुम) हमारी तरफ़ नहीं लाए जाओगे (और तुम्हें अपनी ज़िन्दगी का हिसाब देना नहीं होगा) और फिर इतना ही नहीं बल्कि दूसरी जगह हक़ तआला शानुहू ने मक़्सदे ज़िन्दगी भी ख़ुद ही इर्शाद फ़रमा दिया:-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (ذٰريٰت ع ٣)

"वमा ख़लक़्तुल् जिन्-न वल्इन्-स इल्ला लियअ्बुदून॰"

(ज़ारियात, रूकूअ 3)

"मैं ने जिन्न व इन्स को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। ऐसी हालत में हर शख़्स को अपनी ज़िन्दगी के पूरे औक़ात का जायज़ा लेना चाहिए कि वह अपने क़ीमती औक़ात का किस क़दर हिस्सा तो उस मक़्सद में ख़र्च करता है जिस काम के लिए वह पैदा किया गया और कितना हिस्सा अपनी ज़रूरियात, तफ़रीहात और ग़ैर मुताल्लिक़ मशाग़िल में ख़र्च करता है।

आप एक मेअ्मार (इमारत बनाने वाले) को तामीर के काम के वास्ते नौकर रखते हैं। वह आपके औक़ात में कितना वक़्त तामीर में ख़र्च करता है और कितना हुक़्क़ाबाज़ी और अपने खाने में। इसका आप ख़ुद अंदाज़ा कर लें कि कितना वक़्त आप उसकी अपनी ज़रूरियात में बर्दाश्त कर सकते हैं और जितना आप अपने मातहतों से तसामुह कर सकते हैं। उतना ही तसामुह अपनी ज़ात के लिए भी बर्दाश्त करें।

1. इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ एक अजीब चीज़ हदीस में आई है। एक सहाबी रज़ि॰ कहते हैं कि हमको हुज़ूर सल्ल॰ ने एक लड़ाई पर भेजा और यह इर्शाद फ़रमाया कि सुबह-शाम इस आयते शरीफ़ा को पढ़ते रहा करो। हम पढ़ते रहे, हम को उस लड़ाई में ग़नीमत भी मिली और हम सही सालिम रहे। *(दुर्रे मंसूर)*

आप एक शख़्स को दुकान पर रहने के लिए मुलाज़िम रखते हैं, उसी की उसको तंख़्वाह देते हैं, वह दिन भर अपनी ख़ानगी ज़रूरियात में लगा रहता है, चंद मिनट को एक फेरा दुकान पर भी लगा जाता है। क्या आप गवारा कर लेंगे कि उसको पूरी तंख़्वाह देते रहें? और अगर नहीं तो फिर अपने मुताल्लिक़ आपका क्या उ़ज़्र है कि हक़ तआला शानुहू ने महज़ इबादत के लिए पैदा किया और वह मालिक व ख़ालिक़ हर वक़्त आपको अपनी अताओं से नवाज़ता है और आप अपने फ़ुज़ूल कामों में उम्र गुज़ार दें और अपने आपको तसल्ली देते रहें कि पांच वक़्त नमाज़ में हाज़िरी तो दे देते हैं और क्या हो सकता है ग़ौर कर लीजिए कि यह जवाब आप अपने नौकरों से भी बर्दाश्त कर लेंगे?

हक़ तलाआ शानुहू का महज़ इंआम व एहसान है कि उसने तमाम औक़ात की इबादत फ़र्ज़ नहीं फ़रमायी बल्कि उसका बहुत थोड़ा सा हिस्सा फ़र्ज़ किया है, उसमें भी अगर कोताही हो तो कितना ज़ुल्म है।

मुतालिबे की दूसरी चीज़ हदीसे बाला में यह इर्शाद फ़रमायी गयी है कि जवानी की क़ुव्वत किस चीज़ में ख़र्च की गयी, क्या अल्लाह तआला की रिज़ा और ख़ुशनूदी के कामों में, उसकी इबादत में, मज़लूमों की हिमायत में, ज़ईफ़ों और अपाहिजों की इआनत में या फ़िस्क़ व फ़ुज़ूर में, अय्याशी और आवारगी में, बेबसों पर ज़ुल्म करने में, नाहक़ की मदद करने में, नापाक दुनिया के कमाने में और दीन व दुनिया दोनों जगह काम न आने वाले फ़ुज़ूल मशग़लों में।

इसका जवाब ऐसी अदालत में देना है जहां न तो कोई वकालत चल सकती है, न झूठ फ़रेब और लस्सानी काम आ सकती है, जहां की ख़ुफ़िया पुलिस हर वक़्त, हर आन आदमी के साथ रहती है और यही नहीं बल्कि ख़ुद आदमी के वे आज़ा (अंग) जिनसे ये हरकात की हैं, वे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे और जराइम का इक़रार करेंगे।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (يٰس ع ۴)

"अल्‌यौ-म नख़्तिमु अला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्ह-दु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून॰" *(यासीन, रूकूअ 4)*

'आज (यानी क़ियामत के दिन) हम उनके मुहों पर मुहर लगा देंगे (ताकि लग्व उ़ज़्र न घड़ें) और उनके हाथ हमसे कलाम करेंगे और उनके पांव गवाही देंगे उस चीज़ की जो कुछ वे किया करते थे।

यानी हाथ ख़ुद बोल उठेगा कि मुझसे किस किस पर ज़ुल्म किया गया। क्या क्या ना जायज़ हरकात मुझ से सादिर कराई गयीं। पांव ख़ुद गवाही देगा कि मुझे कैसी कैसी ना जायज़ मज्लिसों में ले जाया गया। दूसरी जगह इर्शाद है। –

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللهِ إِلَى النَّارِ (حٰمٓ سجدة ع ٣)

"व यौ-म युह्श-रू अअ्दा उल्ला-हि इलन्ना-रि"

(अल्आयत हामीम सज्दः, रूकूअ 3)

'और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन दोज़ख़ की तरफ़ जमा किए जायेंगे, फिर उनको (एक जगह चलते चलते) रोक दिया जायेगा (ताकि सब एक जगह इकट्ठे हो जायें) यहां तक कि जब सब दोज़ख़ के क़रीब आ जायेंगे (और हिसाब किताब शुरू होगा) तो उनके कान और आंखें और खाल उनके ऊपर (उनके आमाल) की गवाही देंगे और वे लोग अपने उन आज़ा से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी। वे आज़ा कहेंगे हमको उस (क़ादिर) ने बोलने की ताक़त दी जिसने हर चीज़ को गोयाई अता फ़रमाई और उसी ने तुमको अव्वल मर्तबा पैदा किया था और उसी के पास अब (दोबारा ज़िंदा करके) लाये गये हो। (आगे हक़ तआला शानुहू तंबीह फ़रमाते हैं) और तुम इस बात से तो अपने को छुपा ही न सकते थे कि तुम पर तुम्हारे कान और आंखें और खालें गवाही देंगी (और ज़ाहिर है कि आदमी जो जो हरकतें करता है, उसके आंख, कान वग़ैरह तो उसको देखते ही हैं, उनसे कैसे छुपा कर कोई शख़्स कोई काम कर सकता है) लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआला को तुम्हारे बहुत से आमाल की ख़बर भी नहीं (जो चाहो कर गुज़रो कौन पूछ सकता है) और तुम्हारे इस गुमान ने जो तुमने अपने रब के साथ कर रखा था (कि उसको ख़बर भी नहीं है) तुमको बर्बाद कर दिया, पस तुम ख़सारे में पड़ गये।

अहादीस में बहुत सी रिवायात इन गवाहियों के बारे में आई हैं। एक हदीस में है, हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर थे, हुज़ूर सल्ल॰ ने तबस्सुम फ़रमाया कि जिस से दनदाने (दांत) मुबारक ज़ाहिर हो गये, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया जानते हो, मैं क्यों हंसा? सहाबा रज़ि॰ ने ला इल्मी ज़ाहिर की। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बंदा अपने मौला से क़ियामत के दिन यों कहेगा कि या अल्लाह तूने मुझ पर ज़ुल्म से तो अमान दे

रखी है, इर्शाद होगा कि बिल्कुल, तो बंदा कहेगा, या अल्लाह मैं अपने ख़िलाफ़ किसी दूसरे की गवाही मोतबर नहीं मानता, इर्शाद होगा कि अच्छा हम तुझी को तेरे नफ़्स पर गवाह बनाते हैं। उसके मुंह पर मुहर लगा दी जायेगी और उसके बदन के आज़ा से पूछा जायेगा और जब वह अपने सब आमाल गिनवा देंगे तो मुंह की मुहर हटा दी जायेगी, तो वह अपने आज़ा से कहेगा, कमबख़्तो, तुम्हारा नास हो, तुम्हारे ही लिये तो मैं ये चीज़ें करता था, (यानी इन हरकतों की लज़्ज़तें तुमको ही तो मिलती थीं, तुम ही अपने ख़िलाफ़ गवाही देने लगे, मगर आज़ा भी मजबूर हैं कि उस दिन कोई चीज़ ख़िलाफ़े हक़ बात न कह सकेगी। एक और हदीस में है कि आदमी के आज़ा में सबसे पहले बायीं रान बोलेगी कि उससे क्या क्या हरकतें हुईं और उसके बाद दूसरे आज़ा बोलेंगे। ग़रज़ हर अज़्व (अंग) अपने किए हुए नेक और बदआमाल गिनवा देगा। इसी वजह से एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि सुब्हानल्लाहि, अलहम्दु लिल्लाहि वग़ैरह को उंगलियों पर गिना करो इसलिए कि क़ियामत के दिन इन आज़ा को गोयाई (बोलने की ताक़त) अता होगी और इनसे बाज़पुर्स होगी।

यानी जहां ये आज़ा अपने गुनाह गिनवायेंगे वहां बहुत से नेक काम भी तो गिनवायेंगें, जहां हाथ बुरी हरकात, ज़ुल्म व सितम और ना जायज़ अफ़्आल बतायेगा वहां अल्लाह का पाक नाम इससे गिनना, सदक़ात का देना, नेक आमाल में हाथों का मशग़ूल रखना भी तो बतायेंगे। ग़रज़ यह मज़्मून अपनी तफ़सील के एतिबार से बहुत तवील है लेकिन मुख़्तसर यह है कि इन आज़ा को जवानी के ज़ोर में ज़ुल्म व सितम और ना जायज़ हरकात से बचाने की बहुत ज़रूरत है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है:-

الشَّبَابُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْجُنُوْنِ وَالنِّسَاءُ حِبَالَةُ الشَّيْطَانِ.

"अश्शबाबु शुअ्-बतुम् मिनलजुनू-नि वन्निसा-उ हिबा-ल तुश्शैतान॰

(जामे सग़ीर)

'जवानी जुनून का एक शोबा है और औरत शैतान का जाल है। यानी आदमी अपने जुनून की वजह से इस जाल में फंस जाता है हर जुमा के ख़ुत्बे में ये अल्फ़ाज़ सुने जाते हैं। उस वक़्त जवानी के नशे में ज़रा भी इसका ख़्याल हम लोगों को नहीं होता कि इसकी जवाबदही करना पड़ेगी। हम उसकी क़ुव्वत को गुनाहों में और दुनिया कमाने में ज़ाया कर रहे हैं हालांकि जवानी इसलिए है कि उसकी क़ुव्वत को ऐसे काम में ख़र्च किया जाए जो मरने के बाद काम आए।

ख़ुश क़िस्मत हैं वे नौजवान जो अल्लाह के काम में हर वक़्त मुन्हमिक रहते हैं और गुनाहों से दूर रहते हैं।

तीसरी चीज़ जो ऊपर की हदीस में ज़िक्र की गयी जिसके जवाब बग़ैर क़ियामत में हिसाब की जगह से टलना न हो सकेगा। वह यह है कि माल जो हासिल किया, किस ज़रिये से किया, जायज़ था या ना जायज़ था। इससे पहली हदीस में कुछ ज़िक्र इसका आ चुका है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी ना जायज़ तरीक़े से जो माल हासिल करता है अगर उसमें से सदक़ा करे तो क़ुबूल न होगा, ख़र्च करे तो बरकत न होगी और जो तरका छोड़ेगा वह उसके लिए जहन्नम का ज़ख़ीरा होगा। एक और हदीस में है कि जो गोश्त (यानी आदमी के बदन का टुकड़ा) हराम माल से नश्व-नुमा पाये, जहन्नम उसके लिए बेहतर है। एक हदीस में है कि जो आदमी दस दिरहम का कपड़ा ख़रीदे और उनमें एक दिरहम ना जायज़ आमदनी का हो तो जब तक वह कपड़ा बदन पर रहेगा, उसकी नमाज़ क़ुबूल न होगी।

(मिश्कात)

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद मुतअद्दद अहादीस में आया है कि रोज़ी को दूर न समझो, कोई आदमी उस वक़्त तक मर नहीं सकता जब तक कि जो उसके मुक़द्दर में रोज़ी लिख दी गयी है, वह उसको न मिल जाये। लिहाज़ा रोज़ी के हासिल करने में बेहतर तरीक़ा इख़्तियार करो। हलाल रोज़ी कमाओ, हराम को छोड़ो। कई हदीसों में है कि रिज़्क़ आदमी को उसी तरह तलाश करता है जिस तरह मौत आदमी को तलाश करती है। यानी जिस तरह आदमी को उस की मौत आए बग़ैर चारा नहीं इसी तरह उसको उसकी रोज़ी जो उसके मुक़द्दर में लिख दी गयी है बग़ैर मिले चारा-ए-कार नहीं है। एक हदीस में है कि अगर आदमी अपनी रोज़ी से भागना भी चाहे तो वह उसको पाकर ही रहेगी जैसा कि मौत उसको लामुहाला पाकर रहेगी। एक हदीस में है कि रोज़ी आदमी के लिए मुतअय्यन है, अगर सारी दुनिया के जिन्न व इन्स मिलकर उस को उस से हटाना चाहें तो नहीं हटा सकते। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर तुझमें चार चीज़ें हों तो दुनिया की किसी चीज़ के न होने का क़लक़ (रंज) नहीं है। अमानत की हिफ़ाज़त, बात में सच्चाई, अच्छी आदत, रोज़ी में पाकीज़गी। एक हदीस में है,

मुबारक है वह शख़्स जिसकी कमाई अच्छी हो (यानी पाकीज़ा हो) उसका बातिन नेक हो, उसका ज़ाहिर शरीफ़ाना हो, लोग उसकी बुराई से महफ़ूज़ हों, मुबारक है वह शख़्स जो अपने इल्म पर अमल करे और ज़रूरत से ज़ायद माल को (अल्लाह की राह में ख़र्च कर दे।) और ज़रूरत से ज़ायद बात को रोक ले यानी बेज़रूरत बात न किया करे। हज़रत सअद रज़ि॰ ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ से दर्ख़्वास्त की कि मेरे लिए इस बात की दुआ कर दें कि हक़ तआला शानुहू मुझे मुस्तजाबुद्दुआ (जो दुआ करे वह क़ुबूल हो जाये) बना दे, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया अपनी रोज़ी को पाकीज़ा बना लो (मुशतबह माल न खाओ) मुस्तजाबुद्दुआ बन जाओगे, क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जान है कि आदमी एक हराम का लुक़मा अपने पेट में डालता है जिससे उसकी चालीस दिन की इबादत ना मक़बूल बन जाती है और जिसकी परवरिश हराम माल से हुई हो जहन्नम उसके लिए ज़्यादा मुनासिब है। और भी बहुत सी रिवायात इसी मज़्मून की अहादीस में आई हैं (तर्ग़ीब) इसलिए अपनी आमदनी के ज़राए में बड़ी एहतियात करना चाहिए, ज़ाहिर के एतिबार से अगर उस एहतियात में कोई नुक़्सान नज़र में आता हो तब भी बरकत और माल के एतिबार से वह कमी बहुत ज़्यादा फ़ायदामंद और नुक़्सान से बचाने वाली है।

चौथा मुतालबा हदीसे बाला में यह है कि माल को कहां ख़र्च किया। यह रिसाला सारा ही इस मज़्मून में है कि आदमी के माल में उसके काम आने वाला सिर्फ़ वही है जिसको अल्लाह के रास्ते में आदमी ख़र्च कर दे, इसके मौजूद रहने में इसके अलावा कि वह अपने काम न आ सका, बेकारे महज़ रहा। मुतअद्दद नुक़्सानात भी दूसरी फ़स्ल के ख़त्म पर गुज़र चुके हैं, और जितनी ज़्यादा माल की कसरत होगी, उतना ही ज़्यादा हिसाब में देर लगना तो एक खुली हुई बात है। क़ियामत का वह सख़्त तरीन होशरूबा दिन, जिसमें गर्मी की शिद्दत से हर शख़्स पसीना पसीना हो रहा होगा हर शख़्स ख़ौफ़ की शिद्दत से ऐसा मालूम होगा जैसा कि नशे में हो मगर हक़ीक़तन नशा न होगा जिसके मुताल्लिक़ हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ٥ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ
كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى
وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ٥ (حج ع ١)

"या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम इन्-न ज़ल्ज़-ल-तस्साअति शैउन् अज़ीम॰ यौ-म तरौन-हा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़िअतिन् अम्मा अर्ज़अत् व त-ज़-अु कुल्लु ज़ाति हम्लिन हम्ल-हा व तरन्ना-स सुकारा वमा हुम् बिसुकारा व लाकिन्-न अज़ाबल्लाहि शदीद॰" *(हज, रूकूअ 1)*

(ऐ लोगो ! अपने रब से डरो बेशक क़ियामत का ज़लज़ला (जो अंक़रीब आने वाला है) बहुत सख़्त चीज़ है। जिस दिन तुम उसको देखोगे तमाम दूध पिलाने वाली औरतें (ख़ौफ़ की वजह से) अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेंगी, और तमाम हामिला औरतें (दहशत की वजह से) अपने हमल (वक़्त से पहले ही अधूरे) गिरा देंगी और तू लोगों को नशा की सी हालत में देखेगा और हक़ीक़तन वह नशा न होगा बल्कि अल्लाह तआला का अज़ाब ही सख़्त है (जिसके ख़ौफ़ से उन सबकी यह हालत होगी।)

दूसरी जगह इर्शाद है:-

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِیْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ○(انبیاء ع ۱)

"इक़्त-र्-ब लिन्नासि हिसाबुहुम् वहुम् फ़ी ग़फ़्लतिम् मुअ्रिज़ून्॰"

(अंबिया, रूकूअ 1)

लोगों के हिसाब का दिन तो क़रीब आ गया (कि क़ियामत तेज़ी से क़रीब आ रही है) और ये लोग (अभी तक) ग़फ़लत में पड़े हैं (और उसके लिए तैयारी से) रूगर्दां हैं।

इसके चंद रूकूअ बाद इर्शाद है:-

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ○(انبیاء ع ٤)

"व न-ज़-उल् मवाज़ीनल् क़िस्-त लियौमिल् क़ियाम-ति फ़ला तुज़्ल-मु नफ़्सुन् शैअन्, व इन् का-न मिस्क़ा-ल हब्ब-तिम् मिन् ख़र्द-लिन् अतैना बिहा, व कफ़ा बिना हासिबी-न"

(सूरः अंबिया रूकूअ 4)

'और क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अदल क़ायम करेंगे और किसी पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न होगा और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का कोई अमल (नेक या बद) होगा तो हम उसको वहां सामने लायेंगे और हम

हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

एक और जगह इर्शाद है -

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ط وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۝ (رعد ٢)

"लिल्लज़ीनस् तजाबू लिरब्बिहिमुल् हुस्ना वल्लज़ी-न लम यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् माफ़िल् अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्लहू म-अ-हू लफ़्त-दौ बिही ठलाइ-क लहुम् सूउल् हिसाब॰" *(रअद, रूकूअ 2)*

जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया (और उसके इर्शादात की तामील की) उनके लिए अच्छा बदला है (जो जन्नत में उनको मिलेगा और जिन लोगों ने उसका कहना न माना, उनके पास (क़ियामत के दिन) अगर तमाम दुनिया की सारी चीज़ें मौजूद हों बल्कि उसके साथ उसी के बराबर और भी हों (यानी सारी दुनिया की तमाम चीज़ों से दोगुनी हों) वे सब चीज़ें अपनी (ख़लासी के लिए) फ़िदया में दे दें उन लोगों का सख़्त हिसाब होगा।

और भी बहुत सी आयात में उस दिन के हिसाब पर उसकी सख़्ती और अहमियत पर तंबीह की गयी है। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत में जिस शख़्स से हिसाब किया जायेगा वह हलाक हो जाएगा। (इसलिए कि हिसाब में पूरा उतरना सख़्त मुश्किल होगा) हज़रत आइशा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ हक़ तआला शानुहू ने तो (सूरः इज़स्समाउन शक़्क़त में) यह इर्शाद फ़रमाया कि सहल (आसान) हिसाब होगा। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि यह हिसाब (जिसका इस सूरः में ज़िक्र है यह) तो महज़ आमाल का पेश होना है जिसका मुहासबा शुरू हो जायेगा, वह हलाक हो जायेगा। एक और हदीस में हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ यह दुआ किया करते थे कि या अल्लाह मुझ से हिसाबे यसीर (सहल हिसाब) कीजिए। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ हिसाबे यसीर क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, उसका आमाल नामा देखकर यह फ़रमा दिया जाए कि उसको माफ़ कर दिया। लेकिन जिस से मुहासबा होने लगे वह हलाक हो गया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि तीन

चीज़ें ऐसी हैं, जिस शख़्स में ये तीनों मौजूद हों उसका हिसाब सहल होगा और हक़ तआला शानुहू उसको अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल कर देगा। वे तीन चीज़ें ये हैं, कि जो शख़्स तुझे अपनी इनायत से महरूम रखे, तू उस पर एहसान कर, जो तुझ पर ज़ुल्म करे उसको माफ़ कर, जो तुझसे क़तअ्-रहमी करे तू उसके साथ सिला-रहमी कर। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि तुममें से कोई शख़्स भी ऐसा न होगा जिस से हक़ तआला शानुहू ऐसी तरह बात न करें कि उसके और अल्लाह तआला के दर्मियान में न कोई पर्दा होगा, न कोई वास्ता होगा, अपने दायें तरफ़ देखेगा तो वे आमाल होंगे जो दुनिया में किए, बायें तरफ़ देखेगा तो वे आमाल होंगे जो किये थे (नेक आमाल हों या बुरे) दहकती हुई जहन्नम आंख के सामने होगी, उस से (बचने की बेहतरीन चीज़ सदक़ा है पस सदक़ा के ज़रिये से उससे बचो) चाहे आधी खजूर ही सदक़ा क्यों न हो। *(मिश्कात)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुझे जन्नत दिखाई गई, उसके आला दरजों में फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन थे और ग़नी लोग और औरतें बहुत कम मिक़्दार में उस जगह थीं, मुझे यह बताया गया कि ग़नी लोग तो अभी जन्नत के दरवाज़ों पर हिसाब में मुब्तला हैं और औरतों को सोने चांदी की मुहब्बत ने मशग़ूल कर रखा है। एक और हदीस में है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं जन्नत के दरवाज़ों पर खड़ा था, अक्सर मसाकीन उसमें दाख़िल हो रहे थे और ग़नी लोग (हिसाब में) मुक़य्यद थे, और मैं ने दोज़ख़ के दरवाज़े पर देखा कि औरतें उसमें कसरत से दाख़िल हो रही हैं। एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी दो चीज़ों से घबराता है और दोनों उसके लिए ख़ैर हैं। एक मौत से घबराता है हालांकि मौत फ़ित्नों से बचाव है, दूसरे माल की कमी से घबराता है हालांकि जितना माल कम होगा उतना ही हिसाब कम होगा।

(तर्ग़ीब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के मज्मा में तश्रीफ़ फ़रमा थे हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने आज रात जन्नत को और उस में तुम लोगों के मर्तबों को देखा है, उसके बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मैं ने उस एक शख़्स को देखा कि वह जन्नत के जिस दरवाज़े पर भी जाता था वहां से मर्हबा मर्हबा (तश्रीफ़ लाइए, तश्रीफ़ लाइए) की आवाज़ें

आती थीं, (हर नेक अमल के लिए जन्नत में एक ख़ास दरवाज़ा है, हर दरवाज़े से दर्ख़्वास्त का मतलब यह है कि हर नेक अमल में उसका पाया बहुत बढ़ा हुआ है) हज़रत सलमान रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ जिस शख़्स का यह मर्तबा है वह तो कोई बहुत ही बुलंद पाया शख़्स है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया यह शख़्स अबूबक्र (रज़ि॰) हैं फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत उमर रज़ि॰ की तरफ़ तवज्जोह फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने जन्नत में सफेद मोती का एक घर देखा जिसमें याक़ूत जड़े हुए थे, मैं ने पूछा यह मकान किसका है ? मुझे बताया गया कि यह क़ुरैश के एक नौजवान का है (उस मकान की निहायत उम्दगी, चमक, रौनक़ और अपने सैय्यिदुलमुर्सलीन होने की वजह से) मुझे यह ख़्याल हुआ कि यह मकान मेरा ही है। मैं उसमें दाख़िल होने लगा तो मुझे बताया गया कि यह उमर (रज़ि॰) का है। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत उस्मान रज़ि॰, हज़रत अली रज़ि॰ वग़ैरह मुतअद्द हज़रात के मरातिब इर्शाद फ़रमाए, उसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ की तरफ़ मुतवज्जह होकर इर्शाद फ़रमाया कि मेरे साथियों में से तुम बहुत देर से मेरे पास पहुँचे। मुझे तो तुम्हारे मुताल्लिक़ यह डर हो गया था कि कहीं हलाक तो नहीं हो गये और तुम पसीना पसीना हो रहे थे, मैं ने तुमसे पूछा कि इतनी देर आने में तुम्हें कहाँ लग गयी थी तो तुमने जवाब दिया था कि मैं अपने माल की कसरत की वजह से हिसाब में मुब्तला रहा मुझसे इसका हिसाब हुआ कि माल कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ अपने मुताल्लिक़ यह सुनकर रोने लगे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰ रात ही मेरे पास मिस्र की तिजारत से सौ ऊँट आये हैं ये मदीना मुनव्वरा के फ़ुक़रा और यतामा पर सदक़ा हैं शायद अल्लाह जल्ल शानुहू इसी की वजह से उस दिन के हिसाब में मुझ पर तख़्फ़ीफ़ फ़रमा दें। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) तुम मेरी उम्मत के ग़नी लोगों में हो और जन्नत में घिसट कर जाओगे (पांव पर खड़े होकर न जाओगे)। तुम अल्लाह तआला शानुहू को क़र्ज़ दो ताकि तुम्हारे पांव खुल जायें। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि॰ ने पूछा: या रसूलल्लाह सल्ल॰ क्या चीज़ क़र्ज़ दूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अपना सारा माल। यह सुनकर फ़ौरन उठे ताकि अपना सारा माल लाकर हाज़िर करें। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनके पीछे क़ासिद को भेज कर उनको

बुलाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत जिब्रील अलै॰ अभी आए और ये पैग़ाम दे गये कि अब्दुर्रहमान रज़ि॰ से कह दीजिए कि मेहमान नवाज़ी किया करें, ग़रीबों को खाना खिलाया करें, सवाल करने वालों का सवाल पूरा किया करें, और जो उनके अयाल हैं उनसे सदक़े में इब्तिदा किया करें, ये चीज़ें उनके तज़्किया (दुरूस्त होने) के लिए काफ़ी हैं। *(हाकिम)*

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ बड़े जलीलुलक़द्र सहाबी, बड़े फ़ज़ाइल और मफ़ाखिर के मालिक हैं, अश्रा-ए-मुबश्शरा में उनका शुमार है, यानी इन दस सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ में जिनको दुनिया ही में हुज़ूर सल्ल॰ जन्नत की ख़ुशख़बरी दे गए नीज़ उन छह हज़रात में हैं जिन पर हज़रत उमर रज़ि॰ ने अपनी शहादत के वक़्त ख़लीफ़ा बनाने का दारोमदार रखा था और यह कहा था कि इन हज़रात से हुज़ूर अक़्दस सल्ल॰ अलैहि व सल्लम राज़ी होकर दुनिया से तशरीफ़ ले गये हैं और फिर इन छह हज़रात में से बक़िया पांच हज़रात ने बिल आख़िर उन ही की राय पर ख़लीफ़ा चुनने का मदार रखा था और उनकी तजवीज़ से हज़रत उस्मान रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-सालिस (तीसरे ख़लीफ़ा) मुक़र्रर हुए थे। साबिक़ीने अव्वलीन में उनका शुमार है जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह पाक ने फ़रमाया।

وَالسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ (توبہ ع ۱۳)

"वस्साबिक़ूनल् अव्वलू-न मिनल् मुहाजिरी-न वल्अन्सार॰"

(सूरः तौबा, रूकूअ 13)

तर्जुमाः- 'और जो मुहाजिरीन और अंसार ईमान लाने में उम्मत से साबिक़ और मुक़द्दम हैं और जो लोग इख़्लास से उनके पैरू हैं अल्लाह तआला उन सब से राज़ी हुआ और ये सब अल्लाह तआला से राज़ी हुए, अल्लाह तआला ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैय्यार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें ये हमेशा रहेंगे।

इसके अलावा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ ने दोनों हिजरतें कीं, ग़ज़्वा-ए-बद्र और सब ग़ज़्वों के शरीक हैं। हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने ही में अह्ले इल्म और अह्ले फ़त्वा में इनका शुमार है। महज़ इन की राय पर हज़रत उमर रज़ि॰ ने बाज़ उमूर को इख़्तियार किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा सफ़र में सुबह की नमाज़ उनका मुक़्तदी बन कर अदा

फ़रमाई कि हुज़ूर सल्ल॰ ज़रूरत के लिए तशरीफ़ ले गये। सहाबा रज़ि॰ ने मिलकर उनको इमाम चुना था। जब हुज़ूर सल्ल॰ वापस तशरीफ़ लाये तो नमाज़ हो रही थी, एक रकअ़त हो चुकी थी। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनके इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी। जब हज़रत उमर रज़ि॰ ख़लीफ़ा बने तो पहले साल में अपना क़ायम मुक़ाम अमीरूल हज बना कर उनको भेजा। *(इसाबा)*

ग़रज़ बेइन्तिहा फ़ज़ाइल के बावजूद इस माल की कसरत ने उनको अपने मर्तबा के लोगों में पीछे कर दिया और माल भी महज़ हक़ तआला शानुहू के फ़ज़्ल और उसकी अता और उसके इन्आम ही से मिला था, वरना बहुत ग़रीब थे, हिजरत की इब्तिदा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मुहाजिरीन और अंसार का आपस में भाई चारा किया था ताकि फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन की इआनत और मदद ख़ुसूसी ताल्लुक़ पर अंसार करते रहें तो उनको हज़रत सअद बिन रबीअ़ अंसारी रज़ि॰ का भाई बनाया था। हज़रत सअद रज़ि॰ ने उनसे कहा था कि मदीने में सबसे ज्यादा माल और दौलत अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुझे अता फ़रमा रखा है, मैं सब माल में से आधा आधा तुम्हें देता हूँ और मेरी दो बीवियां हैं, उनमें से जौन सी तुम्हें पसंद हो मैं उसको तलाक़ दे दूँगा, इद्दत के बाद तुम उससे निकाह कर लेना। उनकी सैर चश्मी कि उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह तआला तुम्हारे माल में बरकत अता फ़रमाये, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है मुझे तो तुम यहां के बाज़ार का रास्ता बता दो। बाज़ार गये और ख़रीद व फ़रोख़्त शुरू की और शाम को नफ़े में थोड़ा सा घी और पनीर बचा कर लाये। इसी तरह रोज़ाना जाते और कुछ ही दिन गुज़रे थे कि बचत इतनी हो गयी कि निकाह कर लिया। *(बुख़ारी)*

फिर वह वक़्त भी आया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा सदक़े की तर्ग़ीब दी तो आप ने सारे माल का आधा हिस्सा सदक़ा किया और माल की कसरत का अंदाज़ा इस से हो सकता है जो अभी गुज़रा है कि सिर्फ़ मिस्र की तिजारत से सौ ऊँट सामान के लदे हुए आये थे जो सदक़ा कर दिये और इसके बाद एक मर्तबा चालीस हज़ार दीनार (अशरफ़ियां) सदक़ा कीं, एक मौक़े पर पांच सौ घोड़े, पांच सौ ऊँट जिहाद के लिए दिए और तीस हज़ार ग़ुलाम आज़ाद किए और एक रिवायत में है कि तीस हज़ार घराने आज़ाद किये। *(मुस्तदरक)*

हर घराने में न मालूम कितने मर्द और औरत, बड़े और बच्चे होंगे। एक मर्तबा एक ज़मीन चालीस हज़ार अशर्फ़ियों में फ़रोख़्त की और सब की सब

फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन और अपने रिश्तेदारों और अज़्वाजे मुतह्हरात पर तक़्सीम कर दीं। *(मुस्तदरक)*

और अपने इंतिक़ाल के वक़्त जो वसिय्यत की उसमें हर उस शख़्स को जो बद्र की लड़ाई में शरीक था फ़ी आदमी चार सौ दीनार (अशर्फ़ियां) की वसिय्यत की थी। उस वक़्त अह्ले बद्र में से सौ आदमी ज़िंदा थे। *(इसाबा)*

और एक बाग़ की वसीयत अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए की जो चालीस हज़ार अशर्फ़ियों में फ़रोख़्त हुआ।*(मुस्तदरक)*

और ख़ुद अपना हाल यह था कि एक मर्तबा ग़ुस्ल करके खाना खाने के लिए बैठे तो एक प्याले में रोटी और गोश्त (सरीद) सामने रखा गया, उसको देखकर रोने लगे, किसी ने रोने की वजह पूछी तो फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल॰ का ऐसी हालत में विसाल हुआ कि जौ की रोटी भी पेट भर कर न मिलती थी। हमें ये हालात जो अपने सामने हैं कुछ अपने लिए ख़ैर नहीं मालूम होते' *(इसाबा)*

यानी अगर यह वुस्अत कुछ ख़ैर की चीज़ होती तो हुज़ूर सल्ल॰ के लिए भी होती। जब हुज़ूर सल्ल॰ के लिए ये चीज़ें न थीं तो कुछ ख़ैर की चीज़ें मालूम नहीं होतीं। इन कमालात पर वह मुहासबा है जो ऊपर ज़िक्र किया गया।

पांचवां मुतालबा हदीसे बाला में जिसका क़ियामत के मैदान में जवाब देना होगा, यह है कि जो इल्म हक़ तआला शानुहू ने तुम्हें अता किया था, उस पर किस हद तक अमल किया। किसी जुर्म का मालूम न होना कोई उज़्र नहीं, क़ानून से नावाक़फ़ियत किसी अदालत में भी मोतबर नहीं क्योंकि उसका मालूम करना अपना फ़रीज़ा है और यह बात कि अल्लाह का हुक्म मालूम नहीं था, मुस्तक़िल जुर्म और मुस्तक़िल गुनाह है। इसलिए हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि हर मुसलमान पर (मज़हबी) इल्म का सीखना फ़र्ज़ है। लेकिन यह भी ज़ाहिर है कि इल्म के बाद किसी जुर्म का करना ज़्यादा सख़्त है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अपने इल्म से एक दूसरे को नसीहत करते रहा करो कि इल्म में ख़ियानत माल में ख़ियानत से ज़्यादा सख़्त है और अल्लाह तआला शानुहू के यहां इसका मुतालबा होगा, और यह मज़्मून तो बहुत सी अहादीस में है कि जिस शख़्स से इल्म की कोई बात पूछी जाये और वह उसको छुपा जाये तो क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की लगाम डाली जायेगी।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वअ्ज़

फ़रमाया, जिसमें बाज़ क़ौमों की तारीफ़ फ़रमायी और फिर यह इर्शाद फ़रमाया कि यह क्या बात है कि बाज़ क़ौमें अपनी पड़ोसी क़ौमों को तालीम नहीं देतीं, न उनको नसीहत करती हैं, न उनको समझदार बनाती हैं, न उनको अच्छी बातों का हुक्म करती हैं, न बुरी बातों से रोकती हैं, और यह क्या बात है बाज़ी क़ौमें अपने पड़ोसियों से न इल्म सीखती हैं, न समझ सीखती हैं, न नसीहत हासिल करती हैं। या तो ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखायें और उनको नसीहत करें और उनको समझदार बनायें और दूसरे लोग इन इल्म वालों से उन चीज़ों को हासिल करें और अगर ऐसा न हुआ, तो ख़ुदा की क़सम, मैं इन सबको दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूँगा। (आख़िरत का क़िस्सा अलग है)। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतर आये, लोगों में इसका चर्चा हुआ कि इससे कौन सी क़ौमें मुराद हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अशअ़री क़ौम के लोग मुराद हैं कि वे अह्ले इल्म हैं, अह्ले फ़िक़्ह हैं और उन के आस पास की रहने वाली क़ौमें जाहिल हैं।

यह ख़बर अशअ़री लोगों को पहुँची। वे हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (सल्ल॰) आपने बाज़ क़ौमों की तो तारीफ़ फ़रमाई और हम लोगों के मुताल्लिक़ यह इर्शाद फ़रमाया। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना पाक इर्शाद उनके सामने फ़रमाया कि या तो ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखायें और उनको नसीहत करें, उनको समझदार बनायें, उनको अच्छी बातों का हुक्म करें, बुरी बातों से मना करें और दूसरे लोग उनसे इन चीज़ों को हासिल करें, वरना मैं दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूँगा। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सल्ल॰ हम दूसरों को किस तरह समझदार बनायें? हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया। उन्होंने तीसरी दफ़ा फिर यही अर्ज़ किया और हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर भी अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया तो उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ अच्छा एक साल की मुहलत हमको दे दें। हुज़ूर सल्ल॰ ने उन पड़ोसियों की तालीम के लिए एक साल की मुहलत अता फ़रमा दी। *(तर्ग़ीब व मज्मउज़्ज़वाइद)*

इस हदीसे पाक और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस सख़्त इताब से यह भी वाज़ेह हो गया है कि जो लोग ख़ुद अह्ले इल्म हैं, समझदार हैं उनकी यह भी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने आस पास के रहने वाले जाहिलों की तालीम की कोशिश करें, उनका यह ख़्याल कि जिसको ग़रज़ होगी,

ख़ुद सीखेगा, काफ़ी नहीं। न सीखने का मुस्तक़िल मुतालबा और मुस्तक़िल गुनाह उनके ज़िम्मे हैं लेकिन उनको सिखाने की ज़िम्मेदारी उन आलिमों की भी है यह ख़ुद इसकी कोशिश करें, इसकी तद्बीर करें कि वे इल्म सीखें। यह भी अपने इल्म पर अमल करने में दाख़िल है कि इल्म के अमल में उसका सिखाना भी दाख़िल है। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो दुआयें कसरत से नक़ल की गयीं हैं, उनमें यह दुआ भी बकसरत वारिद है कि ऐ अल्लाह, मैं तुझसे ऐसे इल्म से पनाह मांगता हूँ जो नफ़ा न दे।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स (यानी एक नौअ् (क़िस्म) आदमियों की चाहे उस नौअ् के कितने ही आदमी हों) लाया जायेगा और उसको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा, जिस से उसकी अंतड़ियां निकल पड़ेंगी और वह उनके गिर्द इसी तरह घूमेगा जैसा कि चक्की का गधा चक्की के गिर्द फिरता है (यानी जैसा कि जानवर, गधा, बैल वग़ैरह आटा पीसने की चक्की के चारों तरफ़ घूमता है।), जहन्नम के लोग उसके चारों तरफ़ जमा हो जायेंगे और उससे दर्याफ़्त करेंगे कि तुझे क्या हुआ, तू तो हमको भी अच्छी बातों का हुक्म करता था, बुरी बातों से रोकता था? वह जवाब देगा कि मैं तुमको इसका हुक्म करता था लेकिन ख़ुद उस पर अमल नहीं करता था। एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मैं ने शबे मेराज (मेराज की रात) में एक जमाअत को देखा कि उनके होंट जहन्नम की आग की क़ैंचियों से कतरे जा रहे थे। मैं ने हज़रत जिब्रील अलैहि॰ से दर्याफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने बताया कि ये आपकी उम्मत के वे बाज़ वाइज़ हैं जो दूसरों को नसीहत करते थे और ख़ुद उस पर अमल नहीं करते थे। एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि "ज़बानियः" ऐसे पढ़े लिखों को जो फ़िस्क़ में मुब्तिला हों, काफ़िरों से भी पहले पकड़ेंगे। वे कहेंगे यह क्या हुआ कि हमारी पकड़ काफ़िरों से भी पहले हो रही है, उन को जवाब दिया जायेगा कि आलिम और जाहिल बराबर नहीं होते। *(तर्ग़ीब)*

यानी तुम ने बावजूद जानने के यह हरकतें कीं। ज़बानिया फ़रिश्तों की वह सख़्त तरीन जमाअत है जो लोगों को जहन्नम में फेंकने पर मामूर है। सूरः इक़्रा में भी इनका ज़िक्र है।

एक हदीस में है कि बाज़ जन्नती बाज़ जहन्नमी लोगों के पास जाकर कहेंगे कि तुम्हें क्या हुआ? तुम यहां पड़े हो, हम तो तुम्हारी ही वजह से जन्नत में गए हैं कि तुम ही से हमने इल्म सीखा था। वे जवाब देंगे कि हम दूसरों को तो बताते थे, ख़ुद उस पर अमल नहीं करते थे। हज़रत मालिक बिन दीनार रह० हज़रत हसन बसरी के ज़रिये से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स भी वअ़ज़ कहता है, हक़ तआला शानुहू उससे क़ियामत के दिन मुतालबा फ़रमायेंगे कि उसका क्या मक़्सद था, (यानी उससे कोई दुनियावी ग़रज़ थी, माल व मन्फ़अत या जाह व शोहरत या ख़ालिस अल्लाह तआला के वास्ते कहा था) हज़रत मालिक रह० के शागिर्द कहते हैं कि मालिक रह० जब इस हदीस को बयान करते तो इतना रोते कि आवाज़ न निकलती, फिर यों फ़रमाते कि तुम यों समझते हो कि वअ़ज़ से मेरी आंख ठंडी होती है (यानी मेरा दिल ख़ुश होता है), हालांकि मुझे मालूम है कि मुझसे क़ियामत के दिन इसका सवाल होगा कि इस वअ़ज़ का क्या मक़्सद था? *(तर्ग़ीब)*

इसके बावजूद जो कहने की मजबूरी है, वह अभी गुज़र चुकी है, यानी लोगों को इल्म से रुशनास करने की ज़िम्मेदारी भी है, जैसा कि बहुत सी रिवायात में वारिद हुआ और अश्अ़री लोगों का क़िस्सा अभी गुज़रा। हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मुझे इसका ख़ौफ़ और डर है कि क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने मुझे आवाज़ दी जाए, मैं अर्ज़ करूँ "लब्बैक रब्बी" मेरे रब मैं हाज़िर हूँ, वहां से मुतालबा हो कि अपने इल्म में क्या अमल किया था? एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन सख़्त तरीन अज़ाब वाला वह आलिम है जिसके इल्म से उसको नफ़ा न हो। हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीला क़ैस की तालीम के लिए भेजा, मैं ने जाकर देखा कि वे वहशी ऊँटों की तरह से हैं, उनका हर वक़्त ध्यान अपने ऊँट और बकरी में लगा रहता है, इनके सिवा कोई दूसरी फ़िक्र ही इनको नहीं। (हर वक़्त बस दुनिया के धंधों में लगे रहते हैं।) मैं वहां से वापस आ गया, हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या करके आये? मैं ने हुज़ूर सल्ल० से उनका हाल बयान कर दिया और (दीन से) उनकी ग़फ़लत की ख़बर सुनाई। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अम्मार, इससे ज़्यादा ताज्जुब की बात उस क़ौम की हालत है, जो आलिम होने के बावजूद (दीन से) ऐसे ही ग़ाफ़िल हो जैसा कि यह ग़ाफ़िल हैं।

एक और हदीस में है कि बाज़ आदमी जहन्नम में डाले जायेंगे, जिनकी बदबू और तअफ़्फ़ुन से जहन्नमी लोग भी परेशान हो जायेंगे। वे लोग उनसे कहेंगे, तुम्हारा क्या अमल ऐसा था जिसकी यह नहूसत है, हमें अपनी ही मुसीबत, जिसमें हम मुब्तला थे, क्या कम थी, तुम्हारी इस बदबू ने और भी परेशान कर दिया। ये लोग कहेंगे कि हम अपने इल्म से नफ़ा नहीं उठाते थे। *(तर्गीब)*

हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद है कि मुझे इस उम्मत पर ज़्यादा ख़ौफ़ मुनाफ़िक़ आलिम का है। किसी ने पूछा कि मुनाफ़िक़ आलिम कौन होता है? आपने फ़रमाया कि ज़बान का आलिम, दिल और अमल का जाहिल, यानी तक़रीर तो बड़ी लच्छेदार करे मगर अमल के नाम पर सिफ़र। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि तू ऐसा न बन कि उलमा के इल्म का जमा करने वाला हो, हकीमों के नादिर कलाम का हामिल हो मगर अमल में अहमक़ बेवक़ूफ़ों की तरह हो। हज़रत सुफ़यान सौरी रह० फ़रमाते हैं कि इल्म अमल के लिए आवाज़ देता है। अगर कोई शख़्स उस पर अमल करे तो वह इल्म बाक़ी रहता है। वरना वह भी चला जाता है। यानी इल्म ज़ाया हो जाता है। हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे तीन शख़्सों पर बड़ा रहम आता है, एक क़ौम का सरदार जो ज़लील हो गया हो, दूसरा वह ग़नी जो ग़िना के बाद फ़क़ीर हो गया हो, तीसरा वह आलिम जिससे दुनिया खेलती हो (यानी दुनिया का तालिब हो और जो इसका तालिब होगा यह उससे खेलेगी) हज़रत हसन रह० फ़रमाते हैं कि उलमा का अज़ाब दिल की मौत है और दिल की मौत आख़िरत के अमल से दुनिया तलब करना है। किसी शायर का शेर है :-

عجبت لمبتاع الضلالة بالهدٰی   ومن یشتری دنیاه بالدین اعجبا

واعجب من ھٰذین من باع دینه   بدنیا سواه فهو من ذین اعجب

"अजिबतु लिमुब्ताइ-ज़्ज़लालति बिलहुदा।
व मंय्यश्तरी दुन्याहु बिद्दीन अअ्जबा।।
वअअ्-जबु मिन् हाज़ैनि मन् बाअ दी-नहू।
बि दुन्या सिवाहु फहु-व मिन् दीनिन अअ्जबु।।

तर्जुमा:- "मुझे उस शख़्स पर ताज्जुब आता है जो हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदे और उससे ज़्यादा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो दीन के बदले

दुनिया ख़रीदे और इन दोनों से ज़्यादा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो अपने दीन को दूसरों की दुनिया के बदले फ़रोख़्त कर दे यानी दुनिया का फ़ायदा तो दूसरे को हो और दीन उन का ज़ाया और बर्बाद हो"

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि जो आलिम दुनियादार हो वह अह्वाल के एतिबार से जाहिल से ज़्यादा कमीना है और अज़ाब के एतिबार से ज़्यादा सख़्ती में मुब्तला होगा और कामयाब और अल्लाह तआला के यहां मुक़र्रब उलमा-ए-आख़िरत हैं जिनकी चंद आलमतें हैं।

1. अपने इल्म से दुनिया न कमाता हो। आलिम का कम से कम दरजा यह है कि दुनिया की हक़ारत का, उसके कमीने पन का, उसके मुकद्दर होने का, उसके जल्द ख़त्म हो जाने का उसको एहसास हो, आख़िरत की अज़मत, उसका हमेशा रहना, उसकी नेमतों की उम्दगी का एहसास हो और यह बात अच्छी तरह जानता हो कि दुनिया और आख़िरत दोनों एक दूसरे की ज़िद हैं, दो सौकनों की तरह हैं, जौन सी एक को राज़ी करेगा दूसरी ख़फ़ा हो जाएगी। ये दोनों तराज़ू के दो पलड़ों की तरह से हैं। जौन सा एक पलड़ा झुकेगा दूसरा हल्का हो जाएगा। दोनों में मश्रिक़ मग़्रिब का फ़र्क़ है, जौन से एक से तू क़रीब होगा, दूसरे से दूर हो जायेगा। जो शख़्स दुनिया की हक़ारत का, उसके गदलेपन का और इस बात का एहसास नहीं करता कि दुनिया की लज़्ज़तें, दोनों जहां की तक्लीफ़ों के साथ मुनज़्ज़म हैं, वह फ़ासिदुल अक़्ल है। मुशाहदा और तजुर्बा इन बातों का शाहिद है कि दुनिया की लज़्ज़तों में दुनिया की भी तक्लीफ़ है और आख़िरत की तक्लीफ़ तो है ही। पस जिस शख़्स को अक़्ल ही नहीं वह आलिम कैसे हो सकता है, बल्कि जो शख़्स आख़िरत की बड़ाई और उसके हमेशा रहने को भी नहीं जानता वह तो काफ़िर है, ऐसा शख़्स कैसे आलिम हो सकता है, जिसको ईमान भी नसीब न हो? और जो शख़्स दुनिया और आख़िरत का एक दूसरे की ज़िद होने को नहीं जानता और दोनों के दर्मियान जमा करने की तमअ् में है, वह ऐसी चीज़ में तमअ् कर रहा है जो तमअ करने की चीज़ नहीं है। वह शख़्स तमाम अंबिया अलैहि॰ की शरीअत से नावाक़िफ़ है और जो शख़्स इन सब चीज़ों को जानने के बावजूद दुनिया को तर्जीह देता है वह शैतान का क़ैदी है, जिसको शह्वतों ने हलाक कर रखा है। और बद बख़्ती उस पर ग़ालिब है जिसकी यह हालत हो वह उलमा में कैसे शुमार होगा।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का इर्शाद नक़ल किया

है कि जो आलिम दुनिया की ख़्वाहिश को मेरी मुहब्बत पर तर्जीह देता है उसके साथ अदना से अदना मामला मैं यह करता हूँ कि अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से उसको महरूम कर देता हूँ। (कि मेरी याद में मेरी दुआ में उसको लज़्ज़त नहीं आती।) ऐ दाऊद, (अलैहि०) ऐसे आलिम का हाल न पूछ जिसको दुनिया का नशा सवार हो कि मेरी मुहब्बत से तुझको दूर कर दे, ऐसे लोग डाकू हैं। ऐ दाऊद, जब तू किसी को मेरा तालिब देखे तो उसका ख़ादिम बन जा, ऐ दाऊद, जो शख़्स भाग कर मेरी तरफ़ आता है, मैं उसको जहबज़ (हाज़िक़, समझदार) लिख देता हूँ और जिसको जहबज़ लिख देता हूँ, उसको अज़ाब नहीं करता।

यह्या बिन मुआज़ रज़ि० कहते हैं कि इल्म व हिक्मत से जब दुनिया तलब की जाये तो उनकी रौनक़ जाती रहती है। सईद बिन मुसैय्यिब रह० कहते हैं कि जब किसी आलिम को देखो कि वह उमरा (अमीरों) के यहां पड़ा रहता है तो उसको चोर समझो और हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस आलिम को दुनिया से मुहब्बत रखने वाला देखो, अपने दीन के बारे में उसको मुत्तहम समझो। इसलिए कि जिस शख़्स को जिस से मुहब्बत होती है उसी में घुसा करता है। एक बुर्ज़ुग से किसी ने पूछा कि जिसको गुनाह में लज़्ज़त आती हो, वह अल्लाह का आरिफ़ हो सकता है? उन्होंने फ़रमाया कि मुझे इसमें ज़रा तरद्दुद नहीं है कि जो शख़्स दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दे, वह आरिफ़ नहीं हो सकता और गुनाह करने का दरजा तो इससे बहुत ज़्यादा है, और यह बात भी ज़ेहन में रखना चाहिए, कि सिर्फ़ माल की मुहब्बत न होने से आख़िरत का आलिम नहीं होता, जाह का दरजा और उसका नुक्सान माल से भी बढ़ा हुआ है।

यानी जितनी वओदें ऊपर दुनिया के तर्जीह देने की और उसकी तलब की गुज़री हैं, उनमें सिर्फ़ माल कमाना ही दाख़िल नहीं बल्कि जाह की तलब, माल की तलब की बनिस्बत ज़्यादा दाख़िल है इसलिए कि जाह तलबी का नुक्सान और उसकी मज़र्रत माल तलबी से भी ज़्यादा सख़्त है।

2. दूसरी अलामत यह है कि उसके क़ौल व फ़ेअ्ल में तआरूज़ (इख़्तिलाफ़) न हो, दूसरों को ख़ैर का हुक्म करे और ख़ुद उस पर अमल न करे। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتَابَ ۔ (بقره ع ٥)

"अ तअ्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम व अन्तुम

तत्लूनल् किताब॰" *(बक़र:, रूकूअ 5)*

'क्या गज़ब है कि दूसरों को नेक काम करने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालांकि तुम तिलावत करते रहते हो किताब की'। दूसरी जगह इर्शाद है :-

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَالَا تَفْعَلُوْنَ٥ (صف ع١)

'कबु-र मक़्तन् अिन्दल्लाहि अन तक़ूलू मा ला तफ़्अलून॰'

(सफ़्फ़, रूकूअ: 1)

'अल्लाह तआला के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि ऐसी बात कहो, जो करो नहीं।

हातिम असम रह॰ कहते हैं कि क़ियामत के दिन उस आलिम से ज़्यादा हसरत वाला कोई न होगा जिसकी वजह से दूसरों ने इल्म सीखा और उस पर अमल किया, वह तो कामयाब हो गए और वह ख़ुद अमल न करने की वजह से नाकाम रहा। इब्ने सिमाक रह॰ कहते हैं कितने शख़्स ऐसे हैं जो दूसरों को अल्लाह तआला की याद दिलाते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला को भूलते हैं, दूसरों को अल्लाह तआला से डराते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला पर जुर्रत करते हैं, दूसरों को अल्लाह तआला का मुक़र्रब बनाते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला से दूर हैं, दूसरों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला से भागते हैं। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ग़नम रज़ि॰ कहते हैं कि मुझसे दस सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने यह मज़्मून बयान किया कि हम लोग क़ुबा की मस्जिद में बैठे हुए इल्म हासिल कर रहे थे, हुज़ूर सल्ल॰ तश्रीफ़ लाये और फ़रमाया कि जितना चाहे इल्म हासिल कर लो, अल्लाह तआला के यहां से अज्र बग़ैर अमल के नहीं मिलता।

3. तीसरी अलामत यह है कि ऐसे उलूम में मशग़ूल हो जो आख़िरत में काम आने वाले हों, नेक कामों में रग्बत पैदा करने वाले हों, ऐसे उलूम से इहतिराज़ करे जिनका आख़िरत में कोई नफ़ा नहीं है या कम है। हम लोग अपनी नादानी से उनको भी इल्म कहते हैं जिनसे सिर्फ़ दुनिया कमाना मक़्सूद हो, हालांकि वह जह्ले मुरक्कब है कि ऐसा शख़्स अपने को पढ़ा लिखा समझने लगता है, फिर उसको दीन के उलूम सीखने का एहतिमाम भी नहीं रहता। जो शख़्स कुछ भी पढ़ा हुआ न हो, वह कम से कम अपने आपको जाहिल तो समझता है, दीन की बातें मालूम करने की कोशिश तो करता है, मगर जो अपनी

जहालत के बावजूद अपने आप को आलिम समझने लगे, वह बड़े नुक्सान में है।

हातिम असम रह०, जो मशहूर बुर्जुग और हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० के ख़ास शागिर्द हैं, उनसे एक मर्तबा हज़रत शैख़ ने दर्याफ़्त किया कि हातिम कितने दिन से तुम मेरे साथ हो? उन्होंने अर्ज़ किया, तैंतीस बरस से, फ़रमाने लगे कि इतने दिनों में तुमने मुझसे क्या सीखा? हातिम रह.० ने अर्ज़ किया आठ मसअले सीखे हैं। हज़रत शक़ीक़ रह० ने फ़रमाया- इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० इतनी तवील मुद्दत में सिर्फ़ आठ मसअले सीखे, मेरी तो उम्र ही तुम्हारे साथ ज़ाया हो गयी। हातिम० रह० ने अर्ज़ किया हुज़ूर सिर्फ़ आठ ही सीखे हैं, झूठ तो बोल नहीं सकता। हज़रत शक़ीक़ रह० ने फ़रमाया कि अच्छा बताओ, वे क्या मसअले हैं? हातिम रह० ने अर्ज़ किया:-

(1) मैं ने देखा कि सारी मख़्लूक़ को किसी न किसी से मुहब्बत है (बीवी से, औलाद से, माल से, अह्बाब से वग़ैरह वग़ैरह) लेकिन मैं ने देखा कि जब वह क़ब्र में जाता है तो उसका महबूब उससे जुदा हो जाता है, इसलिए मैं ने नेकियों से मुहब्बत कर ली ताकि जब मैं क़ब्र में जाऊं तो मेरा महबूब भी साथ ही जाये और मरने के बाद भी मुझसे जुदा न हो। हज़रत शक़ीक़ रह० ने फ़रमाया, बहुत अच्छा किया।

(2) मैं ने अल्लाह तआला का इर्शाद क़ुरआन पाक में देखा-

'व अम्मा मन ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही०" *(वन्नाज़िआत, रूकूअ 2)*

और जो शख़्स (दुनिया में) अपने रब के सामने (आख़िरत में) खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिश से रोका होगा तो जन्नत उसका ठिकाना होगा। मैं ने जान लिया कि अल्लाह तआला का इर्शाद हक़ है, मैं ने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका, यहां तक कि वह अल्लाह तआला की इताअत पर जम गया।

(3) मैं ने दुनिया को देखा कि हर शख़्स के नज़दीक जो चीज़ बहुत क़ीमती होती है, बहुत महबूब होती है, वह उसको उठा कर बड़ी एहतियात से रखता है, उसकी हिफ़ाज़त करता है। फिर मैं ने अल्लाह ताआल का इर्शाद देखा:-

"मा अिन्दकुम् यन्फ़-दु वमा अिन्दल्लाहि बाक़िन्०"

(नह्ल, रूकूअ 13)

जो कुछ तुम्हारे पास दुनिया में है, वह ख़त्म हो जायेगा (ख़्वाह वह जाता रहे या तुम मर जाओ, हर हाल में वह ख़त्म होगा) और जो अल्लाह तआला के पास है, वह हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ है।

इस आयते शरीफ़ा की वजह से जो चीज़ भी मेरे पास ऐसी कभी हुई जिसकी मुझे वक़्अत ज़्यादा हुई, वह पसंद ज़्यादा आई, वह मैं ने अल्लाह तआला के पास भेज दी ताकि हमेशा के लिए महफ़ूज़ हो जाए।

(4) मैं ने सारी दुनिया को देखा, कोई शख़्स माल की तरफ़ (अपनी इज़्ज़त और बड़ाई में) लौटता है, कोई हसब की शराफ़त की तरफ़, कोई और फ़ख़्र की चीज़ों की तरफ़ यानी उन चीज़ों के ज़रिए से अपने अंदर बड़ाई पैदा करता है और अपनी बड़ाई ज़ाहिर करता है। मैं ने अल्लाह तआला का इर्शाद देखा।

"इन्-न अक्-र-मकुम अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम॰"

(हुजुरात, रूकूअ 2)

'अल्लाह तआला के नज़दीक तुम में सब में बड़ा वह शरीफ़ है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार हो, इस बिना पर मैं ने तक़्वा इख़्तियार कर लिया। ताकि अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़दीक शरीफ़ बन जांऊ।

(5) मैं ने लोगों को देखा कि एक दूसरे पर तान करते हैं, ऐब जोई करते हैं, बुरा भला कहते हैं और यह सब हसद की वजह से होता है कि एक को दूसरे पर हसद आता है। मैं ने अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद देखा-

"नह्नु क़सम्ना बै-नहुम् मअीश-त-हुम॰"

(ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 3)

'दुनियावी ज़िन्दगी में उनकी रोज़ी हमने ही तक़्सीम कर रखी है और (इस तक़्सीम में) हमने एक को दूसरे पर फ़ौक़ियत दे रखी है ताकि (इस की वजह से) एक दूसरे से काम लेता रहे। (सब के सब बराबर एक ही नमूने के बन जायें तो फिर कोई किसी का काम क्यों करे; क्यों नौकरी करे और इससे दुनिया का निज़ाम ख़राब हो ही जायेगा।) मैं ने इस आयते शरीफ़ा की वजह से हसद करना छोड़ दिया, सारी मख़्लूक़ से बे ताल्लुक़ हो गया और मैं ने जान लिया कि रोज़ी का बांटना सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के क़ब्ज़े में है, वह जिसके हिस्से में जितना चाहे लगाये, इसलिए लोगों की अदावत छोड़ दी और यह समझ

लिया कि किसी के पास माल के ज़्यादा या कम होने में, उनके फ़ेअ्ल को ज़्यादा दख़ल नहीं है, यह तो मालिकुल मुल्क की तरफ़ से है, इसलिए अब किसी पर ग़ुस्सा ही नहीं आता।

(6) मैं ने दुनिया में देखा कि तक़रीबन हर शख़्स की किसी न किसी से लड़ाई है, किसी न किसी से दुश्मनी है। मैं ने ग़ौर किया तो देखा कि हक़ तआला शानुहू ने फ़रमायाः

"इन्नश्शैता-न लकुम् अदुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अदुव्वा॰"

(फ़ातिर, रूकूअ 1)

"शैतान बेशुबह तुम्हारा दुश्मन है पस उसके साथ दुश्मनी ही रखो" (उसको दोस्त न बनाओ) पस मैं ने अपनी दुश्मनी के लिए उसी को चुन लिया और उससे दूर रहने की इंतिहाई कोशिश करता हूँ। इसलिए कि जब हक़ तआला शानुहू ने उसके दुश्मन होने को फ़रमा दिया तो मैं ने उसके अलावा से अपनी दुश्मनी हटा ली।

(7) मैं ने देखा कि सारी मख़्लूक़ रोटी की तलब में लग रही है, इसी की वजह से अपने आपको दूसरों के सामने ज़लील करती है और ना जायज़ चीज़ें इख़्तियार करती है। फिर मैं ने देखा कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:-

"वमा मिन् दाब्बतिन् फ़िलअर्ज़ि इल्ला अलल्लाहि रिज़्क़ुहा॰"

(हूद, रूकूअ 1)

"और कोई जानदार ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो। मैं ने देखा कि मैं भी उन्हीं ज़मीन पर चलने वालों में से एक हूँ। जिनकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे है, पस मैं ने अपने औक़ात उन चीज़ों में मशग़ूल कर लिए जो मुझ पर अल्लाह तआला की तरफ़ से लाज़िम हैं और जो चीज़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे थी उससे अपने औक़ात को फ़ारिग़ कर लिया।

(8) मैं ने देखा कि सारी मख़्लूक़ का एतिमाद और भरोसा किसी ख़ास ऐसी चीज़ पर है जो ख़ुद मख़्लूक़ है। कोई अपनी जायदाद पर भरोसा करता है, कोई अपनी तिजारत पर एतिमाद करता है कोई अपनी दस्तकारी पर निगाह जमाए हुए है, कोई अपने बदन की सेहत और कुव्वत पर (कि जब चाहे, जिस तरह

चाहे, कमा लूँगा) और सारी मख़्लूक़ ऐसी चीज़ों पर एतिमाद किए हुए है जो उनकी तरह ख़ुद मख़्लूक़ है। मैं ने देखा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है -

"व मंय्यत वक्कल् अलल्लाहि फ हु व हस्बुह्॰" *(तलाक़ रूकूअ 1)*

'जो शख़्स अल्लाह तआला पर तवक्कुल (और एतिमाद) करता है पस अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी है। इस लिए मैं ने बस अल्लाह तआला पर तवक्कुल और भरोसा कर लिया।

हजरत शक़ीक़ रह॰ ने फ़रमाया कि हातिम तुम्हें हक़ तआला शानुहू तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, मैं ने तौरात, इंजील, ज़बूर और क़ुरआने अज़ीम के उलूम को देखा, मैं ने ख़ैर के काम इन ही आठ मसाइल के अंदर पाये, पस जो इन आठों पर अमल कर ले, उसने अल्लाह तआला शानुहू की चारों किताबों के मज़ामीन पर अमल कर लिया इस क़िस्म के उलूम को उलमा-ए-आख़िरत ही पा सकते हैं और दुनियादार आलिम तो माल और जाह के ही हासिल करने में लगे रहते हैं।

(4) चौथी अलामत आख़िरत के उलमा की यह है कि खाने पीने की और लिबास की उम्दगियों और बेहतराईयों की तरफ़ मुतवज्जह न हो, बल्कि इन चीज़ों में दर्मियानी रफ़्तार इख़्तियार करे और बुज़ुर्गों के तर्ज़ को इख़्तियार करे। इन चीज़ों में जितना कमी की तरफ़ उसका मैलान बढ़ेगा, अल्लाह तआला शानुहू से उतना ही उसका क़ुर्ब बढ़ता जायेगा और उलमा-ए-आख़िरत में उतना ही उसका दरजा बुलंद होता जायेगा।

इन्हीं शैख़ अबू हातिम रह॰ का एक अजीब क़िस्सा जिसको शैख़ अबू अब्दुल्लाह ख़्वास रह॰ जो शैख़ अबू हातिम रह॰ के शागिर्दों में हैं, नक़ल करते हैं, वह कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत शैख़ हातिम रह॰ के साथ मौज़ा रई में जो एक जगह का नाम है, गया, तीन सौ बीस आदमी हमारे साथ थे, हम हज के इरादे से जा रहे थे। सब मुतवक्किलीन की जमाअत थी। इन लोगों के पास तोशा सामान वग़ैरह कुछ न था। रई में एक मामूली ख़ुश्क मिज़ाज ताजिर पर हमारा गुज़र हुआ, उसने सारे काफ़िले की दावत कर दी और हमारी एक रात की मेहमानी की, दूसरे दिन सुबह को वह मेज़बान हज़रत हातिम रह॰ से कहने लगा कि यहां एक आलिम बीमार हैं, मुझे उनकी अयादत को इस वक़्त जाना है। अगर आपको रग़बत हो तो आप भी चलें। हज़रत हातिम रह॰ ने फ़रमाया कि

बीमार की अयादत तो सवाब है, मैं ज़रूर तुम्हारे साथ चलूँगा। यह बीमार आलिम उस मौज़अ् (बस्ती) के क़ाज़ी शैख़ मुहम्मद बिन मुक़ातिल रह० थे। जब उनके मकान में पहुँचे तो हज़रत हातिम रह० सोच में पड़ गये कि अल्लाहु अक्बर एक आलिम का मकान और ऐसा ऊँचा महल। ग़रज़ हमने हाज़िरी की इजाज़त मंगाई और जब अंदर दाख़िल हुए तो वह अन्दर से भी निहायत ख़ुशनुमा, निहायत वसीअ्, पाकीज़ा, जगह जगह पर्दे लटक रहे थे। हज़रत हातिम रह० इन सब चीज़ों को देख रहे थे और सोच में पड़े हुए थे। इतने में हम क़ाज़ी साहब के क़रीब पहुँचे तो वह एक निहायत नर्म बिस्तर पर आराम कर रहे थे। एक ग़ुलाम उनके सिरहाने पंखा झल रहा था। वह ताजिर तो सलाम करके उनके पास बैठ गये और मिज़ाज पुर्सी की। हातिम रह० खड़े ही रहे। क़ाज़ी साहब ने उनको भी बैठने का इशारा किया। उन्होंनें बैठने से इंकार कर दिया। क़ाज़ी साहब रह० ने पूछा आपको कुछ कहना है? उन्होंने फ़रमाया, हां एक मस्अला दर्याफ़्त करना है। क़ाज़ी साहब रह० ने फ़रमाया कहो, उन्होंने कहा कि आप बैठ जायें (ग़ुलामों ने क़ाज़ी साहब रह० को सहारा देकर उठाया कि ख़ुद उठना मुश्किल था) वह बैठ गये। हज़रत हातिम रह० ने पूछा कि आपने इल्म किस से हासिल किया? उन्होंने फ़रमाया, मोतबर उलमा से। उन्होंने पूछा कि उन उलमा ने किस से सीखा था? क़ाज़ी साहब रह० ने फ़रमाया कि उन्होंनें हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से सीखा था। हज़रत हातिम रह० ने पूछा कि सहाबा-ए-किराम रज़ि० ने किस से सीखा था? क़ाज़ी साहब रह० ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से। हज़रत हातिम रह०, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किससे सीखा था? क़ाज़ी साहब रह०, हज़रत जिब्रील अलैहि० से सीखा था, हज़रत हातिम रह०, जिब्रील अलैहि० ने किस से सीखा था? क़ाज़ी साहब रह० अल्लाह तआला शानुहू से। हज़रत हातिम रह० ने फ़रमाया कि जो इल्म हज़रत जिब्रील अलैहि० ने हक़ तआला शानुहू से लेकर हुज़ूर सल्ल० तक पहुँचाया और हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० को अता फ़रमाया और सहाबा रज़ि० ने मोतबर उलमा को और उनके ज़रिये से आप तक पहुँचा उसमें कहीं यह भी वारिद है कि जिस शख़्स का जिस क़दर मकान ऊंचा और बड़ा होगा उसका उतना ही दरजा अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां भी ज़्यादा होगा। क़ाज़ी साहब रह० ने फ़रमाया नहीं, यह उस इल्म में नहीं आया। हज़रत हातिम रह० ने फ़रमाया, अगर यह नहीं आया तो फिर उस इल्म में क्या आया है? क़ाज़ी साहब रह० ने

फ़रमाया, कि उसमें यह आया है कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो, आख़िरत में रग़बत रखता हो, फ़ुक़रा को महबूब रखता हो अपनी आख़िरत के लिये अल्लाह के यहां ज़ख़ीरा भेजता रहता हो, वह शख़्स हक़ तआला शानुहू के यहां साहिबे मर्तबा है। हज़रत हातिम रह० ने फ़रमाया कि फिर आपने किसका इत्तिबाअ् और पैरवी की, हुज़ूर सल्ल० की, हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० की, मुत्तक़ी उलमा की या फ़िरऔन और नमरूद की? ऐ बुरे आलिमों, तुम जैसों को जाहिल दुनियादार जो दुनिया के ऊपर औंधे गिरने वाले हैं, देखकर यह कहते हैं कि जब आलिमों का यह हाल है तो हम तो उनसे ज़्यादा बुरे होंगे।

यह कह कर हज़रत हातिम रह० तो वापस चले गये और क़ाज़ी साहब के मर्ज़ में इस गुफ़्तगू और नसीहत से और भी ज़्यादा इज़ाफ़ा हो गया। लोगों में इसका चर्चा हुआ तो किसी ने हज़रत हातिम रह० से कहा कि तनाफ़्सी रह० जो क़ज़्वैन में रहते हैं, (क़ज़्वैन रई से सत्ताईस फ़र्सख़ यानी इक्यासी मील है) वह इनसे भी ज़्यादा रईसाना शान से रहते हैं। हज़रत हातिम रह० (उनको नसीहत करने के इरादे से चल दिये), जब उनके पास पहुँचे तो कहा कि एक अजमी आदमी है (जो अरब का रहने वाला नहीं है।) आप से यह चाहता है कि आप उसको दीन की बिल्कुल इब्तिदा से यानी नमाज़ की कुंजी वुज़ू से तालीम दें। तनाफ़सी ने कहा, बड़े शौक़ से। यह कहकर तनाफ़सी रह० ने वुज़ू का पानी मंगाया और तनाफ़सी रह० ने वुज़ू करके बताया कि इस तरह वुज़ू की जाती है। हज़रत हातिम रह० ने उनकी वुज़ू के बाद कहा कि मैं आपके सामने वुज़ू कर लूँ ताकि अच्छी तरह ज़ेहन नशीन हो जाए। तनाफ़सी रह० वुज़ू की जगह से उठ गये और हज़रत हातिम रह० ने बैठकर वुज़ू करना शुरू किया और दोनों हाथों को चार चार मर्तबा धोया। तनाफ़सी रह० ने कहा कि यह इसराफ़ है, तीन तीन मर्तबा धोना चाहिए। हज़रत हातिम रह० ने कहा कि सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, मेरे एक चुल्लू पानी में तो इस्राफ़ हो गया और यह सब कुछ जो साज़ व सामान मैं तुम्हारे पास देख रहा हूँ, इसमें इस्राफ़ न हुआ। जब तनाफ़सी रह० को ख़्याल हुआ कि इनका मक़सद सीखना नहीं था बल्कि यह ग़रज़ थी। उसके बाद जब बग़दाद पहुँचे और हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० को उनके अह्वाल का इल्म हुआ तो वह इनसे मिलने के लिए तशरीफ़ लाए और उन से दर्याफ़्त फ़रमाया कि दुनिया से सलामती की क्या तदबीर है? हातिम रह० ने फ़रमाया कि दुनिया से उस वक़्त तक महफ़ुज़ नहीं रह सकते जब तक तुम में चार चीज़ें न हों, 1. लोगों

की जहालत से दर गुज़र करते रहो, 2. ख़ुद उनके साथ कोई हरकत जहालत की न करो, 3. तुम्हारे पास जो चीज़ हो, उन पर ख़र्च कर दो, 4. उनके पास जो चीज़ हो उसकी उम्मीद न रखो।

उसके बाद जब हज़रत हातिम रह॰ मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो वहां के लोग ख़बर सुनकर उनके पास मिलने के लिए जमा हो गये। उन्होंने दर्याफ़्त किया कि यह कौन सा शहर है? लोगों ने कहा कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शहर है। कहने लगे कि इसमें हुज़ूर सल्ल॰ का महल कौन सा था, मैं वहां भी जाकर दोगाना अदा करूँगा। लोगों ने कहा कि हुज़ूर सल्ल॰ का तो महल नहीं था। बहुत मुख़्तसर सा मकान था जो बहुत नीचे था। कहने लगे कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के महल कहां कहां हैं, मुझे वही दिखा दो। लोगों ने कहा कि सहाबा रज़ि॰ के भी महल नहीं थे, उनके भी छोटे छोटे मकानात ज़मीन से लगे हुए थे। हातिम रह॰ ने कहा, फिर यह तो शहर फ़िरऔन का शहर है। लोगों ने उनको पकड़ लिया (कि यह शख़्स मदीना मुनव्वरा की तौहीन करता है और हुज़ूर सल्ल॰ के शहर को फ़िरऔन का शहर बताता है) और पकड़ कर अमीरे मदीना के पास ले गये कि यह अजमी शख़्स मदीना तैयबा को फ़िरऔन का शहर बताता है। अमीर ने उनसे मुतालबा किया कि यह क्या बात है? उन्होंने कहा, आप जल्दी न करें, पूरी बात सुन लें। मैं एक अजमी आदमी हूँ, मैं ज़ब इस शहर में दाख़िल हुआ तो मैं ने पूछा कि यह किसका शहर है? फिर पूरा क़िस्सा अपने सवाल व जवाब का सुनाकर कहा कि अल्लाह तआला ने तो क़ुरआन शरीफ़ में यह फ़रमाया है

"लक़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् ह-स-नः॰"

(अहज़ाब, रूकूअ 3)

तर्जुमाः- तुम लोगों के वास्ते यानी ऐसे शख़्स के लिए जो अल्लाह से और आख़िरत के दिन से डरता हो और कसरत से ज़िक्रे इलाही करता हो (यानी कामिल मोमिन हो) ग़रज़ ऐसे शख़्स के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल॰) का एक उम्दा नमूना मौजूद है। (यानी हर बात में यह देखना चाहिए कि हुज़ूर सल्ल॰ का क्या मामूल था और उस का इत्तिबाअ् करना चाहिए)

पस अब तुम ही बताओ कि तुमने यह हुज़ूर सल्ल॰ का इत्तिबाअ कर रखा है या फ़िरऔन का ! इस पर लोगों ने उनको छोड़ दिया।

यहां एक बात यह क़ाबिले लिहाज़ है कि मुबाह चीज़ों के साथ लज़्ज़त हासिल करना या उनकी वुस्अत हराम या ना जायज़ नहीं है लेकिन यह ज़रूरी है कि उनकी कसरत से उन चीज़ों के साथ उन्स पैदा होता है, उन चीज़ों की मुहब्बत दिल में हो जाती है और फिर उनका छोड़ना मुश्किल हो जाता है और उनके फ़राहम करने के लिए असबाब तलाश करने पड़ते हैं, पैदावार और आमदनी के बढ़ाने की फ़िक्र होती है और जो शख़्स रूपया बढ़ाने के फ़िक्र में लग जाता है उसको दीन के बारे में मुदाहनत भी करनी पड़ती है उसमें बसा औक़ात गुनाहों के मुर्तकिब होने की नौबत भी आ जाती है। अगर दुनिया में घुसने के बाद उससे महफ़ूज़ रहना आसान होता तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतने एहतिमाम से दुनिया से बे रग़बती पर तंबीह न फ़रमाते और इतनी शिद्दत से उससे ख़ुद न बचते कि नक़्शीन कुर्ता भी बदने मुबारक पर से उतार दिया।

यह्या बिन यज़ीद नोफ़ली रह० ने हज़रत इमाम मालिक रह० को एक ख़त लिखा, जिसमें हम्द व सलात के बाद लिखा कि मुझे यह ख़बर पहुंची है कि आप बारीक कपड़ा पहनते हैं और पतली रोटी इस्तेमाल करते हैं और नर्म बिस्तर पर आराम करते हैं। दरबान भी आपने मुक़र्रर कर रखा है। हालांकि आप ऊँचे उलमा में हैं, दूर दूर से लोग सफ़र करके आपके पास इल्म सीखने के लिए आते हैं, आप इमाम हैं, मुक़्तदा हैं, लोग आपका इत्तिबाअ् करते हैं, आपको बहुत एहतियात करनी चाहिए महज़ मुख़्लिसाना यह ख़त लिख रहा हूँ। अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को इस ख़त की ख़बर नहीं। फ़क़त् वस्सलाम्।

हज़रत इमाम मालिक रह० ने उसका, जवाब तहरीर फ़रमाया कि तुम्हारा ख़त पहुँचा जो मेरे लिए नसीहत नामा, शफ़्क़त नामा और तंबीह थी, हक़ तआला शानुहू तक़्वा के साथ तुम्हें मुन्तफ़ा फ़रमाए और इस नसीहत की जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाये और मुझे हक़ तआला शानुहू अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। ख़ूबियों पर अमल और बुराईयों से बचना अल्लाह तआला ही की तौफ़ीक़ से हो सकता है। जो उमूर तुमने ज़िक्र किये सही हैं ऐसा ही होता है। अल्लाह तआला मुझे माफ़ फ़रमाये (लेकिन ये सब चीज़ें जायज़ हैं) और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि:-

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ (اعراف ع ٤)

"क़ुल मन् हर्र-म ज़ीनतल्लाहि" *(आराफ़, रूकूअ 4)*

'आप यह कह दीजिए कि (यह बतलाओ) कि अल्लाह तआला की पैदा की हुई ज़ीनत (कपड़े वग़ैरह) को जिनको उसने बंदों के वास्ते पैदा किया और खाने पीने की हलाल चीज़ों को किसने हराम किया? इसके बाद तहरीर फ़रमाया कि यह मैं खूब जानता हूँ कि इन उमूर का इख़्तियार न करना इख़्तियार करने से औला और बेहतर है, आइंदा भी अपने गरामी नामों से मुझे मुशर्रफ़ करते रहें, मैं भी ख़त लिखता रहूँगा, फ़क़त् वस्सलाम्।

कितनी लतीफ़ बात इमाम मालिक रह॰ ने इख़्तियार फ़रमायी कि जवाज़ का फ़त्वा भी तहरीर फ़रमा दिया और इसका इक़रार भी फ़रमाया कि वाक़ई ज़्यादा बेहतर इन उमूर का तर्क ही था।

5. पांचवीं अलामत उलमा-ए-आख़िरत की यह है कि सलातीन और हुक्काम से दूर रहें (बिला ज़रूरत के) उनके पास हरगिज़ न जायें, बल्कि वे ख़ुद भी आयें तो मुलाक़ात कम रखें, इसलिए कि उनके साथ मेल जोल, उनकी ख़ुश्नूदी और रिज़ा जोई में तकल्लुफ़ बरतने से ख़ाली न होगा। वे लोग अक्सर ज़ालिम और नाजायज़ उमूर का इर्तिकाब करने वाले होते हैं जिस पर इंकार करना ज़रूरी है, उनके ज़ुल्म का इज़्हार उनके नाजायज़ फ़ेअ्ल पर तंबीह करना ज़रूरी है और इस पर सुकूत (ख़ामोशी) दीन में मुदाहनत है और अगर उनकी ख़ुश्नूदी के लिए उनकी तारीफ़ करना पड़े तो यह सरीह झूठ है और उनके माल की तरफ़ अगर तबीअत को मैलान हो और तमअ् हुई तो नाजायज़ है। बहरहाल उनका इख़्तिलात (मेल जोल) बहुत से मफ़ासिद (ख़राबियों) की कुंजी है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स जंगल में रहता है, वह सख़्त मिज़ाज हो जाता है और जो शिकार के पीछे लग जाता है, वह(सब चीज़ से) ग़ाफ़िल हो जाता है और जो बादशाह के पास आमद व रफ़्त (आना जाना) शुरू कर दे, वह फ़ित्ने में पड़ जाता है। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अपने आपको फ़ित्नों की जगह खड़े होने से बचाओ, किसी ने पूछा कि फ़ित्नों की जगह कौन सी हैं? फ़रमाया कि उमरा के दरवाज़े कि उन के पास जाकर उनकी ग़लत कारियों की तस्दीक़ करनी पड़ती है और (उनकी तारीफ़ में) ऐसी बातें कहनी पड़ती हैं जो उनमें नहीं हैं। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि बद तरीन उलमा वे हैं जो हुक्काम के यहां हाज़िरी दें और बेहतरीन हाकिम वह है जो उलमा के यहां हाज़िर हो।

हज़रत समनून रह॰ (जो हज़रत सिर्री सक़्ती रह॰ के असहाब में हैं)

कहते हैं कि मैं ने यह सुना था कि जब तुम किसी आलिम को यह सुनो कि वह दुनिया की मुहब्बत रखता है तो उस शख़्स को अपने दीन के बारे में मुत्तहम समझो। मैं ने इसका ख़ुद तजुर्बा किया, जब भी मैं बादशाह के यहां गया तो वापसी पर मैं ने अपने दिल को टटोला, तो उस पर मैं ने एक वबाल पाया, हालांकि तुम देखते हो कि मैं वहां सख़्त गुफ़्तगू करता हूँ और उनकी राय का सख़्ती से ख़िलाफ़ करता हूँ, वहां की किसी चीज़ से मुन्तफ़ा नहीं होता, हत्ताकि वहां का पानी भी नहीं पीता, हमारे उलमा बनू इस्राईल के उलमा से भी बुरे हैं कि वे हुक्काम के पास जाकर उनको गुंजाईशें बताते हैं, उनकी ख़ुशनूदी की फ़िक्र करते हैं। अगर वे उनसे उनकी ज़िम्मेदारियां साफ़ साफ़ बतायें तो वे लोग उनका जाना भी गरां समझने लगें और यह साफ़ साफ़ कहना उन उलमा के लिए हक़ तआला शानुहू के यहां निजात का सबब बन जाये। उलमा का सलातीन के यहां जाना एक बहुत बड़ा फ़ित्ना है और शैतान के इग़वा (गुमराह) करने का ज़रिया है। बिलखुसूस जिसको बोलना अच्छा आता हो, उसको शैतान यह समझाता है कि तेरे जाने से उनकी इस्लाह होगी, वे इसकी वजह से ज़ुल्म से बचेंगे और दीन के शआइर की हिफ़ाज़त होगी, हत्ताकि आदमी यह समझने लगता है कि उनके पास जाना भी कोई दीनी चीज़ है, हालांकि उनके पास जाने से उन की दिलदारी में मुदाहनत की बातें करना और उनकी बेजा तारीफ़ें करनी पड़ती हैं, जिसमें दीन की हलाकत है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने हज़रत हसन बसरी रह० को लिखा कि मुझे ऐसे मुनासिब लोगों का पता बताओ जिनसे मैं अपनी इस (ख़िलाफ़त के) काम में मदद लूँ। हज़रत हसन रह० ने (जवाब में) लिखा कि अह्ले दीन तो तुम तक न आयेंगे और दुनियादारों को तुम इख़्तियार न करोगे (और न करना चाहिए यानी हरीस तम्माअ् लोगों को कि वे अपने लालच में काम ख़राब कर देंगे।) इसलिए शरीफ़ुन्नसब लोगों से काम लो, इसलिए कि उनकी क़ौमी शराफ़त उनको इस बात से रोकेगी कि वे अपनी नसबी शराफ़त को ख़ियानत से गंदा करें। यह जवाब जनाब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० को लिखा जिनका ज़ुह्द व तक़्वा अदल व इंसाफ़ ज़रबुल मसल है हत्ताकि वह उमरे सानी (दूसरे उमर रज़ि०) कहलाते हैं।

यह इमाम ग़ज़ाली रह० का इर्शाद है, लेकिन इस नाकारा के ख़्याल में अगर कोई दीनी मजबूरी हो तो अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त और निगरानी करते हुए

जाने में मुज़ायक़ा नहीं, बल्कि बसा औक़ात दीनी मसालेह और ज़रूरतों का तक़ाज़ा जाना ही होता है, लेकिन यह ज़रूरी है कि अपनी ज़ाती ग़रज़, ज़ाती नफ़ा, माल व जाह कमाना मक़्सूद न हो, बल्कि सिर्फ़ मुसलमानों की ज़रूरत हो। हक़ तआला शानुहू ने फ़रमाया –

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ (بقرہ ع ۲۷)

"वल्लाहु यअ्लमुल् मुफ़्सि-द मिनल् मुस्लिहि॰" *(बक़र: रूकूअ 27)*

'और अल्लाह तआला मसलहत के ज़ाया करने वाले को और मसलहत की रियायत रखने वाले को (अलग अलग) जानते हैं।

6. छठी अलामत उलमा-ए-आख़िरत की यह है कि फ़त्वा सादिर कर देने में जल्दी न करे, मसअला बताने में बहुत एहतियात करे, हत्तल वसअ (जहां तक हो सके) अगर कोई दूसरा अह्ल हो तो उस का हवाला कर दे। अबू हफ़्स नीशापूरी रह॰ कहते हैं कि आलिम वह है कि जो मसअले के वक़्त इससे ख़ौफ़ करता हो कि कल को क़ियामत में यह जवाब दही करनी पड़ेगी कि कहां से बताया था? बाज़ उलमा ने कहा है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ चार चीज़ों से बहुत एहतिराज़ करते थे –

1. इमामत करने से, 2. वसी बनने से(यानी किसी की वसीयत में माल वग़ैरह तक़्सीम करने से), 3. अमानत रखने से, 4. फ़त्वा देने से, और उनका ख़ुसूसी मशग़ला पांच चीज़ें थीं –

1. क़ुरआन पाक की तिलावत, 2. मसाजिद का आबाद करना, 3. अल्लाह तआला का ज़िक्र, 4. अच्छी बातों की नसीहत करना, 5. बुरी बातों से रोकना।

इब्ने हसीन रह॰ कहते हैं कि बाज़ आदमी ऐसे जल्द फ़त्वा सादिर करते हैं कि वह मसअला अगर हज़रत उमर रज़ि॰ के सामने पेश होता तो सारे बद्र वालों को इकट्ठा करके मश्वरा करते। हज़रत अनस रज़ि॰ इतने जलीलुल क़द्र सहाबी हैं कि दस बरस हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत की, जब उनसे मसअला दर्याफ़्त किया जाता तो फ़रमाते मौलाना अलहसन रह॰ से दर्याफ़्त करो (यह हज़रत हसन बसरी रह॰ मशहूर फ़ुक़हा और मशहूर सूफ़िया में हैं और ताबअी हैं, हज़रत अनस रज़ि॰ बावजूद सहाबी होने के इन ताबअी का नाम बताते) और

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ से जब मसअला दर्याफ़्त किया जाता (हालांकि वह मशहूर सहाबी और रईसुल मुफ़स्सिरीन हैं) तो फ़रमाते कि जाबिर बिन ज़ैद रह॰ (जो अह्ले फ़त्वा ताबई हैं) से दर्याफ़्त करो, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ख़ुद बड़े मशहूर फ़क़ीह सहाबी हैं, हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह॰ (ताबिई) पर हवाला फ़रमा देते।

7. सातवीं अलामत उलमा-ए-आख़िरत की यह है कि उसको बातिनी इल्म यानी सुलूक का एहतिमाम बहुत ज़्यादा हो। अपनी इस्लाहे बातिन और इस्लाहे क़ल्ब में बहुत ज्यादा कोशिश करने वाला हो कि यह उलूमे ज़ाहिरिया में भी तरक़्क़ी का ज़रिया है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो अपने इल्म पर अमल करे, हक़ तआला शानुहू उसको ऐसी चीज़ों का इल्म अता फ़रमाते हैं जो उसने नहीं पढ़ीं। पहले अंबिया की किताबों में है कि बनी इस्राईल! तुम यह मत कहो कि उलूम आसमान पर हैं, उनको कौन उतारे या वे ज़मीन की जड़ों में हैं उनको कौन ऊपर लाये या वे समुन्दरों के पार हैं, कौन उन पर गुज़रे ताकि उनको लाए, उलूम तुम्हारे दिलों के अंदर हैं, तुम मेरे सामने रूहानी हस्तियों के आदाब के साथ रहो, सिद्दीक़ीन के अख़्लाक़ इख़्तियार करो, मैं तुम्हारे दिलों में से उलूम को ज़ाहिर कर दूँगा, यहां तक कि वे उलूम तुमको घेर लेंगे और तुमको ढांक लेंगे और तजुर्बा भी इसका शाहिद है कि अहलुल्लाह को हक़ तआला शानुहू वे उलूम और मआरिफ़ अता फ़रमाता है कि किताबों में तलाश से भी नहीं मिलते।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद, जिसको हक़ तआला शानुहू से नक़ल फ़रमाते हैं कि मेरा बंदा किसी ऐसी चीज़ के साथ मुझसे तक़र्रूब हासिल नहीं कर सकता जो मुझे ज़्यादा महबूब हो, उन चीज़ों से जो मैं ने उस पर फ़र्ज़ कीं (जैसा कि नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज वग़ैरह यानी जितना तक़र्रूब फ़राईज़ के अच्छी तरह अदा करने से हासिल होता है ऐसा तक़र्रूब दूसरी चीज़ों से नहीं होता) और बंदा नवाफ़िल के साथ भी मेरे साथ तक़र्रूब हासिल करता रहता है, यहां तक कि मैं उसको महबूब बना लेता हूँ और जब मैं उसको महबूब बना लेता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है और उसकी आंख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, और उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह किसी चीज़ को पकड़ता है, और उसका पांव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है, अगर वह मुझसे सवाल करता है तो मैं उसको पूरा

करता हूँ और वह किसी चीज़ से पनाह चाहता है तो उसको पनाह देता हूँ।

यानी उसका चलना फिरना, देखना सुनना सब काम मेरी रिज़ा के मुताबिक़ हो जाते हैं और बाज़ हदीसों में इसके साथ यह मज़्मून भी आया है कि जो शख़्स मेरे किसी वली से दुश्मनी करता है वह मुझ से ऐलाने जंग करता है और चूंकि औलिया अल्लाह का ग़ौर व फ़िक्र सब ही हक़ तआला शानुहू के साथ वाबस्ता हो जाता है, इसी वजह से क़ुरआन पाक के दक़ीक़ उलूम उनके क़ुलूब पर मुन्कशिफ़ हो जाते हैं, उसके असरार उन पर वाज़ेह हो जाते हैं। बिलख़ुसूस ऐसे लोगों पर जो अल्लाह तआला के ज़िक्र व फ़िक्र के साथ हर वक़्त मशग़ूल रहते हैं और हर शख़्स को इसमें से हस्बे तौफ़ीक़ इतना हिस्सा मिलता है जितना कि अमल में उसका एहतिमाम और उसकी कोशिश होती है।

हज़रत अली रज़ि॰ ने एक बड़ी तवील हदीस में उलमा-ए-आख़िरत का हाल बयान फ़रमाया है, जिसको इब्ने क़य्यिम रह॰ ने मिफ़्ताह दारूस्सआदत में और अबू नुईम रह॰ ने हिल्यह् में ज़िक्र फ़रमाया है। उसमें फ़रमाते हैं कि क़ुलूब बमंज़िला बर्तन के हैं और बेहतरीन क़ुलूब वे हैं जो ख़ैर को ज़्यादा से ज़्यादा महफ़ूज़ रखने वाले हैं। इल्म का जमा करना माल के जमा करने से बेहतर है कि इल्म तेरी हिफ़ाज़त करता है और माल की तुझको हिफ़ाज़त करनी पड़ती है। इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है और माल ख़र्च करने से कम होता है। माल का नफ़ा उसके ज़ायल होने (ख़र्च करने) से ख़त्म हो जाता है। लेकिन इल्म का नफ़ा हमेशा हमेशा बाक़ी रहता है (आलिम के इंतिक़ाल से भी ख़त्म नहीं होता कि उसके इर्शादात बाक़ी रहते हैं।) फिर हज़रत अली रज़ि॰ ने एक ठंडा सांस भरा और फ़रमाया कि मेरे सीने में उलूम हैं, काश उसके अह्ल मिलते, मगर मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो दीन के असबाब को दुनिया तलबी में ख़र्च करते हैं या ऐसे लोगों को देखता हूँ जो लज़्ज़तों में मुन्हमिक हैं, शहवतों की तलब की ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं या माल जमा करने के पीछे पड़े हुए हैं, ग़रज़ यह तवील मज़्मून है जिसके चंद फ़िक़रे यहां नक़ल किये हैं।

8. आठवीं अलामत यह है कि उसका यक़ीन और ईमान अल्लाह तआला शानुहू के साथ बढ़ा हुआ हो और इसका बहुत ज़्यादा एहतिमाम उसको हो। यक़ीन ही असल रापुल्माल है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि यक़ीन ही पूरा ईमान है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि यक़ीन को सीखो और इस इर्शाद का मतलब यह है कि यक़ीन वालों के पास एहतिमाम से बैठो, उनका इत्तिबाअ् करो

ताकि उसकी बरकत से तुम में यक़ीन की पुख़्तगी पैदा हो, उसको हक़ तआला शानुहू की क़ुदरते कामिला और सिफ़ात का ऐसा ही यक़ीन हो जैसा कि चांद सूरज के वजूद का। वह इसका कामिल यक़ीन रखता हो कि हर चीज़ का करने वाला सिर्फ़ वही एक पाक ज़ात है और ये दुनिया के सारे असबाब उसके इरादे के साथ मुसख़्ख़र हैं जैसा कि मारने वाले के हाथ में लकड़ी कि इसमें लकड़ी को कोई शख़्स भी दख़ील नहीं समझता और जब यह पुख़्ता हो जाएगा तो उसको तवक्कुल, रिज़ा और तस्लीम सहल हो जायेगी, नीज़ उसको इसका पुख़्ता यक़ीन हो कि रोज़ी का ज़िम्मा सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू का है। और उसने हर शख़्स कि रोज़ी का ज़िम्मा ले रखा है, जो उसके मुक़द्दर में है, वह उसको बहरहाल मिल कर रहेगा और जो मुक़द्दर में नहीं है वह किसी हाल में न मिल सकेगा, और जब उसका यक़ीन पुख़्ता हो जाएगा तो रोज़ी की तलब में एतिदाल पैदा हो जाएगा, हिर्स और तमअ् जाती रहेगी, जो चीज़ मयस्सर न होगी, उस पर रंज न होगा, नीज़ उसको इसका यक़ीन हो कि अल्लाह जल्ल शानुहू हर भलाई और बुराई का हर वक़्त देखने वाला है, एक ज़र्रे के बराबर कोई नेकी या बुराई हो तो वह अल्लाह तआला के इल्म में है और उसका बदला नेक या बद ज़रूर मिलेगा। वह नेक काम के करने पर सवाब का ऐसा ही यक़ीन रखता हो जैसा कि रोटी खाने से पेट भरना और बुरे काम पर अज़ाब को ऐसा ही यक़ीनी समझता हो जैसा कि सांप के काटने से ज़हर का चढ़ना (वह नेकी की तरफ़ ऐसा माइल हो जैसा कि खाने पीने की तरफ़ और गुनाह से ऐसा ही डरता हो जैसा कि सांप बिच्छू से) और जब यह पुख़्ता हो जायेगा तो हर नेकी के कमाने की उसको पूरी रग़बत होगी और हर बुराई से बचने का पूरा एहतिमाम होगा।

9. नवीं अलामत यह है कि उसकी हर हरकत व सुकून से अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ौफ़ टपकता हो, उसकी अज़मत व जलाल और हैबत का असर उस शख़्स की हर अदा से ज़ाहिर होता हो, उसके लिबास से, उसकी आदात से, उसके बोलने से, चुप रहने से हत्ताकि हर हरकत और सुकून से यह बात ज़ाहिर होती हो, उसकी सूरत देखने से अल्लाह तआला शानुहू की याद ताज़ा होती हो, सुकून वक़ार, मस्कनत, तवाज़ोअ् उसकी तबीअत बन गया हो, बेहूदा गोई, लग्व कलामी, तकल्लुफ़ से बातें करने से गुरेज़ करता हो कि ये चीज़ें फ़ख़्र और अकड़ की अलामात हैं, अल्लाह तआला शानुहू से बेख़ौफ़ी की दलील हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि इल्म सीखो और इल्म के लिए सुकून और

वक़ार सीखो, जिस से इल्म हासिल करो उसके सामने निहायत तवाज़ोअ् से रहो, जाबिर उलमा में से न बनो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी उम्मत के बेहतरीन अफ़राद वे हैं जो मज्मे में अल्लाह तआला की वुस्अते रहमत से खुश रहते हों और तंहाईयों में अल्लाह तआला के अज़ाब के ख़ौफ़ से रोते हों, उनके बदन ज़मीन पर रहते हों और उनके दिल आसमान की तरफ़ लगे रहते हों, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा कि सबसे बेहतर अमल क्या है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि नाजायज़ उमूर से बचना और यह कि अल्लाह तआला शानुहू के ज़िक्र से तेरी ज़बान तरोताज़ा रहे। किसी ने पूछा कि बेहतरीन साथी कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह शख़्स है कि अगर तू नेक काम से ग़फ़लत करे तो वह तुझे मुतनब्बह कर दे और अगर तुझे खुद याद हो तो उसमें तेरी इआनत (मदद) करे। किसी ने पूछा कि बुरा साथी कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया वह शख़्स है कि अगर तुझे नेक काम से ग़फ़लत हो तो वह मुतनब्बह न करे और तू खुद करना चाहे तो उसमें तेरी इआनत न करे। किसी ने पूछा कि सबसे बड़ा आलिम कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख़्स सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला शानुहू से डरने वाला हो। किसी ने पूछा कि हम किन लोगों के पास ज़्यादातर नशिस्त (बैठना) रखें? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जिनकी सूरत से अल्लाह की याद ताज़ा होती हो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आख़िरत में ज़्यादा बेफ़िक्र वह शख़्स होगा जो दुनिया में फ़िक्र मंद रहा हो और आख़िरत में ज़्यादा हँसने वाला वह होगा जो दुनिया में ज़्यादा रोने वाला हो।

10. दसवीं अलामत यह है कि उसका ज़्यादा एहतिमाम उन मसाइल से हो जो आमाल से ताल्लुक़ रखते हों, जायज़ नाजायज़ से ताल्लुक़ रखते हों, फ़लां अमल करना ज़रूरी है। इस चीज़ से फ़लां अमल ज़ाया हो जाता है। (मसलन फ़लां चीज़ से नमाज़ टूट जाती है, मिस्वाक करने से यह फ़ज़ीलत हासिल होती है, वग़ैरह वग़ैरह), ऐसे उलूम से ज़्यादा बहस न करता हो जो महज़ दिमाग़ी तफ़रीहात और तफ़रीआत हों ताकि लोग उसको मुहक़्क़िक़ समझें, हकीम और फ़लासफ़र समझें।

11. ग्यारहवीं अलामत यह है कि अपने उलूम में बसीरत के साथ नज़र करने वाला, महज़ लोगों की तक़्लीद में और इत्तिबाअ् में उनका क़ायल न बन

जाये, असल इत्तिबाअ् हुज़ूर सल्ल॰ के पाक इर्शादात का है और इसी वजह से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन का इत्तिबाअ् है कि वे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अफ़्आल को देखने वाले हैं और अब असल इत्तिबाअ् हुज़ूर सल्ल॰ ही का है तो हुज़ूर सल्ल॰ के अक़्वाल व अफ़्आल के जमा करने में उन पर गौर व फ़िक्र में बहुत ज़्यादा एहतिमाम करे।

12. बारहवीं अलामत बिद्अात से बहुत शिद्दत और एहतिमाम से बचना है, किसी काम पर आदमियों की कसरत का जमा हो जाना कोई मोतबर चीज़ नहीं, बल्कि असल इत्तिबाअ् हुज़ूर सल्ल॰ का है और यह देखना है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ का क्या मामूल रहा है और इसके लिए उन हज़रात के मामूलात और अह्वाल का ततब्बोअ् और तलाश करना और उसमें मुन्हमिक रहना ज़रूरी है। हज़रत हसन बसरी रह॰ का इर्शाद है कि दो शख़्स बिद्अती हैं जिन्होंने इस्लाम में दो बिद्अतें जारी कीं, एक वह शख़्स जो यह समझता है कि दीन वह है जो उसने समझा है और जो उसकी राय की मुवाफ़क़त करता है, वही नाजी (निजात पाने वाला) है, दूसरा वह शख़्स जो दुनिया की परस्तिश (पूजा) करता है, उसी का तालिब है, दुनिया कमाने वालों से ख़ुश होता है और जो दुनिया न कमावें उन से ख़फ़ा होता है। इन दोनों आदमियों को जहन्नम के लिए छोड़ दो और जिस शख़्स को हक़ तआला शनुहू ने इन दोनों से महफ़ूज़ रखा हो, वह पहले अकाबिर का इत्तिबाअ् करने वाला है, उनके अहवाल और तरीक़े की पैरवी करने वाला है, उसके लिए इंशाअल्लाह बहुत बड़ा अज्र है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ का इर्शाद है कि तुम लोग ऐसे ज़माने में हो कि इस वक़्त ख़्वाहिशात इल्म के ताबेअ् हैं, लेकिन अंक़रीब एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि इल्म ख़्वाहिशात के ताबेअ् होगा यानी जिन चीज़ों को अपना दिल चाहेगा, वही उलूम से साबित की जायेंगी। बाज़ बुज़ुर्गों का इर्शाद है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के ज़माने में शैतान ने अपने लश्करों को चारों तरफ़ भेजा, वे सब के सब फिर फिरा कर निहायत परेशान हाल, थके हुए वापस हुए। उसने पूछा क्या हाल है? वे कहने लगे कि इन लोगों ने तो हमको परेशान कर दिया हमारा कुछ भी असर इन पर नहीं होता, हम इनकी वजह से बड़ी मशक़्क़त में पड़ गये। उसने कहा कि घबराओ नहीं यह लोग अपने नबी (सल्ल॰) के सोहबत याफ़्ता हैं, इन पर तुम्हारा असर मुश्किल है, अंक़रीब ऐसे लोग आने वाले हैं जिन से तुम्हारे मक़ासिद पूरे होंगे। उसके बाद ताबिईन के

ज़माने में उसने अपने लश्करों को सब तरफ़ फैलाया, वे सब के सब उस वक़्त भी परेशान हाल वापस हुए। उसने पूछा क्या हाल है?, कहने लगे कि इन लोगों ने तो हमें दिक़ कर दिया, ये अजीब क़िस्म के लोग हैं कि हमारी अग़राज़ इनसे कुछ पूरी हो जाती हैं, मगर जब शाम होती है तो अपने गुनाहों से ऐसी तौबा करते हैं कि हमारा सारा किया कराया बर्बाद हो जाता है। शैतान ने कहा कि घबराओ नहीं, अंक़रीब ऐसे लोग आने वाले हैं जिनसे तुम्हारी आंखें ठंडी हो जायेंगी, वे अपनी ख़्वाहिशात में दीन समझ कर ऐसे गिरफ़्तार होंगे कि उनको तौबा की भी तौफ़ीक़ न होगी। वे बद्दीनी को दीन समझेंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि बाद में शैतान ने उन लोगों के लिए ऐसी बिद्आत निकाल दीं जिनको वे दीन समझने लगे, उस से उनको तौबा कैसे नसीब हो।

ये बारह अलामात मुख़्तसर तरीक़े से ज़िक्र की गयीं हैं जिनको अल्लामा ग़ज़ाली रह॰ ने तफ़्सील से ज़िक्र किया है, उलमा को अपने मुहासबा के दिन से ख़ास तौर से डरने की ज़रूरत है कि उनका मुहासबा भी सख़्त है, उनकी ज़िम्मेदारी भी बढ़ी हुई है और क़ियामत का दिन जिसमें यह मुहासबा होगा बड़ा सख़्त दिन होगा। अल्लाह तआला शानुहू महज़ अपने फ़ज़्ल व करम स उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखे।

(۷) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم ان اللّٰہ تعالیٰ یقول ابن ادم تفرغ لعبادتی املأ صدرك غنی واسد فقرك وان لا تفعل ملأت یداك شغلا ولم اسد فقرك رواہ احمد وابن ماجۃ کذا فی المشکوٰۃ وزاد فی الترغیب الترمذی وابن حبان والحاکم صححہ وفی الباب عن عمران وغیرہ فی الترغیب

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू व अम्म नवालुहू का फ़रमान है कि ऐ आदम की औलाद! तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरे सीने को ग़िना से पुर कर दूँगा और तेरे फ़क़्र को ज़ायल कर दूँगा और अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तुझे मशाग़िल में फांस दूँगा और तेरा फ़क़्र ज़ायल नहीं करूँगा।

फ़ायदा:- मुतअद्दद अहादीस में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से यह मज़्मून वारिद हुआ है कि हज़रत इम्रान बिन हसीन रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि जो शख़्स हमातन अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए, उसी का बन जाये तो हक़ तआला

शानुहू उसकी हर ज़रूरत को ख़ुद पूरी फ़रमाते हैं और ऐसी जगह से उस को रोज़ी अता फ़रमाते हैं कि उस को गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स दुनिया के पीछे पड़ जाता है उसकी फ़िक्र में हर वक़्त रहता है, हक़ तआला शानुहू उसको दुनिया के हवाले कर देते हैं कि तू दुनिया से निबट ले।

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स की पूरी तवज्जोह और आख़िरी मक़्सद दुनिया कमाना हो, उसी के लिए सफ़र करता है, उसी का ख़्याल दिल में रहता है, तो हक़ तआला शानुहू फ़क़्र व फ़ाक़ा (का ख़ौफ़) उसकी आंख के सामने कर देते हैं। हर वक़्त इस से डरता रहता है कि आमदनी तो बहुत कम है, क्या होगा, क्यों कर गुज़र चलेगा, और उस के औक़ात को (इसी फ़िक्र व तरद्दुद में) परेशान कर देते हैं और मिलता उतना ही है जितना कि मुक़द्दर में होता है और जिस शख़्स की तवज्जोह और हक़ीक़ी मक़्सद आख़िरत होती है, उसी के कामों के लिए सफ़र करता है, उसी का ख़्याल दिल में रहता है, तो हक़ तआला शानुहू (दुनिया से बे नियाज़ी और बे फ़िक्री और) इस्तिग़्ना उसके सामने कर देते हैं और उसके अहवाल को मुज्तमा कर देते हैं और दुनिया ख़ुद ब ख़ुद ज़लील होकर उसके पास आती है।

(तर्ग़ीब)

ख़ुद ब ख़ुद ज़लील होकर आने का मतलब यह है कि जो चीज़ मुक़द्दर है वह तो आकर रहेगी, इसलिए कि बहुत सी अहादीस में यह मज़्मून गुज़र चुका है कि रोज़ी ख़ुद आदमी को ऐसा तलाश करती है जैसा कि मौत आदमी को तलाश करती है। जब वह ख़ुद उसकी तलाश में है, उसके पास आने पर मजबूर है और उसकी तरफ़ से इस्तिग़्ना रहे, तो वह बहरहाल उसके पास आकर रहेगी। इससे ज़्यादा ज़िल्लत क्या होगी कि वह ख़ुद उसके पास आए और यह लापरवाही बरते।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स उस चीज़ की तलब मे लग जाये जो अल्लाह तआला शानुहू के पास है, आसमान उसका साया हो, ज़मीन उसका बिस्तर हो, दुनिया की किसी चीज़ की उसको फ़िक्र न हो, तो ऐसा शख़्स बग़ैर खेती किए रोटी खाएगा, बग़ैर बाग़ लगाये फल खायेगा। अल्लाह तआला पर उसका तवक्कुल हो और उस की रिज़ा की जुस्तजू में लगा रहता हो, अल्लाह जल्ल शानुहू सातों आसमान और सातों ज़मीनों को उसकी रोज़ी का ज़िम्मेदार बना देते हैं। वे सब के सब उसको रोज़ी पहुँचाने के

कोशाँ रहते हैं, उसको हलाल, रोज़ी पहुँचाने में कोताही नहीं करते और वह बग़ैर हिसाब के अपनी रोज़ी पूरी कर लेता है। (दुर्रे मंसूर)

एक और हदीस में है, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे ख़ैफ़ (मिना की मस्जिद) में वअज़ फ़रमाया, उसमें हम्द व सना के बाद इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स का मक़्सद दुनिया बन जाये, हक़ तआला शानुहू उसके अहवाल को परेशान और मुन्तशिर कर देते हैं और फ़क़्र (का ख़ौफ़) हर वक़्त आंखों के सामने रहता है और दुनिया तो जितनी मुक़द्दर है उससे ज़्यादा मिलती नहीं।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स दुनिया के पीछे पड़ जाये, उसका हक़ तआला शानुहू से कोई वास्ता नहीं, और जिसको मुसलमानों का (उनकी भलाई का, ख़ैरख़्वाही का) फ़िक्र न हो, उसको मुसलमानों से कोई वास्ता नहीं, और जो (दुन्यवी अग़राज़ के लिए) अपने आपको ख़ुशी से ज़लील करे, उसका हमसे कोई ताल्लुक़ नहीं (महज़ चार पैसे के वास्ते या किसी और दुन्यवी गरज़ के लिए अपने आप को दूसरों के सामने ज़लील करना यक़ीनन अपनी क़द्र व क़ीमत का न पहचानना है और अपने उन बुज़ुर्गों के नाम को धब्बा लगाना है, जिनकी तरफ़ अपनी निस्बत है और सबसे ऊँची निस्बत फ़ख़रूर्रुसुल सल्ल॰ की उम्मत में होना है।)

हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि चार चीज़ें बदबख़्ती की अलामत हैं :-

1. आंखों का ख़ुश्क होना (कि अल्लाह के ख़ौफ़ से किसी वक़्त भी आंसू न टपकें)

2. दिल का सख़्त होना (कि अपनी आख़िरत के लिए या किसी दूसरे के लिए किसी वक़्त भी नर्म न पड़े।)

3. आरज़ुओं का लम्बा होना

4. दुनिया की हिर्स (तर्ग़ीब)

हज़रत अबू दर्दा रज़ि॰ ने एक मर्तबा तंबीह फ़रमाई, लोगो! तुम्हें क्या हो रहा है? मैं देखता हूँ कि तुम्हारे उलमा दिन ब दिन (मौत की वजह से) कम होते जा रहे हैं। और तुम्हारे जाहिल लोग इल्म सीखते नहीं। इस से पहले पहले

इल्म सीख लो कि उलमा इंतिक़ाल कर जायें और उनके इंतिक़ाल से इल्म जाता रहे। (फिर कोई पढ़ाने वाला भी सही न मिलेगा) मैं तुमको देखता हूँ कि उस चीज़ के जमा करने पर तो बड़ा लालच करते हो जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने ज़िम्मे ले रखा है (यानी रोज़ी) और उस चीज़ को ज़ाया कर रहे हो जिसके तुम ख़ुद ज़िम्मेदार हो, (यानी इल्म व अमल) मैं तुम्हारे बद तरीन आदमियों को देख रहा हूँ, ये वे लोग हैं जो ज़कात को तावान समझते हैं और नमाज़ को टाल कर पढ़ते हैं और क़ुरआन पाक के पढ़ने में भी बे इल्तिफ़ाती करते हैं। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

(٨) عن ابی موسیٰ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من احب دنیاہ اضر باٰخرتہ ومن احب اخرتہ اضربدنیاہ فاثروا مایبقی علی مایفنی رواہ احمد والبیھقی فی شعب الایمان کذا فی المشکوٰۃ

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत रखता है वह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाता है और जो अपनी आख़िरत से मुहब्बत रखता है वह (सूरत के एतिबार से) दुनिया को नुक़्सान पहुँचाता है, पस (जब यह उसूल है तो) जो चीज़ हमेशा रहने वाली है (यानी आख़िरत) उसको तर्जीह दो उस चीज़ पर जो बहरहाल फ़ना हो जाने वाली है।

फ़ायदा:- दुनिया की ज़िन्दगी चाहे कितनी ही ज़्यादा हो जाए बहर हाल ख़त्म होने वाली है और उसका माल व मताअ् चाहे कितना ही ज़्यादा से ज़्यादा हो जाए एक दिन छूटने वाला है। मौत से छूट जाये, चाहे ज़ाया हो जाने से छूट जाये, और आख़िरत की ज़िन्दगी कभी भी ख़त्म होने वाली नहीं है, उसकी नेअ्मतें हमेशा हमेशा रहने वाली हैं, ऐसी हालत में खुली हुई बात है कि आदमी में अगर ज़रा सी भी अक़्ल हो तो ऐसी चीज़ को इख़्तियार करना चाहिए जो हमेशा अपने पास रहेगी। ऐसी चीज़ के पीछे पड़ना जो किसी तरह भी अपने पास हमेशा नहीं रह सकती, बेवक़ूफ़ी की इंतिहा है, मगर हम लोगों की अक़्ल पर ग़फ़लत का पर्दा पड़ा हुआ है, इस स्टेशन की वेटिंगरूम की ज़ेब व ज़ीनत पर दिल लगाये बैठे हैं और क़ियाम सिर्फ़ इतना है कि जब रेलगाड़ी आ जाये उस पर सवार हो जाना है। इतने ज़रा से वक़्त में अगर आदमी अपने सफ़र की तैयारी में मशग़ूल रहे, अपने सामाने सफ़र को जो चीज़ें वतन में पहुँचकर काम आने

वाली हैं उनको फ़राहम कर ले, तैयार कर ले, तो यक़ीनन उसके लिए कारआमद है, वह अपना यह क़ीमती वक़्त और थोड़ी सी फ़ुर्सत वहां के सैर सपाटे में ख़र्च कर दे, अपना सामान बिखरा पड़ा रहे और ख़ुद वेटिंगरूम की सफ़ाई और उसके फ़र्नीचर को क़रीने से रखने में लग जाये या इस से बढ़कर हिमाक़त यह करे कि उसमें लटकाने के वास्ते आईने और नक़्शे ख़रीदने में लग जाये तो अपना सामान भी खोयेगा और अपनी मताअ् भी ज़ाया करेगा।

इस हदीस पाक में दुनिया से मुहब्बत न करने पर तंबीह है कि मुहब्बत ऐसी सख़्त चीज़ है कि जिसके साथ भी लग जाये, रफ़्ता रफ़्ता आदमी को उसी का बना देती है इसलिए आख़िरत के साथ मुहब्बत पैदा करने की तर्ग़ीब फ़रमाई है और दुनिया से तर्के मुहब्बत पर तंबीह है, कि दुनिया से मुहब्बत रखने वाला अगरचे आख़िरत के आमाल उस वक़्त करता हो लेकिन इस नापाक दुनिया की मुहब्बत रंग लाये बग़ैर न रहेगी और आहिस्ता आहिस्ता आख़िरत के कामों में तसाहुल और हर्ज और नुक़्सान पैदा कर देगी। बुज़ुर्गों का इर्शाद है कि जो शख़्स दुनिया को महबूब रखता है, सारे पीर व मुर्शिद मिल कर भी उसको हिदायत नहीं कर सकते, और जो शख़्स दुनिया को तर्क कर देता है, (उस से नफ़रत करता है) उसको सारे मुफ़्सिद मिलकर भी गुमराह नहीं कर सकते।

(मज़ाहिरे हक़)

हज़रत बरा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स दुनिया में अपनी शहवतों को पूरा करता है, वह आख़िरत में अपनी ख़्वाहिशात के पूरा करने से महरूम होता है और जो शख़्स दुनिया में नाज़ परवरदा (रईस) लोगों की ज़ेब व ज़ीनत की तरफ़ (ललचाई हुई) आंखों से देखता है, वह आसमानों की बादशाहत में ज़लील समझा जाता है और जो शख़्स कम से कम रोज़ी पर सब्र व तहम्मुल करता है वह जन्नत में फ़िर्दौसे आला में ठिकाना पकड़ता है। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ मशहूर हकीम हैं, क़ुरआन पाक में भी उनकी नसीहतों का ज़िक्र फ़रमाया गया। यह एक हब्शी ग़ुलाम स्याह फ़ाम थे, अल्लाह जल्ल शानुहू ने नवाज़ा कि हकीम लुक़्मान अलैहि॰ बन गये। बाज़ रिवायात में है कि हक़ तआला शानुहू ने उनको इख़्तियार दिया था कि हिक्मत और बादशाहत में से जिसको चाहें पसंद कर लें, तो उन्होंने हिक्मत को पसंद फ़रमाया।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू ने उन से इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम इसको पसंद करते हो कि तुमको बादशाह बना दिया जाए और तुम हक़ के मुवाफ़िक़ हुकूमत करो। उन्होंने अर्ज़ किया अगर मेरे रब की तरफ़ से यह हुक्म है तो मुझे उज़्र नहीं, इसलिए कि इस सूरत में अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से मेरी इआनत होगी, और अगर मुझे इस का इख़्तियार है कि मैं क़ुबूल करूँ या न करूँ तो मैं माफ़ी का ख़्वास्तगार हूं, मैं अपने ज़िम्मे मुसीबत रखना नहीं चाहता। फ़रिश्तों ने पूछा कि लुक़्मान अलैहि॰ यह क्या बात है? उन्होंने जवाब दिया कि हाकिम बड़ी सख़्त जगह में होता है, नागवार चीज़ें और ज़ुल्म हर तरफ़ से उसको घेर लेता है, उसमें उसकी मदद हो सके या न हो सके, अगर हक़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे तब तो निजात हो सकती है वरना जन्नत के रास्ते से भटक जायेगा और कोई शख़्स दुनिया में ज़लील बन कर दिन गुज़ार दे यह इस से बेहतर है कि दुनिया में शरीफ़ाना ज़िन्दगी गुज़ार कर (आख़िरत के एतिबार से) ज़ाया हो जाये और जो शख़्स दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह देता है दुनिया तो उस से छूट जाती है और आख़िरत के काम का रहता नहीं। फ़रिश्तों को उनके जवाब से बड़ी हैरत हुई। इसके बाद वह सो गये तो हक़ तआला शानुहू ने उन पर हिक्मत को ढांक दिया। *(दुर्रे मंसूर)*

उन से जो हिक्मतें और अपने साहबज़ादे को नसीहतें नक़ल की गयीं बड़ी अजीब हैं, वे बहुत कसरत से रिवायात में आई हैं। मिन्जुम्ला उनके यह भी है कि बेटा उलमा की मज्लिस में कसरत से बैठा करो और हुकमा की बात एहतिमाम से सुना करो। अल्लाह तआला शानुहू हिक्मत के नूर से मुर्दा दिल को ऐसा ज़िंदा फ़रमाते हैं जैसा कि मुर्दा ज़मीन ज़ोरदार बारिश से ज़िंदा होती है।

एक शख़्स उनके पास से गुज़रा उनके पास उस वक़्त मज्मा बैठा हुआ था, वह कहने लगा क्या तू फ़लाँ क़ौम का गुलाम नहीं है? उन्होंने फ़रमाया कि हां मैं उनका गुलाम था। उसने पूँछा क्या तू वही नहीं है जो फ़लाँ पहाड़ के क़रीब बकरियां चराया करता था? उन्होंने फ़रमाया, हां मैं वही शख़्स हूँ। उसने पूछा कि तू फिर इस मर्तबे तक कैसे पहुँच गया? उन्होंने फ़रमाया, चंद चीज़ों की पाबंदी और एहतिमाम करने से।

वे चीज़ें ये हैं :-

अल्लाह तआला शानुहू का ख़ौफ़ और बात में सच्चाई और अमानत का

पूरा पूरा अदा करना और बेकार गुफ़्तगू से एहतिराज़, उनका इर्शाद है कि बेटा अल्लाह तआला शानुहू से ऐसी तरह उम्मीद रखो कि उसके अज़ाब से बे ख़ौफ़ न हो जाओ और ऐसी तरह उसके अज़ाब से ख़ौफ़ करो कि उस की रहमत से ना उम्मीद न हो जाओ। साहब ज़ादे ने अर्ज़ किया दिल तो एक ही है उसमें ख़ौफ़ और उम्मीद दोनों किस तरह जमा हों? उन्होंने फ़रमाया कि मोमिन ऐसा ही होता है कि उसके लिए गोया दो दिल होते हैं, एक में पूरी उम्मीद और एक में पूरा ख़ौफ़। उनका यह भी इर्शाद है कि बेटा "रब्बिग़्फ़िर्ली" बहुत कसरत से पढ़ा करो, अल्लाह तआला शानुहू के अल्ताफ़ में बाज़ औक़ात ऐसे होते हैं कि उनमें जो कुछ आदमी मांगता है वह मिल जाता है। उनका इर्शाद है कि बेटा नेक अमल अल्लाह तआला शानुहू के साथ यक़ीन बग़ैर नहीं हो सकता। जिसका यक़ीन ज़ईफ़ (कमज़ोर) होगा उसका अमल भी सुस्त होगा। बेटा जब शैतान तुझे किसी शक में मुब्तला करे तो उसको यक़ीन के साथ मग़्लूब कर और जब वह तुझे अमल में सुस्ती करने की तरफ़ ले जाये तो क़ब्र और क़ियामत की याद से उस पर ग़लबा हासिल कर, और जब दुनिया में रग़्बत या (यहां की तक्लीफ़ के) ख़ौफ़ के रास्ते से वह तेरे पास आये तो उस से कह दे कि दुनिया हर हाल में छूटने वाली चीज़ है (न यहां की राहत को दवाम है, न यहां की तक्लीफ़ हमेशा रहने वाली है।) उनका इर्शाद है कि बेटा जो शख़्स झूठ बोलता है उसके मुंह की रौनक़ जाती रहती है और जिस शख़्स की आदतें ख़राब होंगी, उस पर ग़म सवार होगा और पहाड़ की चट्टानों का एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल करना अहमक़ों के समझाने से ज़्यादा आसान है।

उनका इर्शाद है कि बेटा झूठ से अपने को बहुत महफ़ूज़ रखो, झूठ बोलना चिड़िया (परिन्दे) के गोश्त की तरह से लज़ीज़ तो मालूम होता है लेकिन बहुत जल्द झूठ बोलने वाले शख़्स के साथ दुश्मनी का ज़रिया बन जाता है। बेटा, जनाज़े में एहतिमाम से शिर्कत किया करो और तक़रीबात में शिर्कत से गुरेज़ किया करो, इसलिये कि जनाज़ा आख़िरत की याद को ताज़ा करता है और शादियां तक़रीबातें दुनिया की तरफ़ मशग़ूल करती हैं। बेटा, जब पेट भरा हुआ हो, उस वक़्त न खाओ, पेट भरे पर खाने से कुत्ते को डाल देना बेहतर है। बेटा, न तो तुम इतना मीठा बनो कि लोग तुम्हें खा जायें न तुम इतना कड़वा बनो कि लोग तुम्हें थूक दें। बेटा, तुम मुर्ग़ से ज़्यादा आजिज़ न बनो कि वह तो सेहर के वक़्त जाग कर चिल्लाना शुरू कर दे और तुम अपने बिस्तर पर पड़े सोते रहो।

बेटा, तौबा में देर न करो कि मौत का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं, वह दफ़्अतन आ जाती है। बेटा, जाहिल से दोस्ती न करो कि उसकी जहालत की बातें तुम्हें अच्छी मालूम होने लगें और हकीम से दुश्मनी मोल न लो ऐसा न हो कि वह तुम से ऐराज़ करने लगे (और फिर उसकी हिक्मतों से तुम महरूम हो जाओ) बेटा, अपना खाना मुत्तक़ी लोगों के सिवा किसी को न खिलाओ और अपने कामों में उलमा से मश्वरा लिया करो।

किसी ने उनसे पूछा कि बद तरीन शख़्स कौन है? उन्होंने फ़रमाया जो इसकी परवाह न करता हो कि कोई शख़्स उसको बुराई करते हुए देख ले। उनका इर्शाद है कि बेटा नेक लोगों के पास अपनी नशिस्त कसरत से रखा करो कि उनके पास बैठने से नेकी हासिल कर सकोगे और अगर उन पर किसी वक़्त अल्लाह की रहमते ख़ास्सा नाज़िल हुई तो उसमें से तुमको भी कुछ न कुछ ज़रूर मिलेगा (कि जब बारिश उतरती है तो उस मकान के सब हिस्सों में पहुँचती है) और अपने आपको बुरे लोगों की सोहबत से दूर रखो कि उनके पास बैठने से किसी ख़ैर की तो उम्मीद नहीं और उन पर किसी वक़्त अज़ाब हुआ तो उस का असर तुम तक पहुँच जायेगा। उन का इर्शाद है कि बाप की मार औलाद के लिए ऐसी मुफ़ीद है जैसा कि पानी खेती के लिए। उनका इर्शाद है कि बेटा तुम जिस दिन से दुनिया में आए हो हर दिन आख़िरत के करीब होते जा रहे हो (और दुनिया से हर दिन पुश्त फेरते जा रहे हो, पस वह घर जिसकी तरफ़ तुम रोज़ाना चल रहे हो, वह बहुत क़रीब है, उस घर से जिस से हर दिन दूर होते जा रहे हो) बेटा, क़र्ज़ से अपने आप को महफ़ूज़ रखो कि यह दिन की ज़िल्लत और रात का ग़म है (यानी क़र्ज़ख़्वाह के तक़ाज़े से दिन में ज़िल्लत उठानी पड़ती है और रात भर क़र्ज़ के फ़िक्र में गुज़रती है) बेटा, अल्लाह की रहमत की ऐसी उम्मीद रखो जिससे गुनाहों पर जुर्रत न होने पाये और उसके ख़ौफ़ से ऐसा डरो कि उसकी रहमत से ना उम्मीदी न हो जाये। बेटा, जब तुमसे कोई शख़्स आकर किसी की शिकायत करे कि फ़लां ने मेरी दोनों आंखें निकाल दीं और हक़ीक़त में भी उसकी दोनों आंखें निकली हुई हों तो उस वक़्त तक उसके मुताल्लिक़ कोई राय क़ायम न करो जब तक कि दूसरे की बात न सुन लो, क्या ख़बर है कि उसने ख़ुद पहल की हो और उस ने उस से पहले चार आंखें निकाल दी हों।

(दुर्रे मंसूर)

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० ने नक़ल किया है कि जब हज़रत लुक़्मान

अलैहि॰ का इंतिक़ाल होने लगा तो उन्होंने अपने साहब ज़ादे से फ़रमाया कि बेटा मै नें तुमको इस मुद्दते ज़िंदगी में बहुत सी नसीहतें कीं, इस वक़्त (आख़िरी वक़्त है), छह नसीहतें तुमको करता हूँ:-

1. दुनिया में अपने आपको फ़क़त इतना ही मशग़ूल रखना जितनी ज़िंदगी बाक़ी है (और वह आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं)

2. हक़ तआला शानुहू की तरफ़ जितनी तुम्हें एहतियाज है उतनी ही उसकी इबादत करना (और ज़ाहिर है कि आदमी हर चीज़ में उसका मुहताज है)।

3. आख़िरत के लिए उस मिक़्दार के मुवाफ़िक़ तैयारी करना जितनी मिक़्दार वहां क़ियाम का इरादा हो (और जाहिर है कि मरने के बाद तो वहां के अलावा कोई मक़ाम ही नहीं है)।

4. जब तक तुम्हें जहन्नम से ख़लासी का यक़ीन न हो जाये उस वक़्त तक उससे ख़लासी की कोशिश करते रहना (ज़ाहिर है कि जब कोई किसी संगीन मुक़द्दमे में माख़ूज़ हो तो जब तक उसको मुक़द्दमे के खारिज हो जाने का यक़ीन न हो, हर वक़्त कोशिश में लगा रहता है।)

5. गुनाहों पर इतनी जुर्रत करना जितना जहन्नम की आग में जलने का हौसला और हिम्मत हो (कि गुनाहों की सज़ा ज़ाब्ते की चीज़ है और मराहिमे खुसरवाना की ख़बर नहीं।)

6. जब कोई गुनाह करना चाहो तो ऐसी जगह तलाश कर लेना जहां हक़ तआला शानुहू और उसके फ़रिश्ते न देखें (कि ख़ुद हाकिम के सामने, सी.आई.डी. के अमले के सामने बग़ावत का अंजाम मालूम है) *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

ये चंद नसीहतें हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ की तब्अन ज़िक्र कर दी गयीं, मक़्सूद उनकी नसीहतों में से भी वही मज़्मून है जो पहले मैं लिख रहा था कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत रखता है वह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाता है।

अर्फ़जा सक़फ़ी रह॰ कहते हैं कि मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से "सब्बिहिस-म" पढ़ने की दर्ख़्वास्त की, उन्होंने पढ़ना शुरू किया और जब :-

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى

"बल् तुअ्सिरूनल् हयातद्दुन्या वल् आख़िर-तु ख़ैरूंव्व अब्क़ा॰"

पर पहुँचे जिसका तर्जुमा यह है कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को तर्जीह देते हो हालांकि आख़िरत ज़्यादा बेहतर और हमेशा रहने वाली चीज़ है तो हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ ने तिलावत को बंद करके फ़रमाया कि बेशक हमने दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दे दी। सब हाज़िरीन ख़ामोश थे, फिर दोबारा फ़रमाया कि हम ने दुनिया को तर्जीह दे दी इसलिए कि हम ने उसकी ज़ेब व ज़ीनत को देखा, उसकी औरतों को देखा, उस के खाने पीने को देखा और आख़िरत की ये सब चीज़ें हमसे मख़्फ़ी (छूपी हुई) थीं, इसलिए दुनिया को तर्जीह दे बैठे और आख़िरत को छोड़ दिया।

हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि "ला इला-ह इल्लल्ला-हु" का कलिमा अल्लाह की नाराज़ी से बंदों को महफ़ूज़ रखता है जब तक कि दुनिया की तिजारत को आख़िरत की तिजारत पर तर्जीह न दें और जब दुनिया की तिजारत को आख़िरत की तिजारत पर तर्जीह देने लगें फिर "ला इला-ह इल्लल्ला-हु" कहें तो वह कलिमा उन पर यह कह कर लौटा दिया जाता है कि तुम झूठ बोल रहे हो(यानी तुम्हारा इक़रार झूठा है, महज़ (ज़बानी जमा ख़र्च है) एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स "ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू" की गवाही के साथ अल्लाह तआला जल्ल शानुहू से मिलता है, वह (सीधा) जन्नत में दाख़िल होता है, जब तक कि उसके साथ दूसरी चीज़ को ख़लत न कर दे, तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना यह इर्शाद फ़रमाया। मज्मे में से एक शख़्स ने अर्ज़ किया, मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान, दूसरी चीज़ ख़लत करने का क्या मतलब है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, दुनिया की मुहब्बत और उसकी तर्जीह, उसके लिए माल का जमा करना और दुनिया की चीज़ों से खुश होना और मुतकब्बिर लोगों का अमल।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया उस शख़्स का घर है जिसका (आख़िरत में) घर नहीं और दुनिया उस शख़्स का माल है जिसका आख़िरत में माल नहीं और दुनिया के लिए वह शख़्स माल जमा करता है जिसको बिल्कुल अक़्ल नहीं है। *(दुर्रे मंसूर)*

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है दुनिया ख़ुद मलऊन है और जो कुछ इसमें है

वह सब मल्ऊन है, बजुज़ उसके जो हक़ तआला शानुहू के लिए हो।

(जामिउस्सग़ीर)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ मज़म्मते दुनिया की किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि तमाम तारीफ़ें और हम्द उसी पाक ज़ात के लिए हैं जिसने अपने दोस्तों को दुनिया के मुहलिकात और उसकी आफ़ात से वाक़िफ़ कर दिया और दुनिया के उयूब और उसके राज़ों को अपने दोस्तों पर रौशन कर दिया, यहां तक कि इन हज़रात ने दुनिया के अहवाल को पहचान लिया और उसकी भलाई और बुराई का मुवाज़ना करके यह जान लिया कि उस की बुराईयां उसकी भलाई पर ग़ालिब हैं और जो उम्मीदें दुनिया से वाबस्ता हैं वे इन अंदेशा नाक चीज़ों का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं जो इस पर मुरत्तब हैं। दुनिया एक चटपटी औरत की तरह से लोगों को अपने हुस्न व जमाल से गिरफ़्तार करती है और अपनी बद किरदारी से अपने विसाल के ख़्वाहिशमंदों को हलाक करती है। यह अपने चाहने वालों से भागती है और उनकी तरफ़ तवज्जोह करने में बड़ी बख़ील है और अगर मुतवज्जह भी होती है तो उसकी तवज्जोह में भी आफ़त और मुसीबत से अम्न नहीं है। अगर एक दफ़ा एहसान करती है तो एक साल तक बुराईयां करती रहती है जो इसके धोखे में आ जाता है उसका अंजाम ज़िल्लत है और जो इसकी वजह से तकब्बुर करता है वह आख़िर कार हसरत व अफ़सोस की तरफ़ चलता है। इसकी आदत अपने उश्शाक़ से भागना है और जो इससे भागे उसके पीछे पड़ना है, जो इसकी ख़िदमत करे उस से अलाहिदा रहती है और जो इससे ऐराज़ करे उसकी मुलाक़ात की कोशिश करती है। इसकी सफ़ाई में भी तकद्दुर है, इसकी ख़ुशी में भी रंज व ग़म लाज़िम है। इसकी नेमतों का फल हसरत व नदामत के सिवा कुछ नहीं। यह बड़ी धोखा देने वाली मक्कार औरत है बड़ी भगोड़ी और एकदम उड़ जाने वाली है यह अपने चाहने वालों के लिए निहायत ज़ेब व ज़ीनत इख़्तियार कर लेती है और जब वे अच्छी तरह इसमें फंस जाते हैं तो दांत दिखाने लगती है और उनके मुनज़्ज़म अहवाल को परेशान कर देती है और अपनी नैरंगियां उनको दिखाती है, फिर अपना ज़हरे क़ातिल उनको चखाती है। यह अल्लाह तआला की दुश्मन है, उसके दोस्तों की दुश्मन है, उसके दुश्मनों की दुश्मन है, अल्लाह तआला की दुश्मनी इस तरह से कि उसकी तरफ़ चलने वालों की रहज़नी करती है, उसके दोस्तों के साथ दुश्मनी इस तरह करती है कि उनके दिल लुभाने के लिए तरह तरह की ज़ीनतें अपने ऊपर लादती है जिस से

वे इस की तरफ़ मुल्तफ़ित हो कर इस से क़ता-ए-ताल्लुक़ पर सब्र का कड़वा घूँट पीते हैं और अल्लाह तआला के दुश्मनों से दुश्मनी इस तरह करती है कि अपने मक्र व फ़रेब से उनको शिकार करती है और जब वे इस की दोस्ती पर भरोसा करने लगते हैं तो ऐसे वक़्त उनको एकदम अधर में छोड़ देती है जिस वक़्त कि वे इसके सख़्त मुहताज हों जिस से वे दायमी हसरत और दायमी अज़ाब में मुब्तला हो जाते हैं।

क़ुरआन पाक की आयते करीमा और अहादीसे शरीफ़ा में कसरत से इसकी मज़म्मत वारिद हुई है, बल्कि तमाम अंबिया-ए-किराम अला नबिय्यिना व अलैहि॰ की बेअ्सत इसी पर तंबीह के लिए हुई है कि इस से दिल न लगाया जाये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा एक मुर्दा बकरी के पास से गुज़रे, हुज़ूर सल्ल॰ ने सहाबा रज़ि॰ से ख़िताब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि इस मरी हुई बकरी की कोई वक़अत इसके मालिक के यहां होगी। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि इसकी बे वक़अती इसी से मालूम होती है कि इसको फेंक दिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला शानुहू के नज़दीक दुनिया इससे भी ज़्यादा ज़लील और बे वक़अत है जितनी यह मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक है। अगर अल्लाह तआला शानुहू के नज़दीक दुनिया की वक़अत एक मच्छर के पर की बराबर भी होती तो किसी काफ़िर को इसमें से एक घूँट पानी का भी न मिलता। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की असास (जड़) और बुनियाद है।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आपने कुछ पीने को मांगा तो शहद का शर्बत ख़िदमत में पेश किया गया, उसको मुंह के क़रीब फ़रमा कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ रोने लगे और इतना रोये कि पास बैठने वाले भी मुतास्सिर होकर रोने लगे और ख़ूब रोये। इसके बाद फिर दोबारा मुंह के क़रीब किया और फिर रोने लगे। इसके बाद अपनी आंखो के आंसू पोंछे और इर्शाद फ़रमाया कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर था, मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्ल॰ अपने दोनों हाथों से किसी चीज़ को दफ़ा फ़रमा रहे हैं। और कोई चीज़ हुज़ूर सल्ल॰ के सामने मुझे नज़र न आयी तो मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल॰ किस चीज़ को अपने से हटा रहे हैं। हुज़ूर सल्ल॰

ने फ़रमाया कि दुनिया मेरे सामने हाज़िर हुई थी, मैं ने उसको अपने से हटा दिया। इसके बाद फिर दोबारा दुनिया मेरे (यानी हुज़ूर सल्ल॰ के) पास आई और कहने लगी कि अगर आप मुझसे बच गये तो (कुछ क़लक़ नहीं, इसलिए कि) आपके बाद आने वाले मुझसे नहीं बच सकते।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि बहुत ज़्यादा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो इस पर ईमान रखता है कि आख़िरत दायमी और हमेशा रहने वाली है और इसके बाद भी वह इस धोखे के घर दुनिया के लिए कोशिश करता है। एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक कूड़ी पर को गुज़रे जहां कुछ बोसीदा हड्डियां, पाख़ाना और पुराने फटे हुए चीथड़े पड़े हुए थे, हुज़ूर सल्ल॰ वहां खड़े हो गये और इर्शाद फ़रमाया कि आओ लो देखो, यह है दुनिया का मुन्तहा और इसकी सारी ज़ेब व ज़ीनत।

एक और हदीस में इस मुजमल इर्शाद की तफ़्सील भी आई है लेकिन अल्लामा इराक़ी रह॰ वग़ैरह हज़रात मुहद्दिसीन फ़रमाते हैं कि हमें वह रिवायत नहीं मिली कि कहां है, लेकिन इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने उसको नक़ल किया है और साहिबे क़ुव्वत ने उसको हज़रत हसन बसरी रह॰ से मुर्सलन नक़ल किया है, वह यह है :-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुझसे हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें दुनिया की हक़ीक़त दिखाऊं? मैं ने अर्ज़ किया ज़रूर इर्शाद फ़रमायें। हुज़ूर सल्ल॰ मुझे अपने साथ लेकर मदीना, मुनव्वरा से बाहर एक कूड़ी पर तशरीफ़ ले गये, जहां आदमियों की खोपड़ियां, पाख़ाने और फटे हुए चीथड़े और हड्डियां पड़ी हुई थीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, अबू हुरैरह, ये आदमियों की खोपड़ियां हैं ये दिमाग़ इसी तरह दुनिया की हिर्स करते थे, जिस तरह तुम सब ज़िंदा रह कर आज कल कर रहे हो। यह भी इसी तरह उम्मीदें बांधा करते थे जिस तरह तुम लोग उम्मीदें लगाये हो। आज ये बग़ैर खाल के पड़ी हुई हैं और चंद रोज़ गुज़र जाने के बाद मिट्टी हो जायेंगी, ये पाख़ाने वे रंग बिरंग के खाने हैं जिनको बड़ी मेहनत से कमाया, हासिल किया फिर इनको तैयार किया और खाया। अब ये इस हाल में पड़े हैं कि लोग इस से (नफ़रत करके) भागते हैं (वह लज़ीज़ खाना जिसकी ख़ुशबू दूर से लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करती थी, आज उसका मुन्तहा यह है कि उसकी बदबू दूर से लोगों को अपने से मुतनफ़्फ़िर करती है।) यह चीथड़ा वह ज़ीनत का लिबास (था

जिसको पहन कर आदमी अकड़ता था, आज यह इस हाल में) है कि हवायें इसको इधर से उधर फेंकती हैं, ये हड्डियां उन जानवरों की हड्डियां है जिन पर लोग सवारियां किया करते थे (घोड़े पर बैठ कर मटकते थे) और दुनिया में घूमते थे। बस जिसे इन अहवाल पर (और इनके इब्रत नाक अंजाम पर) रोना हो वह इनको देखकर रोये, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम सब बहुत रोये।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया (ज़ाहिर के एतिबार से) मीठी और सर-सब्ज़ है और हक़ तआला शानुहू ने तुमको इसमें अपने असलाफ़ का जानशीन इसलिए बनाया है ताकि वह यह देखे कि तुम इसमें क्या अमल करते हो। बनी इस्राईल पर जब दुनिया की फ़ुतूहात होने लगीं तो वे उसकी ज़ेब व ज़ीनत और औरतों और ज़ेवरों के चक्कर में पड़ गये।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इर्शाद है कि दुनिया को अपना सरदार न बनाओ, वह तुम्हें अपना गुलाम बना लेगी। अपना ख़ज़ाना ऐसी पाक ज़ात के पास महफ़ूज़ कर दो जहां ज़ाया होने का अंदेशा नहीं है। दुनिया के ख़ज़ानों में इज़ाअत[1] का अंदेशा हर वक़्त है और अल्लाह तआला शानुहू के ख़ज़ाने पर कोई आफ़त नहीं है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इर्शाद है कि दुनिया की ख़बासत के आसार में से यह बात भी है कि इसमें अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की जाती है और इसकी ख़बासत की अलामत में से यह भी है कि आख़िरत इसको छोड़े बग़ैर नहीं मिलती। यह बात अच्छी तरह समझ लो कि दुनिया की मुहब्बत, हर ख़ता की जड़ है और थोड़ी देर की ख़्वाहिश बहुत तवील ज़माने के रंज व अज़ाब का ज़रिया बन जाती है। उनका यह भी इर्शाद है कि दुनिया बाज़ों की तालिब होती है, बाज़ों की मतलूब होती है। जो आख़िरत के तालिब हैं, उनकी तो यह ख़ुद तालिब होती है कि झक मार कर उनकी रोज़ी उन को पहुँचाती है और जो इसकी तलब में लग जाते हैं, आख़िरत उनको ख़ुद तलब नहीं करती हत्ताकि मौत आकर उन की गरदन दबा लेती है।

हज़रत सुलैमान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक मर्तबा अपने लशकर के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, परिन्दे उन पर साया किये हुए थे

1. बर्बाद करना।

और जिन्न व इंस दायें बायें थे। एक आबिद पर गुज़रे, उसने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला शानुहू ने बहुत बड़ी सल्तनत आपको अता फ़रमा रखी है कि जिन्न व इन्स, चरिन्द व परिन्द सब पर आपकी हुकूमत है, हज़रत सुलैमान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि मुसलमान के आमाल नामे में एक मर्तबा, सुब्हानल्लाह सुलैमान के सारे मुल्क से ज़्यादा अफ़ज़ल है, इसलिए कि यह सारी सल्तनत बहुत जल्द ख़त्म हो जायेगी और सुब्हानल्लाह का सवाब हमेशा हमेशा बाक़ी रहने वाला है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स का मुन्तहा-ए-मक़्सद दुनिया हो जाये, उसको अल्लाह तआला शानुहू से कोई वास्ता नहीं है और उसको हक़ तआला शानुहू चार चीज़ों में मुब्तला फ़रमा देते हैं।

1. ऐसा ग़म जो कभी भी ख़त्म न हो (कि हर वक़्त आमदनी के बढ़ाने की फ़िक्र में लगा रहेगा),

2. एक ऐसा शुग़ल जिस से किसी वक़्त भी फ़रागत न हो,

3. एक ऐसा फ़क़्र जो कभी भी मुस्तग़्नी न बनाये (कि जितनी आमदनी बढ़ती जाए उतना ही ख़र्च ज़्यादा हो कर आमदनी कम ही मालूम हो),

4. और ऐसी लम्बी लम्बी उम्मीदें, जो कभी भी पूरी न हों।

हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सहीफ़े में है कि ऐ दुनिया, तू किस क़दर ज़लील है, उन नेक बंदों की निगाह में जिनके लिए तू अपने को आरास्ता करती है, मैं ने उनके दिलों में तेरी अदावत डाल दी है और तेरे से एराज़ उनमें पैदा कर दिया है। मैं ने कोई मख़्लूक़ तुझ से ज़्यादा ज़लील पैदा नहीं की, तेरी सारी रफ़्अत निहायत ना चीज़ है और ख़त्म होने वाली है। मैं ने तेरे मुताल्लिक़ तेरी पैदाईश के दिन यह फ़ैसला कर दिया था कि न तू हमेशा किसी के पास रहेगी और न तेरे साथ हमेशा कोई रहेगा, चाहे तेरा मालिक कितना ही तेरे साथ बुख़्ल करे। मुबारक हैं वे नेक बंदे जो दिल से राज़ी ब रज़ा रहने की मुझे इत्तिला देते हैं और अपने ज़मीर से सच्चाई और पुख़्तगी की मुझे ख़बर देते हैं, उनके लिए सर-सब्ज़ी है, जब वे अपनी क़ब्रों से उठ कर मेरे पास आयेंगे तो मेरे पास उनके लिए एक नूर है, जो उस वक़्त उनके सामने होगा और फ़रिश्ते दायीं बायीं जानिब होंगे, हत्ताकि मैं उनकी उन सब उम्मीदों

को पूरा कर दूँगा, जो उन्होंने मेरे साथ बांध रखी हैं।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि बाज़ लोग क़ियामत के दिन इतने ज़्यादा आमाल लेकर आयेंगे जैसा कि मुल्के अरब के पहाड़, लेकिन जहन्नम में डाल दिये जायेंगे। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह सल्ल० क्या ये लोग नमाज़ी होंगे? हुज़ूर ने फ़रमाया नमाज़ी भी होंगे, रोज़ादार भी होंगे, बल्कि तहज्जुद गुज़ार होंगे, लेकिन जब दुनिया की कोई चीज़ (दौलत, इ़ज़्ज़त वग़ैरह) उनके सामने आ जाये तो एक दम उस पर कूद पड़ते हैं (जायज़ ना जायज़ की भी परवाह नहीं करते) हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद है कि दुनिया और आख़िरत की मुहब्बत एक दिल में जमा नहीं हो सकती जैसा कि आग और पानी एक बरतन में जमा नहीं हो सकते। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि दुनिया से बचते रहो, यह हारूत मारूत से भी ज़्यादा जादू करने वाली है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा रज़ि० के पास तशरीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से कौन शख़्स ऐसा है जो यह चाहता हो कि अल्लाह तआला शानुहू उसके (दिल के) अंधेपन को दूर कर दे और उसकी (इबरत की) आंखे खोल दे (जो यह चाहता हो वह ग़ौर से सुन ले कि) जो शख़्स दुनिया में जितनी रग़्बत करता है और जैसी लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधता है, उसी की बक़द्र हक़ तआला शानुहू उसके दिल को अंधा कर देते हैं और जो शख़्स दुनिया से बेरग़्बती करता है, अपनी आरज़ुओं को मुख़्तसर करता है, हक़ तआला शानुहू उस को बग़ैर सीखे इल्म अता फ़रमाते हैं और बग़ैर किसी के दिखाए रास्ता बताते हैं। अंक़रीब ऐसे लोग आने वाले हैं जिनके लिए सल्तनत, क़त्ल और जब्र से क़ायम होगी, बुख़्ल व फ़ख़्र से उनको ग़िना हासिल होगा। ख़्वाहिशात के इत्तिबाअ् से लोगों के दिलों में उनकी मुहब्बत होगी। तुम में से जो शख़्स ऐसे ज़माने को पाए और उस वक़्त फ़क़्र पर सब्र करे, हालांकि वह ग़नी हो सकता है वह लोगों की दुशमनी को बर्दाश्त करे, हालांकि वह (उनकी ख़्वाहिशात के ताबेअ् होकर उनके दिलों में मुहब्बत पैदा कर सकता है,) वह ज़िल्लत पर क़नाअत करे हालांकि वह (लोगों की मुवाफ़क़त करके) इ़ज़्ज़त पा सकता है, लेकिन वह शख़्स इन चीज़ों को सिर्फ़ अल्लाह तआला शानुहू के लिए बर्दाश्त करता है तो उसको पचास सिद्दीक़ीन का सवाब होगा।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बहरैन का बहुत सा माल आया, (अहले ज़रूरत) अंसारी सहाबा रज़ि० ने जब

यह ख़बर सुनी तो कसरत से सुबह की नमाज़ में हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल॰ ने नमाज़ के बाद मज्मे को देखकर तबस्सुम फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि मेरे ख़्याल में इस माल की ख़बर सुनकर तुम आये हो, उन्होंने अर्ज़ किया बेशक या रसूलल्लाह सल्ल॰ इसीलिए हम हाज़िर हुए हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं तुम्हें (कसरते माल की) ख़ुशख़बरी देता हूँ कि अंक़रीब माल बहुत ज़्यादा होने वाला है और जिस चीज़ से तुम ख़ुश होते हो (यानी माल) उसकी उम्मीद रखो कि वह तुम्हारे पास बहुत ज़्यादा आने वाला है। मैं तुम्हारे फ़क़्र व फ़ाक़ा से ख़ाइफ़ नहीं हूँ, लेकिन मुझे इसका डर है कि तुम्हारे ऊपर दुनिया फैल पड़े, जैसा कि तुमसे पहले लोगों पर फैल चुकी है और फिर तुम उसमें दिल लगा बैठो, जिसकी वजह से वह तुमको भी इसी तरह हलाक कर दे जैसा कि तुमसे पहले लोगों को हलाक कर चुकी है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुझे तुम लोगों पर ज़्यादा ख़ौफ़ इस बात का है कि हक़ तआला शानुहू तुम पर ज़मीन की बरकात निकाल दें। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ ज़मीन की बरकता क्या चीज़ें हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि दुनिया की रौनक़।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया कि जो कुछ मुझे मालूम है अगर तुमको मालूम हो जाए तो हंसना कम कर दो और बहुत कसरत से रोने लगो और दुनिया तुम्हारे नज़दीक बहुत ज़लील बन जाए और आख़िरत को इस पर तर्जीह देने लगो। इसके बाद अबूदर्दा रज़ि॰ ने अपनी तरफ़ से फ़रमाया कि जो कुछ मुझे मालूम है अगर तुमको मालूम हो जाए तो तुम जंगलों को रोते हुए और चिल्लाते हुए निकल जाओ और अपने मालों को बग़ैर मुहाफ़िज़ छोड़ जाओ, लेकिन तुम्हारे दिलों से आख़िरत का ज़िक्र ग़ायब है और दुनिया की उम्मीदें तुम्हारे सामने हैं, इसलिए दुनिया तुम्हारे आमाल की मालिक बन रही है और तुम ऐसे बन गये गोया कुछ जानते ही नहीं, इसलिए तुम में से बाज़ तो उन जानवरों से भी बदतर हो गये जो अंजाम के ख़ौफ़ से अपनी शहवतों को नहीं छोड़ते, तुम्हें क्या हो गया कि तुम आपस में मुहब्बतें नहीं रखते, एक दूसरे को नसीहत नहीं करते हालांकि तुम आपस में दीनी भाई हो। तुम्हारी ख़्वाहिशात में सिर्फ़ तुम्हारे बातिनी ख़ुब्स ने तफ़रीक़ कर रखी है, अगर तुम भी सब दीन परवर दीनी उमूर पर मुजतमा हो जाओ तो आपस में ताल्लुक़ात भी ज़्यादा हो जायें। आख़िर तुम्हें यह क्या हो गया कि दुनिया के कामों में तो

एक दूसरे को नसीहत करते हो लेकिन आख़िरत के कामों में एक दूसरे को नसीहत नहीं करते। तुम जिससे मुहब्बत करते हो उसको आख़िरत के उमूर पर नसीहत नहीं कर सकते। यह सिर्फ़ इस वजह से है कि तुम्हारे दिलों में ईमान की कमी है, अगर तुम आख़िरत की भलाई और बुराई पर ऐसा यक़ीन रखते जैसा कि दुनिया की भलाई और बुराई पर यक़ीन रखते हो तो ज़रूर आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह देते, इसलिए कि आख़िरत तुम्हारे कामों की दुनिया से ज़्यादा मालिक है। अगर तुम यह कहो कि दुनिया की ज़रूरत फ़ौरी है, इस वक़्त दरपेश है, आख़िरत की ज़रूरत बाद में होगी तो तुम ख़ुद सोचो कि दुनिया में बाद में आने वाले और हासिल होने वाले कामों के लिए तुम कितनी मशक़्क़त उठाते हो (खेती की मशक़्क़त बर्दाश्त करते हो कि बाद में पैदावार होगी, बाग़ लगाने में कितनी जांफ़शानी करते हो कि कई साल बाद फल आयेगा, वग़ैरह वग़ैरह) तुम किस क़दर बुरी क़ौम हो कि अपने ईमान की जांच उन चीज़ों के साथ नहीं करते। जिससे तुम्हारे ईमान की मिक़्दार तुम्हें मालुम हो जाए कि ईमान किस दर्जे तक तुम में मौजूद है।

अगर तुम लोगों को उस चीज़ में शक है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आये तो आओ, हमारे पास आओ हम तुम्हें वाज़ेह तरीक़े से बतायें और वह नूर दिखायें जिससे तुम्हें इत्मीनान हो जाए कि हुज़ूर सल्ल॰ ने जो फ़रमाया वह हक़ है। तुम कम अक़्ल बेवक़ूफ़ नहीं हो जिसकी वजह से हम तुमको माज़ूर समझ लें। दुनिया के कामों में तो तुम बड़ी अच्छी राय रखते हो और उसमें बड़ी एहतियात पर अमल करते हो (फिर क्या मुसीबत है कि आख़िरत के कामों में न तुम समझ से काम लेते हो, न एहतियात पर अमल करते हो) आख़िर यह क्या बात है, यह तुम्हें क्या हो गया है कि दुनिया के ज़रा से फ़ायदे से बड़ा ख़ुश होते हो, ज़रा से नुक़्सान से रंजीदा हो जाते हो, जिसका असर तुम्हारे चेहरों पर मालूम होने लगता है (कि ख़ुशी में फूल जाता है, रंज में ज़रा सा मुँह निकल आता है) मुसीबतें ज़बान पर आने लगती हैं, ज़रा सी बात को मसाइब कहने लगते हो, मातम की मज्लिसें क़ायम करते हो, लेकिन दीन की बड़ी से बड़ी बात भी छूट जाए तो न उसका रंज व ग़म है न चेहरे पर कोई तग़य्युर है। मैं तुम्हारी बद दीनी की हालत देख कर यह ख़्याल करता हूँ कि हक़ तआला शानुहू ही तुम से बेज़ार हो गये हैं। तुम लोग आपस में एक दूसरे से ख़ुशी ख़ुशी मिलते हो और हर एक यह चाहता है कि दूसरे के सामने

कोई ऐसी (हक्) बात न कहे जो उसको नागवार हो ताकि वह भी उसके मुताल्लिक् कोई नापसंदीदा बात न कह दे। पस दिलों के अंदर ही अंदर ऐसी बातें रखते हुए एक दूसरे के साथ रहते हो और बातिन की गंदगियों पर तुम्हारे ज़ाहिर के चमन खिल रहे हैं और मौत की याद के छोड़ देने पर सब जमा हो गये हो, काश! हक् तआला शानुहू मुझे मौत देकर तुम लोगों से राहत अता करता और मुझे इन हज़रात (यानी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ि०) के साथ मिला देते जिनके देखने का मैं मुश्ताक् हूँ। अगर ये हज़रात ज़िंदा होते तो तुम्हारे साथ रहना ज़रा भी पसंद न करते, पस अगर तुम में कोई शिम्मा ख़ैर का बाक़ी है तो मैं तुम्हें साफ़ साफ़ कह चुका हूँ और हक् की बात सुना चुका हूँ, अगर तुम उस चीज़ को (यानी आख़िरत को) जो अल्लाह तआला के पास है, तलब करना चाहो तो वह बहुत आसान है और मैं सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ तुम्हारे हक् में भी और अपने हक् में भी (फ़क्त, हज़रत अबूदर्दा रज़ि० का इर्शाद ख़त्म हो गया)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० की यह डांट बड़े ग़ौर से पढ़ने की है, यह उन हज़रात पर ख़फ़ा हो रहे हैं जिनके मुताल्लिक् हम यह समझते हैं कि हम उन जैसे दीनदार बन भी नहीं सकते, उनके अहवाल, उनके कारनामे हमारे सामने हैं, अगर यह हज़रत अबूदर्दा रज़ि० हम लोगों को देखते तो यक़ीनन रंज से हलाक हो जाते। यक़ीनन ये हज़रात हमारे अहवाल को देख भी न सकते, उनका किसी तरह तहम्मुल न कर सकते।

हज़रत हसन बसरी रह० का इर्शाद है कि हक् तआला शानुहू उन लोगों पर रहम करे जिनके पास दुनिया अमानत थी, वे इस अमानत को दूसरों के हवाले कर गये और ख़ुद बेफ़िक्र चल दिये। आपका यह इर्शाद भी है कि जो शख़्स दीन के बारे में तेरी मुज़ाहमत करे, उस से मुज़ाहमत कर और जो दुनिया के बारे में तेरी मुज़ाहमत करे, इस दुनिया को उसके मुँह पर मार और बेफ़िक्र हो जा। हज़रत अबू हाज़िम रह० का इर्शाद है कि दुनिया से बचते रहो, क़ियामत के दिन आदमी को मैदाने हश्र में खड़ा करके कहा जायेगा, यह वह शख़्स है जिस ने ऐसी चीज़ को बड़ा समझा, जिसको अल्लाह तआला शानुहू ने हक़ीर बताया था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० का इर्शाद है कि हर शख़्स अपने घर में चंद रोज़ा मेहमान है और उसका माल व मताअ् मांगी हुई चीज़ है मेहमान को बहरहाल चंद दिन में अपने घर (यानी आख़िरत) को चला जाना है

और मांगी हुई चीज़ बहरहाल वापस होने वाली है।

हज़रत राबिआ बसरियः रह० एक मज्मे में तशरीफ़ रखती थीं, लोग कुछ दुनिया की बुराई कर रहे थे, वह कहने लगीं कि उसका ज़िक्र बुराई से भी न करो, उसके ज़िक्र करने से यह मालूम होता है कि उसकी तुम्हारे दिलों में वक़्अत है, अगर यह न होती तो उसका बार बार ज़िक्र भी ज़बान पर न आता (पाख़ानों की गंदगी और बुराई का बार बार कौन ज़िक्र करता है।)

हज़रत लुक़्मान अलैहि० की अपने बेटे को वसीयत है कि अपनी दुनिया को दीन के बदले में बेच दो, दोनों जहान में नफ़ा मिलेगा और दीन को दुनिया के बदले में न बेचो, दोनों जहान में ख़सारा रहेगा। हज़रत मुतरिफ़ बिन शख़ीर रह० का इर्शाद है कि बादशाहों के ऐश व इशरत और उनके उम्दा लिबास पर नज़र न करो बल्कि यह सोचो कि उनका अंजाम क्या होगा। हज़रत अबू अमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ्सत हुई तो शैतान ने अपने लशकरों को हालात की तहक़ीक़ के लिए भेजा, उन्होंने बताया कि एक नबी की बेअ्सत हुई है और उनकी बहुत बड़ी उम्मत है तो उसने तहक़ीक़ किया कि इन लोगों में दुनिया की मुहब्बत भी है? उन्होंने कहा कि हां हां है। शैतान ने कहा कि फिर मुझे इसका रंज नहीं कि वह बुत परस्ती न करें, मैं तीन चीज़ें उन पर मुसल्लत कर दूंगा।

1. ना-जायज़ तरीक़े से कमाना,
2. ना-जायज़ तरीक़े पर ख़र्च करना और,
3. जहां ख़र्च का वाक़ई महल हो, उसमें ख़र्च न करना।

हज़रत अली रज़ि० का इर्शाद है कि दुनिया के हलाल माल का हिसाब है और उसके हराम में अज़ाब है।

हज़रत मालिक बिन दीनार रह० का इर्शाद है कि इस जादूगर से बचते रहो यह उलमा के दिलों पर भी जादू कर देती है। हज़रत अबू सुलैमान दारानी रह० फ़रमाते हैं कि जिस दिल में आख़िरत होती है, दुनिया उस से झगड़ा करती रहती है और उस दिल पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश करती रहती है और जिस दिल में दुनिया होती है आख़िरत उस से मुज़ाहमत नहीं करती, इसलिए कि आख़िरत करीम है, वह दूसरे के घर पर क़ब्ज़ा करना नहीं चाहती और दुनिया कमीनी है, वह हर एक के घर पर ज़बर्दस्ती क़ब्ज़ा करना चाहती है।

मालिक बिन दीनार रह० कहते हैं कि तू जिस क़दर दुनिया का ग़म करेगा उतना ही आख़िरत का ग़म तेरे दिल से निकल जायेगा और जितना तू आख़िरत का ग़म करेगा उतना ही दुनिया का ग़म तेरे दिल से निकल जायेगा।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने ऐसे आदमियों को पाया है जिनके नज़दीक दुनिया उस मिट्टी से ज़्यादा ज़लील थी जिस पर तुम चलते हो, उनको इसकी परवाह नहीं थी कि दुनिया है या जाती रही, इसके पास चली गयी या उसके पास चली गयी।

एक आदमी ने हज़रत हसन बसरी रह० से दर्याफ़्त किया कि आप उस शख़्स के मुताल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं जिसको हक़ तआला शानुहू ने माल व दौलत अता किया हो, वह उसमें से सदक़ात भी करता है, सिला-रहमी भी करता है, क्या उसके लिए यह मौज़ूं और मुनासिब है कि ख़ुद भी अच्छे अच्छे खाने खाये और नेमतों में ज़िन्दगी गुज़ारे। उन्होंने फ़रमाया, नहीं, अगर सारी दुनिया भी उसको मिल जाये तो उसको अपने ऊपर बक़द्रे ज़रूरत ही ख़र्च करना चाहिए और इससे ज़्यादा को उस दिन (यानी आख़िरत के दिन) के लिए भेज देना चाहिए जो दिन उसकी सख़्त एहतियाज का दिन होगा।

हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि० का इर्शाद है कि अगर दुनिया सारी की सारी मुझे मिल जाये और मुझ से उसका हिसाब भी न लिया जाये तब भी मैं उस से ऐसी घिन और कराहत करूँ जैसी कि तुम लोग मुर्दार जानवर से करते हो कि कहीं कपड़े को न लग जाये।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल को हक़ तआला शानुहू की बंदगी करने के बावजूद सिर्फ़ दुनिया की मुहब्बत ने बुत परसती तक पहुँचा दिया था इनका यह भी इर्शाद है कि आदमी अपने माल को तो हमेशा कम समझता है मगर अपने अमल को कभी कम नहीं समझता, दीन में कोई मुसीबत आ जाए तो खुश रहता है, दुनिया में कोई मुसीबत पेश आ जाए तो घबरा जाता है।

हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि० का इर्शाद है कि दुनिया में दाख़िल होना तो बहुत आसान है लेकिन इस से निकलना बहुत मुश्किल है। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं, ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको मौत का यक़ीन हो कि वह बहर हाल आने वाली है, न मालूम कब आ जाए, फिर भी किसी बात से क्यों कर ख़ुश होता

है? ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको इसका यक़ीन है कि जहन्नम हक़ है (और अपना हश्र नहीं मालूम) फिर किस तरह वह किसी बात पर हंसता है? ताज्जुब है उस शख़्स पर जो दुनिया के हर वक़्त के इन्क़िलाबात को देखता है फिर कैसे दुनिया की किसी बात पर मुतमइन होता है? ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको यक़ीन है कि तक़्दीर बरहक़ है (जो कुछ मुक़द्दर में है, वह मिल कर रहेगा), फिर क्यों मुसीबतें उठाता है?

हज़रत अमीर मुआविय: रज़ि॰ के पास शहर नजरान के एक बुज़ुर्ग आए, जिनकी उम्र दो सौ बरस थी, अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने उनसे पूछा, दुनिया को तुम ने बहुत देखा, कैसा पाया? कहने लगे, चंद एक साल राहत के, चंद एक साल तक्लीफ़ के हर दिन रात में कोई न कोई पैदा होता है, कोई न कोई मर जाता है। अगर पैदा होना बंद हो जाये तो दुनिया एक दिन ख़त्म हो जाए (कि मरने का सिलसिला भी है) अगर मरना बंद हो जाये तो दुनिया में रहने की जगह भी न मिले (इसलिए कि मोतदिल निज़ाम यही है कि पैदा भी होते रहें, मरते भी रहें।) हज़रत मुआविय: रज़ि॰ ने फ़रमाया मुझसे कोई चीज़ मतलूब हो, मेरे क़ाबिल कोई ख़िदमत हो तो बताओ, मैं उसको पूरा कर दूँ, वह कहने लगे कि जो उम्र मेरी ख़त्म हो चुकी है, वह मुझे वापस मिल जाये या आइंदा मौत न आये। अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने कहा, यह तो मैं नहीं कर सकता। कहने लगे कि फिर मुझे आप से कुछ मांगना भी नहीं है।

अबू सुलैमान रह॰ फ़रमाते हैं कि दुनिया की शहवतों से वही शख़्स सब्र कर सकता है जिसके दिल में आख़िरत की चीज़ों के साथ कोई मशग़ूली हो।

मालिक बिन दीनार रह॰ कहते हैं कि हम सबने दुनिया के साथ मुहब्बत कर लेने पर सुलह कर ली है, जिसकी वजह से कोई शख़्स किसी को न अच्छी बातों का हुक्म करता है, न बुरी बातों से रोकता है। हक़ तआला शानुहू इस हाल पर हमें हमेशा छोड़े रखे, यह हरगिज़ नहीं हो सकता, न मालूम किस वक़्त क्या अज़ाब हम पर नाज़िल हो जाये।

हज़रत हसन रज़ि॰ का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू जिस बंदे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, उसको थोड़ी सी दुनिया मरहमत फ़रमा कर रोक लेते हैं। जब हव माल उसके पास ख़त्म हो जाता है तो फिर थोड़ा सा और दे देते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआला के नज़दीक ज़लील होता है उस पर

दुनिया को फैला देते हैं।

एक बुज़ुर्ग के दुआ के अल्फ़ाज़ हैं, ऐ वो पाक ज़ात, जो इस पर क़ादिर है कि आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोक दे, दुनिया को मेरे पास आने से रोक दे।

मुहम्मद बिन मुंकदिर रह॰ कहते हैं कि अगर कोई शख़्स हमेशा रोज़े रखे, कभी इफ़्तार न करे, रात भर तहज्जुद पढ़े, बिल्कुल न सोये, अपने माल को खूब ख़ैरात करता हो, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता हो और गुनाहों से बचता हो लेकिन क़ियामत के दिन उस को खड़ा करके यह मुतालबा किया जायेगा कि उसकी निगाह में वह चीज़ वक़ीअ् (वक़्अत वाली) थी जिसको अल्लाह तआला ने ज़लील बताया (यानी दुनिया) और वह चीज़ ग़ैर-वक़ीअ् थी, जिसको अल्लाह तआला ने वक़ीअ् बताया (यानी आख़िरत) तुम ही बताओ कि उस पर क्या गुज़रेगी? फिर हम लोगों का क्या हाल होगा जो इस मर्ज़ में यानी दुनिया की वक़्अत में मुब्तला हैं। और इसके साथ साथ गुनाहों में भी मुब्तला हैं।

अब्दुल्लाह बिन मालिक रह॰ फ़रमाते हैं कि दुनिया की मुहब्बत ने और गुनाहों ने दिलों को वहशी बना रखा है इसलिए ख़ैर की बात दिलों तक पहुँचती ही नहीं, यानी असर नहीं करती।

वहब बिन मुनब्बह रह॰ कहते हैं कि जो शख़्स दुनिया की किसी चीज़ से खुश होता है वह हिकमत के ख़िलाफ़ करता है और जो शख़्स शहवतों को अपने क़दम के नीचे दबा लेता है कि उनको सर भी नहीं उठाने देता, शैतान ऐसे शख़्स के साए से डरता है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह॰ ने अपने एक दीनी भाई को नसीहत फ़रमाई कि दुनिया ऐसा कीचड़ है, जिसमें पांव फिसल जाते हैं (लिहाज़ा बच बच कर क़दम रखना चाहिए और पांव की लग़्ज़िश से हर वक़्त डरते रहना चाहिए) दुनिया ज़िल्लत का घर है, इसकी आबादी का मुन्तहा बर्बादी है, इसमें रहने वालों को तंहा क़ब्रों तक जाना है, इसका इज्तिमा इफ़्तिराक़ पर मौक़ूफ़ है, इसकी वुस्अत फ़क़्र की तरफ़ लौटा दी गयी। इस की कसरत मशक़्क़त में पड़ना और इसकी तंगी सहूलत में पहुँचना है, पस हमातन अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह रहो और अल्लाह जल्ल शानुहू ने जितना रिज़्क़ अता फ़रमा दिया, उस

पर राज़ी रहो। अपनी आख़िरत में से दुनिया के लिए क़र्ज़ न लो (यानी ऐसी चीज़ें इख़्तियार न करो जिनका बदला आख़िरत में अदा करना पड़ जाये और वहां ज़रूरत के मौक़े पर कमी पड़ जाये।) इसलिए कि यहां की ज़िन्दगी ब मंज़िला एक साया के है, जो अंक़रीब ख़त्म होने वाली है और बमंज़िला एक दीवार के है जो झुक गयी है, अंक़रीब गिरने वाली है। नेक अमल कसरत से करते रहो और उम्मीदें बहुत कम बांधो।

हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह० ने एक शख़्स से दर्याफ़्त किया कि तुम्हें अगर ख़्वाब में कोई शख़्स एक दिरहम (साढ़े तीन आने) दे वह तुम्हें ज़्यादा पसंद है या कोई शख़्स तुम्हें जागने की हालत में एक दीनार (अशर्फ़ी) दे वह ज़्यादा पसंद है, उसने अर्ज़ किया कि (यह एक खुली हुई बात है) जागते हुए दीनार ज़्यादा महबूब है। हज़रत इब्राहीम रह० ने फ़रमाया कि तुम झूठ बोलते हो इसलिए कि जिस चीज़ को तुम दुनिया में महबूब रखते हो, उसको तुम गोया ख़्वाब में पसंद कर रहे हो और जिस चीज़ को आख़िरत की, पसंद नहीं कर रहे हो उससे गोया जागने में ऐराज़ कर रहे हो।

यहया बिन मुआज़ रज़ि० कहते हैं कि तीन आदमी अक़्लमंद हैं :-

1. एक वह शख़्स जो दुनिया को इससे पहले छोड़ दे कि दुनिया उसको छोड़े।

2. दूसरा वह शख़्स जो अपनी क़ब्र की तैयारी इस से पहले कर ले कि उसमें दाख़िल होने का वक़्त आ जाये।

3. तीसरा वह शख़्स जो अपने मौला को इस से पहले राज़ी कर ले कि उस से मुलाक़ात करे।

इनका यह भी इर्शाद है कि दुनिया की बदबख़्ती इस दरजे को पहुँच गयी है कि इसकी तमन्ना तुझे हक़ तआला शानुहू की इताअत से अपने अंदर मशग़ूल कर देती है। जब उसकी तमन्ना का यह हाल है तो अगर दुनिया में फंस जायेगा तो क्या हाल होगा।

बक्र बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जो शख़्स दुनिया को हासिल करके उस से बेफ़िक्र होना चाहता है, वह ऐसा है जैसा कोई शख़्स आग को बुझाने के लिए उस पर ख़ुश्क घास डाले।

बिन्दार रह० कहते हैं कि जब दुनियादार ज़ुहद की बातें करते हैं तो

समझ लें कि शैतान उनके साथ मज़ाक़ कर रहा है। एक बुज़ुर्ग का इर्शाद है कि लोगो, फ़ुर्सत के इन अय्याम में नेक अमल कर लो और हक़ तआला शानुहू से डरते रहो और लम्बी लम्बी उम्मीदों से और मौत को भूल जाने से धोखे में न पड़ो और दुनिया की तरफ़ ज़रा भी मुतवज्जह न हो, यह कमबख़्त बड़ी बेवफ़ा है, बड़ी धोखेबाज़ है, अपने धोखे से तुम्हारे लिए बनती संवरती है और अपनी आरज़ुओं के साथ तुमको फ़ित्ने में डालती है, वह अपने ख़ाविन्दों के लिए ज़ीनत इख़्तियार करती है और बिल्कुल नई दुल्हन की तरह से बन जाती है जैसा कि वह शादी के दिन होती है कि आंखें उसकी तरफ़ लग जाती हैं और दिल उस पर जम जाते हैं और आदमी उसके आशिक़ बन जाते हैं लेकिन इस कमबख़्त ने अपने कितने आशिक़ों को क़त्ल कर डाला और कितने आदमियों को जो इस पर इत्मीनान किए हुए बैठे थे, बे यार व मदद गार छोड़ दिया। इसको हक़ीक़त की निगाह से ग़ौर से देखो, यह ऐसा घर है जिसमें मुहलिकात बहुत ज़्यादा हैं और ख़ुद इसके पैदा करने वाले ने इस की बुराई बताई है (एक हकीम कोई दवाई तैयार करता है और वह ख़ुद कहता है कि इसमें ज़हर है सिर्फ़ एक रत्ती इसकी इहतियाज के वक़्त इस्तेमाल की जा सकती है। अगर कोई बेवक़ूफ़, एक तोला, दो तोला उसमें से खा लेगा तो लामुहाला मरेगा और बनाने वाले हकीम के ख़बर कर देने के बाद ऐसा करना हिमाक़त की इंतिहा है।) इसकी हर नयी चीज़ पुरानी हो जायेगी, इसका मुल्क ख़ुद ही फ़ना हो जायेगा, इसका अज़ीज़ आख़िर कार ज़लील होगा। इसकी कसरत बिल आख़िर क़िल्लत की तरफ़ पहुँचती है, इसकी दोस्ती फ़ना होने वाली है, इसकी भलाई ख़त्म होने वाली है। तुम लोगों पर अल्लाह तआला शानुहू रहम करे, अपनी ग़फ़लत से होशियार हो जाओ, अपनी नींद से जाग जाओ, इस से पहले पहले कि यह शोर हो जाये कि फ़लां शख़्स बीमार हो गया है, मायूसी की हालत है, कोई अच्छा हकीम बताओ। किसी अच्छे डाक्टर को लाओ, फिर तुम्हारे लिए हकीम और डाक्टर बार बार बुलाये जायें और ज़िन्दगी की कोई उम्मीद न दिलाये, फिर यह आवाज़ आने लगे कि उसने वसिय्यतें शुरू कर दीं। ऐ लोगो, उसकी तो ज़बान भी भारी हो गयी, अब तो आवाज़ भी अच्छी तरह नहीं निकलती, अब तो वह किसी को पहचानता भी नहीं, लम्बे लम्बे सांस भी आने लगे, कराह भी बढ़ गयी, पलकें भी झुकने लगीं। उस वक़्त तुझे आख़िरत के अहवाल महसूस होने लगेंगे लेकिन ज़बान तुतला गयी। अब कोई बात कह भी नहीं सकता, भाई बंद रिश्तेदार खड़े रो रहे

हैं। कहीं बेटा सामने आता है, भाई सामने आता है, बीवी सामने आती है, मगर ज़बान कुछ नहीं बोलती, इतने में बदन के अज्ज़ा (अंगों) से रूह निकलना शुरू हो जाती है और आख़िर वह तो निकल कर आसमान पर चली जाती है, अज़ीज़ अक़ारिब जल्दी जल्दी दफ़्नाने की तैयारी शुरू कर देते हैं, इयादत करने वाले रो धोकर चुप हो जाते हैं, दुश्मन ख़ुशियां मनाते हैं, अज़ीज़ रिश्तेदार माल बांटने में लग जाते हैं और मरने वाला अपने आमाल में फंस जाता है (यह हक़ीक़त है इस ज़िन्दगी की)

हज़रत हसन बसरी रह० ने हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० को एक बार ख़त लिखा, जिसमें हम्द व सलात के बाद तहरीर फ़रमाया कि दुनिया कूच का घर है, यह रहने का घर नहीं है। हज़रत आदम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इसमें सज़ा के तौर पर भेजा गया था कि जन्नत में उनसे एक लग़्ज़िश हो गयी थी (तो बतौर जेलख़ाने के यहां भेजा गया था) इसलिए इस से डरते रहें, इसका तोशा इसको छोड़ देना है, इसका ग़िना इसका फ़क्र है (यानी इसमें ग़नी वही शख़्स है जो ज़ाहिर में फ़क़ीर है) यह हर वक़्त किसी न किसी को हलाक करती रहती है, जो इसको अज़ीज़ समझे, उसको यह ज़लील करती है, जो इसको जमा करने का इरादा करे उसको यह (दूसरों का) मुहताज बनाती है यह एक ज़हर है जिसको अंजान लोग खाते हैं फिर वे मर जाते हैं। इसमें ऐसी तरह ज़िन्दगी गुज़ार दें जैसा कि ज़ख़्मी बीमार हर चीज़ से एहतियात करता है ताकि सेहत नसीब हो जाये और कड़वी दवा इसलिए इस्तेमाल करता है ताकि मर्ज़ तूल न पकड़े। आप इस मक्कार, दग़ाबाज़, फ़रेबी से एहतियात रखें जो महज़ धोखा देने की वजह से बनती संवरती है और धोखे से लोगों को मुसीबत में फंसाती है और अपनी उम्मीदों के साथ लोगों के यहां आती है और अपनी मंगनी करने वालों को आज कल पर टालती रहती है, पस यह उनके लिए ऐसी बनी ठनी नई दुल्हन बन जाती है कि आंखें इस पर टकटकी लगा लेती हैं और दिल इसके फ़रेफ़्ता हो जाते हैं और आदमी इसके जांनिसार बन जाते हैं, लेकिन यह कमबख़्त सबके साथ दुश्मनी करती है। हैरत है कि न तो रहने वाले जाने वालों से इब्रत पकड़ते हैं न बाद में आने वाले पहलों का हाल सुन कर इससे एहतिराज़ करते हैं और न अल्लाह तआला के इर्शादात को जानने वाले उसके इर्शादात से नसीहत पकड़ते हैं, और इसके आशिक़ अपनी हाजत पूरी होती देख कर धोखे में पड़ जाते हैं और सरकशी में मुब्तला होकर

आख़िरत को भूल जाते हैं, हत्ताकि उनका दिल इसमें मशग़ूल हो जाता है और क़दम आख़िरत के रास्ते से फिसल जाता है, फिर नदामत और हसरत के सिवा कुछ नहीं होता कि मौत की और नज़अ् का कर्ब और बेचैनी उनको घेर लेती है और इस सबके छूट जाने की हसरतें उस पर मुसल्लत हो जाती हैं, रग़्बत करने वाला अपने मक़ासिद को कभी भी पूरा नहीं कर सकता और मशक़्क़त से कभी भी राहत नहीं पाता, यहां तक कि बग़ैर तोशा लिए इस आलम से चला जाता है और बग़ैर तैयारी के पहुँच जाता है। अमीरूल मोमिनीन इस से बहुत बचते रहें और इससे निहायत ख़ुशी के औक़ात में भी बहुत ज़्यादा डरते रहें। इस पर एतिमाद करने वाला जब भी कुछ ख़ुश होता है तो यह किसी न किसी मुसीबत में उसको मुब्तला कर देती है। इसमें ख़ुश रहने वाला धोखे में पड़ा हुआ है और इसमें (ज़रूरत से ज़्यादा) नफ़ा उठाने वाला नुक़्सान में पड़ा हुआ है। इसकी राहत तक्लीफ़ों के साथ वाबस्ता है और इसमें रहने का मुन्तहा फ़ना है, इसकी ख़ुशी रंज के साथ मख़्लूत है, जो कुछ गुज़र चुका है, वह वापस आने वाला नहीं है और जो जाने वाला है उसका हाल मालूम नहीं कि क्या हो? इसकी आरज़ुएं झूठी, इसकी उम्मीदें सब बातिल, इसकी सफ़ाई में गदलापन है, इसके ऐश में मशक़्क़त है और आदमी इसमें हर वक़्त ख़तरे की हालत में है। अगर उसको अक़्ल हो और वह ग़ौर करे तो इसकी नेमतें ख़तरनाक हैं, और इसकी बलाओं का हर वक़्त ख़ौफ़ है। अगर हक़ तआला शानुहू जो इसके ख़ालिक़ हैं, वह इसकी बुराईयों की इत्तिला न फ़रमाते, तब भी इस मक्कार की अपनी हालत ही सोतों को जगाने के वास्ते और ग़ाफ़िलों को होशियार करने के वास्ते काफ़ी थी। चे जाये कि हक़ तआला शानुहू ने ख़ुद इस पर तंबीह फ़रमाई और इसके बारे में नसीहतें फ़रमाईं कि अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इसकी कोई क़द्र नहीं और इसको पैदा फ़रमा कर कभी भी इसकी तरफ़ नज़रे इल्तिफ़ात नहीं फ़रमाई। यह अपने सारे ख़ज़ानों के साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। हुज़ूर सल्ल० ने इसको क़ुबूल नहीं फ़रमाया, मुंह नहीं लगाया, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० ने हक़ तआला की मंशा के ख़िलाफ़ को पसंद नहीं किया और जिस चीज़ से उसके ख़ालिक़ ने बुग़्ज़ रखा, उस से आप ने मुहब्बत नहीं की और जिस चीज़ की अल्लाह ने क़ीमत गिरा दी, आप सल्ल० ने उसको पसंद करके उसका दरजा बुलंद नहीं किया। इसलिए हक़ तआला शानुहू ने अपने नेक बंदों से उसको क़सदन हटा दिया और अपने दुश्मनों

पर इसकी वुस्अत कर दी। बाज़ धोखे में पड़े हुए लोग जो इसको वक़्अत से देखते हैं, वे इसकी वुस्अत को देख कर यह समझने लगते हैं, कि अल्लाह तआला शानुहू ने उन पर इक्राम किया और वे इस बात को भूल जाते हैं कि (सैय्यिदुर्रूसुल् फ़ख़्रूल् अव्वलीन वल आख़िरीन) सैय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अल्लाह तआला शानुहू ने इस बारे में क्या मामला रखा कि पेट पर पत्थर बांधने पड़े।

एक हदीस में अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद हज़रत मूसा अलैहि॰ से है कि जब तुम वुस्अत को आते देखो तो समझो कि किसी गुनाह की सज़ा में यह आ रही है और जब फ़क्र व फ़ाक़ों को आता देखो तो कहो कि सालिहीन का शिआर आ रहा है और अगर कोई हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहि॰ का इत्तिबाअ् करना चाहता है तो उनका इर्शाद यह है कि मेरा सालन भूख है (भूख में फ़क़त रोटी भी ऐसी लज़ीज़ मालूम होती है जैसी सालन से) और मेरा शिआर अल्लाह तआला शानुहू का ख़ौफ़ है और मेरा लिबास सूफ़ है (भेड़ बकरी के बाल) और मेरा सर्दी में सेकना धूप है और मेरा चिराग़ चांद की रोशनी है और मेरी सवारी मेरे पांव हैं और मेरा खाना और मेवे ज़मीन की घास है, मैं सुबह इस हाल में करता हूँ कि मेरे पास कुछ नहीं होता, और शाम इस हाल में करता हूँ कि मेरे पास कुछ नहीं होता, और सारी दुनिया में मुझसे ज़्यादा ग़नी (बे-परवाह, जो किसी का मुहताज न हो) कोई भी नहीं है।

इस क़िस्म के इर्शादात इन हज़राते किराम अंबिया अलैहि॰ और सहाबा-ए-किराम और औलिया-ए-अिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मअीन के बहुत कसरत से किताबों में मौजूद हैं। यहां ग़ौर से एक बात समझ लेना चाहिए, वह यह है कि असल ज़िन्दगी और महमूद व मर्ग़ूब ज़िन्दगी यही है जो इन हज़रात के इर्शादात और हालात से मालूम होती है, लेकिन इसके साथ ही अपने आज़ा और अपने क़ुवा के तहम्मुल की रिआयत भी ज़रूरी है। जहां तक अपने क़ुवा तहम्मुल करें, वहां तक इत्तिबाअ् की सअी (कोशिश) होना चाहिए और जहां अपना ज़ोअफ़ मुतहम्मिल न हो, वहां मजबूरन अपने ज़ोअफ़ (कमज़ोरी) की रिआयत ज़रूरी है। इन अहवाल के नक़्ल से मक़्सद यह है कि कम अज़ कम इतना ज़ेहन नशीन हो जाए कि दुनिया की असल ज़िन्दगी यह है और इस से ज़ायद जहां तक हम अपने अमराज़ और आज़ार (उज़्रों) से मजबूर हैं। वहां मजबूरी के दरजे में अपने ज़ोअफ़ और उज़्रों की रिआयत ज़रूरी है। इसके

मिसाल बीमार का रोज़ा खोलना है कि असल तो यही है कि माहे मुबारक में रोज़ा रखा जाए लेकिन अगर कोई बीमारी की वजह से रोज़ा नहीं रख सकता या तबीब (डाक्टर) रोज़ा को सेहत के लिए मुज़िर बताता है तो मजबूरन रोज़ा खोलना पड़ेगा। मगर यह ज़ाहिर है कि असल माहे मुबारक में रोज़ा ही था, वही असल मक़्सद है, वही मर्ग़ूब है, मगर बीमार ग़रीब मजबूर है कि नहीं रख सकता, अलबत्ता उसकी रग़्बत, उसकी सअी हर सच्चा मुसलमान करता है। इसी तरह हम लोग अपनी हिम्मतों और क़ुवा के ज़ोअफ़ की वजह से इस तर्ज़े ज़िन्दगी के मुतहम्मिल नहीं हैं। इसलिए बदरजा-ए-मजबूरी जिस क़दर हाजत है उसी क़दर दुनिया से तलब्बुस ज़रूरी है, मगर अपने ज़ोअफ़ की मजबूरी का एहसास भी रहे और असल ज़िन्दगी दिल से उसी को समझता रहे जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दीगर अंबिया-ए-किराम और उन औलिया-ए-अिज़ाम की थी जिनमें से चंद के अक़्वाल गुज़रे और इसके साथ ही साथ दुनिया का बे-हक़ीक़त होना उस का दिल न लगाने के क़ाबिल होना, उसका फ़ानी और महज़ धोखा होना, ये उमूर ऐसे ज़रूरी हैं कि अपने ज़ोअफ़ और मजबूरी की हालत में भी दिल में जितने ज़्यादा से ज़्यादा जमाए जा सकते हों, उनको जामए। ज़बान से नहीं दिल से दुनिया को हक़ीक़तन ऐसा ही समझे, इसके समझने में कोई चीज़ मानेअ् (रूकावट) नहीं, हमारे पास कोई उज़्र ऐसा नहीं जो किसी दर्जे में भी इस बदबख़्त को दिलों में वक़ीअ् (क़दर के क़ाबिल) बना दे।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि दुनिया बहुत जल्द फ़ना हो जाने वाली है, जल्दी ही ख़त्म होने वाली है यह अपने बाक़ी रहने के वायदे तो करती है, मगर इन वायदों को पूरा नहीं करती, तू जब इसको देखे तो यह तुझे एक जगह ठहरी हुई मालूम होगी लेकिन वाक़िए में यह बहुत सुरअत (तेज़ी) से चल रही है, मगर देखने वालों को इसकी हरकत महसूस नहीं होती, उसको जब ही पता चलता है जब यह ख़त्म हो जाती है। इसकी मिसाल साए की सी है कि वह हर वक़्त चलता रहता है लेकिन उसकी हरकत मालूम नहीं होती।

हज़रत हसन बसरी रह० के सामने एक मर्तबा दुनिया का ज़िक्र आया तो उन्होंने फ़रमाया:-

احلام نوم او کظل زائل   ان اللبیب بمثلها لایخدع

"अह्लामु नौमिन् औ क-ज़िल्लिन् ज़ाइलिन्
इन्नल्लबी-ब बिमिस्लिहा ला यख़्द-अु"

'इसकी मिसाल सोने वाले के ख़्वाब की है या चलने वाले साए की है। अक़्लमंद आदमी को इस जैसी चीज़ के साथ धोखा नहीं दिया जा सकता। हज़रत इमाम हसन रज़ि॰ अक्सर यह शेर पढ़ा करते थे':-

يا اهل للذات دنيا لا بقاء لها   ان اغترارا بظل زائل حمق

"या अह्-ल लज़्ज़ाति दुन्या ला बक़ा-अ लहा
इन्नग़्तिरारन् बिज़िल्लिन् ज़ाइलिन हुमुक़ुन्"

'ऐ दुनिया की लज़्ज़त वालो, इस को दवाम बिल्कुल नहीं है, ऐसे साए के साथ धोखा खाना जो चल रहा हो, हिमाक़त है।

यूनुस बिन उबैद रह॰ कहते हैं कि मैंने अपने दिल को दुनिया की यह मिसाल समझाई कि एक आदमी मसलन सो रहा है, जब वह ख़्वाब में बहुत सी अच्छी और बुरी बातों को देखता है, एकदम उसकी आंख खुल गयी और वह सारा ख़्वाब ख़त्म हो गया। इसी तरह आदमी सब सो रहे हैं और यह सब कुछ ख़्वाब में देख रहे हैं, जब मौत से एकदम आंख खुल जाएगी तो यहां की खुशी न रहेगी, न ग़म रहेगा, कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दुनिया की हक़ीक़त का कश्फ़ हुआ, देखा कि वह एक निहायत बूढ़ी औरत है जिसके बुढ़ापे की वजह से दांत टूट गये और निहायत ज़र्क़ बर्क़ का फ़ाख़िरा लिबास पहन रही है। हर क़िस्म की ज़ीनत का सामान उस पर है, बिल्कुल दुल्हन बन रही है। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने उससे पूछा कि तू अब तक कितने निकाह कर चुकी है (कि अब फिर निकाह के शौक़ में दुल्हन बन रही है,) उसने जवाब दिया कि उनका कोई शुमार नहीं। हज़रत ईसा अलै॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि वे सब मर गए या उन्होंने तुझको तलाक़ दे दी। उसने जवाब दिया कि मैं ने सबको क़त्ल कर दिया। हज़रत ईसा अलैहि॰ फ़रमाते हैं कि तेरे बाक़ी ख़ाविंदों का नास हो, वे तेरे गुज़िश्ता ख़ाविंदों से इब्रत हासिल नहीं करते कि तूने किस तरह एक एक करके सबको हलाक कर दिया। हक़ीक़ी बात यही है कि यह बिल्कुल एक बड़ी उम्र की बुढ़िया है जिसने अपने ऊपर ज़ीनत का लिबास पहन रखा है। लोग इसकी ज़ाहिरी ज़ीनत को देख कर धोखा खा जाते हैं, जब इसकी हक़ीक़त पर मुत्तला होते हैं और इसके चेहरे से पर्दा

हटाते हैं तो इसकी सूरत नज़र आती है।

अला बिन ज़ियाद रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में एक बुढ़िया को देखा जो बहुत बूढ़ी थी और बहुत उम्दा लिबास, ज़ेवर वग़ैरह पहन रही थी, दुनिया की हर क़िस्म की ज़ेब व ज़ीनत उस पर मौजूद थी और लोग बहुत कसरत से उसके गिर्द जमा हैं, बड़े शौक़ से उसको देख रहे हैं। मैं उसके क़रीब गया और उसको देख कर मुझे उन सब देखने वालों पर बड़ा तअज्जुब हुआ। मैं ने ख़्वाब में उससे पूछा कि तू कौन है? कहने लगी तू मुझे नहीं जानता? मैंने कहा नहीं मैं तो नहीं जानता, उसने कहा मैं दुनिया हूँ। मैं ने कहा अल्लाह तआला शानुहू तुझसे मुझे अपनी पनाह में रखे। कहने लगी अगर तू मुझ से पनाह में रहना पसंद करता है तो दिरहम (रूपये) से बुग़्ज़ पैदा कर ले।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि क़ियामत में दुनिया ऐसी हालत में लाई जायेगी कि बहुत बूढ़ी औरत, बदसूरत कैरी आंखें, दांत आगे को निकले हुए, लोगों के सामने लाकर खड़ी कर दी जायेगी और उनसे पूछा जायेगा कि इसको पहचानते हो? वे कहेंगे खुदा की पनाह यह क्या बला है? उन से कहा जायेगा यह वही दुनिया है जिसकी बदौलत एक ने दूसरे को क़त्ल किया, आपस में क़ता-ए-रहमी की, इसकी वजह से तुम आपस में एक दूसरे से हसद रखते थे, बुग़्ज़ रखते थे और इसके धोखे में पड़े रहे। इसके बाद उस बुढ़िया को जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। वह चिल्लायेगी कि मेरे साथ इनको भी लाओ, मेरे पीछे लगने वालों को भी तो मेरे साथ करो। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद होगा कि इसके पीछे चलने वालों को भी इसके साथ करो।

हक़ीक़त में आदमी के ग़ौर करने की बात है कि उसके तीन ज़माने हैं, एक आलम की इब्तिदा से उसकी पैदाईश तक का ज़माना, दूसरा आदमी के मरने के बाद से हमेशा का ज़माना, इन दोनों के दर्मियान में तीसरा ज़माना यह है जो उसकी पैदाइश से लेकर उसकी मौत तक का वक़्त है। इस मुद्दत को अगर इब्तिदा और इंतिहा दोनों के मजमूए के साथ मुक़ाबला किया जाए तो मालूम हो कि कितना क़लील वक़्त है। इसीलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मुझे दुनिया से क्या लेना है, मेरी मिसाल तो उस सवार की सी है जो सख़्त गर्मी में सफ़र कर रहा हो, गर्मी की शिद्दत में कोई साएदार दरख़्त नज़र पड़ जाये तो उसके साए में थोड़ी देर आराम करने के लिए

दोपहर में ठहर जये, फिर उस दरख़्त को वहीं छोड़ कर आगे चला जाए। और वाक़ई बात यह है कि जो शख़्स दुनिया को इस निगाह से देखे जो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तो कभी भी इसकी तरफ़ न झुके और ज़रा भी इसकी परवाह न करे कि यह थोड़ा सा वक़्त राहत और खुशी में गुज़र गया या रंज व तकलीफ़ में।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी (रज़ि॰) को देखा कि चूने से मकान की तामीर कर रहे हैं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मौत इससे ज़्यादा क़रीब है। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद आया है कि दुनियादार की मिसाल उस शख़्स की सी है जो पानी पर चल रहा हो। क्या कोई शख़्स इसकी ताक़त रखता है कि पानी में चले और उसके पांव न भीगें। हुज़ूर सल्ल॰ के इस इर्शाद से तुम्हें उन लोगों की जहालत का अंदाज़ा हो गया होगा जो यह समझते हैं कि हमारे बदन तो दुनियावी लज़्ज़तों से मुन्तफ़ा हो रहे हैं, लेकिन हमारे दिल दुनिया से पाक हैं और हमारे क़लबी ताल्लुक़ात दुनिया से टूटे हुए हैं। यह तख़य्युल शैतान का उन लोगों के साथ मक्र है, बल्कि उन लोगों के पास से अगर दुनिया को छीन लिया जाए तो उसके फ़िराक़ में एकदम बेचैन हो जायें। पस जिस तरह पानी में चलने से पांव लामुहाला भीगते हैं उसी तरह दुनिया के साथ ताल्लुक़ और इख़्तिलात दिल में ज़ुल्मत ज़रूर पैदा करता है।

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद है कि एक हक़ीक़ी बात तुम से कहता हूँ जैसे बीमार आदमी को तक्लीफ़ की शिद्दत की वजह से खाने में लज़्ज़त नहीं आती, उसी तरह दुनियादार को इबादत में लज़्ज़त नहीं आती और जिस तरह जानवर पर अगर सवारी करना छोड़ दिया जाये तो इससे उसका मिज़ाज सख़्त हो जाता है और सवारी की आदत उसको नहीं रहती। इसी तरह अगर मौत के ज़िक्र और इबादत की मशक़्क़त के साथ दिलों को नर्म न किया जाए तो वे सख़्त हो जाते हैं, उनमें क़सावत पैदा हो जाती है और एक हक़ बात कहता हूँ कि मश्कीज़ा जब तक फटे नहीं वह शहद (पानी वग़ैरह) का बर्तन बनता है, लेकिन जब वह फट जाता है तो फिर शहद उसमें नहीं रखा जाता, इसी तरह दिल को जब तक शहवतों से फाड़ा न जाए या तमअ़ से उसको ख़राब न किया जाए या नेमतों से उसको सख़्त न किया जाए तो वह हिक्मत का बर्तन बनता है। इसके अलावा यह बात भी क़ाबिले लिहाज़ है कि दुनिया की शहवतें इस वक़्त बड़ी लज़ीज़ मालूम होती हैं लेकिन मुन्तहा के एतिबार से मौत के वक़्त उतनी ही मक्रूह और नागवार होंगी। उलमा ने लिखा

है कि लज़्ज़ात से दुनिया की ज़िन्दगी में जितना ज़्यादा शग़फ़ और मुहब्बत होगी, मौत के वक़्त उतनी ही ज़्यादा कराहत इनसे होगी। इसकी मिसाल खाने के साथ दी जाती है कि जो खाना जितना ज़्यादा लज़ीज़ और ज़्यादा चिकनाई और घी वाला होता है, उसका पाख़ाना उतना ही ज़्यादा गंदा और बदबूदार होता है और जितना ज़्यादा सादा खाना होता है उतनी ही उसके पाख़ाने में बदबू कम होती है।

इस सबके बाद यह बात ज़रूर क़ाबिले लिहाज़ है कि दुनिया क्या चीज़ है, जिसकी इतनी मज़म्मतें क़ुरआन पाक और अहादीस वग़ैरह में आई हैं, उसको ग़ौर से समझ लेना चाहिए कि आदमी की मौत से पहले (यानी ज़िन्दगी में) जो कुछ अहवाल पेश आते हैं जो उमूर उसको लाहिक़ होते हैं, वे सब दुनिया कहलाते हैं, और मौत के बाद जो कुछ होता है वह सब आख़िरत कहलाता है मौत से पहले उमूर तीन क़िस्म के होते हैं :-

एक वे चीज़ें हैं जो आदमी के साथ उस आलम में चली जाती हैं, वे इल्मे दीन और नेक अमल हैं जो ख़ालिस हक़ तआला शानुहू के वास्ते किया गया हो। ये दोनों चीज़ें ख़ालिस आख़िरत और दीन है, दुनिया नहीं है, अगरचे आदमी को इनमें लज़्ज़त आती हो और जिन लोगों को इनमें लज़्ज़त आ जाती है वे इनकी वजह से खाना पीना सोना शादी वग़ैरह तक छोड़ देते हैं, लेकिन इस सबके बावजूद ये दोनों चीज़ें आख़िरत ही की चीज़ें हैं। दूसरी क़िस्म इनके बिलमुक़ाबिल गुनाहों की लज़्ज़तें और जायज़ चीज़ों की वे मिक़्दारें जो महज़ फ़ुज़ूल और ज़ायद हैं जैसा कि सोने चांदी के ढेर और फ़ाख़िरा लिबास, ख़ुशनुमा जानवरों का शौक़, ऊँचे ऊँचे महल, लज़ीज़ लज़ीज़ खाने, यह सब दुनिया है, जिनकी मज़म्मत पहले गुज़री है, तीसरी क़िस्म इन दोनों के दर्मियानी वे ज़रूरी चीज़ें हैं जो आख़िरत के कामों के लिए मुईन और मददगार हों जैसा कि बक़द्रे ज़रूरत खाना, सोना और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ मामूली लिबास गर्मी का सर्दी का और हर वह चीज़ जिसकी आदमी को अपनी सेहत और बक़ा के लिए ज़रूरत है और इनकी वजह से पहली क़िस्म में इआनत हासिल होती है। ये चीज़ें भी दुनिया नहीं हैं, यह आख़िरत ही है, दीन ही है, बशर्ते कि वाक़ई ज़रूरत के दर्जे में हो, इनसे मक़सद दीनी उमूर में तक़्वियत हो और अगर इनका मक़सद महज़ हिफ़्ज़े नफ़्स और दिल की ख़्वाहिशात का पूरा करना होगा तो यही, चीज़ें दुनिया हो जायेंगी। *(एह्या)*

मैं ने अपने वालिद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू से एक क़िस्सा अक्सर सुना, वह फ़रमाते थे कि एक शख़्स को पानीपत एक ज़रूरत से जाना था। रास्ते में जमुना पड़ती थी जिसमें इत्तिफ़ाक़ से तुग़्यानी (पानी के चढ़ने) की सूरत थी कि कश्ती भी उस वक़्त न चल सकती थी। यह शख़्स बहुत परेशान था। लोगों ने उस से कहा कि फ़लां जंगल में एक बुज़ुर्ग रहते हैं, उनसे जाकर अपनी ज़रूरत का इज़्हार करो, अगर वह कोई सूरत तज्वीज़ कर दें तो शायद काम चल जाये वैसे कोई सूरत नहीं है, लेकिन वह बुज़ुर्ग अव्वल अव्वल बहुत ख़फ़ा होंगे, इंकार करेंगे, उससे मायूस न होना चाहिए। चुनांचे यह शख़्स वहां गया, उस जंगल में एक झोंपड़ी पड़ी हुई थी, उसी में उनके अहल व अयाल भी रहते थे। उस शख़्स ने बहुत रोकर अपनी ज़रूरत का इज़्हार किया कि मुक़दमे की कल को तारीख़ है, जाने की कोई सूरत नहीं। अव्वल तो उन्होंने हस्बे आदत ख़ूब डांटा कि मैं क्या कर सकता हूँ, मेरे क़ब्ज़े में क्या है? इसके बाद जब उसने बहुत ज़्यादा आजिज़ी की तो उन्होंने फ़रमाया कि जमुना से जाकर कह दो कि ऐसे शख़्स ने मुझे भेजा है जिसने उम्र भर न कभी कुछ खाया, न बीवी से सोहबत की। यह शख़्स वापस हुआ और उनके कहने के मुवाफ़िक़ अमल किया, जमुना का पानी एकदम रूक गया और वह शख़्स पार हो गया। जमुना फिर हस्बे मामूल चलने लगी। लेकिन उस शख़्स के वापस होने के बाद उन बुज़ुर्ग की बीवी ने रोना शुरू कर दिया कि तूने मुझे ज़लील और रूसवा किया, बग़ैर खाए तू ख़ुद फूल कर हाथी बन गया, इसका तुझे इख़्तियार है, अपने मुताल्लिक़ जो चाहे झूठ बोल दे लेकिन यह बात कि तू कभी बीवी के पास नहीं गया, इस बात ने मुझे रूसवा कर दिया, इसका मतलब तो यह हुआ कि यह औलाद जो फिर रही है, यह सब हराम की औलाद हुई। उन बुज़ुर्ग ने अव्वल तो यह कहा कि तुझसे इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। जब मैं औलाद को अपनी औलाद बताता हूँ फिर क्या एतिराज़ है। मगर वह बेतहाशा रोती रही कि तूने मुझे ज़िना करने वाली बना दिया। इस पर उन बुज़ुर्ग ने कहा कि ग़ौर से सुन। मैं ने जब से होश संभाला है, कभी अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स के लिए कोई चीज़ नहीं खाई, हमेशा जो खाया महज़ इस इरादे और नीयत से खाया कि उससे अल्लाह की इताअत के लिए बदन को क़ुव्वत पहुँचे और जब भी तेरे पास गया हमेशा तेरा हक़ अदा करने का इरादा रहा, कभी अपनी ख़्वाहिश के तक़ाज़े से सोहबत नहीं की। क़िस्सा तो ख़त्म हुआ। अब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक पाक

इर्शाद में ग़ौर करने से इस मज़्मून की ताईद होती है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी के अंदर तीन सौ साठ जोड़ हैं, उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि हर जोड़ की तरफ़ से (उसकी सलामती के शुक्राने में) रोज़ाना एक सदक़ा करे। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, कि या रसूलल्लाह सल्ल॰! इतने सदक़ात (यानी तीन सौ साठ) रोज़ाना अदा करने की किसको ताक़त है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मस्जिद में थूक वग़ैरह पड़ा हुआ हो, उस पर मिट्टी डाल देना सदक़ा (का सवाब रखता) है। रास्ते में से किसी तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देना भी सदक़ा है और चाश्त की नमाज़ इन सब सदक़ों के बराबर हो सकती है। *(मिश्कात)*

चूंकि नमाज़ में बदन का हर जोड़ इबादत में मशग़ूल रहता है इसलिए हर जोड़ की तरफ़ से गोया सदक़ा हो गया।

दूसरी हदीस में इन चीज़ों की और भी मिसालें ज़िक्र फ़रमायी हैं जिसमें इर्शाद है कि किसी को सलाम करना भी सदक़ा है। अच्छे काम का हुक्म करना, बुरे काम से मना करना भी सदक़ा है और बीवी से सोहबत करना भी सदक़ा है और इन सबके क़ायम मुक़ाम दो रक्अत चाश्त की नमाज़ यह सारे जोड़ों की तरफ़ से सदक़ा हो जाता है। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰! एक शख़्स अपनी शहवत पूरी करता है, यह भी सदक़ा हो जाएगा? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अगर वह उसको ना-जायज़ जगह पूरी करता तो क्या गुनाह न होता? *(अबू दाऊद)*

यानी जब हरामकारी गुनाह है तो उस से बचने की नीयत से बीवी से सोहबत यक़ीनी सवाब की चीज़ है। इसी तरह खाना, पीना, सोना पहनना सब चीज़ें इबादतें हैं बशर्ते की वाक़ई अल्लाह तआला की इताअत के इरादे से हों।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ एक जगह तहरीर फ़रमाते हैं कि दुनिया फ़ी नफ़्सिही मम्नूअ् और ना-जायज़ नहीं है बल्कि इस वजह से मम्नूअ् है कि वह हक़ तआला शानुहू तक पहुँचने में मानेअ् बनती है। इसी तरह फ़क़्र फ़ी नफ़्सिही मतलूब नहीं है बल्कि वह इसलिए मतलूब है कि उसमें हक़ तआला शानुहू से हटाने वाली कोई चीज़ नहीं (बल्कि वह हक़ तआला शानुहू तक पहुँचाने में मुईन है) लेकिन बहुत से ग़नी ऐसे भी हैं कि ग़िना उन को हक़ तआला शानुहू तक पहुँचने में मानेअ् नहीं हुआ, जैसा कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम, हज़रत

उस्मान रज़ि॰, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ वग़ैरह हज़रात, और बाज़ फ़क़ीर ऐसे होते हैं कि उनको फ़क़्र भी अल्लाह तआला शानुहू तक पहुँचने से मानेअ् बन जाता है कि नादारी के साथ माल की मुहब्बत उसको रास्ते से हटा देती है। लिहाज़ा असल मम्नूअ् और ना-जायज़ माल की मुहब्बत है चाहे उसके विसाल से हो जैसा कि ग़िना, या फ़िराक़ से हो जैसा कि दुनियादार फ़क़ीर।

दुनिया हक़ीक़त में अल्लाह तआला शानुहू से ग़ाफ़िल लोगों की माशूक़ा है जो इस का आशिक़ यानी दुनियादार फ़क़ीर इस से महरूम है, वह इसकी तलब में मर रहा है और जिस आशिक़ को इस का विसाल हासिल है जैसा कि ग़नी, वह इसकी हिफ़ाज़त और इससे लज़्ज़तें हासिल करने में अल्लाह तआला शानुहू से ग़ाफ़िल है लेकिन अक्सर क़ायदा यह है कि जो इस से महरूम है वह इसके फ़ित्नों से बहुत ज़्यादा महफ़ूज़ है और जो इसमें फंसा हुआ है, वह फ़ित्नों में मुब्तला है। इसी वजह से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन का इर्शाद है कि हम नादारी के फ़ित्ने (इम्तिहान) में मुब्तला किए गये तो हम ने सब्र किया (यानी कामयाब रहे) फिर हम सरवत और दौलत के फ़ितने (और इम्तिहान) में मुब्तला हुए तो सब्र न कर सके (यानी इस हाल में भी उस माल से बिल्कुल अलाहिदा रहते, यह न हो सका) और अक्सर लोगों का यही हाल है कि माल के होने की सूरत में उसकी मज़र्रतों से कोई बरसहा बरस में ही ऐसा निकलता है जो इस से महफ़ूज़ रह सके। इसी वजह से कुरआन पाक और अहादीस में कसरत से इस से बचने की तर्ग़ीब और इसमें फंस जाने की मज़र्रतों पर तंबीह की है। इसलिए कि इस से बचना तो हर शख़्स के लिए मुफ़ीद ही है, इसी वजह से उलमा का इर्शाद है कि (हाथ से रूपया पैसा वग़ैरह) माल का उलटना पलटना भी ईमान की हलावत को चूस लेता है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि हर उम्मत के लिए कोई बछड़ा (गऊ माता वग़ैरह) है जिसकी वे परस्तिश करते हैं, मेरी उम्मत का बछड़ा रूपया और अशरफ़ी है (कि उसके साथ भी ऐसा ही बर्ताव करते हैं जैसा कि परस्तिश का होता है) और हज़रत मूसा अलैहि॰ की क़ौम का बछड़ा भी तो सोने चांदी का ज़ेवर ही था। *(एह्या)*

और यह बात तमाम अंबिया-ए-किराम अलैहि॰ और औलिया-ए-अिज़ाम रह॰ ही के लिए होती है कि उनकी निगाह में सोना चांदी पानी पत्थर एक ही दरजा रखते हैं। फिर इसके बाद मुजाहदात की कसरत इन हज़रात के लिए और भी ज़्यादा इस चीज़ को पूरा कर देती है। इसी वजह से जब दुनिया अपनी ज़ेब

व ज़ीनत के साथ हुज़ूर सल्ल॰ की बारगाह में हाज़िर हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने उस से फ़रमा दिया कि मुझसे दूर ही रह।

हज़रत अली रज़ि॰ का इर्शाद है कि ऐ ज़र्द व सफ़ेद (सोने चांदी) मेरे अलावा किसी और को धोखे में डाल (मैं तेरे धोखे में नहीं आऊँगा) और यही असल ग़िना है कि दिल को उसके साथ ताल्लुक़ न रहे इसी वजह से हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि ग़िना माल की कसरत से नहीं होता बल्कि असल ग़िना दिल का ग़नी होना है और यह बात हर शख़्स को नसीब होना मुश्किल है, इसलिए असल तरीक़ा इस से दूर ही रहना है, इस लिए कि माल पर क़ुदरत और क़ब्ज़े की सूरत में चाहे सदक़ा ख़ैरात भी करता हो, लेकिन दिल में उसके साथ उन्स पैदा हो ही जाता है और यही मुहलिक चीज़ है कि जिस दरजे में उस से उन्स होगा उतना ही हक़ तआला शानुहू से बोअ़्द (दूरी) होगा और वहशत होगी और जब तंगदस्ती की वजह से उससे उन्स कम होगा तो मुसलमान होने की सूरत में लामुहाला हक़ तआला शानुहू के साथ वाबस्ता होगा, इसलिए कि दिल फ़ारिग़ नहीं रहता, किसी न किसी से उसका लगाव ज़रूर होता है और जब हक़ तआला के ग़ैर से मुन्क़तअ् हो जायेगा तो अल्लाह तआला शानुहू के साथ ही लगेगा।

मालदार आदमी को अक्सर यह धोखा लगता है कि वह अपने आप को यह समझने लगता है कि मुझे माल से मुहब्बत नहीं है लेकिन यह बड़ी लग़्ज़िश है और महज़ धोखा है, दर हक़ीक़त उसके दिल में मुहब्बत मर्कूज़ होती है जो उसको महसूस नहीं होती और इसका एहसास उस वक़्त होता है जब वह माल ज़ाया हो जाए या चोरी हो जाये और जो शख़्स इसका तजुर्बा करना चाहे, वह अपने माल को तक़्सीम करके तजुर्बा कर ले, अगर दिल को इसके बाद से उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात मालूम हो तो मालूम होगा कि मुहब्बत थी, और दिल को इसका ख़्याल भी न आये तो मालूम होगा कि मुहब्बत न थी और जितनी भी दुनिया से मुहब्बत कम होगी उतना ही उस शख़्स की इबादत में सवाब होगा। इसलिए कि इबादत और तस्बीहात में ज़बान की महज़ हरकत असल मक़्सूद नहीं बल्कि इनका मक़्सूद दिल पर असर है और दिल जितना फ़ारिग़ होगा उतना ही उस पर असर क़वी होगा।

ज़ह्हाक रह॰ कहते हैं कि जो शख़्स बाज़ार जाए और किसी चीज़ को देख कर उसके ख़रीदने की रग़बत हो और नादारी की वजह से उस पर सब्र

करे, वह एक हज़ार अशरफ़ियां अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से अफ़ज़ल है।

एक शख़्स ने हज़रत बिश्र बिन हारिस रह० से कहा कि मेरे लिए दुआ कीजिए, कुंबा ज़्यादा है जिसकी वजह से ख़र्च में तंगी है उन्होंने फ़रमाया कि जब घर वाले कहें कि आटा नहीं है (और तू उस से परेशान हो) उस वक़्त तू अल्लाह से दुआ कर, तेरी उस वक़्त की दुआ मेरी दुआ से अफ़ज़ल होगी। इसके अलावा माल की कसरत में क़ियामत के दिन के हिसाब का तवील होना तो बहर हाल है, यही वजह है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को जन्नत के दाख़िले में देर हुई, जैसा कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद पहले गुज़र चुका है।

इसी वजह से हज़रत अबू दर्दा रज़ि० का इर्शाद है कि मुझे यह भी पसंद नहीं कि मेरी कोई दुकान मस्जिद के दरवाज़े पर हो, जिसकी वजह से हर वक़्त की जमाअत मुझे मिलती रहे और ज़िक्र व शुग्ल में मशगूल रहूँ और दुकान से पचास अशरफ़ियां रोज़ाना मैं कमाता रहूँ और सदक़ा करता रहूँ। किसी ने पूछा, इसमें क्या बुराई होगी? फ़रमाने लगे कि हिसाब तो लम्बा हो ही जायेगा।

हज़रत सुफ़्यान रह० फ़रमाते हैं कि फ़ुक़रा ने तीन चीज़ें पसंद कीं और मालदारों ने तीन चीज़ें पसंद कीं :-

1. फ़ुक़रा ने तो नफ़्स की राहत।
2. दिल का फ़ारिग़ होना, और
3. हिसाब की तख़्फ़ीफ़ पसंद की और मालदारों ने –

1. नफ़्स की मशक़्क़त,
2. दिल की मशगूली और,
3. हिसाब का लम्बा होना पसंद किया। *(एहया)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मशहूर इर्शाद है कि आदमी उसी के साथ (क़ियामत में होगा) जिस से उसको मुहब्बत होगी। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को इस्लाम के बाद किसी दूसरी चीज़ की इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितनी कि इस हदीस की हुई। इसलिये कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इन हज़रात की मुहब्बत ज़रबुल्-मसल और आफ़ताब से ज़्यादा रौशन थी, फिर उनको ख़ुशी क्यों न होती?

और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का इर्शाद है कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला शानुहू अपनी मुहब्बत का ज़रा सा ज़ायक़ा भी चखा देते हैं, वह दुनिया की तलब से फ़ारिग़ हो जाता है और लोगों से उसको वहशत होने लगती है।

अबू सुलैमान दारानी रह॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू की ऐसी भी मख़्लूक़ है जिनको जन्नत अपनी सारी नेमतों और दायमी राहतों के बावजूद अपनी तरफ़ नहीं खींच सकती, वह सिर्फ़ हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ही से वाबस्ता है। ऐसे लोगों को दुनिया अपनी तरफ़ क्या खींच सकती है?

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक जमाअत पर गुज़रे, जिनके बदन दुबले थे, चेहरे ज़र्द थे। हज़रत ईसा अलै॰ ने पूछा, तुम्हें यह क्या हो गया? उन्होंने कहा, जहन्नम के ख़ौफ़ ने यह हाल कर दिया। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने फ़रमाया कि हक़ तआला शानुहू के (फ़ज़्ल से उसके) ज़िम्मे है कि जिस शख़्स को जहन्नम का ख़ौफ़ हो, उसको जहन्नम से महफ़ूज़ रखे। आगे चले तो चंद आदमी और मिले, उनका हाल उन पहले लोगों से भी ज़्यादा सख़्त था बहुत दुबले चेहरों पर बहुत ज़्यादा परेशानी थी। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने उनसे पूछा कि तुम्हें क्या हो गया? उन्होंने अर्ज़ किया जन्नत के शौक़ (व इश्क़) ने यह हाल कर दिया। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला शानुहू के ज़िम्मे है कि तुम जिस चीज़ की उम्मीद उससे लगाए हो, वह तुमको अता करे।

आगे चले तो एक और जमाअत मिली जो उन दूसरों से भी ज़्यादा ज़ईफ़, मनहनी[1] मगर उनके चेहरे नूर से आईने की तरह चमक रहे थे। उनसे भी हज़रत ईसा अलैहि॰ ने यही सवाल किया, उन्होंने अर्ज़ किया हक़ तआला शानुहू के इश्क़ ने यह हाल कर दिया, हज़रत ईसा अलैहि॰ ने फ़रमाया तुम ही लोग असल मुक़र्रब हो, तुम ही मुक़र्रब हो, तुम ही मुक़र्रब हो, तीन मर्तबा फ़रमाया।

यह्या बिन मुआज़ रह॰ कहते हैं कि एक राई के दाने के बराबर अल्लाह तआला शानुहू की मुहब्बत मुझे बग़ैर मुहब्बत की सत्तर बरस की इबादत से ज़्यादा महबूब है। *(एह्या)*

---

1. यानी कमज़ोर और हड्डियों का ढांचा।

(٩) عن ابی ہریرۃؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لایزال قلبُ الکبیر شابًا فی اثنین فی حبّ الدنیا وطول الامل. متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बूढ़े आदमी का दिल हमेशा दो चीज़ों में जवान रहता है, एक दुनिया की मुहब्बत, दूसरे आरज़ुओं और उम्मीदों के तवील होने में।

फ़ायदाः- पहली हदीस शरीफ़ के ज़ैल में यह मज़्मून तफ़्सील से गुज़र चुका है कि असल दुनिया जिसकी बुराई क़ुरआन पाक और अहादीस वग़ैरह में बहुत कसरत से आयी है, वह माल की मुहब्बत है। इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी सिलसिले में एक ख़ास चीज़ पर तंबीह फ़रमायी है जो तजुर्बे में बहुत सही साबित हुई, कि बुढ़ापे में दुनिया की मुहब्बत और लम्बी लम्बी उम्मीदें बहुत बढ़ जाती हैं और जितना भी मरने का ज़माना बुढ़ापे के लिहाज़ से क़रीब आता जाता है, उतनी ही औलाद की शादियों की उमंगें, अच्छे अच्छे मकानात तामीर करने का वलवला, जायदाद बढ़ाने का जज़्बा वग़ैरह ज़्यादा होते चले जाते हैं। इसलिए ऐसी हालत में आदमी को अपने नफ़्स की ख़ासतौर से निगहदाश्त करने की ज़रूरत है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी बूढ़ा होता रहता है और दो चीज़ें उसमें जवान होती रहती हैं, एक माल की हिर्स और दूसरी ज़्यादा उम्र होने की हिर्स। *(मिश्कात)*

ज़्यादा उम्र होने की हिर्स भी वही उम्मीदों का तवील होना है कि वह मरने के क़रीब होता जा रहा है लेकिन मरने की तैयारी के बजाय दुनिया में हमेशा रहने की तैयारी में मशग़ूल रहता है। एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिसाल देकर समझाने के तौर पर एक मुरब्बा (चार लकीरों वाली) शक्ल खींची और उसके दर्मियान में एक दूसरी लकीर खींची जो उस मुरब्बा की शक्ल से आगे निकली चली गयी फिर उस मुरब्बा शक्ल के अंदर छोटी छोटी लकीरें बनायीं। जिसकी सूरत उलमा ने मुख़्तलिफ़ लिखी है, मिनजुम्ला उनकी यह सूरत  वाज़ेह हैं। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि यह दर्मियानी लकीर तो आदमी है और जो लकीरें (मुरब्बा) उसको चारों तरफ़ से घेर रही है वह उसकी मौत है कि आदमी उस से निकल ही नहीं सकता और जो लकीर बाहर निकल रही है, वे उसकी उम्मीदें हैं कि अपनी ज़िन्दगी से भी

आगे को लगाये बैठा है और ये छोटी छोटी लकीरें जो इसके दोनों तरफ़ हैं, वे उसकी बीमारियां, हवादिस वग़ैरह हैं जो इसकी तरफ़ मुतवज्जह हैं। हर एक छोटी लकीर एक आफ़त है अगर एक से बच जाये तो दूसरी मुसल्लत है और मौत के अंदर तो घिरा हुआ है कि वह तो चारों तरफ़ से उसको घेरे हुए है लेकिन उम्मीद की लकीर मौत से भी आगे निकली हुई है।

एक और हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सरे मुबारक के पिछले हिस्से पर अपना दस्ते मुबारक रख कर फ़रमाया कि यह तो आदमी की मौत है जो उसके सर पर हर वक़्त सवार है और दूसरे हाथ को दूर तक फैला कर इर्शाद फ़रमाया कि यह दूर तक इसकी उम्मीदें जा रही हैं।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि इस उम्मत की भलाई की इब्तिदा आख़िरत के यक़ीन और दुनिया से बे-रग़बती के साथ हुई है, और इसके फ़साद की इब्तिदा माल के बुख़्ल और उम्मीदों की लम्बाई से होगी।

(मिश्कात)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि इस उम्मत के इब्तिदाई हिस्से ने अल्लाह के साथ यक़ीन और दुनिया से बे-रग़बती के साथ निजात पायी और इसके आख़िरी हिस्से की हलाकत बुख़्ल और उम्मीदों की वजह से है। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि अंक़रीब ऐसा ज़माना आने वाला है कि लोग तुम्हारे (मुसलमानों के) खा जाने के वास्ते एक दूसरे को इस तरह दावत देंगे जैसा कि दस्तरख़्वान पर बैठने वाला दूसरे को तवाज़ो करता है। (कि हर क़ौम दूसरों को इसकी तर्ग़ीब और दावत देगी कि इन मुसलमानों को किसी तरह पहले हलाक कर दो) सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰! क्या उस वक़्त हमारी तायदाद बहुत कम होगी? (जिसकी वजह से काफ़िरों के ये हौसले होंगे) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, नहीं तुम्हारी तायदाद उस ज़माने में बहुत ज़्यादा होगी, लेकिन तुम लोग उस ज़माने में सैलाब के झाग की तरह से (बिल्कुल बेजान) होगे और तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा ख़ौफ़ जाता रहेगा और तुम्हारे अपने दिलों में वह्न पैदा हो जायेगी। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह, वह्न क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद

फ़रमाया कि दुनिया की मुहब्बत और मौत से डरना। *(मिश्कात)*

उम्मे वलीद रज़ि॰, हज़रत उमर रज़ि॰ की साहब ज़ादी फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाम के वक़्त अंदर से बाहर तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया, तुम लोगों को शर्म नहीं आती? सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह क्या बात हुई? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, इतनी मिक़्दार जमा करते हो, जितना खाते नहीं हो और इतने मकानात बना लेते हो, जिनमें रहते भी नहीं हो, और ऐसी उम्मीदें बांध लेते हो, जिनको पूरी भी नहीं कर सकते, क्या इन बातों से तुम शर्माते नहीं हो? *(तर्ग़ीब)*

यानी ज़रूरत से ज़ायद मकान बना लेते हो, मकान उतना ही बनाना चाहिए जितने की ज़रूरत हो, इसी तरह ख़ज़ाना जमा करते जाते हो, जो अपनी हाजत से ज़ायद है, वह जमा करने के लिए नहीं वह अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करने के लिए है।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा मिंबर पर तशरीफ़ रखते थे, और मज्मा सामने हलक़ा बनाये हुए था। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, लोगो! अल्लाह तआला शानुहू से ऐसी शर्म करो जैसा कि उससे शर्म करने का हक़ है, सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ हक़ तआला शानुहू से तो हम हया करते ही हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया जो शख़्स तुम में से हक़ तआला शानुहू से हया करे, उसके लिए ज़रूरी है कि कोई रात उस पर ऐसी न गुज़रे कि उस की मौत उस की आंखों के सामने न हो और उस के लिए ज़रूरी है कि हिफ़ाज़त करे पेट की और उस चीज़ की जिसको पेट ने घेर रखा है, और हिफ़ाज़त करे सर की और उस चीज़ की जिसको सर ने घेर रखा है। और उसके लिए ज़रूरी है कि मौत को याद रखे और अपनी बोसीदगी को (कि मरने के बाद यह बदन सारा का सारा शिकस्ता होकर ख़ाक हो जायेगा) और ज़रूरी है कि दुनिया की ज़ीनत को छोड़ दे। *(तर्ग़ीब)*

उलमा ने लिखा है कि सर की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि अल्लाह तआला शानुहू के अलावा किसी के सामने न झुके, न इबादत के लिए, न ताज़ीम के लिए, हत्ताकि झुक कर सलाम भी न करे, और जिन चीज़ों को सर ने घेर रखा है, का मतलब यह है कि आंख कान ज़बान ये सब चीज़ें सर के तहत में

दाख़िल हैं, इन सबकी हिफ़ाज़त करे, इसी तरह पेट की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि मुश्तबह माल से हिफ़ाज़त करे और जिस चीज़ को पेट ने घेर रखा है, इस से मुराद वे चीज़ें हैं जो पेट के क़रीब हैं जैसे शर्मगाह, हाथ पांव और दिल, कि इन सब चीज़ों की हिफ़ाज़त करे।

इमाम नववी रह० कहते हैं कि इस हदीस को कसरत से पढ़ना मुस्तहब है।

(मज़ाहिरे हक़)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा फ़रमाया लोगो! अल्लाह तआला शानुहू से ऐसी हया करो जैसा कि उसका हक़ है, हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० अल्लाह तआला का शुक्र है कि हम लोग हक़ तआला शानुहू से सब के सब हया करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया नहीं, यह मामूली हया नहीं, बल्कि हक़ तआला शानुहू से हया का हक़ यह है कि आदमी सर की हिफ़ाज़त करे और उस चीज़ की, जिसको सर ने घेर रखा है, और पेट की हिफ़ाज़त करे और उन चीज़ों की हिफ़ाज़त करे जिन पर पेट हावी हो रहा है। (शर्मगाह वग़ैरह) और ज़रूरी है कि मौत को कसरत से याद रखा करे और शिकस्तगी (मरने के बाद सब टूट फूट कर ख़ाक हो जाने) को याद रखा करे और जो शख़्स आख़िरत का इरादा करता है, वह दुनिया की ज़ीनत को छोड़ देता है। *(तर्ग़ीब)*

चूंकि मौत को कसरत से याद करने को दुनिया से बेरग़्बती में और उम्मीदों के इख़्तिसार (कम करने) में बहुत ज़्यादा दख़ल है इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत को कसरत से याद करने का हुक्म फ़रमाया है।

एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० सब से बड़ा ज़ाहिद कौन शख़्स है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जो मौत को और अपने मर गल कर, पुराना हो जाने को न भूले, और दुनिया की ज़ीनतों को छोड़ दे, और आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह दे और आने वाले कल को अपनी ज़िन्दगी यक़ीनी न समझे और अपने आपको मुर्दों में समझता रहे।

(तर्ग़ीब)

कि अंक़रीब मर कर उनमें शामिल हो जाऊँगा।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

इर्शाद नक़ल करते हैं कि इन लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत को बहुत कसरत से याद किया करो। जो शख़्स तंगी की हालत में इसको याद करता है तो यह उस पर वुसअत और सहूलत का सबब होती है (यह इत्मीनान होता है कि मौत बहरहाल आने वाली है उस से सारी तक्लीफ़ों का ख़ात्मा है) और जो शख़्स फ़राख़दस्ती में उसको याद करता है तो उसके लिए ख़र्चों में तंगी का सबब होता है (कि मौत के फ़िक्र से ज़्यादा ऐश व इशरत को दिल नहीं चाहता)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत का तज़्किरा कसरत से रखा करो।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ तशरीफ़ लाये तो सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ हंस रहे थे, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली चीज़ को कसरत से याद रखा करो, इसको जो शख़्स फ़राख़ी में याद करता है, उस पर यह तंगी करती है और जो तंगी में इसको याद करता है, उस पर फ़राख़ी करती है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो बाज़ लोगों के हंसी की वजह से दांत खिल रहे थे, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद करते तो वह उन चीज़ों में मशग़ूल होने से रोक देती, जिन से हंसी आयी। हर शख़्स की क़ब्र रोज़ाना ऐलान करती है कि मैं बिल्कुल तंहाई का घर हूँ, मैं सबसे अलाहिदा रहने का घर हूँ, मैं कीड़ों का घर हूँ, जब नेक मोमिन दफ़्न होता है तो क़ब्र उस से कहती है कि तेरा आना बड़ा मुबारक है, तेरे आने से बड़ी खुशी हुई, जितने लोग मेरी पुश्त पर चलते थे, उनमें तू मुझे बहुत पसंद था, आज तू मेरी मातहती में आया है तो मैं अपना तर्ज़े अमल तुझे दिखाऊँगी, इसके बाद वह इतनी वसीअ् हो जाती है कि जहां तक मुर्दे की नज़र जाये वहां तक ज़मीन खुल जाती है और एक खिड़की जन्नत में खुल जाती है (जिस से वहां की खुशबुएं, हवायें वग़ैरह आती रहती हैं) और जब कोई बदकार या काफ़िर दफ़्न होता है तो ज़मीन उस से कहती है कि तेरा आना बड़ा ना-मुबारक है, तेरे आने से जी बहुत बुरा हुआ, जितने लोग मेरी पुश्त पर चलते थे, तू उनमें मुझे बहुत ही बुरा लगता था, आज तू मेरी मातहती में आया है तो मैं अपना तर्ज़े अमल तुझे दिखाऊँगी, यह कह कर वह ऐसी मिलती है (यानी उसको भींचती है) कि मुर्दे की हड्डियां पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ में डालकर बताया कि इस तरह हड्डियां पसलियां एक जानिब की दूसरी जानिब में घुस जाती हैं और सत्तर अज़्दहे उसको डसना शुरू कर देते हैं, और वे ऐसे ज़हरीले होते हैं कि अगर उनमें से एक भी ज़मीन के ऊपर फूंक मार दे तो क़ियामत तक ज़मीन पर घास उगना बंद हो जाये। ये सब के सब क़ियामत तक उसको काटते रहेंगे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰ सब से ज़्यादा समझदार और सब से ज़्यादा मुहतात आदमी कौन है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स मौत को कसरत से याद रखता हो और मौत के लिए हर वक़्त तैयारी में मशग़ूल रहता हो, यही लोग हैं जो दुनिया की शराफ़त और आख़िरत का इकराम हासिल करने वाले हैं।

(तर्ग़ीब)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ एक मर्तबा एक जनाज़े के साथ तशरीफ़ ले गये और क़ब्रस्तान में पहुंच कर अलाहिदा एक जगह बैठ कर कुछ सोचने लगे। किसी ने अर्ज़ किया, अमीरूल मोमिनीन, आप इस जनाज़े के वली थे, आप ही अलाहिदा बैठ गये? फ़रमाया, हां, मुझे एक क़ब्र ने आवाज़ दे दी और मुझ से यों कहा कि ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ तू मुझ से यह नहीं पूछता कि मैं इन आने वालों के साथ क्या क्या करती हूं? मैं ने कहा तू ज़रूर बता? उसने कहा, इनके कफ़न फाड़ देती हूं, बदन के टुकड़े टुकड़े कर देती हूं, ख़ून सारा चूस लेती हूं, गोश्त खा लेती हूं, और बताऊं कि आदमी के जोड़ों के साथ क्या करती हूं, मोंढ़ों को बांहों से जुदा कर देती हूं, और सुरीनों से रानों को जुदा कर देती हूं और रानों को घुटनों से जुदा कर देती हूं, घुटनों को पिण्डलियों से जुदा कर देती हूं और पिण्डलियों को पांवों से जुदा कर देती हूं और यह फ़रमा कर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रोने लगे और फ़रमाया कि दुनिया का क़ियाम बहुत थोड़ा है और इसका धोखा बहुत ज़्यादा है कि इस में जो अज़ीज़ है वह आख़िरत में ज़लील है, इसमें जो दौलत वाला है, वह आख़िरत में फ़क़ीर है, इसका जवान बहुत जल्द बूढ़ा हो जायेगा, इसका ज़िंदा बहुत जल्द मर जायेगा, इसका तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होना तुमको धोखे में न डाल दे, हालांकि तुम देख रहे हो कि यह कितनी जल्दी मुंह फेर लेती है और बेवक़ूफ़ वह है जो इसके

धोखे में फंस जाये। कहां गए इसके वे दिलदादा, जिन्होंने बड़े बड़े शहर आबाद किए, बड़ी बड़ी नहरें निकालीं, बड़े बड़े बाग़ लगाये और बहुत थोड़े दिन रह कर सबको छोड़ कर चल दिये, वे अपनी सेहत और तन्दरूस्ती से धोखे में पड़े कि सेहत के बेहतर होने से उनमें निशात पैदा हुआ और इस से गुनाहों में मुब्तला हुए, वे लोग ख़ुदा की क़सम, दुनिया में माल की कसरत की वजह से क़ाबिले रश्क थे, बावजूद कि माल के कमाने में उनको रूकावटें पेश आती थीं, मगर फिर भी खूब कमाते थे, उन पर लोग हसद करते थे, लेकिन वे बेफ़िक्र माल को जमा करते रहते थे और उसके जमा करने में हर क़िस्म की तक्लीफ़ को खुशी से बर्दाश्त करते थे, लेकिन अब देख लो कि मिट्टी ने उनके बदनों का क्या हाल कर दिया और ख़ाक ने उनके बदनों को क्या बना दिया, कीड़ों ने उनके जोड़ों और उनकी हड्डियों का क्या हाल बनाया, वे लोग दुनिया में ऊँची ऊँची मसहरियों पर ऊँचे ऊँचे फ़र्श और नर्म गद्दों पर नौकरों और ख़ादिमों के दर्मियान आराम करते थे, अज़ीज़ व अक़ारिब, रिश्तेदार और पड़ोसी हर वक़्त दिलदारी को तैयार रहते थे। लेकिन अब क्या हो रहा है, आवाज़ देकर पूछो कि क्या गुज़र रही है, ग़रीब, अमीर सब एक मैदान में पड़े हुए हैं, उनके मालदार से पूछ कि उसके माल ने क्या काम दिया, उन के फ़क़ीर से पूछ कि उसके फ़क्र ने क्या नुक़्सान दिया, उनकी ज़बान का हाल पूछ जो बहुत चहक़ती थी, उनकी आखों को देख जो हर तरफ़ देखती थीं, उनकी नर्म नर्म खालों का हाल दर्याफ़्त कर, उनके खूबसूरत और दिलरूबा चेहरों का हाल पूछ, क्या हुआ उनके नाज़ुक बदन को, मालूम कर कहां गया और कीड़ों ने उन सब का क्या हश्र बनाया। उनके रंग काले कर दिये, उनका गोश्त खा लिया, उनके मुंह पर मिट्टी डाल दी, अज़ा को अलग अलग कर दिया, जोड़ों को तोड़ दिया, आह कहां हैं उनके वे खुद्दाम जो हर वक़्त "हाज़िर हूँ जी" कहते थे, कहां हैं उनके वे ख़ेमे और कमरे जिनमें आराम करते थे, कहां हैं उनके वे माल और ख़ज़ाने जिनको जोड़ जोड़ कर रखते थे।

इन हशम व खदम ने उसको क़ब्र में खाने के लिए कोई तोशा भी न दिया और उसकी क़ब्र में कोई बिस्तरा भी न बिछा दिया, कोई तकिया भी न रख दिया, ज़मीन ही पर डाल दिया, कोई दरख़्त, फूल, फुलवारी भी न लगा दी, आह अब वे बिल्कुल अकेले पड़े हैं, अंधेरे में पड़े हैं, उनके लिए अब रात दिन बराबर हैं। दोस्तों से मिल नहीं सकते, किसी को अपने पास बुला नहीं सकते,

कितने नाज़ुक बदन मर्द, नाज़ुक बदन औरतें, आज उनके बदन बोसीदा हैं, उनके आज़ा एक दूसरे से जुदा हैं, आंख निकल कर मुंह पर गिर गईं, गर्दन जुदा हुई पड़ी है, मुंह में पानी, पीप, वग़ैरह भरा हुआ है और सारे बदन में कीड़े चल रहे हैं। वे इस हाल में पड़े हैं और उनकी जोरूओं ने दूसरे निकाह कर लिए। वे मज़े उड़ा रही हैं, बेटों ने मकानों पर क़ब्ज़ा कर लिया, वारिसों ने माल तक़्सीम कर लिया, मगर बाज़ ख़ुशनसीब ऐसे भी हैं जो अपनी क़ब्रों में भी लज़्ज़तें उड़ा रहे हैं, तर व ताज़ा चेहरों के साथ राहत व आराम में हैं, (लेकिन ये वही लोग हैं जिन्होंने) इस धोखे के घर में उस घर को याद रखा, इसकी उम्मीदों से उसकी उम्मीदों को मुक़द्दम किया और अपने लिए तोशा जमा कर दिया और अपने पहुँचने से पहले अपने जाने का सामान कर दिया, ऐ वह शख़्स जो कल को क़ब्र में ज़रूर जायेगा, तुझे इस दुनिया के साथ आख़िर किस चीज़ ने धोखे में डाल रखा है? क्या तुझे यह उम्मीद है कि यह कमबख़्त दुनिया तेरे साथ रहेगी, क्या तुझे यह उम्मीद है कि तू इस कूच के घर में हमेशा रहेगा, तेरे ये वसीअ् मकान, तेरे बाग़ों के पके हुए फल, तेरे नर्म बिस्तरे, तेरे गर्मी सर्दी के जोड़े, ये सब के सब एकदम रखे रह जायेंगे। मलकुल-मौत आकर मुसल्लत हो जायेगा, कोई चीज़ उसको न हटा सकेगी, पसीनों पर पीसने आने लगेंगे, प्यास की शिद्दत बढ़ जायेगी और जांकनी की सख़्ती में करवटें बदलता रह जायेगा। अफ़सोस! सद अफ़सोस! ऐ वह शख़्स जो आज मरते वक़्त अपने भाई की आंख बंद कर रहा है, अपने बेटे की आंखें बंद कर रहा है, अपने बाप की आंख बंद कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है किसी को कफ़न दे रहा है, किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है, किसी को क़ब्र के गढ़े में डाल रहा है, कल को तुझे भी यह सब कुछ पेश आना है।

और भी इस क़िस्म की बातें फ़रमाईं, फिर दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि आदमी ऐसी चीज़ के साथ ख़ुश होता है जो अंक़रीब फ़ना होने वाली है, और लम्बी लम्बी आरज़ुओं और दुनिया की उम्मीदों में मशग़ूल रहता है। अरे बेवक़ूफ़, ख़्वाब की लज़्ज़तों से धोखे में नहीं पड़ा करते, तेरा दिन सारा ग़फ़लत में गुज़रता है और तेरी रात सोने में गुज़रती है और मौत तेरे ऊपर सवार है। आज तू वे काम कर रहा है कि कल को उन पर रंज करेगा। दुनिया में चौपाए इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, जिस तरह तू गुज़ार रहा है। कहते हैं कि इस वाक़िए के बाद एक हफ़्ता भी न गुज़रा था कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का

विसाल हो गया। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु। *(मुसामरात)*

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि चार चीज़ें बदबख़्ती की अलामत हैं:-

1. आंख का ख़ुश्क होना (कि अपने गुनाह और आख़िरत की किसी बात पर रोना ही न आये।),

2. दिल का सख़्त होना,

3. उम्मीदों का तवील होना और

4. दुनिया की हिर्स।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत उसामा रज़ि॰ ने एक बांदी क़र्ज़ ख़रीदी और एक महीने का वायदा क़ीमत अदा करने का कर लिया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसका इल्म हुआ तो इर्शाद फ़रमाया कि किस क़दर ताज्जुब की बात है कि उसामा (रज़ि॰) ने एक महीने के वायदे पर क़र्ज़ ख़रीदा, उसामा रज़ि॰ को भी (अपनी ज़िन्दगी की), बड़ी लम्बी उम्मीद है, (गोया उस को यह यक़ीन हो गया कि एक महीना तो वह ज़िंदा ही रहेगा) उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मुझे आंख के पलक झपकने तक की भी अपनी ज़िन्दगी का यक़ीन नहीं होता और पानी पीने का प्याला जब मैं उठाता हूँ तो उसके रखने तक भी मुझे अपनी ज़िन्दगी का यक़ीन नहीं होता, और जब कोई लुक़्मा खाता हूँ तो उसके निगलने का भी मौत से पहले पहले यक़ीन नहीं होता। क़सम है उस पाक ज़ात की, जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, जिन चीज़ों का तुम से वायदा किया गया है (मौत, क़ियामत, हिसाब वग़ैरह) सब चीज़ें ज़रूर आने वाली है, और तुम हक़ तआला शानुहू को आजिज़ नहीं कर सकते (कि वह किसी काम का इरादा फ़रमाये और कोई उसमें रूकावट डाल दे।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने मेरा मोंढ़ा पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया में इस तरह ज़िन्दगी गुज़ार दो जैसा कि कोई मुसाफ़िर, कोई रास्ता चलने वाला है और हर वक़्त अपने आपको क़ब्रस्तान वालों में समझा करो। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझसे फ़रमाया, ऐ इब्ने उमर! (और बाज़ रिवायात में है कि यह मक़ूला इब्ने उमर रज़ि॰ का है।) जब सुबह हो जाये तो शाम तक की ज़िन्दगी का यक़ीन न करो और जब शाम हो जाये तो सुबह तक कि ज़िन्दगी का यक़ीन न करो, अपनी

सेहत की हालत में बीमारी के ज़माने के लिए नेक अमल कर रखो (कि बीमारी के ज़माने में जो कोताही हो, उसका जब्र पहले से हो जाये या सेहत में जिन आमाल का आदी होगा, बीमारी की वजह से उनके न हो सकने पर भी उनका सवाब मिलता रहेगा) और अपनी मौत के लिए ज़िन्दगी ही में तैयारी कर लो, कल को मालूम नहीं तुम्हारा क्या अंजाम हो जाये। (यानी किन लोगों में शुमार हो जाये, नेक लोगों में या बद लोगों में, फ़मिन्हुम् शक़िय्युवं-व सईद)।

हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ मुझे कुछ नसीहत फ़रमा दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत इस तरह किया करो कि गोया तुम उसको देख रहे हो वह तुम्हारे सामने है, और अपने आपको हर वक़्त मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त में शुमार किया करो। और हर पत्थर और दरख़्त के क़रीब अल्लाह तआला शानुहू का ज़िक्र किया करो (ताकि क़ियामत में इसकी गवाही देने वाले बहुत कसरत से हो जायें) और जब कोई बुरी हरकत हो जाए तो उसकी तलाफ़ी के लिए कोई नेक अमल करो। अगर बुराई छुप कर की है तो उसकी तलाफ़ी में नेक अमल भी छुप कर करो और बुराई एलानिया हुई है तो उसकी तौबा और तलाफ़ी भी एलानिया की जाये। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि क़ियामत तो क़रीब आती जा रही है और लोग दुनिया की हिर्स में और हक़ तआला शानुहू से बईद (दूर) होने में बढ़ते चले जा रहे हैं। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा बाहर तशरीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया कि कोई शख़्स तुम में से यह चाहता है कि हक़ तआला शानुहू उसको बग़ैर सीखे इल्म अता फ़रमाये, और बग़ैर किसी के रास्ता बताये, हिदायत अता फ़रमाये। कोई तुम में से ऐसा है जो यह चाहता हो कि हक़ तआला शानुहू उसके अंधेपन को दूर फ़रमा कर उसके (दिल की) निगाह को खोल दें अगर ऐसा चाहते हो तो समझ लो कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बती करे और अपनी उम्मीदों को मुख़्तसर रखे, हक़ तआला शानुहू उसको बग़ैर सीखे इल्म अता फ़रमाते हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

पहले भी यह रिवायत मुफ़स्सल गुज़र चुकी है। हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा ख़ौफ़, ख़्वाहिशात की कसरत और उम्मीदों के

बढ़ जाने का है। ख़्वाहिशात हक़ से हटा देती हैं और उम्मीदों का तवील होना आख़िरत को भुला देता है, यह दुनिया भी चल रही है और हर दिन दूर होती जा रही है और आख़िरत भी चल रही है और हर दिन क़रीब होती जा रही है, (यानी हर वक़्त, हर दिन हर आन ज़िन्दगी कम होती जा रही है, और मौत क़रीब आती जा रही है।)

"ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल ये देता है मुनादी।
गर्दूं ने घड़ी उम्र की एक और घटा दी॥

अगर घंटे की आवाज़ को ग़ौर से सुना जाये तो वाक़ई 'घटा दी, घटा दी' का नारा पैदा होता है। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया और आख़िरत हर एक के इस दुनिया में कुछ सपूत हैं अगर तुम से हो सके तो इसकी कोशिश करो कि दुनिया के सपूत न बनो (आख़िरत के सपूत बनो) आज अमल का (और खेती बोने का) दिन है, हिसाब आज नहीं, कल को तुम आख़िरत के घर में होगे जहां अमल नहीं। *(मिश्कात)*

(बल्कि खेती के काटने का और बदले का दिन है।)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि, तीन आदमी ऐसे हैं कि जब मुझे उनका ख़्याल आता है तो इस क़दर ताज्जुब होता है कि मुझे हंसी आने लगती है, एक वह शख़्स जो दुनिया में उम्मीदें लगाये बैठा है और मौत उसकी फ़िक्र में है, दूसरा वह शख़्स जो (अल्लाह तआला शानुहू से) ग़ाफ़िल है और (अल्लाह तआला शानुहू) उससे ग़ाफ़िल नहीं, तीसरे वह शख़्स जो मुंह भर कर (खिलखिला कर) हंसता है और उस को इसकी ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला शनुहू उस से खुश है या नाराज़ है (हालांकि यह फ़िक्र ऐसी चीज़ है कि किसी वक़्त भी हंसी न आना चाहिए।) और तीन चीज़ें ऐसी हैं जो मुझे हर वक़्त ग़मगीन रखती हैं, यहां तक कि मैं रोने लगता हूँ, एक दोस्तों का फ़िराक़, यानी हुज़ूर सल्ल॰ और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ का, दूसरे मौत का फ़िक्र, तीसरे हश्र में हक़ तआला शानुहू के सामने पेश होना है, फिर मालूम नहीं कि मेरे लिए जन्नत का हुक्म हो या दोज़ख़ का।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं ने ज़ारह बिन औफ़ा रह॰ को उनके इंतिक़ाल के बाद ख़्वाब में देखा तो मैं ने पूछा कि सबसे बढ़ा हुआ अमल क्या है? उन्होंने फ़रमाया, तवक्कुल और उम्मीदों का मुख़्तसर रखना। हज़रत सुफ़्यान सौरी रह॰

फ़रमाते हैं कि ज़ुहद उम्मीदों के मुख़्तसर करने का नाम है, मोटा खाने और जुब्बा पहनने का नाम नहीं है। हज़रत दाऊद ताई रह० फ़रमाते हैं कि अगर मैं यह उम्मीद रखूँ कि मैं एक महीना ज़िंदा रहूँगा तो मैं अपने आप को बड़ा मुज्रिम समझूँ और इसकी किस तरह उम्मीद कर सकता हूँ ऐसी हालत में कि मैं देखता हूँ कि आए दिन लोगों को हवादिस कभी रात में पकड़ लेते हैं कभी दिन में पकड़ लेते हैं।

हज़रत शक़ीक़ बल्ख़ी रह० अपने एक उस्ताद अबू हाशिम रमानी रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उनकी चादर के कोने में कुछ बंध रहा था, अबू हाशिम रह० ने पूछा, यह क्या है? अर्ज़ किया कि मेरे एक दोस्त ने तरबूज़ दिये थे, मेरा दिल चाहता है कि आज शाम को आप उनसे इफ़्तार कर लें। अबू हाशिम रह० ने कहा, शक़ीक़ तुम्हें यह उम्मीद है कि तुम रात तक ज़िंदा रहोगे? (मैं तुमको ऐसा नहीं समझता था, अब) मैं तुम से कभी नहीं बोलूँगा। यह कह कर अंदर चले गये और किवाड़ बंद कर लिये। क़अ्क़ाअ बिन हकीम रह० कहते हैं कि मैं तीस बरस से हर वक़्त मौत के लिए तैयार हूँ अगर वह आ जाए तो मुझे ज़रा भी उसकी ताख़ीर की ख़्वाहिश न हो। सुफ़्यान सोरी रज़ि० कहते हैं कि मैं कूफ़ा की मस्जिद में हर वक़्त मौत का इंतिज़ार करता हूँ, अगर वह आ जाए तो मुझे न किसी से कुछ कहना, न सुनना, न मेरा किसी के पास कुछ चाहिए, न किसी का मेरे पास।

अबू मुहम्मद ज़ाहिद रह० कहते हैं कि मैं एक जनाज़े के साथ चला, हज़रत दाऊद ताई रह० भी साथ थे क़ब्रस्तान पहुँच कर वह एक जगह अलाहिदा बैठ गए, मैं भी उनके पास बैठ गया, वह फ़रमाने लगे कि जो शख़्स अल्लाह तआला की वईद से डरता हो, उसके लिए दूर का सफ़र (यानी आख़िरत का) आसान है और जिस शख़्स की उम्मीदें लम्बी होती हैं, उसका अमल सुस्त हो जाता है और जो चीज़ आने वाली है (यानी मौत) वह क़रीब है। भाई एक बात समझ ले कि जो चीज़ भी तुझे तेरे रब से अपनी तरफ़ मशग़ूल कर ले, वह मनहूस है। एक बात सुनो, जितने आदमी दुनिया में हैं, सब ही को क़ब्र में जाना है। उस वक़्त उनको उस चीज़ की नदामत होगी जो यहां छोड़ दी और उस चीज़ की ख़ुशी होगी जो आगे भेज दी और जिस चीज़ पर मरने वाले को नदामत है, उस पर ये रहने वाले (वारिस) लड़ते झगड़ते हैं, मुक़दमे बाज़ी करते हैं।

(एह्या)

फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० इर्शाद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स उम्मीदों को मुख़्तसर रखे, हक़ तआला शानुहू चार क़िस्म के इकराम उस पर करते हैं:-

1. अपनी ताअत पर उसको क़ुव्वत अता फ़रमाते हैं और जब उसको अंक़रीब मौत का यक़ीन होता है तो अमल में ख़ूब कोशिश करता है। और नागवार चीज़ों से मुतास्सिर नहीं होता।

2. उसका ग़म कम हो जाता है।

3. रोज़ी की थोड़ी मिक़्दार पर राज़ी हो जाता है।

4. उसके दिल को मुनव्वर कर देते हैं। उलमा ने कहा है कि दिल का नूर चार चीज़ों से पैदा होता है:-

1. ख़ाली पेट से।

2. नेक आदमी के पास रहने से।

3. गुज़रे हुए गुनाहों को याद करने (और उन पर नदामत) से और

4. उम्मीदों के मुख़्तसर करने से और जिस शख़्स की उम्मीदें लंबी लंबी होती हैं उसको हक़ तआला शानुहू चार क़िस्म के अज़ाबों में मुब्तला कर देते हैं:-

1. इबादत में काहिली पैदा हो जाती है।

2. दुनिया का ग़म ज़्यादा सवार हो जाता है।

3. माल के जमा करने और बढ़ाने का फ़िक्र हर वक़्त मुसल्लत रहता है।

4. दिल सख़्त हो जाता है, और उलमा ने लिखा है कि दिल की सख़्ती चार चीज़ों से पैदा होती है :-

1. ज़्यादा शिकमसेरी से।

2. बुरी सोहबतों से।

3. गुनाहों को याद न करने से।

4. उम्मीदों के लंबी होने से, इसलिए ज़रूरी है कि आदमी लंबी लंबी उम्मीदें हरगिज़ न बांधे। हर वक़्त यह फ़िक्र रहना चाहिए कि न मालूम कौन सा सांस ज़िन्दगी का आख़िरी सांस हो, (किस वक़्त दिल की हरकत बंद हो जाये।)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० से

इर्शाद फ़रमाया कि अगर तू (क़ियामत में) मेरे साथ रहना चाहती है तो दुनिया में ऐसे गुज़ार देना, जैसा कि मुसाफ़िर सवारी पर जाता जाता कहीं ज़रा ठहर जाए, और मालदारों के पास बैठने से एहतिराज़ करना और कपड़े को उस वक़्त तक बेकार करके न छोड़ना जब तक कि उसमें पैवन्द न लग जायें। अबू उस्मान नहदी रह॰ कहते हैं कि मैं ने हज़रत उमर रज़ि॰ को मिम्बर पर ख़ुत्बा पढ़ते हुए देखा और उनके कुर्ते में बारह पैवंद लग रहे थे। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

(١٠) عَنْ سَهل بن سعدٌ قال جاء رجل الى النبى صلى الله عليه وسلم فقال دلنى على عمل اذا عملته احبنى الله واحبنى الناس قال ازهد فى الدنيا يحبك الله وازهد فيما عند الناس يحبك الناس رواه الترمذى وابن ماجه كذافى المشكوٰة

10. एक सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिस से अल्लाह जल्ल शानुहू भी मुझ से मुहब्बत फ़रमावें और आदमी भी मुझ से मुहब्बत करने लगें। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया से बे रग़्बती पैदा कर लो, हक़ तआला शानुहू तुमको महबूब रखेंगे और लोगों के पास जो चीज़ें हैं (माल वग़ैरह) उनसे बे रग़्बती पैदा कर लो, वे भी तुम से मुहब्बत करने लगेंगे।

फ़ायदाः- दुनिया से बे रग़्बती पर हक़ तआला शानुहू की मुहब्बत, आख़िरत का एज़ाज़ व इकराम वग़ैरह उमूर तो पहली रिवायात में बहुत कसरत से गुज़र ही चुके हैं, दूसरा मज़्मून कि लोगों के अमवाल पर निगाह न रखी जाये, इसी से उनके दिलों में भी मुहब्बत पैदा होती है, बड़े तजुर्बे की बात है। हर शख़्स को हर वक़्त इसका तजुर्बा होता रहता है कि जितने भी आपस में बेहतरीन ताल्लुक़ात हों लेकिन जहां किसी चीज़ के सवाल का ज़िक्र आ जाता है, सारे ही ताल्लुक़ात और अक़ीदतें ख़त्म हो जाती हैं।

हज़रत जिब्रील अलैहि॰ एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप जितने दिन भी ज़िंदा रहें मौत बहर हाल एक दिन आने वाली चीज़ है, और जो अमल भी आप करेंगे (भला या बुरा) उसका बदला मिलेगा, और जिस से भी आप (दुनिया में) ताल्लुक़ात पैदा करें, उस से एक दिन जुदा होना पड़ेगा (उसकी मौत से हो या अपनी मौत से हो) यह बात

ज़हनन-शीन कर लें कि आदमी का शर्फ़ (बुज़ुर्गी) तहज्जुद की नमाज़ है और आदमी की इज़्ज़त लोगों से इस्तिग्ना है। *(तर्ग़ीब)*

यानी आदमी की इज़्ज़त उसी वक़्त तक है जब तक लोगों की चीज़ों पर निगाह न हो, और जहां कहीं दूसरों के माल पर निगाह पड़ी, सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाती है।

हज़रत उरवः रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब तुम में से कोई शख़्स दुनिया की ज़ीनत और उसकी रौनक़ को देखे (और वह अच्छी लगे, तो (उसको चाहिए कि अपने घर जाकर घर वालों को नमाज़ में मशग़ूल कर दे। इस लिए कि हक़ तआला शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाया है कि "ला तमुद्दन्-न ऐनै-क" (ताहा, रूकूअ 8) और हरगिज़ आप अपनी आंख उठा कर भी न देखें उन चीज़ों की तरफ़ जो हम ने इन दुनियादारों को दे रखी हैं, ताकि इन चीज़ों से इनका इम्तिहान लें, यह महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ है और आपके रब का अतिय्या जो आख़िरत में मिलेगा, इस से बदरजहा बेहतर है और हमेशा रहने वाला है और अपने मुताल्लिक़ीन को नमाज़ का हुक्म कीजिए और ख़ुद भी इसके पाबंद रहिए। *(दुर्रे मंसूर)*

दूसरी जगह हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि "ला तमुद्दन्-न ऐनै-क" *(हिज्र, रूकूअ 6)*

आप आंख उठा कर भी न देखें उस (ज़ेब व ज़ीनत) को जो हम ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दे रखा है, इस आयते शरीफ़ा की तफ़सीर में हज़रत सुफ़यान बिन उयैनः रह॰ फ़रमाते हैं, कि जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक की दौलत से नवाज़ा हो, फिर वह दुनिया की किसी चीज़ की तरफ़ भी निगाह उठा कर देखें उसने क़ुरआन पाक को बहुत कम समझा। (यानी उसकी क़द्र नहीं की।)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि फ़क़्र बहुत महमूद चीज़ है, लेकिन यह ज़रूरी है कि वह शख़्स क़नाअत करने वाला हो, लोगों के पास जो अमवाल हैं, उनमें तमअ् न रखता हो, उनकी तरफ़ ज़रा भी इल्तिफ़ात न करता हो, और न माल के कमाने की उसमें हिर्स हो, और ये सब चीज़ें जब ही हो सकती हैं जब कि आदमी अपने इख़राजात में निहायत कमी करने वाला हो, खाने में, लिबास में, मकान में कम से कम और मजबूरी के दर्जे में किफ़ायत करने वाला हो,

और घटिया से घटिया चीज़ पर क़नाअत करने वाला हो, अगर किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस हो तो एक महीने के अंदर अंदर की ज़रूरत का तो ख़्याल हो, उस से आगे की किसी चीज़ की तरफ़ अपने ख़्याल और ध्यान को न लगाये, अगर इस से आगे की सोच में पड़ जायेगा तो क़नाअत की इज़्ज़त से महरूम होकर हिर्स व तमअ् की ज़िल्लत में फंस जायेगा। और उसकी वजह से बुरी आदतें पैदा हो जायेंगी। मकरूह चीज़ें इख़्तियार करना पड़ जायेंगी, इसलिए कि आदमी तब्ई तौर पर हरीस है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अगर आदमी के लिए दो जंगल सोने के हो जायें, तब भी वह तीसरे की फ़िक्र में लग जायेगा। हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक सूरः इतनी बड़ी, जितनी कि सूरः बराअत है, नाज़िल हुई थी, फिर वह मंसूख़ हो गयी, उसमें से यह मज़्मून याद है कि अल्लाह तआला शानुहू इस दीन की मदद ऐसे (फ़ासिक़ और काफ़िर) लोगों से भी कर देते हैं जिनका कोई हिस्सा दीन में न हो, और अगर आदमी के लिए दो जंगल माल के हो जायें तो वह तीसरे की तमन्ना करता है। आदमी का पेट (क़ब्र की) मिट्टी ही भर सकती है। अलबत्ता अगर कोई शख़्स तौबा कर ले तो हक़ तआला शानुहू तौबा को क़ुबूल करते हैं और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि दो हरीस आदमियों का कभी पेट नहीं भरता, एक वह शख़्स जो इल्म का हरीस हो और (उसको इल्मी चस्का लग गया हो, किसी वक़्त उसका दिल नहीं भरता,) दूसरा वह शख़्स जो माल का हरीस हो, और चूंकि आदमी की जिबिल्लत में यह मुहलिक चीज़ है, इसी बिना पर हक़ तआला शानुहू ने और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़नाअत की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुबारक है वह शख़्स जिसको हक़ तआला शानुहू ने इस्लाम की दौलत से नवाज़ा हो और सिर्फ़ ज़रूरत के बक़द्र उसकी रोज़ी हो और वह उस पर क़ानेअ् हो। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद यह भी है कि क़ियामत के दिन कोई शख़्स ग़रीब हो या अमीर, ऐसा न होगा जो इसकी तमन्ना न करता हो कि काश दुनिया में उसको सिर्फ़ ज़रूरत के दर्जे की रोज़ी मिलती, इससे ज़्यादा न मिलती। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने तमअ् से और माल कमाने में ज़्यादा कोशिश करने से मना फ़रमाया है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि लोगो, माल के हासिल करने में अच्छा तरीक़ा इख़्तियार किया करो (बुरे तरीक़ों से न कमाओ) इसलिए कि आदमी को

मुक़द्दर से ज़्यादा तो मिलता नहीं और जो मुक़द्दर है वह बहरहाल मिल कर रहेगा। आदमी उस वक़्त तक मर ही नहीं सकता जब तक उसका जो मुक़द्दर हिस्सा है, वह ज़लील और मजबूर होकर उस तक न पहुँच जाये। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि तू मुत्तक़ी बन जा, तू सबसे बड़ा इबादत करने वाला हो जायेगा, और (कम से कम मिक़्दार पर) क़नाअत करने वाला बन जा, तू सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार हो जायेगा, और अपने भाई के लिए भी उस चीज़ को पसंद कर, जिसको अपने लिए पसंद करता है, तू कामिल मोमिन बन जायेगा।

हज़रत अबूअय्यूब रज़ि॰ फ़रमाते हैं, एक शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सल्ल॰ मुझे मुख़्तसर सी नसीहत कर दीजिए (ताकि मैं उसको मज़बूत पकड़ लूँ) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया जब नमाज़ पढ़ो तो ऐसी पढ़ो जैसा कि उम्र की आख़िरी नमाज़ यही हो (जब आदमी को यह ख़्याल आ जायेगा कि यह बिल्कुल आख़िरी नमाज़ है तो फिर जिस क़दर ज़्यादा एहतिमाम और ख़ुशूअ् ख़ुज़ूअ से पढ़ेगा वह ज़ाहिर है) और कोई ऐसी बात ज़बान से न निकालो, जिसकी मअ़ज़िरत करना (और माफ़ी चाहना) पड़े, और अपने दिल को पक्के तौर से इस चीज़ से मायूस कर लो जो दूसरे के पास हो (कि उसकी तरफ़ ज़रा सा भी तुम्हें इल्तिफ़ात न हो) हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि तमअ् करना फ़क़्र (और मुहताजगी) है और ना उम्मीदी ग़िना है। जो शख़्स ऐसी चीज़ों से ना उम्मीद हो जाये जो दूसरों के क़ब्ज़े में है वह उनसे मुस्तग़नी रहता है। एक हकीम से किसी ने पूछा कि ग़िना क्या चीज़ है? उन्होंने फ़रमाया कि तमन्नाओं का कम करना और जो अपने लिए काफ़ी हो जाये, उस पर ख़ुश रहना। मुहम्मद बिन वासेअ् रह॰ सूखी रोटी को पानी में भिगो कर खा लिया करते थे। और फ़रमाया करते थे कि जो इस पर क़नाअत कर ले, वह किसी का भी मुहताज न हो। एक हकीम से किसी ने पूछा, तुम्हारी मालियत क्या है? फ़रमाने लगे ज़ाहिर में ख़ुशहाल रहना, बातिन में इख़्तिसार और मियाना रवी इख़्तियार करना, और दूसरों के पास जो चीज़ें हैं, उनसे उम्मीद न रखना। हक़ तआला शानुहू का (हदीस में) इर्शाद है कि आदम के बेटे! अगर सारी दुनिया तुझको मिल जाये, तब भी तो तू उसमें से अपनी हाजत के बक़द्र ही खायेगा। अगर मैं इतनी मिक़्दार तुझे दे दूँ और उस से ज़ायद न दूँ जिसका तुझे हिसाब देना पड़े तो यह तो मैं ने तुझ पर एहसान किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब किसी से कोई

हाजत तलब करे तो मामूली तरीक़े से तलब करे, ऐसा न कहे कि आप तो ऐसे हैं, आप तो ऐसे हैं, चुना हैं, चुनीं हैं। कि इस से उसकी तो कमर तोड़ दोगे (कि वह उज्ब और तकब्बुर में हलाक हो जायेगा) और तुम्हें मुक़द्दर से ज़्यादा न मिलेगा। कहते हैं कि बनू उमैया के एक बादशाह (सुलैमान बिन अब्दुल मलिक) ने हज़रत अबू हाज़िम रज़ि० को बड़े इस्रार से लिखा कि आप को कुछ ज़रूरत हुआ करे तो मुझ से मंगा लिया करें। उन्होंने जवाब में लिखा कि मैं ने अपनी ज़रूरतें अपने आक़ा की ख़िदमत में पेश कर दीं, उसने उन पर जो कुछ मुझे अता फ़रमा दिया, मैं ने उस पर क़नाअत कर ली। एक हकीम का इर्शाद है कि मैं ने सब से ज़्यादा ग़म में मुब्तिला रहने वाला, हसद करने वाले को पाया, और सबसे बेहतरीन ज़िन्दगी गुज़ारने वाला क़नाअत करने वालों को पाया, और सब से ज़्यादा सब्र करने वाला हरीस को पाया (कि हर चीज़ की हिर्स करता है, फ़िर वह मिलती नहीं तो सब्र करता है) और सब से ज़्यादा लतीफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला दुनिया के छोड़ देने वाले को पाया, और सब से ज़्यादा नदामत वाला उस आलिम को पाया जो हद से बढ़ने वाला हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० ने हज़रत कअब अह्बार रज़ि० से दर्याफ़्त किया कि उलमा के क़ुलूब से इल्म को क्या चीज़ ज़ाया कर देती है? हालांकि पढ़ते वक़्त उन्होंने समझ कर पढ़ा था, उसको याद रखा था। हज़रत कअब रज़ि० ने फ़रमाया, तमअ् और हिर्स और लोगों से अपनी हाजतों का मांगना। किसी शख़्स ने हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० से हज़रत कअब रज़ि० के कलाम की शरह पूछी तो उन्होंने फ़रमाया कि जब आलिम किसी चीज़ की तमअ् करने लगता है तो उसकी तलब में लग जाता है, जिस से उसका दीन बर्बाद हो जाता है (कि उसकी तलब की मशग़ूली दीन की मशग़ूली को खो देती है) और हिर्स उसको हर हर चीज़ की तरफ़ खींचती है हत्ताकि उसका हर चीज़ को यह दिल चाहता है कि यह भी मुझे मिल जाये, यह भी मुझे मिल जाये, फिर लोगों से उसके पूरा करने का तालिब होता है। जो शख़्स उसकी तलब को पूरा कर देता है, उसके सामने झुकना पड़ता है, उसका मुतीअ् होना पड़ता है, वह जिधर चाहे खींच कर ले जाये, तुम्हें झक मार कर उसका कहना मानना पड़ता है। जब वह गुज़रे तो उसको सलाम करना पड़ता है, बीमार हो जाये तो इयादत करना पड़ता है, और यह सलाम और इयादत अल्लाह के वास्ते नहीं होती बल्कि दुनिया की मुहब्बत की वजह से होती है। (और जब दुनिया की वजह से हुई तो

उसका सवाब मालूम है) इसके बाद हज़रत फ़ुज़ैल रह० ने फ़रमाया कि यह हदीस (अमल के लिए और कारआमद होने के लिए) सौ हदीसों से बढ़ कर है।

(एह्या)

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सल्ल० मुझे मुख़्तसर सी नसीहत फ़रमा दीजिए। (ताकि मैं उस को मज़बूत पकड़ लूं) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो चीज़ दूसरों के पास है, उस से अपने को बिल्कुल मायूस बना लो (ज़रा भी उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात न करो) और तमअ् से अपने को बिल्कुल महफ़ूज़ रखो। इसलिए कि तमअ् फ़ौरी फ़क़्र है (यानी उस चीज़ की ज़रूरत तो जब होगी, जब होगी उसकी तरफ़ एहतियाज अभी से हो गयी) और अपने आप को ऐसी चीज़ से बचाओ, जिसकी मअ्ज़िरत करना पड़े।

(तर्ग़ीब)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० की रिवायत से इस क़िस्म का एक सवाल व जवाब और भी क़रीब ही गुज़र चुका है, इन दोनों हदीसों में और नसीहतें मुश्तरक़ हैं एक एक नसीहत हर शख़्स के मुनासिबे हाल अलाहिदा है, और बाज़ रिवायात में सअद रज़ि० की हदीस में चार बातें मज़कूर हैं। तीन वे जो हज़रत अबूअय्यूब रज़ि० की रिवायत में गुज़रीं और चौथी तमअ् की इसमें ज़ायद है।

(तर्ग़ीब)

और यह बात कि दूसरों के पास जो चीज़ हो, उस से अपने आपको बिल्कुल मायूस रखो, दोनों में मुश्तरक और बड़ी अहम चीज़ है कि इसकी वजह से न तो खुद को परेशान होना पड़ता है और न दूसरे के सामने झुकना पड़ता है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स अपने घर में अम्न से हो और अल्लाह तआला शानुहू ने बदन की सेहत अता फ़रमा रखी हो और एक दिन का खाना उसके पास मौजूद हो तो गोया दुनिया सारी की सारी उस के पास मौजूद है।

(तर्ग़ीब)

फिर उसको किसी दूसरे की किसी चीज़ की तरफ़ क्या निगाह लगाना है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से भी इस क़िस्म का वाक़िआ नक़ल किया गया कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि मुझे कोई मुख़्तसर बात बता दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि नमाज़ ऐसी पढ़ो गोया यह आख़िरी नमाज़ है (और तुम हक़ तआला शानुहू के सामने हाज़िर हो) इसलिए

कि अगर तुम उसको नहीं देख सकते तो वह तो तुम्हें बहरहाल देख रहा है और जो चीज़ दूसरों के क़ब्ज़े में है उस से मायूस बने रहो, तुम सबसे ज़्यादा ग़नी होगे और अपने आपको ऐसी चीज़ से (क़ौल हो या फ़ेअ्ल) बचाओ जिसकी फिर मअ्ज़िरत करना पड़े। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत सअद रज़ि॰ से भी एक शख़्स ने यह दरख़्वास्त की कि आप मुझे कोई नसीहत करें, उन्होंने फ़रमाया, जब नमाज़ पढ़ो तो बहुत अच्छी तरह वुज़ू करो, इसलिए कि बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती और बग़ैर नमाज़ के ईमान नहीं ,फिर जब नमाज़ शुरू करो तो ऐसी पढ़ो जैसा कि आख़िरी नमाज़ हो और बहुत सी हाजतें तलब न किया करो, इसलिए कि यह भी फ़ौरी फ़क़्र है, और जो चीज़ दूसरों के क़ब्ज़े में हो उस से अपने आप को बिल्कुल मायूस रखो, यही असल ग़िना है और कोई कलाम या कोई फ़ेअ्ल ऐसा न करो जिस से फिर मअ्ज़िरत करना और माफ़ी चाहना पड़े। *(इत्तिहाफ़ुस्सलात)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि बाज़ आदमी यह समझते हैं कि माल का छोड़ देने वाला ज़ाहिद है, यह सही नहीं, इसलिए कि माल का छोड़ देना और मोटे कपड़े पहन लेना हर ऐसे शख़्स के लिए आसान है जो लोगों में अपनी वक़अत चाहता हो, उनके यहां अपनी तारीफ़ का तालिब हो। कितने ही दुनिया से बे ताल्लुक़ी का इज़्हार करने वाले, जो थोड़े से खाने पर क़नाअत करते हैं और अपना दरवाज़ा हर वक़्त बंद रखते हैं, बल्कि ऐसे बंद मकान में रहते हैं जिसके दरवाज़ा ही न हो, उनका मक़्सद सिर्फ़ यह है कि लोगों के यहां उनकी शुहरत हो और कितने ही उम्दा लिबास पहनने वाले ज़ुह्द का दावा करते हैं और कहते हैं कि वे अच्छा लिबास इत्तिबा-ए-सुन्नत में पहनते हैं और यह कि वे ख़ुद इन कपड़ों वग़ैरह की तरफ़ अपनी ख़्वाहिश से मुतवज्जह नहीं होते बल्कि लोगों के इसरार और ख़्वाहिश से पहनते हैं और मक़्सद यह होता है कि लोग इस क़िस्म के कपड़े हदाया में पेश किया करें। ये दोनों फ़रीक़ दुनिया को दीन के ज़रिये से हासिल करने वाले हैं दुनिया सिर्फ़ माल ही का नाम नहीं, जाह की तलब भी दुनिया है।

ज़ाहिद की तीन अलामतें हैं, जिनको अपने अंदर पैदा करने की कोशिश करना चाहिए:-

1. जो उसके पास मौजूद है, उस से ख़ुश न हो; और जो चीज़ नहीं है

उस पर रंजीदा न हो, बल्कि औला तो यह है कि मौजूदा से रंजीदा हो और जो नहीं उस से खुश हो।

2. उसकी निगाह में उसकी तारीफ़ करने वाला, मज़म्मत करने वाला बराबर हो कि यह जाह के ज़ुह्द की अलामत है और पहली चीज़ माल के ज़ुह्द की अलामत है।

3. हक़ तआला शानुहू से उन्स और मुहब्बत हो और ताआत में हलावत (मिठास) हो। *(एह्या)*

इस जगह दो वाक़िए अपने अकाबिर के नमूने के लिए लिखने को दिल चाहता है, एक तो वह मक्तूबे गरामी जो शैख़ुल मशाइख़ क़ुत्बुल इर्शाद हज़रत गंगोही क़द्दस सिर्रहू ने अपने मुर्शिद शैख़ुल अरब वल अजम हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह साहब अअ्लल्लाहु मराति–बहू की ख़िदमत में लिखा जो मकातीबे रशीदिया में छप भी हो चुका है; उसके अल्फ़ाज़ ये हैं:-

हुज़ूर ने, जो बंदा–ए–नालायक़ के हालात से इस्तिफ़्सार फ़रमाया है, मेरे मावा–ए–दारैन इस नाकस के क्या हालात और किस दर्जे की कोई ख़ूबी है जो आफ़ताबे कमालात के रूबरू अर्ज़ करूँ। बख़ुदा सख़्त शर्मिंदा हूँ, कुछ नहीं हूँ मगर जो इर्शादे हज़रत है तो क्या करूँ, बनाचारी कुछ लिखना पड़ता है। हज़रत मुर्शिदे मन, इल्मे ज़ाहिरी का तो यह हाल है कि आपकी ख़िदमत से दूर हुए, ग़ालिबन अरसा सात साल से कुछ ज़्यादा हुआ है, इस साल तक दो सौ से चंद अदद ज़्यादा आदमी सनदे हदीस हासिल करके गये और अक्सर उनमें वे हैं कि उन्होंने दर्स जारी किया और सुन्नत के एह्या में सरगरम हुए, और इशाअते दीन उनसे हुई, और इस शर्फ़ से ज़्यादा कोई शर्फ़ नहीं, अगर क़ुबूल हो जाये, और हज़रत के अक़दामे नअ्लैन की हाज़िरी के समरे का यह ख़ुलासा है कि जज़्बा–ए–क़ल्ब में ग़ैर हक़ तआला से नफ़ा व ज़रर का इल्तिफ़ात नहीं, वल्लाह बाज़ औक़ात अपने मशाइख़ की तरफ़ से अलाहिदगी हो जाती है, लिहाज़ा किसी के मद्ह (तारीफ़) व ज़म (बुराई) की परवाह नहीं रही और ज़ाम (बुराई करने वालो) व मादेह (तारीफ़ करने वाला) को दूर जानता हूँ और मअ्सियत की तबअन नफ़रत और इताअत की तबअन रग़्बत पैदा हो गयी, और यह असर उसी निस्बते याददाश्त के बेरंग का है जो मिश्काते अनवारे हज़रत से पहुँची है, पस ज़्यादा अर्ज़ करना गुस्ताख़ी और शोख़ चश्मी है। या अल्लाह! माफ़ फ़रमाना

कि हज़रत के इर्शाद से तहरीर हुआ है, झूठा हूँ कुछ नहीं हूँ, तेरा ही ज़िल्ल है, तेरा ही वजूद है, मैं क्या हूँ। कुछ नहीं और वह जो मैं हूँ वह तू है और "मैं" तो ख़ुद शिर्क दर शिर्क है।

أَسْتَغْفِرُ اللهَ أَسْتَغْفِرُ اللهَ أَسْتَغْفِرُاللهَ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

"अस्तग़्फ़िरूल्ला-ह अस्तग़्फ़िरूल्ला-ह अस्तग़्फ़िरूल्ला-ह लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्ला-हि" अब अर्ज़ से माज़ूर फ़रमा कर क़ुबूल फ़रमायें, वस्सलाम। सन् 1306 हि०।

यह गरामी क़द्र मक्तूब विसाल से सतरह साल क़ब्ल का है इन सतरह साल में मदह व ज़म (तारीफ़ व बुराई) की बराबरी में और ग़ैरे हक़ से नफ़ा व ज़रर (नुक़्सान) की तरफ़ इल्तिफ़ात न होने में जो तरक़्क़ियात हुई होंगी, उनका इदराक भी कौन कर सकता है?

दूसरा वाक़िआ जिसको अमीर शाह खां साहब ने अमीरूर्रिवायात में लिखा है, वह लिखते हैं कि तहसील सिकंदराबाद में एक गांव है हसन पुर, मैं ने भी देखा है बहुत बड़ा गांव है, यह एक वक़्त में मौलवी मुहम्मद इस्हाक़ साहब रह० (देहलवी जो मशहूर असातज़ा-ए-हदीस में हैं) और मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहब रह० का था। मौलवी मुज़फ़्फ़र हुसैन साहब रह० (कांधलवी) फ़रमाते थे कि मौलवी मुहम्मद इस्हाक़ साहब रह० और मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहब रह० निहायत सख़ी थे और अक्सर तंगी की वजह से कुछ मलूल से रहते थे, लेकिन एक रोज़ मैं ने देखा कि दोनों भाई निहायत हश्शाश बश्शाश हैं और ख़ुशी में इधर से उधर आते जाते हैं और किताबें यहां से वहां और वहां से यहां रखते और ख़ुशी के लहजे में आपस में बात कर रहे हैं, मैं यह देख कर समझा कि शायद आज कोई बड़ी रक़्म हिन्दुस्तान से आ गयी (दोनों हज़रात मक्का मुकर्रमा में तश्रीफ़ फ़रमा थे) जिस से ये इस क़द्र ख़ुश हैं। यह समझ कर मैं ने चाहा कि वाक़िआ दर्याफ़्त करूँ। मगर बड़े मियां से तो पूछने की हिम्मत न हुई, छोटे मियां से पूछा कि हज़रत, आप आज बहुत ख़ुश नज़र आते हैं इसकी क्या वजह है। उन्होंने ताज्जुब के लहजे में फ़रमाया कि तुम ने नहीं सुना? मैं ने कहा नहीं, फ़रमाया कि हमारा गांव हसनपुर ज़ब्त हो गया, यह ख़ुशी उसी की है क्योंकि जब तक वह था, हमको ख़ुदा पर पूरा तवक्कुल न था और अब सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा रह गया।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू इस वाक़िए पर लिखते हैं कि मुझे हज़रत ग़ौस पाक रह० की ख़ुशी याद आ गयी कि जिस वक़्त ख़ादिम ने एक क़ीमती आईने के टूट जाने की डरते डरते इस मिस्रअ् से इत्तिला दी कि "अज़ क़ज़ा आईना-ए-चीनी शकिस्त" आपने फ़िल बदीह फ़रमाया, "ख़ूब शुद असबाबे ख़ुद बीनी शकिस्त"। *(अमीरुर्रिवायात)*

पहले मिस्रअ् का तर्जुमा यह है कि तक़दीर से चीनी का आईना टूट गया। दूसरे का तर्जुमा यह है, बहुत अच्छा हुआ कि ख़ुदबीनी के असबाब जाते रहे। फ़क़त।

(١١) عن عائشةؓ قالت ماشبع رسول الله صلى الله عليه وسلم من خبز شعير يومين متتابعين حتى قبض (رواه الترمذى فى الشمائل)

11. हज़रत आईशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम उम्र में अपनी वफ़ात तक कभी जौ की रोटी भी दो दिन लगातार पेट भर कर नोश नहीं फ़रमायी।

फ़ायदाः- यही हुज़ूर सल्ल० की ज़िन्दगी थी। दो चार हदीसों में नहीं, सैंकड़ों अहादीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी का यही नक़्शा मौजूद है। आज मुसलमानों के फ़क़्र व फ़ाक़े का इस क़दर शोर है कि हद नहीं, मगर कितने आदमी ऐसे होंगे जिनको उम्र भर में दो दिन भी पेट भर कर मामूली रोटी न मिली हो। शमाइल ही की एक और हदीस में हज़रत आईशा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सारे घराने का यही अमल नक़ल करती हैं कि हुज़ूर सल्ल० के घर वालों ने हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात तक कभी भी दो दिन लगातार जौ की रोटी से भी पेट नहीं भरा।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० पर कई कई रातें मुसलसल ऐसी गुज़र जाती थीं कि हुज़ूर सल्ल० को और हुज़ूर सल्ल० के घर वालों को शाम को खाना मयस्सर नहीं होता था, रात भर वे सब के सब फ़ाक़े से गुज़ार देते थे। और जौ की रोटी पर हुज़ूर सल्ल० का गुज़ारा था। हज़रत सुहैल रज़ि० से किसी ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल० का मामूल छने हुए आटे की रोटी खाने का था? हज़रत सुहैल रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ने विसाल तक छने हुए आटे को देखा भी न होगा, फिर उसने पूछा कि क्या हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में आप हज़रात के यहां छलनियां नहीं थीं, हज़रत सुहैल रज़ि० ने फ़रमाया कि

छलनियों का दस्तूर नहीं था। उन्होंने (ताज्जुब से) पूछा कि बग़ैर छने जौ के आटे को क्यों कर खाते थे? हज़रत सुहैल रज़ि॰ ने फ़रमाया कि आटे को हरकत देकर उस में फूँक मार दिया करते थे, जिस से (मोटे मोटे) तिनके उड़ जाते थे, बाक़ी को पका लिया करते थे। *(शमाइले तिर्मिज़ी)*

फ़ायदाः- आज गेहूँ की रोटी बग़ैर छने आटे की खाना मुश्किल समझा जाता है। ये हज़रात जौ के आटे की रोटी बग़ैर छने नोश फ़रमाते थे, वह भी पेट भर कर न मिलती थी। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जब मैं पेट भर खाना खाती हूँ तो मेरा रोने को (बे इख़्तियार) दिल चाहता है, पस रोने लगती हूँ, किसी ने अर्ज़ किया यह क्या बात है? फ़रमाने लगीं, मुझे हुज़ूर सल्ल॰ का ज़माना याद आ जाता है कि गोश्त से या रोटी से कभी भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को विसाल तक दिन में दो मर्तबा पेट भर कर तनावुल फ़रमाने की नौबत न आयी। *(शमाइल)*

सईद मक़बरी रह॰ कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ का एक जमाअत पर गुज़र हुआ, वे लोग खाना खा रहे थे और मुर्ग़ी भुनी हुई उनके सामने रखी थी। उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ की तवाज़ो की। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ ने इंकार फ़रमा दिया और यह फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल॰ इस हालत में दुनिया से तशरीफ़ ले गये कि जौ की रोटी से पेट भरने की नौबत नहीं आयी।

(मिश्कात)

मेरा किस तरह दिल चाहे कि मुर्ग़ खाऊँ। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ का यह इर्शाद आम हालत के एतिबार से है वर्ना मुर्ग़ी का खाना हुज़ूर सल्ल॰ से भी साबित है।

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर भूखे रहते थे बग़ैर नादारी के यानी ऐसा भी होता था कि खाना मौजूद हो फिर भी हुज़ूर सल्ल॰ कम तनावुल फ़रमाते थे इसलिए कि भूखे रहने से अनवार की कसरत होती है।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स दुनिया में खाने पीने की मिक़्दार कम रखता है, हक़ तआला शानुहू उस पर फ़रिश्तों के सामने तफ़ाख़ुर के तौर पर इर्शाद फ़रमाते हैं कि देखो मैं ने इस को खाने पीने की कमी में मुब्तला किया, इस ने सब्र किया, तुम गवाह रहो कि जो लुक़्मा इस ने कम किया है, उसके

बदले में जन्नत के दर्जे इसके लिए तजवीज़ करता हूँ। *(एह्या)*

यह बात हर जगह मलहूज़ रखना चाहिए कि अपने इख़्तियार से इतनी कमी हरगिज़ न करे, जो सेहत को मुज़िर हो कर दूसरे दीनी कामों में नुक़्सान का सबब हो, इसी वजह से रोज़े में सेहरी को सुन्नत क़रार दिया गया कि रोज़े में ज़ोअफ़ न पैदा हो, इसी वजह से दोपहर का सोना सुन्नत क़रार दिया गया कि रात के जागने में मुईन (मददगार) हो।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि कोई बर्तन भरने के एतिबार से पेट से बुरा नहीं। (यानी जितना पेट का भरना बुरा है उतना किसी बर्तन का भरना बुरा नहीं है।) और चूंकि मजबूरी है, खाना पड़ता ही है इसलिए एक तिहाई पेट खाने के लिए, एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई सांस के लिये रखना चाहिए।

एक मर्तबा हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ एक रोटी का टुकड़ा हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुईं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया ! यह क्या चीज़ है? हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सल्ल॰ मैं ने आज रोटी पकाई थी। मेरे दिल ने बग़ैर आपके नोश फ़रमाये खाना गवारा न किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तीन दिन के अंदर यह पहली चीज़ है जो तुम्हारे बाप के मुंह में जा रही है (यानी तीन दिन से कोई चीज़ खाने की नौबत नहीं आयी,) हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया में जो लोग भूखे रहने वाले हैं, आख़िरत में वही लोग पेट भरने वाले हैं और हक़ तआला शानुहू को वह शख़्स बहुत नापसंद है जो इतना खाये कि बद-हज़्मी हो जाये। जो शख़्स किसी ऐसी चीज़ के खाने को तर्क करे, जिसको दिल चाहता है, उसके लिए जन्नत में दर्जे हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि पेट भर कर खाने से एहतियात रखो, यह ज़िन्दगी में भारीपन का सबब है और मरने के बाद गंदगी और उफ़ूनत है। हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह॰ का इर्शाद है कि इबादत एक पेशा है, जिसकी दुकान तंहाई है और उसका आला (जिससे पेशा किया जाये,) भूखा रहना है। हज़रत फ़ुज़ैल रह॰ अपने दिल से फ़रमाया करते थे कि तू भूखा रहने से डरता है, यह डरने की चीज़ नहीं है, तेरी क्या हक़ीक़त है, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ भूखे रह चुके हैं। हज़रत फ़ुज़ैल रह॰ यह भी कहा करते थे, या अल्लाह, तूने मुझे और मेरे अहल व अयाल को भूखा रखा, अंधेरी रातों में बग़ैर रोशनी के रखा, यह तो तू अपने नेक बंदों के

साथ किया करता है। या अल्लाह, तूने मुझे यह दौलत किस अमल पर अता फ़रमाई। यानी इस पर ताज्जुब किया करते थे कि मैं (अपने ख़्याल के मुवाफ़िक़) नेक तो हूँ नहीं फिर यह नेक लोगों का सा बर्ताव मेरे साथ किस अमल के सिले में है।

हज़रत कहमस रह० फ़रमाया करते थे, या अल्लाह, तूने मुझे भूखा रखा, नगां रखा, अंधेरी रातों में बग़ैर चिराग़ के रखा (मैं तो इन एहसानात के क़ाबिल न था, ये दर्जे) किन चीज़ों की वजह से मुझे मिले? हज़रत फ़तह मूसली रह० को जब कोई सख़्त बीमारी लाहिक़ होती या भूख की शिद्दत होती तो कहते, या अल्लाह, तूने मुझे भूख और मर्ज़ में मुब्तला किया और तू यह इब्तिला अपने नेक बंदों को दिया करता है। मैं किस नेक अमल से तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ। मालिक बिन दीनार रह० ने मुहम्मद बिन वासेअ् रह० से कहा, बड़ा मुबारक है वह शख़्स जिस के लिए मामूली सी पैदावार ऐसी हो, जिस से वह ज़िंदा रह सके और लोगों से मांगने का मुहताज न हो। मुहम्मद बिन वासेअ् रह० ने फ़रमाया, मुबारक वह शख़्स है जो सुबह को भी भूखा रहे, शाम को भी भूखा रहे और उस पर भी अपने रब से राज़ी रहे। तौरात में लिखा है कि जब तू पेट भरकर खाना खाया करे तो भूखे आदमियों का भी दिल में ख़्याल लाया कर। अबू सुलैमान रह० कहते हैं कि मैं रात के खाने में से एक लुक़्मा कम खाऊँ, यह मुझे सारी रात के जागने से ज़्यादा पसंद है। उनका यह भी इर्शाद है कि भूख अल्लाह का ऐसा ख़ज़ाना है, जो अपने दोस्तों ही को देता है।

हज़रत सह्ल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रज़ि० मुसलसल बीस बीस दिन से ज़्यादा भूखे गुज़ार देते थे और उनकी साल भर की ग़िज़ा की मीज़ान एक दिहम यानी (बाईस नये पैसे) होती थी। यह भूखे रहने की बड़ी तर्ग़ीब दिया करते थे। यहां तक कहा करते थे कि ज़रूरत से ज़ायद खाना छोड़ने के बराबर कोई भी नेक अमल नहीं, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि.व सल्लम का यही इत्तिबाअ है, इन का यह भी इर्शाद है कि हिक्मत और इल्म भूखे रहने में है और जह्ल और गुनाह पेट भर कर खाने में मर्कूज़ है। उनका यह भी इर्शाद है कि आदमी अब्दाल में से नहीं हो सकता। जब तक भूखा रहने, और चुप रहने और रातों को जागने का आदी न हो, और तंहाई को पसंद न करता हो। उनका यह भी इर्शाद है कि जो शख़्स भूखा रहता है, उसको वसवसे कम आया करते हैं।

अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह० क़सम खाकर फ़रमाया करते थे कि हक़

तआला शानुहू किसी शख़्स की सफ़ाई बग़ैर भूखे रहने के नहीं करते और इसी की वजह से बुज़ुर्ग पानी पर चला करते हैं, इसी की वजह से उन को तैयुल-अर्ज़ हासिल होता है। *(एह्या)*

तैयुल-अर्ज़ बुज़ुर्गों की एक ख़ास रफ़्तार का नाम है, जिसकी वजह से चंद क़दम में हज़ारों मील तै कर लेते हैं।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि भूखे रहने में दस फ़ायदे हासिल होते हैं:-

1. दिल की सफ़ाई इस से हासिल होती है, तबीअत तेज़ होती है। बसीरत बढ़ जाती है, इसलिए कि पेट भर कर खाने से तबीअत में बलादत आती है, और दिल का नूर जाता रहता है, मेअ्दे के बुख़ारात दिमाग़ को घेर लेते हैं जिसका असर दिल पर भी पड़ता है। कि वह फ़िक्र में दौड़ने से आजिज़ हो जाता है, बल्कि कम उम्र बच्चा अगर ज़्यादा खाने लगे तो उसका हाफ़िज़ा भी ख़राब हो जाता है, ज़ेहन भी कुन्द हो जाता है। अबू सुलैमान दारानी रह० फ़रमाते हैं कि भूखा रहने की आदत पैदा करो, यह नफ़्स को मुतीअ् करता है, दिल को नर्म करता है और आसमानी उलूम इस से हासिल होते हैं।

हज़रत शिब्ली रह० फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह तआला के लिए जिस दिन भूखा रहा, मैं ने अपने अंदर इबरत और हिक्मत का एक दरवाज़ा खुला हुआ पाया। इसी वजह से हज़रत लुक़्मान अलैहि० की अपने बेटे को नसीहत है कि बेटा, जब मेअ्दा भर जाता है तो फ़िक्र सो जाता है और हिक्मत गूंगी हो जाती है और अअ्ज़ा इबादत से सुस्त पड़ जाते हैं। अबू यज़ीद बुस्तामी रह० फ़रमाते हैं कि भूख एक अब्र (बादल) है जब आदमी भूखा होता है तो वह अब्र दिल पर हिक्मत की बारिश करता है।

2. दूसरा फ़ायदा दिल का नर्म होना है जिस से ज़िक्र वग़ैरह का असर दिल पर होता है। बसा औक़ात आदमी बड़ी तवज्जोह से ज़िक्र करता है। लेकिन दिल उस से लज़्ज़त हासिल नहीं करता, और न उस से मुतास्सिर होता है, और जिस वक़्त दिल नर्म होता है तो ज़िक्र में भी लज़्ज़त आती है, दुआ और मुनाजात में भी मज़ा आता है। अबू सुलैमान दारानी रह० कहते हैं कि मुझे सब से ज़्यादा इबादत में मज़ा जब आता है ,जब मेरा पेट भूख की वजह से कमर को लग जाता है। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि आदमी हक़ तआला शानुहू के और

अपने सीने के दर्मियान एक झोली खाने की कर लेता है, फिर यह भी चाहता है कि अल्लाह तआला से मुनाजात की हलावत भी नसीब हो (पेट भरने को फ़क़ीर की झोली भरने से तश्बीह दी है)

3. तीसरा फ़ायदा यह है कि आदमी में आजिज़ी मस्कनत पैदा होती है और अकड़ मकड़ जाती रहती है, जो सरकशी और अल्लाह तआला शानुहू से ग़फ़लत का सर चश्मा है। नफ़्स किसी चीज़ से भी इतना ज़ेर (नीचा) नहीं होता, जितना भूखा रहने से होता है और आदमी जब तक अपने नफ़्स की ज़िल्लत और आजिज़ी नहीं देखता उस वक़्त तक अपने मौला की इज़्ज़त और उसका ग़लबा नहीं देख सकता। आदमी को चाहिए कि कसरत से भूखा रहे, ताकि ज़ौक़ से अपने मौला की तरफ़ मुतवज्जह रहे। यही वजह है कि जब हक़ तआला शानुहू ने हुज़ूर सल्ल० पर यह पेश फ़रमाया कि मक्का मुकर्रमा की सारी ज़मीन सोने की कर दी जाये तो हुज़ूर सल्ल० ने अर्ज़ किया या अल्लाह यह नहीं बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि एक दिन भूखा रहूँ और एक दिन खाऊँ, ताकि जिस दिन भूखा रहूँ तो सब्र करूँ और तेरी तरफ़ आजिज़ी करूँ (तुझ से मांगूं) और जिस दिन खाऊँ, उस दिन तेरा शुक्र अदा करूँ।

4. चौथा फ़ायदा यह है कि अहले मुसीबत और फ़ाक़ा ज़दों से ग़फ़लत पैदा नहीं होती। पेट भरे आदमी को बिल्कुल अंदाज़ा नहीं होता कि भूखों और मुहताजों पर क्या गुज़र रही है।

हज़रत यूसुफ़ अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम से किसी ने अर्ज़ किया कि ज़मीन के ख़ज़ाने तो आपके क़ब्ज़े में हैं, फिर भी आप भूखे रहते हैं, फ़रमाया कि मुझे यह डर है कि ख़ुद पेट भर लेने से कहीं भूखों को न भूल जाऊँ और भूखे प्यासे रहने से क़ियामत के दिन की भूख और प्यास की याद भी ताज़ा होती है, अल्लाह तआला शानुहू के अज़ाब का ख़ौफ़ भी पैदा होता है, यह भी याद आ जाता है कि भूख और प्यास की शिद्दत में जहन्नम में खाना क्या मिलेगा, वह जो हलक़ में अटक जाये और पीने को क्या मिलेगा, जहन्नमियों के ज़ख़्मों का लहू और पीप।

5. पांचवा फ़ायदा जो असल और अहम है, गुनाहों से बचना है कि पेट भरना ही सारी शहवतों की जड़ है और भूखा रहना हर क़िस्म की शहवत को तोड़ता है और आदमी के लिए बड़ी सआदत यह है कि वह अपने नफ़्स पर

क़ाबू रखे और बड़ी बदबख़्ती यह है कि उसका नफ़्स उस पर क़ाबू पा जाये और जैसा कि सरकश घोड़े को भूखा रख कर क़ाबू में रखा जा सकता है और जब वह ख़ूब खाता पीता रहता है तो सरकश हो जाता है इसी तरह नफ़्स का भी हाल है।

एक बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा कि आप बुढ़ापे में भी अपने बदन की ख़बर गीरी नहीं करते (कुछ ताक़त और क़ुव्वत की चीज़ें खाने की ज़रूरत है) वह फ़रमाने लगे कि यह नफ़्स निशात की तरफ़ बड़ी तेज़ी से चलने वाला है, मुझे यह डर है कि कहीं मुझे किसी गुनाह की मुसीबत में न फांस दे, इस लिए मैं इसको मशक़्क़त में डाले रखूँ। यह मुझे ज़्यादा महबूब है इस से कि वह मुझे किसी गुनाह की हलाकत में डाल दे।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि सब से पहली बिद्अत जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद पैदा हुई, वह पेट भर कर खाने की है। जब आदमियों के पेट भर जाते हैं तो उनके नुफ़ूस दुनिया की तरफ़ झुकने लगते हैं और यह फ़ायदा जो ज़िक्र किया जा रहा है एक ही फ़ायदा नहीं बल्कि फ़वाइद का ख़ज़ाना है, और इसमें कम से कम जो फ़ायदा है, वह शर्मगाह की शहवत और फ़ुज़ूल बात की ख़्वाहिश का छोड़ना है, इसलिए कि भूखे आदमी का दिल फ़ुज़ूल की बातें करने को नहीं चाहा करता और इसी एक बात की वजह से आदमी ग़ीबत से, झूठ से, फ़ुहश बात करने से, चुग़ली वग़ैरह बहुत सी चीज़ों से महफ़ूज़ रहता है। और पेट भरने पर आदमी का दिल तफ़रीह की बातों को चाहा करता है। आम तौर से हम लोगों की तफ़रीहें आदमियों की आबरूओं से ही होती हैं और हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि ज़बान की खेतियाँ ही आदमी को अक्सर जहन्नम में डालती हैं। और शर्मगाह की शहवत की हलाकत तो किसी से भी मख़्फ़ी नहीं है और आदमी का जब पेट भरा हुआ होता है तो फिर शर्मगाह पर क़ुदरत दुश्वार हो जाती है। अगर अल्लाह के ख़ौफ़ से आदमी इस पर क़ुदरत भी पा ले, तब भी आंख का गुनाह (ना-जायज़ तरीक़े से किसी औरत या मर्द को देखना) तो हो ही जाता है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आंख भी ज़िना करती है जैसा कि शर्मगाह ज़िना करती है, और अगर आदमी आंख बंद करके इस पर भी क़ुदरत पा ले, तब भी जिसको देख चुका है उसका ख़्याल तो दिल में आता ही रहेगा और शहवत के ख़्यालात हक़ तआला शानुहू से मुनाजात की लज़्ज़त को खो देते हैं

और बसा औक़ात ये फ़ासिद ख़्यालात नमाज़ में भी आ जाते हैं। ज़बान और शर्मगाह मिसाल के तौर पर ज़िक्र कर दिए, वर्ना सातों अअ्ज़ा के सारे गुनाह उसी क़ुव्वत से पैदा होते हैं जो पेट भरने से हासिल हुई है।

6. छठा फ़ायदा यह है कि कम खाने से नींद कम आती है, कसरत से जागने की दौलत नसीब होती है, इसलिए कि पेट भर कर खाने से प्यास खूब लगती है और पानी पीने से नींद खूब आती है। मशाइख़ का मक़ूला है कि ज़्यादा न खाओ वर्ना ज़्यादा पानी पियोगे, फिर ज़्यादा सोओगे, जिसकी वजह से ज़्यादा ख़सारे में रहोगे, कहते हैं कि सत्तर हकीमों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ज़्यादा पानी पीने से ज़्यादा नींद आती है और ज़्यादा सोने में उम्र का बहुत बड़ा हिस्सा ज़ाया हो जाता है, और तहज्जुद का फ़ौत हो जाना अलाहिदा रहा, नीज़ ज़्यादा सोने से तबीअत की बलादत सुस्ती और दिल की क़सावत भी पैदा होती है और बीवी पास न हो तो एहतिलाम का सबब भी होता है। फिर गुस्ल के असबाब मुहय्या न होने में अक्सर तहज्जुद भी फ़ौत हो जाती है।

7. सातवां फ़ायदा इबादत पर सहूलत से क़ादिर होना है कि पेट भर कर खाने से अक्सर काहिली पैदा होती है, जो इबादत को मानेअ् होती है और खुद खाने ही में बहुत सा वक़्त ज़ाया हो जाता है और अगर उस को तैयार भी करना पड़े तो और भी ज़्यादा इज़ाअते (बर्बादीए) वक़्त है, फिर खाने के बाद हाथ धोना, ख़िलाल करना, फिर बार बार पानी पीना इन सब औक़ात का हिसाब लगाया जाये तो कितना वक़्त हुआ। अगर यह सारा वक़्त अल्लाह की याद में और दूसरी इबादतों में ख़र्च होता तो कितना नफ़ा कमाता।

हज़रत सिर्री सक़ती रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने अली जुर्जानी रह० के साथ सत्तू देखा जिसको वह फांक रहे थे। मैं ने पूछा कि सत्तू की आदत कैसे पड़ गयी? फ़रमाने लगे कि मैं ने जो हिसाब लगाया तो लुक़्मा मुंह में रखने से उसके निगलने तक सत्तर मर्तबा सुब्हानल्लाह कहने का वक़्त मिलता है, इस वजह से मैं ने चालीस साल से रोटी नहीं खाई कि उसके चबाने में बहुत देर लगती है। हक़ीक़त यही है कि आदमी का हर सांस बहुत बड़ा क़ीमती जौहर है जिसको आख़िरत के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ करने की सख़्त ज़रूरत है ताकि वह कभी ज़ाया न हो। और उसकी सूरत सिर्फ़ यही है कि उस सांस को अल्लाह के ज़िक्र या किसी और इबादत में सर्फ़ कर दे, इसके अलावा खाना ज़्यादा खाने से वुज़ू कम ठहरती है इस्तिंजे की ज़रूरत ज़्यादा होती और इन उमूर की वजह से अलावा

इसके कि इन में वक़्त ज़ाया होता है, मस्जिद में ज़्यादा औक़ात नहीं गुज़ार सकता कि बार बार इन ज़रूरियात की वजह से निकलना पड़ेगा, इस के अलावा रोज़ा भी उस को बहुत सहल होता है जो भूखा रहने का आदी हो जाये। ग़रज़ रोज़ा, एतिकाफ़ और कसरत से बावुज़ू रहना और खाने पीने के औक़ात को इबादत में ख़र्च करना, इतने कसीर फ़ायदे हैं जिनका शुमार नहीं। इसकी क़द्र वे ग़ाफ़िल लोग क्या जानें, जिनको दीन की क़द्र नहीं, वे दुनिया की चंद रोज़ा ज़िन्दगी पर राज़ी होकर मुतमईन हो गए, पस दुनिया ही के हालात को जानते हैं, उनको आख़िरत की ख़बर ही नहीं, क्या चीज़ है?

8. आठवां फ़ायदा कम खाने में बदन की सेहत है कि बहुत से अमराज़ ज़्यादा खाने ही से पैदा होते हैं कि इसकी वजह से मेअ्दे में और रगों में अख़्लाते रद्दिया जमा हो जाते हैं, जिन से तरह तरह के अमराज़ पैदा होते हैं और अमराज़ से क़तअ-ए-नज़र इसके कि सेहत के मनाफ़ी हैं, इबादात से भी मानेअ् होते हैं, दिल को भी तश्वीश में डालते हैं, ज़िक्र व फ़िक्र से मानेअ् होने के अलावा दवा, परहेज़, हकीम, डाक्टर, फ़स्द खोलने वाला, जोंकें लगाने वाला, ग़रज़ एक लम्बा चौड़ा झगड़ा आदमी के साथ खड़ा हो जाता है। फिर इन सब चीज़ों में मशक़्क़त अलाहिदा है, ख़र्च अलाहिदा है और भूखे रहने में इन सब आफ़ात से अम्न है।

कहते हैं कि हारून रशीद ने एक मर्तबा चार माहिर हकीमों को जमा किया, एक हिन्दी माहिर, दूसरा रूमी (अंग्रेज़ी), तीसरा इराक़ी, चौथा सवादी (सवाद का रहने वाला) और चारों से दर्याफ़्त किया, कोई ऐसी दवा बताओ जो किसी चीज़ को नुक़्सान न करती हो। हिन्दी ने कहा मेरे ख़्याल में ऐसी दवा जो किसी चीज़ को नुक़्सान नहीं करती, अह्लीजे असवद (हलीला स्याह) है, इराक़ी ने कहा, मेरे ख़्याल में हब्बुर्रशाद अल्अबयज़ (जिसको फ़ारसी में तुख़्मे सिपन्दान और हिन्दी में हालून कहते हैं) रूमी ने कहा कि मेरे नज़दीक गर्म पानी है यानी वह किसी चीज़ को मुज़िर नहीं है, सवादी ने कहा कि यह सब ग़लत है, हलीला मेअ्दे को रौंदता है (पांव से किसी चीज़ को मसलना) और यह बीमारी है (इस के अलावा जिगर के लिए भी मुज़िर है, जकरिया) और हब्बुर्रशाद मेअ्दे में फिसलन पैदा करता है और गर्म पानी मेअ्दे को ढीला कर देता है। इन सब तबीबों ने कहा, फिर तुम बताओ ऐसी क्या दवा है जो किसी को नुक़्सान नहीं करती। सवादी ने कहा कि खाना उस वक़्त तक न खाया जाये जब तक कि ख़ूब रग्बत पैदा न हो और ऐसी हालत में ख़त्म किया जाए कि ज़्यादा की रग्बत बाक़ी

हो। बक़ीया तीनों तबीबों ने उसकी राय से इत्तिफ़ाक़ किया।

एक फ़लसफ़ी हकीम के सामने हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि तिहाई पेट खाने के लिए, तिहाई पानी के लिए और तिहाई सांस लेने के लिए, उस ने सुन कर बड़ा ही ताज्जुब किया और कहा कि खाना कम खाने में इस से बेहतर और मज़बूत बात मैं ने आज तक नहीं सुनी, बेशक यह हकीम का कलाम है।

9. नवां फ़ायदा इख़राजात (ख़र्चों) की कमी है, जो शख़्स कम खाने का आदी होगा, उसका ख़र्च भी कम होगा और ज़्यादा खाने में इख़राजात भी बढ़ेंगे, जिनके हासिल करने के लिए या तो ना जायज़ तरीक़े इख़्तियार करने पर मजबूर होगा या लोगों से मांगने की ज़िल्लत इख़्तियार करेगा (हज़रत सहल तस्तरी रह॰ का हाल क़रीब ही गुज़र चुका है कि उनके खाने की मीज़ान साल भर की साढ़े तीन आने होती थी।)

एक हकीम का क़ौल है कि मैं अपनी अक्सर ज़रूरतें तर्क कर देने से पूरी करता हूँ जिस से मुझे बड़ी यकसूई और राहत रहती है। एक और हकीम का क़ौल है कि जब मुझे अपनी किसी ज़रूरत के पूरा करने के लिए किसी से क़र्ज़ की ज़रूरत होती है तो मैं अपने नफ़्स ही से क़र्ज़ मांग लेता हूँ, उसको समझा देता हूँ कि इस को फिर किसी वक़्त अदा कर दूँगा यांनी तेरी ख़्वाहिश इस वक़्त मेरे ज़िम्मे क़र्ज़ है। इसको किसी दूसरे वक़्त पूरी कर दूँगा। हज़रत इब्राहीम अधम रह॰ जब किसी चीज़ का नर्ख़ (भाव) मालूम करते कि वह बहुत गरां है तो अपने दोस्तों से फ़रमाते कि इसको छोड़ कर अर्ज़ां (सस्ता) कर दो (जिस चीज़ का ख़रीदना आदमी छोड़ दे, अपनी तरफ़ से तो वह टका सेर हो ही गयी, अपनी बला से जितने में चाहे बिके) आदमी की हलाकत का बड़ा सबब दुनिया की हिर्स है और यह हिर्स पेट और शर्मगाह की वजह से पैदा होती है और शर्मगाह की क़ुव्वत भी पेट की क़ुव्वत से होती है और खाना कम खाने में इन सब आफ़तों से अम्न है। हक़ तआला शानुहू जिस को भी नसीब फ़रमा दे।

10. दसवां फ़ायदा ईसार, हमदर्दी और सदक़ात की कसरत का सबब है, कम खाने की वजह से जितना खाना बचेगा, वह यतामा मसाकीन, ग़ुरबा पर सदक़ा होकर क़ियामत में उस के लिए साया बनेगा कि हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद पहले गुज़र चुका है कि आदमी क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साये के

नीचे होगा और जितना ज़्यादा खाएगा वह पाख़ाना बन कर कूड़ी पर जमा होता रहेगा और अल्लाह तआला शानुहू के ख़ज़ाने में जो जमा हो गया वह हमेशा हमेशा काम आता रहेगा और जो पाख़ाना हो गया, वह ज़ाया गया। इसलिए हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है जो पहले भी गुज़र चुका है कि आदमी कहता है कि मेरा माल मेरा माल, उस के लिए उस के माल में से बजुज़ (अलावा) तीन चीज़ के कुछ नहीं है, एक वह जो सदक़ा कर दिया और हमेशा के लिए महफ़ूज़ कर लिया, दूसरा वह जो खा लिया और खाकर ख़त्म कर दिया और तीसरा वह जो पहन कर पुराना कर दिया। इसके अलावा जो है वह दूसरों का माल है, वारिसों का हिस्सा है, इस का उस में कुछ भी नहीं है।

इसके अलावा सदक़ात के फ़ज़ाइल कसरत से गुज़र ही चुके हैं। ये दस फ़वाइद कम खाने के निहायत इख़्तिसार से ज़िक्र किये गये हैं। इन में से हर एक फ़ायदा अपने अंदर बेशुमार फ़ायदे रखता है। *(एह्या)*

यह बात क़ाबिले लिहाज़ है जो पहले भी मुतअद्द बार लिखी जा चुकी है कि इन फ़ज़ाइल के हक़ होने में तरद्दुद नहीं। यक़ीनन ये वे कमालात हैं कि जिस खुशनसीब को हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से अता फ़रमा दे, उसके लिए दीन और दुनिया दोनों की राहत है और आख़िरत के लिए बेशुमार दरजात और तरक़्क़ियात का ज़ीना यही चीज़ें हैं, लेकिन अपने तहम्मुल की रिआयत ज़रूरी है। ऐसा न हो कि कौआ चला हंस की चाल, वह अपनी भी भूल गया, ज़्यादा के शौक़ में आदमी थोड़े से भी जाता रहे। इस लिए इन सब चीज़ों की तरफ़ से दिल को रग़्बत देते रहने के साथ इन चीज़ों के और इस तर्ज़े ज़िन्दगी के अपने अंदर पैदा करने की कोशिश के साथ और इन उमूर को निहायत वक़्अत से देखने के साथ अमल उतना ही करना चाहिए जितना अपने अंदर तहम्मुल हो। बीमार आदमी ताक़त से ज़्यादा बोझ उठायेगा तो जल्दी मरेगा। हम लोग नफ़्स की बीमारियों के बीमार हैं, अअ्ज़ा और क़ुवा के ज़ोअफ़ के मारे हुए हैं, इसलिए सेहत की तमन्ना और कोशिश, सआी और रग़्बत के साथ ऐसी कोई चीज़ अमली तौर से इख़्तियार न करना चाहिए जो उस हालत से भी गिरा दे, जिस पर अब मौजूद हैं।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि कम खाने की आदत आहिस्ता आहिस्ता पैदा करना चाहिए। जो शख़्स ज़्यादा खाने का आदी हो, वह दफ़्अतन कम करेगा तो उस का तहम्मुल भी न होगा, ज़ोअफ़ भी हो जायेगा, मशक़्क़त भी

बढ़ जायेगी, इसलिए बहुत अहिस्तगी और सहूलत के साथ इसको इख़्तियार करना चाहिए, मसलन अगर कोई शख़्स दो नान खाता हो तो उसको एक नान का अट्ठाईसवां हिस्सा रोज़ाना कम करना चाहिए, इस से एक महीने के अंदर आधी ख़ुराक रह जायेगी (और अगर इसका तहम्मुल दुश्वार हो तो चालीसवां हिस्सा कम करना चाहिए।)

हज़रत सहल तस्तरी रह॰ से किसी ने पूछा कि आपके मुजाहदों की इब्तिदा किस तरह हुई, उन्होंने फ़रमाया कि मेरा सालाना ख़र्च इब्तिदा में तीन दिरहम था (यानी साढ़े दस आने) इब्तिदा में इसकी सूरत यह थी कि मैं एक दिरहम का तोदबस (अंगूर या खजूर का शीरा या रस) ले लेता था और एक दिरम का चावल का आटा और एक दिरम का घी और इन तीनों को मिला कर तीन सौ साठ लड्डू बना लेता था, एक रोज़ाना रोज़ा इफ़्तार करने के वक़्त खा लेता था। किसी ने पूछा कि अब क्या मामूल है? फ़रमाया, अब तो कोई मुतअय्यन चीज़ नहीं, जब मौक़ा हो, कुछ खा लेता हूँ (यह क़रीब ही गुज़र चुका है कि ये हज़रात बीस बीस दिन बग़ैर कुछ खाये गुज़ार देते थे।)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मेरा गुज़रान हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक साअ् जौ (तक़्रीबन साढ़े तीन सेर) फ़ी हफ़्ता था, खुदा की क़सम! मैं इस से ज़्यादा मरने तक कभी भी न बढ़ाऊंगा, इस लिए कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना था कि तुम में से मुझे ज़्यादा महबूब और क़ियामत में मुझ से ज़्यादा क़रीब वह शख़्स होगा जो मरने तक उसी हाल पर रहे जिस पर अब है। इसी वजह से यह बाज़ हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम पर एतिराज़ किया करते थे कि तुम ने वह तर्ज़ छोड़ दिया जो हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में था, तुमने जौ का आटा छानना शुरू कर दिया, हालांकि उस ज़माने में नहीं छाना जाता था, तुम ने पतली रोटियां खाना शुरू कर दीं, कई कई सालन दस्तरख़्वान पर आने लगे, तुम हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में ऐसे नहीं थे।

हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि मुसलमान की मिसाल बकरी के बच्चे की सी है, जिसे एक मुट्ठी पुरानी खजूर, एक मुट्ठी सत्तू, एक घूँट पानी काफ़ी है और मुनाफ़िक़ की मिसाल दरिंदे की सी है, हप हप, गट गट जो हो सब खा पी ले, न अपने पड़ोसी का ख़्याल करे न दूसरे को अपने ऊपर तर्जीह

दे। ज़रूरत से ज़ायद चीज़ें (सदक़ा करके) आगे भेज दो (तुम्हारे काम आयेंगी)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ छः यौम का मुसलसल फ़ाक़ा कर लेते थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ सात दिन का फ़ाक़ा कर लेते थे। कहते हैं कि एक बुज़ुर्ग की एक राहिब से मुलाक़ात हुई, उस से बातें करते रहे, इसी में उस को इस्लाम की दावत भी दे दी, उस ने गुफ़्तगू के दौरान में कहा कि हज़रत मसीह (अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) चालीस दिन का फ़ाक़ा कर लिया करते थे, यह बात मोजिज़ा ही के तौर पर हो सकती है, नबी के अलावा किसी से नहीं हो सकती। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि अगर मैं पचास दिन का फ़ाक़ा कर दूँ। तब भी तुम मुसलमान हो जाओगे? उस राहिब ने कहा, ज़रूर। यह वहीं उसके पास ही ठहर गये, उस के पास रहते, जब पचास दिन पूरे हो गये तो कहने लगे कि यह तो वायदे के थे, दस दिन और ज़ायद लो, यह कह कर दस दिन का फ़ाक़ा और भी कर दिया। पूरे साठ दिन बाद खाना खाया! वह राहिब बड़ी ही हैरत में रह गया और मुसलमान हो गया।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल॰ जब सुबह को खाना तनावुल फ़रमा लेते थे तो शाम को तनावुल न फ़रमाते थे और जब शाम को तनावुल फ़रमा लेते थे तो सुबह को तनावुल न फ़रमाते थे। *(जामिउस्सग़ीर)*

(यानी कभी ऐसा भी मामूल था) और भी पहले बुज़ुर्गों से एक वक़्त खाने का मामूल नक़ल किया गया है। इमाम राज़ी रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स एक वक़्त खाने का आदी हो, उस के लिए बेहतर यह है कि सहरी के वक़्त खाए, ताकि दिन में रोज़े की फ़ज़ीलत हासिल हो और रात को नवाफ़िल और ज़िक्र वग़ैरह मेअ्दे के ख़ाली होने की हालत में हो। हज़रत मालिक बिन दीनार रह॰ का चालीस साल तक दूध को दिल चाहता रहा, मगर इस्तेमाल नहीं किया। एक मर्तबा कहीं से उनकी ख़िदमत में तर व ताज़ा खजूरें आयीं, अपने दोस्तों से फ़रमाया कि इनको खा लो, मैं ने तो इन को चालीस साल से नहीं चखा। *(एह्या)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने बहुत कसरत से इस क़िस्म के वाक़िआत इन हज़रात के ज़िक्र फ़रमाये हैं। इन्ही मुजाहदों की बरकात से इन हज़रात से करामतों का ज़हूर था। अब इन हज़रात की करामतों का तो हर शख़्स ख़्वाहिशमंद है, मगर उसके लिए उन जैसे मुजाहदे भी तो किए जायें। हम लोगों को ग़िज़ायें तो उम्दा से उम्दा, बेहतर से बेहतर चाहियें, फिर मुजाहदे कैसे हों। एक बुज़ुर्ग ने

अपने किसी मिलने वाले की दावत की और उनके लिए दस्तर ख़्वान पर रोटियां रखीं। वह उन में से उलट पलट कर अच्छी रोटी तलाश करने लगे। मेज़बान बुज़ुर्ग ने फ़रमाया यह क्या कर रहे हो, जिस रोटी को तुम बुरी समझ कर छोड़ रहे हो, उसमें इतने इतने तो फ़वाइद हैं और इतनी इतनी मशक़्क़त उठाने वालों की इसमें मेहनत हुई है कि बहुत से काम करने वालों के अमल के बाद अब्र में पानी आया, फिर वह बरसा, फिर वह हवाओं की, ज़मीन की, चौपायों की, आदमियों की मेहनत इसमें लगी, जब तो यह रोटी तुम्हारे सामने आयी। इसके बाद तुम इसमें अच्छी बुरी छांटने लगे। कहते हैं कि एक रोटी पक कर तुम्हारे सामने नहीं आती जब तक उसमें तीन सौ साठ काम करने वालों का अमल नहीं होता, सब से अव्वल हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं जो अल्लाह तआला की रहमत के ख़ज़ाने से नाप कर चीज़ निकालते हैं, फिर वे फ़रिश्ते, जो अब्र पर मामूर हैं और बादलों को चलाते हैं, फिर चांद सूरज, आसमान फिर वे फ़रिश्ते जो हवाओं पर मामूर हैं, फिर चौपाये, सब से आख़िर में रोटी पकाने वाले। सच है पाक इर्शाद मेरे रब सुब्हानहू व तक़द्दुस का:-

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا (ابراهيم ع ٥)

"व इन् तउद्दू निअ्-म तल्लाहि ला तुह्सूहा०"

(इब्राहीम, रूकूअ 5)

'अगर तुम अल्लाह तलाआ की एक नेमत (और) उसकी तफ़्सीलात को शुमार करने लगो तो कभी भी पूरी नहीं गिन सकते।

इसके बाद निहायत अहम और क़ाबिले लिहाज़ चीज़ यह भी है कि कम खाने की अगर सूरत इख़्तियार करे तो उसमें रिया और हुब्बे जाह से बचने का भी बहुत एहतिमाम रखे। ऐसा न हो कि भूखा भी मरे और नफ़्स बजाय सालेह बनने के और ज़्यादा फ़ासिद बन जाये। उलमा ने लिखा है कि जो शख़्स खाने की ख़्वाहिश से भाग कर रिया की ख़्वाहिश में फंस जाये वह ऐसा है जैसा कि बिच्छू से भाग कर सांप के मुंह में चला जाये। *(एह्या)*

अलग़रज़ कम खाना महमूद है। दीन और दुनिया दोनों के कसीर फ़ायदे इसमें हैं, बशर्ते कि ज़ोअफ़ या रिया वग़ैरह किसी दूसरे ख़तरे में न पड़ जाये। अलबत्ता यह ज़रूरी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी को, हुज़ूर सल्ल० की मईशत और मुआशरत, हुज़ूर सल्ल० के फ़क्र

और फ़ाक़े को ज़ेहन में रखे, दिल से उसको पसंद करता रहे कि असल चीज़ वही है, हुज़ूर सल्ल॰ ने जो तर्ज़ इख़्तियार फ़रमाया था वह नादारी और मजबूरी से नहीं था, इस वजह से नहीं था कि मयस्सर नहीं आ सकता था, बल्कि ख़ुशी और रग़बत से इसी तर्ज़ को पसंद फ़रमाया था।

एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ आप हक़ तआला शानुहू से रोज़ी की वुस्अत नहीं मांग लेते? हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मैं यह कह कर और हुज़ूर सल्ल॰ की भूख की शिद्दत को देख कर रो पड़ी, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि आइशा, उस पाक ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर अपने रब से यह मांगूं कि सोने के पहाड़ मेरे साथ साथ चला करें तो हक़ तआला शानुहू उनको भी मेरे साथ चला दे, लेकिन मैं ने दुनिया में भूखा रहने को पेट भरने पर तर्जीह दे रखी है। मैं ने दुनिया के फ़क़्र को उस की सरवत पर तर्जीह दी है मै नें दुनिया के ग़म को उसकी ख़ुशी पर तर्जीह दी है। आइशा, दुनिया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उस की आल के लिए मुनासिब नहीं है। हक़ तआला शानुहू ने उलुल अज़्म (यानी हिम्मत वाले और ऊँचे दर्जे के) रसूलों के लिए इसी को पसंद फ़रमाया है कि दुनिया की तक्लीफ़ों पर सब्र करें, दुनिया की राहतों से बचे रहें और जो चीज़ उनके लिए पसंद फ़रमाई थी, उसी का मुझे हुक्म है, चुनांचे इर्शाद है:-

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ (محمد ع ٤)

"फ़स्बिर् कमा स-ब-र उलुल् अज़्मि मिनर्रूसुलि"

(मुहम्मद, रूकूअ 4)

'आप भी उसी तरह सब्र कीजिए जिस तरह उलुल अज़्म रसूलों ने सब्र किया।"

मेरे लिए अल्लाह के हुक्म की तामील के सिवा चारा नहीं है, मैं ख़ुदा की क़सम, जहां तक मेरी ताक़त है, ऐसा ही सब्र करूँगा जैसा कि उन्होंने किया और ताक़त तो अल्लाह ही के देने से आती है।

हदीस में आया है कि जब हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में फ़ुतूहात की कसरत बहुत हो गयी तो उनकी साहबज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि अब तो आप भी जब दूसरे मुल्कों के क़ासिद आयें तो बारीक

कपड़ा पहन लिया करें और किसी को खाना पकाने का हुक्म फ़रमा दिया करें, ताकि आप उन लोगों को खिलायें और आप भी उनके साथ खा लिया करें। हज़रत उमर रज़ि॰ ने इर्शाद फ़रमाया, यह तो तुम्हें मालूम है कि आदमी के हालात से उसके घर वाले ही अच्छी तरह वाक़िफ़ हुआ करते हैं। हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, बेशक, हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, मैं तुम को क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबुव्वत के बाद इतने साल ज़िंदा रहे, इस ज़माने में हुज़ूर सल्ल॰ और हुज़ूर सल्ल॰ के घर वाले अगर रात को खाना नोश फ़रमा लेते थे, तो दिन में भूखे रहते थे और दिन में खा लेते थे, तो रात को भूखे रहते थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि नुबुव्वत के बाद इतने साल तक हुज़ूर सल्ल॰ ज़िंदा रहे, लेकिन हुज़ूर सल्ल॰ ने और उनके घर वालों ने ख़ैबर के फ़त्ह होने तक कभी भी पेट भर कर खजूरें भी नहीं खायीं। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि एक मर्तबा तुमने ऊँचे ख़्वान पर (मेज़ की तरह) खाना रख दिया था, तो हुज़ूर सल्ल॰ के चेहरा-ए -अन्वर पर तग़य्युर आ गया था, यहां तक कि उसको हटा कर ज़मीन पर खाना रखा गया (जब हुज़ूर ने नोश फ़रमाया) मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ, कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल॰ अपनी अबा को (चादर की एक क़िस्म) दोहरा करके उस पर आराम फ़रमाया करते थे। तुमने एक मर्तबा उसको चोहरा (चार तेह) करके बिछा दिया था तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम ने मुझे रात के उठने से रोका (कि चार तह हो जाने से बिस्तरा नर्म हो गया, जिस से नींद अच्छी तरह आ गयी) इसको दोहरा ही कर दो जैसा कि रोज़ाना हुआ करता था। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल॰ अपना कपड़ा धोने के लिए बदने मुबारक से उतारते और उसको धोते, ऐसी हालत में अगर बिलाल (रज़ि॰) नमाज़ के लिए बुलाने आ जाते थे तो हुज़ूर सल्ल॰ के पास दूसरा कपड़ा न था, जिसको पहन कर नमाज़ पढ़ायें, हुज़ूर सल्ल॰ उसी को ख़ुश्क करके पहन कर नमाज़ पढ़ाया करते थे। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि बनू ज़फ़र की एक औरत ने हुज़ूर सल्ल॰ के लिये दो कपड़े तैयार किये थे। एक लुंगी, एक चादर, उन में से उसने एक पहले भेज दिया, दूसरे को भेजने में देर लगी तो हुज़ूर सल्ल॰ उसी को (बदन पर इस तरह लपेट कर दोनों कोनों में गर्दन पर गिरह लगायी थी। कि बदन न खुल जाये) पहन कर नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गये,